एक
आखरी
वार
CRIME SCENE DO NOT CROSS
प्रियांशी जैन

१

तेज रफ्तार से दौड़ती फीएट की ड्राइविंग सीट पर मौजूद राजकुमार की निगाहें सामने हाईवे पर जमी थीं।

अचानक वह चौंका। एक्सीलेटर से पैर उठ गया और ब्रेक पैडल दबता चला गया।

सड़क से नीचे खाई में घुटनों के बल उठता एक आदमी बाँह ऊपर उठाए कार रोकने का इशारा कर रहा था। चेहरा पीला था और मुँह सर्कस के जोकर की भाँति लाल। उसका संतुलन अचानक बिगड़ा और वह औंधे मुँह गिर गया।

राजकुमार कार रोककर नीचे उतरा। डेनिम की जीन्स और शर्ट पहने निश्चल पड़े उस आदमी की साँसों के साथ गले से खरखराती सी आवाज निकल रही थी। वह बेहोश था।

राजकुमार ने सावधानीपूर्वक उसे पीठ के बल उलट दिया। उसके मुँह से खून के छोटे-छोटे बुलबुले उबल रहे थे। खून से भीगी कमीज में छाती पर बने गोल सुराख से भी खून रिस रहा था।

गले से अपना मफलर निकाल कर राजकुमार ने उसकी छाती पर कसकर बांध दिया।

घायल के शरीर में हल्की सी हरकत हुई। मुँह से कराह निकली। पलकें हिलीं। बुझी सी आँखों की पुतलियाँ चढ़ने लगीं। स्पष्टत: तीसेक वर्षीय वह स्वस्थ युवक मरणासन्न हालत में था।

राजकुमार ने सड़क पर दोनों ओर निगाहें दौड़ाईं। दूर-दूर तक न तो कोई वाहन नजर आया और न ही कोई मकान। सूरज डूब चुका था। आस-पास के पहाड़ी इलाके में अजीब सी बोझिल निस्तब्धता व्याप्त थी।

राजकुमार ने उसे बाँहों में उठा लिया। कार के पास पहुँचकर उसे पिछली सीट पर लिटाया। उसका सर अपने बैग पर रखकर अपना ओवरकोट उसके ऊपर डाल दिया।

ड्राइविंग सीट पर बैठकर पुनः कार दौड़ानी आरंभ कर दी। रीयर व्यु मिरर इस ढंग से घुमा लिया की उसे देखता रह सके।

दो-तीन मील तक घायल उसी स्थिति में रहा। फिर उसका सर एक तरफ लुढ़क गया।

सामने हाईवे के साथ-साथ दूर तक तारों की ऊँची फैंस बनी नजर आ रही थी। उसके पीछे पुरानी सड़कों हैंगरों, जगह-जगह लगे बोर्डों वगैरा से जाहिर था बरसों पहले उस स्थान को एयरफोर्स के कैम्प के तौर पर इस्तेमाल किया जाता रहा था।

बीस-पच्चीस मिनट पश्चात एक शहर की रोशनियाँ नजर आनी शुरू हो गईं।

शहर का नाम था- मनाली।

पहली ही इमारत पर लगे नियोन साइन से बने अक्षर चमक रहे थे-थापा डीलक्स मोटल। प्रवेश द्वार और लॉबी में दिन की भाँति प्रकाश फैला था।

ठीक सामने कार पार्क करके राजकुमार भीतर दाखिल हुआ।

रिसेप्शन डेस्क पर मौजूद सुंदर स्त्री ने सर से पाँव तक उसे देखा।

-"फरमाइए?" थकी सी आवाज में बोली।

-"मेरी कार में एक आदमी को मदद की सख्त जरूरत है।" राजकुमार ने कहा- "मैं उसे अंदर ले आता हूँ। आप डाक्टर को बुला दीजिये।"

स्त्री की आँखों में चिंता झलकने लगी।

-"बीमार है?"

-"उसे गोली लगी है।"

-"वह जल्दी से उठी और पीछे बना दरवाजा खोला।

-"सुनील, जरा बाहर आओ।"

-"उसे डाक्टर की जरूरत है।" राजकुमार ने कहा- "बातें करने का वक्त यह नहीं है।"

गवरडीन का सूट पहने एक लंबा-चौड़ा आदमी दरवाजे में प्रगट हुआ।

-"अब क्या हुआ? खुद कुछ भी नहीं संभाल सकतीं ?"

स्त्री की मुट्ठियाँ भींच गईं।

-"मेरे साथ तुम इस ढंग से पेश नहीं आ सकते।"

आदमी तनिक मुस्कराया। उसका चेहरा सुर्ख था।

-"मैं अपने घर में जो चाहूँ कर सकता हूँ।"

-"तुम नशे में हो सुनील।"

-"बको मत।"

डेस्क के पीछे थोड़ी सी जगह में वे दोनों एक-दूसरे के सामने तने खड़े थे।

-"देखिये बाहर एक आदमी को खून बह रहा है। उसकी हालत बहुत नाज़ुक है।" राजकुमार बोला- "अगर आप उसे अंदर नहीं लाने देना चाहते तो कम से कम एंबुलेंस ही बुला दीजिये।"

आदमी उसकी ओर पलटा।

-"कौन है वह?"

-"पता नहीं। साफ-साफ बताइए, आप लोग मदद करेंगे या नहीं?"

-"जरूर करेंगे।" स्त्री ने कहा।

आदमी दरवाजा बंद करके बाहर निकल गया।

स्त्री डेस्क पर रखे टेलीफोन का रिसीवर उठाकर नंबर डायल कर चुकी थी।

-“थापा डीलक्स मोटल।” वह बोली- “मैं मिसेज थापा बोल रही हूँ। यहाँ एक घायल आदमी लाया गया है... नहीं, उसे गोली लगी है... हाँ, सीरियस है... यस एन एमरजेंसी।” रिसीवर यथास्थान रखकर बोली- “हॉस्पिटल से एंबुलेंस आ रही है।” फिर उसका स्वर धीमा हो गया- “मुझे खेद है। हमारी गलती से बेकार वक्त बर्बाद हुआ।”

-“इससे फर्क नहीं पड़ता।”

-“मुझे पड़ता है। आयम रीयली सॉरी। मैं कुछ और कर सकती हूँ?

पुलिस को सूचित कर दूँ।”

-“हॉस्पिटल वाले कर देंगे। मदद करने के लिए धन्यवाद, मिसेज थापा।”

राजकुमार प्रवेश द्वार की ओर बढ़ गया।

स्त्री भी उसके साथ चल दी।

-“आप पर तो बहुत बुरी गुजर रही होगी। वह आपका दोस्त है?”

-“नहीं। मेरा कोई नहीं है। मुझे हाईवे पर पड़ा मिला था।”

अचानक स्त्री चौंकी और उसकी निगाहें राजकुमार के सीने पर केन्द्रित हो गईं जहां कमीज पर लगा दाग सूख गया था।

-“आपको भी चोट आई है?”

-“नहीं।” राजकुमार ने कहा-” यह उसी के खून का दाग है।” और बाहर निकल गया।

कार का पिछला दरवाजा खोले अंदर झुका थापा कदमों की आहट सुनकर फौरन सीधा खड़ा हो गया।

आगंतुक राजकुमार था।

-"इसकी सांस चल रही है।" उसने पूछा।

शराब के प्रभाववंश थापा के चेहरे पर उत्पन्न तमतमाहट खत्म हो चुकी थी।

-"हाँ, सांस चल रही है।" वह बोला- मेरे ख्याल से इसे अंदर नहीं ले जाना चाहिए। लेकीन अगर तुम कहते हो तो अंदर ले जाएंगे।"

-"सोच लीजिए, आप का कारपेट गंदा हो जाएगा।"

थापा उसके पास आ गया। उसकी आँखें कठोर थीं।

-"बेकार की बातें मत करो। यह तुम्हें कहाँ मिला था?"

-"एयरफोर्स कैम्प से दक्षिण में कोई दो मील दूर खाई में।"

-"तुम इसे मेरे दरवाजे पर ही क्यों लाए?"

-"इसलिए कि मुझे यही पहली इमारत नजर आई थी।" राजकुमार शुष्क स्वर में बोला- "अगली बार ऐसी नौबत आने पर यहाँ रुकने की बजाय आगे चला जाऊंगा।"

-"मेरा यह मतलब नहीं था।"

-"फिर क्या था?"

-"मैं सोच रहा था, क्या यह महज इत्तिफाक है।"

-"क्यों? तुम इसे जानते हो?"

-"हाँ। यह कांती लाल है। भंडारी ट्रांसपोर्ट कंपनी का ट्रक ड्राइवर।"

-"अच्छी तरह जानते हो?"

-"नहीं। शहर के ज़्यादातर लोगों को जानना मेरे धंधे का हिस्सा है लेकिन मामूली ट्रक ड्राइवरों को मुँह मैं नहीं लगाता।"

-"अच्छा करते हो। इसे किसने शूट किया हो सकता है?"

-"तुम किस हक से सवाल कर रहे हो?"

-"यूँ ही।"

-"तुमने बताया नहीं तुम कौन हो?"

-"नहीं बताया।"

-"ऐसा तो नहीं है कि किसी वजह से तुमने ही इसे शूट कर दिया था?"

-"तुम बहुत होशियार हो। मैंने ही इसे शूट किया था और इसे यहाँ लाकर इस तरह भागने की कोशिश कर रहा हूँ।"

-"तुम्हारी शर्ट पर खून लगा देख कर मैंने यूँ पूछ लिया था।"

उसके चेहरे पर कुटिलतापूर्ण मुस्कराहट देखकर राजकुमार के जी में आया उसके दाँत तोड़ दे लेकिन अपनी इस इच्छा को दबाकर वह कार की दूसरी साइड में चला गया। डोम लाइट का स्विच ऑन कर दिया।

घायल कांती लाल के मुँह से अभी भी खून के छोटे-छोटे बुलबुले बाहर आ रहे थे। आँखें बंद थीं और सांसें धीमी।

एंबुलेंस आ पहुँची। कांती लाल को स्ट्रेचर पर डाल कर उसमें डाल दिया गया।

मात्र उत्सुकतावश राजकुमार अपनी कार में रहकर एंबुलेंस का पीछा करने लगा।

२

हॉस्पिटल में:

राजकुमार अपने बैग से साफ कमीज निकालकर बदलने के बाद एमरजेंसी वार्ड में पहुँचा।

कांती लाल एक ट्राली पर पड़ा था। चेहरा पीला था, आँखें बंद और होंठ खुले। उसके शरीर में कोई हरकत नहीं थीं।

एक डाक्टर उसका मुआयना करके पीछे हटा तो राजकुमार से टकरा गया।

-"आप मरीज हैं?"

-"नहीं। मैं ही इसे लेकर आया था।"

-"इसे जल्दी लाना चाहिए था।"

-"यह बच जाएगा, डाक्टर?"

-"यह मर चुका है। लगता है, काफी देर तक खून बहता रहा था।"

-"गोली लगने की वजह से?"

-"हाँ। यह आपका दोस्त था?"

-"नहीं। आपने पुलिस को इत्तला कर दी है?"

-"हाँ। पुलिस आपसे पूछताछ करना चाहेगी। यहीं रहना।"

-"ठीक है।"

कांती लाल की लाश को सफ़ेद चादर से ढँक दिया गया। राजकुमार वरांडे में बैंच पर बैठ कर इंतजार करने लगा।

पुलिस इंसपैक्टर चालीसेक वर्षीय, ऊंचे कद और आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी था। उसके साथ बावर्दी सब इंस्पेक्टर भी था।

लाश का मुआयना करके दोनों बाहर निकले।

-"किसी औरत का चक्कर लगता है, सर।" सब इंस्पेक्टर कह रहा था- "आप तो जानते हैं कांती लालकैसा आदमी था।"

-"जानता हूँ।" इन्स्पेक्टर बोला।

दोनों राजकुमार के पास आ गए।

-"तुम ही उसे यहाँ लाए थे?" इन्स्पेक्टर ने पूछा।

राजकुमार खड़ा हो गया।

-"हाँ।"

-"तुम मनाली में ही रहते हो?"

-"नहीं विराट नगर में।"

-"आई सी।" इन्स्पेक्टर ने सर हिलाया- "तुम्हारा नाम और पता?"

-"राजकुमार, ४सी, पार्क स्ट्रीट, विराट नगर।"

सब इंस्पेक्टर ने नोट कर लिया।

-"मैं इन्स्पेक्टर आकाश बाजवा हूँ। यह सब इंस्पेक्टर दिनेश जोशी है।" इन्स्पेक्टर ने परिचय देकर पूछा- "तुम काम क्या करते हो?"

-“प्रेस रिपोर्टर हूँ।”

-“किस पेपर में?”

-“हिमाचल टाइम्स।”

-“हाईवे पर क्या कर रहे थे?”

-“ड्राइविंग। अपनी कार में विशालगढ़ से विराट नगर लौट रहा था।”

-“लेकिन अब तुम्हें यहीं रुकना होगा। आजकल परोपकार करना महंगा पड़ता है। इस केस की इन्व्हेस्टीगेशन में हमें तुम्हारी जरूरत पड़ेगी।”

-“जानता हूँ।”

-“क्या तुम दो-एक रोज यहाँ रुक सकते हो? आज गुरूवार है.... शनिवार तक रुकोगे?”

-“अगर रुकना पड़ा तो रुकूँगा।”

-“गुड। अब यह बताओ, उस तक तुम कैसे पहुंचे?”

-“वह एयरफोर्स की उस बेस से कोई दो मील दूर सड़क के नीचे खाई में पड़ा था। वह घुटनों के बल उठा और हाथ हिलाकर मुझे कार रोकने का इशारा किया।”

-“यानि तब तक वह होश में था?”

-“ऐसा ही लगता है,”

-“उसने कुछ कहा था?”

-“नहीं। जब तक मैं कार से उतर कर उसके पास पहुँचा वह बेहोश हो चुका था। उसकी हालत को देखते हुए उसे वहाँ से उठाना तो मैं नहीं चाहता था लेकिन फोन करने या किसी को मदद के लिए बुलाने का कोई साधन वहाँ नहीं था। इसलिए उसे उठा कर अपनी कार

की पिछली सीट पर डाला और पहली इमारत के पास पहुँचते ही एंबुलेंस के लिए फोन करा दिया।"

-"किस जगह से?"

-"थापा डीलक्स मोटल से। थापा पर इस की अजीब सी प्रतिक्रिया हुई। लगता है वह कांती लाल को जानता तो था लेकिन उसके जीने या मरने से कोई मतलब उसे नहीं था। एंबुलेंस के लिए उसकी पत्नि ने फोन किया था।"

-"मिसेज थापा वहाँ क्या कर रही थी?"

-"रिसेप्शनिस्ट की तरह डेस्क पर मौजूद थी।"

-"थापा की मैनेजर वहाँ नहीं थी?"

-"वह कौन है?"

-"मिस भंडारी।"

-"अगर वह वहाँ थी भी तो मैंने उसे नहीं देखा। क्या उससे कोई फर्क पड़ता है?"

-"नहीं।" इन्स्पेक्टर अचानक तीव्र हो गए अपने स्वर को सामान्य बनाता हुआ बोला- "यह पहला मौका है- मैंने साक्षी थापा को वहाँ काम करती सुना है।"

सब इंस्पेक्टर ने अपनी नोट बुक से सर ऊपर उठाया।

-"इस हफ्ते वह रोज वहाँ काम करती रही है, सर।"

इन्स्पेक्टर के चेहरे की मांसपेशियाँ खिंच गईं और आँखों में विचारपूर्ण भाव झाँकने लगे।

-"थापा थोड़ा नशे की झोंक में था शायद इसीलिए वह कड़ाई से पेश आया था। उसने मुझसे पूछा मैंने ही तो उस आदमी को शूट नहीं कर दिया था।" राजकुमार ने कहा।

-“तुमने क्या जवाब दिया?”

-“यही की मैंने तो पहले कभी उसे देखा तक नहीं था। अगर उसने दोबारा ऐसी बकवास की तो मैं इसे अपने बयान में जोड़ दूँगा।”

-“हालात को देखते हुए आइडिया बुरा नहीं है।” इन्स्पेक्टर ने कहकर पूछा- “क्या तुम साथ चल कर वो जगह दिखा सकते हो जहां महोहर लाल को पड़ा पाया था?”

-“जरूर?”

-“लेकिन उससे पहले मैं तुम्हारा ड्राइविंग लाइसेन्स और प्रेस कार्ड देखना चाहूँगा। तुम्हें ऐतराज तो नहीं है?”

-“नहीं।”

राजकुमार ने जेब से दोनों चीजें निकालकर उसे दे दीं।

इन्स्पेक्टर ने देखकर वापस लौटा दीं।

पुलिस दल सहित राजकुमार उस स्थान पर पहुँचा।

पुलिश कारों की हैडलाइट्स और टार्चों की रोशनी में खाई का निरीक्षण किया गया। वहाँ सूखा खून फैला होने और एक मानव शरीर के पड़ा रहा होने के स्पष्ट चिन्ह मौजूद थे।

एक और पुलिस कार आ पहुँची।

भारी कंधों, मजबूत जिस्म और कठोर चेहरे वाले एक सब इंस्पेक्टर ने नीचे उतरकर इन्स्पेक्टर को सैल्यूट मारा।

-"भंडारी से बात हो गई, सर। कांती लाल ड्यूटी पर था। लेकिन जिस ट्रक को वह चला रहा था वो गायब है।

-"ट्रक में क्या था?" इन्स्पेक्टर ने पूछा।

-"यह भंडारी ने नहीं बताया। इस बारे में आपसे बाते करना चाहता है।" सब इंस्पेक्टर का कठोर चेहरा एकाएक और ज्यादा कठोर हो गया- "जिस हरामजादे ने यह किया है जब वह मेरे हाथ पड़ जाएगा...." और उसकी निगाहें राजकुमार पर जम गईं।

इन्स्पेक्टर ने सब इंस्पेक्टर के कंधे पर हाथ रखा।

-"शांत हो जाओ, सब इंस्पेक्टर दीपक। मैं जानता हूँ, तुम लोग रिश्तों को बहुत ज्यादा मानते हो। कांती लाल तुम्हारा कजिन था न?"

-"हाँ। मौसी का लड़का।"

-"हम उसके हत्यारे को जरूर पकड़ लेंगे।"

सब इंस्पेक्टर की निगाहें पूर्ववत राजकुमार पर जमी थीं।

-"यह आदमी...।"

-"इसका कांती लालकी मौत से कोई वास्ता नहीं है। कांती लालइसे यहाँ पड़ा मिला था। यह उसे उठाकर ले गया और हॉस्पिटल पहुंचवा दिया।"

-"यह इसने कहा है?"

-"इसी ने बताया है।" इन्स्पेक्टर ने कहा फिर उसका स्वर अधिकारपूर्ण हो गया- "बवेचा अब कहाँ है?"

-"अपनी ट्रांसपोर्ट कंपनी में।"

-"तुम पुलिस स्टेशन जाओ और ट्रक के बारे में जानकारी हासिल करो। भंडारी से कहना मैं बाद में आकर मिलूंगा। ट्रक के बारे में सभी थानों और चैक पोस्टों को सतर्क कर दो। यहाँ से बाहर जाने वाली तमाम सड़कें ब्लॉक करा दो। समझ गए?"

-"यस, सर।"

सब इंस्पेक्टर दीपक अपनी कार की ओर दौड़ गया।

इन्स्पेक्टर और उसके शेष आदमी बारीकी से खाई की जाँच करने लगे।

सब इंस्पेक्टर दिनेश जोशी ने राजकुमार के जूते की छाप लेकर उसे खाई में मौजूद पद चिन्हों से मिलाया। राजकुमार के अलावा किसी और के पैरों के निशान वहाँ नहीं मिले। खाई के सिरे के आसपास किसी वाहन के टायरों के निशान भी नहीं थे।

-"ऐसा लगता है, कांती लालको किसी कार या उसके ट्रक से ही नीचे धकेल दिया गया था।" इन्स्पेक्टर बाजवा बोला- "वाहन जो भी रहा था सड़क से नीचे वो नहीं उतरा।"

उसने राजकुमार की ओर गरदन घुमाई- "तुमने कोई कार या ट्रक देखा था?"

-"नहीं।"

-"कुछ भी नहीं।"

-“नहीं।”

-“मुमकिन है, जिस वाहन से कांती लालको धकेला गया था वो रुका ही नहीं।” उन लोगों ने उसे नीचे गिराया और मरने के लिए छोड़ दिया। और कांती लालखुद ही रेंगकर खाई में पहुँच गया।”

-“आपका अनुमान सही है सर।” सड़क की साइड में खड़ा हे दिनेश जोशी बोला- “यहाँ खून के धब्बे मौजूद हैं जो खाई तक गए हुए हैं।”

इन्स्पेक्टर अपने साथीयो सहित कुछ देर और जांच करता रहा। लेकिन कोई क्लू या नई बात पता नहीं लग सकी।

-“तुम सुनील थापा से मिल चुके हो न?” अंत में उसने पूछा।

-“हाँ।” राजकुमार ने जवाब दिया।

-“दोबारा उससे मिलना चाहोगे?”

-“जरूर।”

३

राजकुमार द्वारा मोटल के सामने इन्स्पेक्टर की कार के पीछे कार रोकी जाते ही सुनील थापा लॉबी से बाहर आ गया। स्पष्ट था वह सड़क पर निगाहें जमाए ही अंदर बैठा था।

-"हलो आकाश। कैसे हो?"

-"बढ़िया।"

उन्होंने हाथ मिलाए।

राजकुमार ने नोट किया दोनों बातें करते वक्त एक-दूसरे को उन दो प्रतिद्वद्वंदियों की भांति देख रहे थे जो पहले भी आपस में शतरंज या उससे ज्यादा खतरनाक कोई और खेल खेल चुके थे।

थापा ने बताया वह नहीं जानता था कांती लालके साथ क्या हुआ था और क्यों हुआ। उसने न तो कोई गलत बात देखी, न सुनी और न ही की थी। इस पूरे मामले से उसका ताल्लुक सिर्फ इतना था की कांती लालको कार में लाने वाले आदमी ने वहाँ आकर टेलीफोन करने के बारे में कहा था।

राजकुमार को घूरकर वह खामोश हो गया।

इन्स्पेक्टर बाजवा ने नो वेकेंसी के प्रकाशित साइन बोर्ड पर निगाह डाली।

-"तुम्हारा धंधा बड़िया चल रहा है?"

-"नहीं।" थापा मुँह बनाकर बोला- "बहुत मंदा है।"

-"तो फिर यह नो वेकेंसी का बोर्ड क्यों लगा रखा है?"

-"साक्षी की वजह से। वह रिसेप्शन डेस्क पर बैठ कर ड्यूटी नहीं दे सकती।"

-"क्यों? मीना छुट्टी पर है?"

-“ऐसा ही समझ लो।”

-“मतलब? उसने नौकरी छोड़ दी?”

थापा ने अपने भारी कंधे उचकाए।

-“पता नहीं। मैं तुमसे पूछने वाला था।”

इन्स्पेक्टर बाजवा की भवें सिकुड़ गईं।

-“मुझसे क्यों?”

-“क्योंकि तुम उसके रिश्तेदार हो । वह इस हफ्ते काम पर नहीं आई है और मैं कहीं भी उसे कांटेक्ट नहीं कर पाया।

-“अपने फ्लैट में नहीं है?”

-“नहीं।”

-“तुम वहाँ गए थे?”

-“नहीं।” लेकिन फोन करने पर वहाँ सिर्फ घंटी बजती रही है। थापा इन्स्पेक्टर की आँखों में झाँकता हुआ बोला- “तुम भी उससे नहीं मिले?”

-“इस हफ्ते नहीं।” इन्स्पेक्टर ने जवाब दिया फिर संक्षिप्त मोन के पश्चात बोला- “हम अब मीना से ज्यादा नहीं मिलते।”

-“अजीब बात है। मैं तो उसे तुम्हारे ही परिवार का हिस्सा समझता था।”

-“तुम गलत समझते थे। वह और लतिका बहुत ही कम मिला करती हैं। मीना अपना ज्यादातर वक्त अपने ढंग से ही गुजारती है।”

थापा कटुतापूर्वक मुस्कराया।

-“हो सकता है, इस हफ्ते अपना वक्त वह कुछ ज्यादा ही अपने ढंग से गुजारती रही है।”

-“क्या मतलब?”

-“जो चाहो मतलब निकाल सकते हो।”

इन्स्पेक्टर बाजवा मुट्ठियाँ भींचे आगे बढ़ा। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था।

राजकुमार ने कार का दरवाजा खोला और पैर जोर से जमीन पर पटका।

इन आहटों ने इन्स्पेक्टर को रोक दिया। उसने दुष्टतापूर्वक मुस्कराते थापा को घूरा फिर पलटकर चला गया। कुछ दूर जाकर उनकी तरफ से पीठ किए खड़ा रहा।

-“मेरा मुँह बंद कराना चाहता था।” थापा खुशी से चहका- “इसका गुस्सा किसी रोज खुद इसी को ले डूबेगा।”

मिसेज थापा लॉबी का दरवाजा खोलकर बाहर निकली। उसके चेहरे पर व्याकुलतापूर्ण भाव थे।

-“क्या हुआ सुनील?” उन दोनों की ओर बढ़ती हुई बोली।

-“हमेशा कुछ न कुछ होता ही रहता है। मैंने इन्स्पेक्टर को बताया, इस हफ्ते मीना भंडारी काम पर नहीं आई तो वह मुझे ही इस के लिए जिम्मेदार समझने लगा। जबकि उसकी उस घटिया साली के लिए मैं कतई जिम्मेदार नहीं हूँ।

मिसेज थापा ने पति की बाँह पर कुछ इस अंदाज में हाथ रखा मानों किसी भड़के हुए पशु को शांत कराना चाहती थी।

-“तुम्हें जरूर गलतफहमी हुई है, डार्लिंग। मुझे यकीन है, मीना की किसी हरकत के लिए वह तुम्हें जिम्मेदार नहीं ठहरा सकता। शायद वह मीना से कांती लालके बारे में पूछताछ करना चाहता है।”

-“क्यों?” राजकुमार बोला- “क्या वह भी कांती लालको जानती थी?”

-“बिल्कुल जानती थी। कांती लालउसका दीवाना था। ऐसा ही था न, सुनील?”

-“बको मत।”

वह पति से अलग हट गई। ऊँची एड़ी के अपने सैंडलों पर कुछ इस ढंग से लड़खड़ाती हुई मानों पीछे धकेल दी गई थी।

-“बताइए मिसेज थापा। यह बात महत्वपूर्ण हो सकती है क्योंकि कांती लालमर चुका है।”

-“मर चुका है?” वह झटका सा खाकर बोली और राजकुमार से निगाहें हटाकर अपने पति को देखा- “क्या मीना भी इसमें शामिल है?”

-“मैं नहीं जानता।” थापा ने कहा- “बस बहुत हो गया। अंदर जाओ, साक्षी। तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है। यहाँ सर्दी में खड़ी रहकर तुम बेवकूफी कर रही हो।”

-“मैं नहीं जाऊँगी। तुम इस तरह मुझ पर हुक्म नहीं चला सकते। मुझे पूरा हक है जिससे चाहूँ बात कर संकू।”

-“नहीं, इस हरामजादे के सामने तुम कोई बकवास नहीं करोगी।”

-“मैंने ऐसा कुछ नहीं....।”

-“बको मत। तुम पहले ही काफी बकवास कर चुकी हो।”

थापा ने पीछे से पत्नि की बाहें पकड़ीं और घसीटता हुआ सा उसे लॉबी के दरवाजे की ओर ले चला। उसकी पकड़ से छूटने के लिए साक्षी ने संघर्ष किया लेकिन जब उसने छोड़ा तो एक बार भी मुड़कर देखे बगैर अंदर चली गई।

थापा अपने बालों में उँगलियाँ फिरता हुआ वापस लौटा।

राजकुमार को लगा वह उन अधेड़ आदमियों में से था जो इस असलियत को नहीं पचा सकते की उनकी जवानी का दौर लद चुका है। शायद इसीलिए उसके मिजाज में अभी तक गर्मी थी।

-"तुम औरतों के साथ नर्मी से पेश आने में यकीन नहीं करते।"

-"मैं कुतियों से निपटना जानता हूँ। चाहे वे किसी भी नस्ल की क्यों न हो।" थापा उसे घूरता हुआ बोला- "इतना ही नहीं हरामजादों से निपटना भी मुझे आता है। इसलिए मेरी सलाह है, फौरन यहाँ से दफा हो जाओ।"

राजकुमार ने इन्स्पेक्टर की तलाश में आसपास निगाहें दौड़ाईं। वह एक टेलीफोन बूथ में रिसीवर थामें खड़ा था मगर उसे देखकर नहीं लगता था कि बातें कर रहा था।

-"मैं इन्स्पेक्टर के साथ आया हूँ। इस बारे में उसी से बातें करो।"

-"तुम हो कौन? अगर मुझे पता चला इन्स्पेक्टर को मेरे खिलाफ भड़काने वाले तुम हो....?"

-"तो क्या होगा?" राजकुमार ने ताव दिलाने वाले लहजे में पूछा। वह चाहता था थापा उस पर हाथ उठाए ताकि उसे भी उसकी धुनाई करने का मौका मिल सके।

-"तुम जमीन पर पड़े होंगे और तुम्हारे दांत टूटकर हलक में फंसे होंगे।"

-"अच्छा।" राजकुमार उपहासपूर्वक बोला- "मैं तो समझा था तुम सिर्फ औरतों को ही घसीटना जानते हो।"

-"तुम देखना चाहते हो, मैं क्या जानता हूँ?"

रोबीले स्वर के बावजूद यह कोरा ब्लफ था। वह कनखियों से उधर आते इन्स्पेक्टर को देख रहा था।

इन्स्पेक्टर शांत एवं सामान्य नजर आ रहा था।

-“सॉरी, सुनील। मुझे तुम पर गुस्सा नहीं करना चाहिए था।”

-“अगर तुमने गुस्से पर काबू पाना नहीं सीखा तो वो दिन दूर नहीं है जब गुस्से की वजह से नौकरी से हाथ धो बैठोगे।”

-“छोड़ो इसे। तुम्हें कोई चोट तो मैंने नहीं पहुँचाई।”

-“अब कोशिश करके देख लो।”

इन्स्पेक्टर के चेहरे पर व्याप्त भावों से स्पष्ट था वह जबरन स्वयं पर काबू पाए हुए था।

-“इसे छोड़ो और मीना के बारे में बताओ। कोई नहीं जानता वह कहाँ है। उसने लतिका को भी नहीं बताया कि वह नौकरी छोड़ रही है या कहीं जा रही है।”

-“उसने नौकरी नहीं छोड़ी। वह वीकएंड मनाने गई थी और सोमवार सुबह काम पर नहीं आई। जाहिर है वीकएंड से नहीं लौटी। मेरे पास उसकी कोई सूचना नहीं है।”

-“गई कहाँ थी?”

-“यह तो तुम्हें ही पता होना चाहिए। मुझे तो वह रिपोर्ट देती नहीं।”

दोनों ने खामोशी से एक-दूसरे को घूरा। उनकी निगाहों से एक-दूसरे के प्रति नफरत साफ झलक रही थी।

-“तुम झूठ बोल रहे हो।” अंत में बाजवा बोला।

-“तो फिर तुम खुद सच्चाई का पता लगा लो।”

राजकुमार गौर से उन्हें देख रहा था। बाजवा ने यह देखा तो उसे हिला कर जाने का संकेत कर दिया।

राजकुमार उन्हें छोडकर अंदर चला गया।

लॉबी में अंधेरा था। एक बंद खिड़की से बाहर से हल्की सी रोशनी अंदर आ रही थी। सुनील थापा की पत्नि साक्षी दूर एक कोने में कुर्सी में धँसी हुई थी।

-"कौन है?" वह बोली।

-"राजकुमार। वह आदमी जो तुम्हारे लिए मुसीबत लाया था।"

-"तुम मुसीबत नहीं लाए। यह शुरू से ही मेरे साथ है।" वह उठकर उसके पास आ गई- "तुम पुलिस विभाग में हो?"

-"नहीं। मैं प्रेस रिपोर्टर हूँ।" सच्चाई का पता लगाकर अखबार के जरिये लोगों तक पहुंचाता हूँ।

-"इस किस्से से तुम्हारा क्या ताल्लुक है?"

-"कुछ नहीं। इत्तिफ़ाक से इसमें फंस गया हूँ।"

-"ओह।"

-"तुम्हें तो इसके बारे में जरूर कुछ पता होगा।"

-"क्यों।"

-"क्योंकि तुम इसमें इनवाल्व लोगों को जानती हो।"

-"तुम दूसरों की बात कर रहे हो मैं तो अपने पति तक को पूरी तरह नहीं जानती।"

-"तुम्हारी शादी को कितना अर्सा हो गया?"

-"सात साल। तुम किस अखबार के लिए काम करते हो?"

-"हिमाचल टाइम्स के लिए।"

-"हिमाचल टाइम्स के राजकुमार हो।" साक्षी के स्वर में हैरानी का पुट था- "तुम्हारा काफी नाम मैंने सुना है। तुम मुसीबतजदा लोगों की मदद करते हो। मेरी मदद करोगे?"

-"किस मामले में?"

-"क....क्या मैं तुम पर भरोसा कर सकती हूँ?"

-"मैं सिर्फ इतना कह सकता हूँ भले लोग अक्सर मुझ पर भरोसा करते हैं।"

-"सॉरी। मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था।"

-"मुझसे क्या करना चाहती हो?"

-"यह तो सही मायने में खुद मैं भी नहीं जानती। मगर इतनी बात जरूर है किसी के लिए परेशानी खड़ी करना मैं नहीं चाहती?"

-"इस किसी में तुम्हारा पति भी शामिल है?"

-"हाँ।" एकाएक उसका स्वर बहुत धीमा हो गया- "मैंने पिछली रात सुनील को अपनी सभी चीजें दो बड़े सूट केसों में पैक करते पाया था। मुझे यकीन है वह मुझे छोड़कर जाने वाला है।"

-"उससे पूछ क्यों नहीं लेती?"

-"इतनी हिम्मत मुझमें नहीं है।"

-"उसे प्यार करती हो?"

-"पता नहीं। कई साल पहले तो करती थी।"

-"तुम दोनों के बीच कोई दूसरी औरत है?"

-"कोई नहीं, कई औरतें हैं।"

-"मीना भंडारी भी उनमें से एक है?"

-"वह हुआ तो करती थी। पिछले साल तक उनके बीच कुछ था। सुनील का कहना है वो जो भी था खत्म हो गया। लेकिन वो अभी भी हो सकता है। अगर तुम मीना को ढूँढकर पता लगाओ की किस के साथ उसके गहरे ताल्लुकात हैं तो असलियत का पता चल सकता है।"

-"वह कब से गायब है?"

-"पिछले शुक्रवार को गई थी वीकएंड मनाने।"

-"कहाँ?"

-"यह मैं नहीं जानती।"

-"तुम्हारे पति के साथ गई थी?"

-"नहीं। कम से कम वह तो मना करता है। मैं कहने जा रही थी....।"

राजकुमार के पीछे से थापा का स्वर उभरा।

-"तुम क्या कहने जा रही थीं?"

स्पष्टत: वह चुपचाप लॉबी का दरवाजा खोलकर अंदर आ गया था।

राजकुमार को एक तरफ धकेलकर अपनी पत्नि के सामने अड़ गया।

-"मैंने तुम्हें बकवास करने के लिए मना किया था।"

-"म...मैंने कुछ नहीं कहा।"

-“लेकिन मैंने तुम्हें कहते सुना था। अब यह मत कहना मैं झूठ बोल रहा हूँ....।”

अचानक उसने पत्नि के मुँह पर थप्पड़ जमा दिया।

वह लड़खड़ाकर पीछे हट गयी।

राजकुमार ने उसका कंधा पकड़कर उसे अपनी ओर घुमाया।

-“औरत पर ताकत मत आजमाओ, पहलवान।”

-“हरमजादे।” थापा गुर्राया और घूंसा चला दिया।

राजकुमार को अपनी गरदन की बायीं साइड सुन्न हो गई महसूस हुई। वह पीछे हटकर दरवाजे के पास रोशनी में आ गया।

आशा के अनुरूप थापा भी उसकी ओर झपटा।

प्रत्यक्षत: शांत खड़ा राजकुमार तनिक घूमा और उसके पेट में साइड किक जमा दी।

थापा के चेहरे पर पीड़ा भरे भाव प्रगट हुए। दोनों हाथों से पेट दबाए वह दोहरा हो गया।

राजकुमार ने आगे बढ़कर उसकी गरदन के पृष्ठ भाग पर दोहत्थड़ दे मारा।

थापा औंधे मुँह नीचे गिरा। उसका चेहरा फर्श से टकराया और उसकी चेतना जवाब दे गई।

४

राजकुमार लॉबी से बाहर आ गया।

इन्स्पेक्टर बाजवा की पुलिस कार जा चुकी थी। तेज रोशनी में नहाया प्रवेश द्वार के आसपास का एरिया सुनसान था।

राजकुमार अपनी कार में सवार होकर हाईवे पर पहुँचा। उसकी फिएट शहर की ओर जाते वाहनों में शामिल हो गई। दूसरों के फटे में टाँग अड़ाने की अपनी आदत की वजह से अब वह चाहता था मिसेज थापा की मुसीबत दूर हो जाए और थापा ढेर सारी मुसीबतों में जा फंसे।

उसने मौका पाते ही अपनी कार को यू टर्न देकर वापस घुमाया। मोटल के सामने से गुजरा। करीब सौ गज दूर ले जाकर पुन: यू टर्न लेकर पेड़ों के साए में कार पार्क कर दी।

मोटल के प्रवेश द्वार पर निगाहें जमाए एक-एक करके दो सिगरेटें फूँक डालीं। ठीक उस वक्त जब वह तीसरी सिगरेट सुलगाने के लिए जेब से पैकेट निकालने वाला था मोटल के बाहर की रोशनियाँ बुझ गईं। डीलक्स मोटल और नो वैकेंसी के साइन बोर्ड भी अंधेरे में डूब गए।

राजकुमार ने फिएट का इंजिन चालु कर दिया।

मुश्किल से पाँच मिनट बाद।

थापा मोटल से निकला और पीछे की ओर चला गया।

दो-तीन मिनट बाद उधर से एक जिप्सी प्रगट हुई। दो बार हार्न बजाया गया। जवाब में मिसेज थापा प्रवेश द्वार से निकली और जिप्सी की ओर दौड़ गई।

राजकुमार को जिप्सी का पीछा करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। दोनों कारें मनाली में दाखिल हुई।

पूरे शहर से गुजरने के बाद जिप्सी पहाड़ी पर बने रिहाइशी इलाके में एक दो मंज़िला मकान के सामने जा रुकी।

मिसेज थापा नीचे उतर गई।

राजकुमार ने उस मकान की लोकेशन अपने दिमाग में अंकित कर ली।

थापा ने जिप्सी वापस घुमाई और शहर के मध्य भाग की ओर दौड़ाने लगा।

अंत में वह मेन रोड के पास एक साइड स्ट्रीट पर पहुँचा। जिप्सी पार्क करके पैदल चल दिया।

राजकुमार भी अपनी कार पार्क करके उसके पीछे लग गया।

इलाका बढ़िया नहीं था।

आगे जा रहा थापा रुक गया। वहाँ साइन बोर्ड लगा था- ग्लोरी बार कम रस्टोरेंट।

थापा को गली में आगे पीछे देखता पाकर राजकुमार एक दुकान के अंदर खिसक गया और वहाँ शोकेस में सजी चीजें देखने लगा।

कोई दो मिनट बाद वह दुकान से बाहर निकाला तो थापा कहीं नजर नहीं आया।

वह उसी रेस्टोरेंट के सम्मुख पहुँचा।

थापा एक वेटर के साथ रेस्टोरेंट के पिछले हिस्से में उस तरफ जाता दिखाई दिया जहाँ मेहराबदार दरवाजे पर परदा झूल रहा था।

वेटर ने आगे बढ़कर परदा खिसकाया।

थापा अंदर चला गया।

चंदेक क्षोणोंपरांत राजकुमार भीतर दाखिल हुआ।

रेस्टोरेंट काफी बड़ा और पुराने फैशन का था। एक साइड में बार थी, दूसरी में कोई दर्जन भर केबिन बने थे और बीच के स्थान में मेजे पड़ी थीं, वहाँ मौजूद ख़ासी भीड़ का जायजा लेते राजकुमार के पास पिछले हिस्से की तरफ से आता वही वेटर पहुँचा।

-"आपको केबिन चाहिए सर?"

-"प्राइवेट रूम नहीं मिलेगा?"

-"सॉरी सर। वो दिया जा चुका है। अगर आप दो मिनट पहले आ जाते....।"

-"कोई बात नहीं।"

राजकुमार सामने के एक केबिन में बैठ गया ताकि बार के पीछे लगे शीशे में मेहराबदार दरवाजे को वाच कर सके।

वेटर बारटेंडर से लार्ज ड्रिंक लेकर मेहराबदार दरवाजे की ओर चला गया।

फिर मेनू सहित राजकुमार के पास लौटा।

राजकुमार ने दीवार पर एक स्थान पर उखड़ी बिजली की वायरिंग की ओर इशारा किया।

-"इसे ठीक क्यों नहीं कराते? इस तरह की लापरवाही से आग लग जाती है। मुझे इन चीजों से बड़ा डर लगता है। क्या यहाँ से बाहर जाने का पीछे की तरफ भी कोई रास्ता है?"

-"नो, सर। लेकिन यह वायरिंग पूरी तरह सेफ है।"

राजकुमार निश्चिंत हो गया। थापा उसकी निगाहों से बचकर वहाँ से बाहर नहीं जा सकता था।

उसने दो लार्ज पैग विस्की और तंदूरी चिकन का आर्डर दे दिया।

वेटर आर्डर सर्व कर गया।

चिकन स्वादिष्ट था। राजकुमार विस्की की चुस्कियाँ लेता खाने लगा।

खाना-पीना खत्म करके जब वह सिगरेट सुलगा रहा था एक लड़की ने अंदर प्रवेश किया।

लड़की खूबसूरत थी। उसके उभार इतने आकर्षक थे कि बारटेंडर सहित बार में मौजूद हर आदमी की निगाहें उसकी तरफ घूम गईं।

राजकुमार की निगाहें उससे मिलीं तो वह मुस्करा दिया।

लड़की उसे घूरकर वेटर की तरफ पलट गई।

-"इज ही हेअर?"

-"ही जस्ट केम इन, मिस। ही इज वेटिंग फॉर यू इन दी बैक रूम।"

लड़की नितंबों में नपा-तुला उतार-चढ़ाव पैदा करती वेटर के पीछे चल दी।

राजकुमार ने सोचा क्या वह मीना भंडारी थी। लेकिन किसी मोटल की मैनेजर की बजाय वह देखने में स्ट्रगलिंग एक्ट्रेस या मॉडल या फिर ऐसी कालगर्ल नजर आती थी जो अपने पेशे में बहुत ज्यादा कामयाब थी। उसका धंधा जो भी था सैक्स से गहरा ताल्लुक रखने वाला था। सैक्स उसमें यूँ भरा था जैसे बेहद रसीले अंगूर में भरा होता है और वह इस कदर जवान थी कि दावे के साथ कहा जा सकता था अंगूर में खट्टापन आना शुरू नहीं हुआ था।

वेटर प्राइवेट रूम का आर्डर लेकर किचिन में पास करने चला गया तो राजकुमार सिगरेट का अवशेष एश ट्रे में कुचलकर खड़ा हो गया।

मेजों के बीच से गुजरकर वह मेहराबदार दरवाजे पर पहुँचा और परदा खिसकाकर अंदर सरक गया।

उसने स्वयं को संकरे नीमरोशन गलियारे में खड़ा पाया। दूर दूसरे सिरे पर बने दरवाजों में से एक पर 'मेन्स' तथा दूसरे पर 'लेडीज' लिखा था। दायीं ओर निकटतम खुले दरवाजे पर

भारी परदा झूल रहा था। अंदर से बातचीत के धीमें स्वर सुनकर राजकुमार दरवाजे की बगल में दीवार से चिपक गया।

-"फोन पर कौन थी- तुम्हारी पत्नि?" युवती कह रही थी- "मैंने पहले कभी उससे बात नहीं की। काफी पढ़ी-लिखी लगती है।"

-"बहुत ही ज्यादा पढ़ी-लिखी है।" थापा के स्वर में कड़वाहट थी- "तुम्हें मोटल में मुझे फोन नहीं करना चाहिए था। कल रात मुझे पैकिंग करते पकड़ लिया था। वह समझ गई होगी।"

-"हमारे बारे में?"

-"हर एक बात के बारे में।"

-"तो क्या हुआ? हमें रोक तो नहीं सकती।"

-"तुम उसे नहीं जानती इसीलिए ऐसा कह रही हो। वह अभी भी मेरे साथ चिपकी हुई है। इस वक्त हर एक छोटी-छोटी बात से बड़ा भारी फर्क पड़ता है। मुझे भी यहाँ नहीं आना चाहिए था?"

-"मुझसे मिलकर तुम खुश नहीं हो?"

-"मैं बहुत ज्यादा खुश हूँ। लेकिन हमें थोड़ा इंतजार करना चाहिए था।"

-"मैंने सारा दिन इंतजार किया था, डार्लिंग। मगर तुम्हारा फोन तक नहीं आया। दूसरे मेरे पास सिगरेट खत्म हो गए थे। तुम तो जानते हो उन सिगरेटों के बगैर मेरी हालत कितनी खराब हो जाती है। इसलिए तुमसे मिलना जरूरी था। मैं यह भी जानना चाहती थी की क्या हुआ?"

-"कुछ नहीं हुआ। तरकीब कामयाब रही। काम हो गया।"

-"तो फिर हम जा सकते हैं?" युवती के स्वर में आतुरता थी- "अभी?"

-"अभी नहीं। मुझे कई काम करने है। अँटनी को कांटेक्ट करना है....।"

-"वह चला नहीं गया?"

-"न ही गया हो तो बेहतर होगा। उसके पास अभी मेरा पैसा है।"

-"वह दे देगा। उस पर भरोसा कर सकते हो। अँटनी बेईमान या ठग नहीं है। कब मिलना है उससे?"

-"बाद में। उसी अकेले से नहीं मिलना है मुझे।"

-"जब उससे मिलो तो मेरा भी एक काम कर देना।" युवती का स्वर याचना पूर्ण था- "उससे मेरे लिए कुछ सिगरेट माँग लेना। नेपाल में तो उनकी कोई कमी नहीं रहेगी। मुझे बस आज रात और सफर के लिए चाहिए। यह इंतजार मुझ पर भारी गुजर रहा है?"

-"तुम समझती हो मुझे इस इंतजार में मजा आ रहा है?" थापा कलपता हुआ सा बोला- "मुझ पर भी यह इतना भारी गुजर रहा है कि एक पल के लिए भी चैन नहीं है। अगर मेरा दिमाग ठिकाने होता तो मैंने हरगिज यहाँ का रुख नहीं करना था।"

-"फिक्र मत करो डार्लिंग। यहाँ कुछ नहीं हो सकता। इस रेस्टोरेंट का मालिक जीवनदास हमारे बारे में जानता है।"

-"और कितने लोग हमारे बारे में जानते है? और कितना जानते है? मोटल में भी एक प्रेस रिपोर्टर सूंघ लेने आया था....।"

-"इस किस्से को छोड़ो डार्लिंग।" लड़की चहकी- "यहाँ आओ और हमारे नए बंगले के बारे में बताओ। क्या हम वहाँ सारा दिन खुले आसमान के नीचे पड़े रह सकते हैं बिना कोई कपड़ा पहने? क्या हम चिड़ियों की चहचहाहट सुनते हुए मौज मजा कर सकते हैं? क्या नौकर हमारा हुक्म सुनने के लिए हाथ बाँधे खड़े रहेंगे? आओ न, मुझे सब बताओ।

दीवार से चिपके खड़े राजकुमार को अंदर कदमों की आहट सुनाई दी। उसने दरवाजे की चौखट और परदे के सिरे के बीच बनी पतली सी झिर्री से अंदर झाँका।

थापा लड़की की कुर्सी के पीछे गावदी की भांति खड़ा था। उसकी ठोढ़ी पर बैंड-एड चिपकी थी। उसके हाथ ऊपर उठे और लड़की के वक्षों पर कस गए।

थापा बोला, "अपनी टाँगें खोलो ना!"

लड़की सिसकते हुए फुसफुसा कर धीरे से बोली, "ऊँम्म... कुछ हो गया तो..!"

थापा फिर उसकी गर्दन पे अपने होंठ रगड़ते हुए बोला, "मैं भला अपनी जान को कुछ होने दुँगा... प्लीज़ एक बार कर लेने दो ना... तुम्हें मेरी कसम..!"

लड़की थापा की प्यार भरी चिकनी चुपड़ी बातें सुन कर एक दम से पिघल गयी। उसने लरजते हुए टाँगों में फंसी अपनी कैप्री को अपने पैरों मे गिरा दिया और फिर उसमें से एक पैर निकाल कर खड़े-खड़े अपनी टाँगें फैला दी। थापा ने एक हाथ से अपने लिंग को पकड़ कर लड़की की नितंब से नीचे ले जाते हुए उसकी योनी की फ़ाँकों पर रख कर अपने लिंग के सुपाड़ा को लड़की के योनी के छेद पर टिकाने की कोशिश करने लगा पर खड़े-खड़े उसे लड़की की योनी के छेद तक अपना लिंग पहुँचाने में परेशानी हो रही थी।

" तुम्हारी योनी के छेद पर लिंग लगा क्या?" थापा ने पूछा।

"ऊँम्म्म मुझे नहीं मालूम..!" लड़की बोली।

"बताओ ना..!" थापा ने फिर पूछा तो लड़की ने कसमसाते हुए कहा, "नहीं..!"

लड़की की योनी की फ़ाँकों में अपने लिंग को रगड़ कर छेद को तलाशते हुए थापा ने फिर पूछा, "अब..?"

लड़की ने फिर से ना में गर्दन हिला दी और थापा ने फिर से अपने लिंग को एडजस्ट किया और जैसे ही थापा के लिंग का दहकता हुआ सुपाड़ा लड़की की योनी के छेद से टकराया तो लड़की के पूरे जिस्म ने एक तेज झटका खाया। उसके होंठों पर शर्मीली मुस्कान फैल गयी और उसने अपने सिर को झुका लिया।

थापा ने पुछा, "अब?"

लड़की ने हाँ में सिर हिलाते हुआ कहा, "हुँम्म्म!"

थापा ने धीरे-धीरे अपने मूसल लिंग को ऊपर की ओर योनी के छेद पर दबाना शुरू कर दिया। थापा का लिंग लड़की की तंग योनी में धीरे-धीरे अंदर जाने लगा। लिंग के सुपाड़े की रगड़ लड़की को अपनी योनी की दीवारों पर मदहोश करती जा रही थी। उसके पैर खड़े-खड़े काँपने लगे और आँखें मस्ती में बंद होने लगी थी। थापा ने लड़की को थोड़ा सा धक्का देकर ठीक एक पेड़ के नीचे कर दिया और उसकी पीठ को दबाते हुए उसे झुकाना शुरू कर दिया। लड़की ने अपने हाथों को पेड़ के तने पर टिका दिया और झुक कर खड़ी हो गयी। लड़की की बाहर की तरफ़ निकाली नितंब देख कर थापा एक दम से पागल हो गया। उसने ताबड़तोड़ धक्के लगाने शुरू कर दिये। थापा की जाँघें लड़की के नितंबो से टकरा कर थप-थप कर रही थी और लड़की बहुत कम आवाज़ में सिसकारियाँ भरते हुए ठुकाई का मज़ा ले रही थी। उसके पैर मस्ती के कारण काँपने लगे थे। थापा ने लड़की की योनी से लिंग बाहर निकाला और फिर से एक झटके के साथ लड़की की योनी में पेल दिया। लड़की एक दम से सिसक उठी। थापा ने फिर से अपने लिंग को रफ़्तार से लड़की की योनी के अंदर-बाहर करना शुरू कर दिया। पाँच मिनट बाद लड़की और थापा फिर से झड़ गये। थापा ने अपना लिंग लड़की की योनी से बाहर निकाला और तिरपाल पर पड़ी हुई पैंटी को फिर से उठा कर अपना लिंग साफ़ करने लगा।

लड़की दीवार से अपना कंधा टिकाये हुए मदहोशी से भरी आँखों से ये सब देख रही थी। उसकी कैप्री अभी भी उसके एक पैर में फंसी हुई ज़मीन पे पड़ी हुई थी। थापा ने अपना लिंग साफ़ करने के बाद अपना अंडरवियर और पैंट पहनी और लड़की के पास आकर झुक कर बैठ गया और उसकी जाँघों को फैलाते हुए उसकी योनी को पैंटी से साफ़ करने लगा। लड़की बेहाल सी ये सब देख रही थी। फिर लड़की ने अपने कपड़े ठीक किये

पीछे से एक स्वर उभरा।

-“किसी चीज की तलाश है, सर?”

राजकुमार ने आवाज की दिशा में देखा। वही वेटर तंदूरी चिकन की प्लेटें ट्रे में उठाए मेहराबदार दरवाजे में खड़ा था।

-“मेन्स टायलेट।” राजकुमार ने कहा।

-“वो सामने है सर।” वेटर के होठों पर मुस्कराहट थी लेकिन लहजे में गुर्राहट- “साफ तो लिखा है।”

-“शुक्रिया। मेरी निगाह काफी कमजोर है।”

-“ठीक है। उधर जाइए।”

राजकुमार टायलेट में चला गया।

जब तक वह दोबारा बाहर निकला प्राइवेट रूम खाली हो चुका था। थापा के खाली गिलास के पास चिकन की प्लेटें अनछुई रखी थीं।

राजकुमार बार में आ गया।

काउंटर के पास वही वेटर खड़ा था।

-“वे कहां चले गए?” राजकुमार ने पूछा।

-“वेटर ने यूँ उसे घूरा मानों पहले कभी नहीं देखा था फिर एक केबिन की ओर चला गया।

राजकुमार रेस्टोरेंट से बाहर निकला।

गली सुनसान पड़ी थी। थापा कि जिप्सी भी जा चुकी थी।

राजकुमार ने अपनी कार में सवार होकर आस-पास के इलाके का चक्कर लगाया।

मेन रोड और सुभाष मार्ग के कार्नर के पास अचानक वही लड़की दिखाई दे गई।

सर झुकाए पैदल जा रही थी। हालांकि वह अकेली थी मगर उसके कदम बड़े ही खास अंदाज में इस ढंग से उठ रहे थे मानों स्टेज पर ऑडिएंस के सामने परफारमेंस दे रही थी।

राजकुमार ने अपनी कार साइड में रोक दी।

लड़की को काफी आगे निकल जाने दिया फिर उसका पीछा करने लगा।

लड़की एक अन्य सड़क पर मुड़ गई।

उस इलाके की इमारतें पुरानी थीं और सड़क की हालत खस्ता थी। सड़कों पर गुजरते लोगों के लिबास उनके निम्न मध्यम वर्गीय होने के सबूत थे। स्ट्रीट लाइट्स कम और अपेक्षाकृत अधिक फासले पर थीं।

एक कार्नर पर लोफर किस्म के लड़के खड़े थे। लड़की को देखकर उन्होने एक-दूसरे पर उसी को निशाना बनाते हुए फिकरे कसने शुरू कर दिये।

उनकी ओर ध्यान दिये बगैर वह आगे बढ़ गई।

राजकुमार सुस्त रफ्तार से पीछा करता रहा।

जल्दी ही वह एक चार मंजिला इमारत में दाखिल हो गई।

राजकुमार साइड में कार पार्क करके नीचे उतरा। सड़क की दूसरी साइड में जाकर इमारत का निरीक्षण किया। किसी जमाने में शानदार रही इमारत की हालत रख-रखाव के अभाव में खस्ता नजर आ रही थीं।

लड़की के नाम तक से अनजान राजकुमार को उम्मीद नहीं थी करीब दो दर्जन फ्लैटों वाली उस इमारत में उसे ढूंढ पाएगा।

वह वापस अपनी कार की ओर चल दिया।

वे लड़के अब कार के पास खड़े थे।

-"अभी जो लड़की यहाँ से गई थी।" राजकुमार ने पूछा- "वह कौन है?"

-"पता नहीं।" एक लड़के ने जवाब दिया।

-“तुम इसी इमारत में रहते हो?”

-“नहीं।”

राजकुमार अपनी कार में सवार होकर वापस लौट पड़ा।

५

भंडारी ट्रांसपोर्ट कंपनी ढूँढ़ने में ज्यादा दिक्कत पेश नहीं आई।

ऑफिस बंद हो चुका था। एक तरफ छः-सात ट्रक खड़े थे। बड़े से एक गोदाम के बाहर अधेड़ उम्र का एक आदमी बैठा बीड़ी फूँक रहा था। चौकीदार टाइप वह कंपनी का पुराना मुलाजिम लगता था।

राजकुमार को कार से उतरता देखकर खड़ा हो गया।

-"कहिए?"

-"मैं मिस्टर भंडारी से मिलना चाहता हूँ।"

-"साहब यहाँ नहीं है। अपने दामाद के साथ चले गए।"

-"दामाद के साथ?"

-"इन्स्पेक्टर बाजवा उनका दामाद है।"

-"इस वक्त कहाँ मिलेंगे? घर पर?"

-"हो सकता है। आप बिजनेस के सिलसिले में मिलना चाहते हैं?"

-"ऐसा ही समझ लो। मैंने सुना है तुम लोगों का एक ट्रक गायब है?"

-"हाँ।"

-"और एक ड्राइवर मारा गया?"

-"हाँ।"

-“ट्रक कैसा था?”

-“बाइस टन का सैमी ट्रेलर।”

-“ट्रक में था क्या?”

-“पता नहीं। साहब ने इस बारे में बाते करने से मना किया है।”

-“क्यों?”

-“वह बेहद परेशान है। ट्रक और उसमें भरा माल तो इंश्योर्ड थे लेकिन जब किसी ट्रांसपोर्ट कंपनी का ट्रक इस ढंग से गायब हो जाता है तो लोग तरह-तरह की बातें बनाते हैं। कंपनी का मजाक उड़ाते है।” उसने राजकुमार की फिएट पर निगाह डाली- “आप कौन है? प्रेस रिपोर्टर?”

-“नहीं।” राजकुमार ने झूठ बोला।

-“बीमा कंपनी वाले?”

-“नहीं। ट्रक में क्या माल था?”

अधेड़ ने संदेहपूर्वक उसे घूरा। फिर पास ही पड़ी लोहे की करीब तीन फुट लंबी मोटी रॉड उठा ली।

-“तुम कौन हो और यह सब क्यों पूछ रहे हो?”

-“नाराज मत होओ....।”

-अधेड़ का चेहरा कठोर था। गरदन की नसें तन गई थीं। लोहे की रॉड को उसने यूँ हाथों में थामा हुआ था मानों किसी भी क्षण हमला कर देगा।

-“मेरे एक दोस्त को आवारा कुत्ते की तरह शूट कर दिया गया और तुम कहते हो नाराज न होऊँ।” वह गुर्राता सा बोला- “साफ-साफ बताओ यह सब क्यों पूछ रह हो?”

राजकुमार पूर्णतया सतर्क और किसी भी आकस्मिक हमले से निपटने के लिए तैयार था।

-“तुम्हारा नाराज होना अपनी जगह सही है। हाईवे से तुम्हारे उस दोस्त को मैं ही उठाकर लाया था और मुझे भी यह अच्छा नहीं लगा।”

-“कांती लालकी लाश को तुम उठाकर लाए थे?”

-“जब मैं उसे लाया वह जिंदा था। उसकी मौत कुछ देर बाद अस्पताल में हुई थी।”

-“कांती लालने कुछ बताया था?”

-“क्या?”

-“यही कि उसे किसने शूट किया था?”

-“नहीं। वह बेहोश था और उसी हालत में दम तोड़ दिया। मैं उसके हत्यारे का पता लगाना चाहता हूँ।”

-“क्यों? तुम पुलिस अफसर हो?”

-“नहीं। लेकिन मैं पुलिस वालों के साथ मिलकर काम करता हूँ।” राजकुमार ने कहा। फिर झूठ का सहारा लेकर बोला- मैं प्राइवेट जासूस हूँ।”

-“ओह तुम्हें भंडारी साहब ने मदद के लिए बुलाया है?”

-“अभी नहीं।”

-“तुम समझते हो, मदद मांगेंगे?”

-“हाँ, बशर्ते कि वह समझदार है।”

अधेड़ तनिक मुस्कराया। उसने लोहे कि रॉड पास पड़ी पेटी पर रख दी।

-“वह ऐसा नहीं करेगा।”

-“क्यों?”

-“इसलिए की अव्वल दर्जे का कंजूस है।”

राजकुमार ने जेब से प्लेयरज गोल्ड फ्लैक का पैकेट निकाल कर उसे सिगरेट आफर की और उसकी अपनी सिगरेटें सुलगाईं।

–“तुम चौकीदार हो?”

-“हाँ। मेरा नाम सूरज प्रकाश है।”

-“मैं राजकुमार हूं। कांती लालकिसी खास रूट पर ट्रक चलाता था?”

-“नहीं। वैसे वह ज़्यादातर करीमगंज जाया करता था। आज भी वहीं से आ रहा था स्पेशल कंसाइनमेंट लेकर।”

-“ट्रक कैसा था?”

-“बीस टन की क्षमता वाला टाटा का बंद सैमी ट्रेलर।” उसने गेट के पास खड़े एक ट्रक की ओर इशारा किया- “ठीक वैसा।”

एल्युमिनियम पेंट वाले उस ट्रक पर लाल काले अक्षरों में लिखा था- भंडारी ट्रांसपोर्ट कंपनी, मनाली।

-“उसमें माल क्या लदा था?”

-“यह तो भंडारी साहब ही बता सकते हैं। अपने एक्सीडेंटों के बाद से मैं सिर्फ चौकीदार बनकर रह गया हूँ। ऐसी बातों की जानकारी रखना मेरा काम नहीं है।”

-“काम भले ही न हो लेकिन तुम पहुँचे हुए आदमी हो।” राजकुमार मुस्कराकर उसे फूँक देता हुआ बोला- “तुम्हारी तजुर्बेकार निगाहों से इस कंपनी की कोई बात छुपी नहीं रह सकती। जानकारियाँ खुद-ब-खुद तुम्हारे पास आ जाती हैं। अगर मेरा ख्याल गलत नहीं है तो तुम भी पहले ड्राइवर रह चुके हो- बहुत ही कुशल ड्राइवर।”

-“वो अब गई गुजरी बात हो गई।” अधेड़ आह सी भरकर बोला- “मेरे वक़्तों के लोग जानते हैं सूरज प्रकाश लाजवाब ड्राइवर हुआ करता था। बड़ी-बड़ी ट्रांसपोर्ट कंपनियों के मालिक मुझे नौकरी देने के लिए मेरे आगे-पीछे घूमते थे.... खैर, अब उन बातों को याद करना बेकार है। तुम लोड के बारे में पूछ रहे थे?”

-“हाँ।”

-“क्या तुम इस बात को अपने तक रख सकते हो?”

-“मैं वादा करता हूँ।”

-“मैंने बूढ़े को इन्स्पेक्टर से बातें करते सुन लिया था। उसमें शराब थी।”

-“पूरा ट्रक लोड?”

-“हाँ। पूरा लोड सत्रह लाख रुपए में इंश्योर्ड था।”

-“कांती लालका भी बीमा था?”

-“उसका लाइफ इंशयोरेंस तो था ही। हर एक ट्रिप पर बीस हजार रुपए का अलग से कंपनी उसका बीमा कराती थी। पहले मैं तुम्हें बीमा कंपनी का आदमी समझ बैठा था इसलिए सीधे मुँह बात नहीं की। क्योंकि उन लोगों ने ट्रक के गायब होने के लिए सीधे कांती लालको ही जिम्मेदार समझना था ताकि उसे कसूरवार ठहरा कर वे लोड के बीमें की रकम देने से बच जाएँ।”

-"कांती लालको कोई कसूरवार नहीं ठहरा सकता।" राजकुमार ने आश्वासन दिया।

-"लेकिन यह बात मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आ रही है। उसे कड़ी हिदायतें थीं कि किसी भी वजह से किसी के लिए भी ट्रक नहीं रोका जाए। बूढ़ा भंडारी अपने ड्राइवरों को हमेशा ताकीद किया करता है अगर खुद राष्ट्रपति भी लिफ्ट लेने के लिए ट्रक रुकवाना चाहे तो रोकना नहीं। अगर कोई रास्ता रोकने की कोशिश करता है तो उसे कुचलते हुए गुजर जाओ।"

-"इसके बावजूद, हालात से जाहिर है, कांती लालको ट्रक रोकना पड़ा था। क्यों?"

-"मेरी समझ में सिर्फ एक ही वजह हो सकती है। कांती लालअपनी हिदायतों को भूलकर हाईवे पर किसी के लिए ट्रक रोकने की बेवकूफी कर बैठा और यही उसकी जान की दुश्मन बन गई।"

-"कांती लालतुम्हारा दोस्त था?"

-"उम्र के फर्क के बावजूद मैं उसे पसंद करता था- बहुत ही ज्यादा। हम दोनों एक ही बोर्डिंग हाउस में रहते थे। मुझ पर उसके एक अहसान का कर्जा भी था। जब मेरे पैट्रोल टैंकर वाले ट्रक के ब्रेक फेल हुए कांती लालमेरा हैल्पर हुआ करता था। साठ-सत्तर की स्पीड से दौड़ता ट्रक खाई में जा गिरा। कांती लालट्रक के नीचे गिरने से पहले ही कूद गया था और अपनी जान की परवाह न करके मुझे ट्रक से निकालकर दूर खींच ले गया था।"

-"कांती लालने किसके लिए ट्रक रोका हो सकता था? मैंने सुना है उसे औरतों में बड़ी भारी दिलचपी थी।"

-"जवानी में किसे नहीं होती?" वह मुस्कराया- "अपने दौर में मुझे भी थी।" और हर एक रूट पर मैंने दो-तीन पाल रखी थीं।"

-"कांती लालकी भी पालतु रही होंगी?"

-"जरूर होंगी। एक की जानकारी तो मुझे भी है। हालांकि यकीन के साथ मैं नहीं जानता।"

-“वह मीना भंडारी तो नहीं थी?”

-“मीना भंडारी? नहीं। वह भंडारी की बेटी है उसे भला अपने बाप के किसी ट्रक ड्राइवर में क्या दिलचस्पी होनी थी?”

-“मैंने तो सुना है कांती लालउसमें बड़ी भारी दिलचस्पी लेता था।”

-“एक मायने में यह सही भी था। कांती लालउसके बारे में काफी बातें किया करता था। उसे मीना का दीवाना भी कहा जा सकता है। लेकिन मीना उससे कभी नहीं मिली। मीना के इंटरेस्ट दूसरे हैं। कांती लालकी ज़िंदगी में यह सबसे बड़ा गम था। लेकिन असल में इसकी कोई अहमियत नहीं थी। मेरा कहने का मतलब है जिस दूसरी लड़की की बात मैं कर रहा हूँ, वह मीना से अलग तरह की थी। हफ्ते-दस दिन से वह बराबर कांती लालके ख्यालों में बसी रहती थी। कांती लालने मुझे बताया की वह उसकी दीवानी थी। मुझे लगा वह अपनी औकात और हैसियत को भूल बैठा था ठीक उसी तरह जैसे उसने मीना के मामले में कोशिश की थी। वह लड़की वाकई हंगामाखेज और क्लब में सिंगर है।”

-“तुम उससे मिले थे?”

-“नहीं। कांती लालने क्लब के बाहर लगी उसकी फोटो मुझे दिखाई थी।”

-“यहीं। इसी शहर में?”

-“हाँ। सुभाष रोड पर रॉयल क्लब है। पिछले कुछेक रोज से कांती लालका ज़्यादातर वक्त वही गुजरता था और जिस ढंग से उसके बारे में वह बातें करता था उससे लगता है उसके लिए ट्रक भी वह रोक सकता था।”

-“उस लड़की का नाम क्या है?”

-“कांती लालउसे एली कहता था।” उसने अपने बालों में हाथ फिराया- “लेकिन इस मामले में एक बात मुझे अजीब लगती है। जितनी तेजी और जिस ज़ोर-शोर से वह कांती लालपर मर मिटी थी उससे लगता है इसके पीछे जरूर उसकी कोई तगड़ी वजह होनी चाहिए।”

-“क्यों? कांती लालसेहतमंद और देखने में भी अच्छा खासा था। हो सकता है उसे ऐसे ही युवक पसंद हों।”

-“तुम्हारी बात अपनी जगह सही है लेकिन आमतौर पर लड़कियां उससे दूर ही भागती थीं। वह थोड़ा खर दिमाग और हाथ धोकर लड़कियों के पीछे पड़ जाने वाला आदमी था। जैसा कि मीना भंडारी के मामले में हुआ।”

-“क्या हुआ?”

-“कुछ खास नहीं। उसकी वजह से कांती लालएक लफड़े में पड़ गया था।”

-“क्या मीना के पीछे भी वह बुरी तरह पड़ गया था?”

-“हाँ। लेकिन अब इन बातों से कोई फायदा नहीं है। कांती लालमर चुका है अब किसी औरत को परेशान नहीं कर पाएगा। हालांकि इसके पीछे किसी का अहित करने कि उसकी नीयत कभी नहीं रही। बुनियादी तौर पर वह अच्छा आदमी था। ट्रक ड्राइवर के तौर पर भी उसका रिकार्ड एकदम बड़िया और बेदाग रहा है।”

-“मीना कि वजह से वह जिस लफड़े में पड़ा वो क्या था?”

अधेड़ ने बेचैनी से पहलू बदला।

-“दरअसल औरतों के मामले में वह थोड़ा क्रेक था- खासतौर पर मीना के मामले में तो था ही। पिछले साल मीना ने उसे थोड़ी लिफ्ट दी और दो-तीन बार उससे बातें कर लीं। कांती लालपर इस हद तक दीवानगी का भूत सवार हो गया कि हर वक्त उसके आसपास मंडराने लगा। रात में उसके फ्लैट की खिड़कियों में झांकने जैसी हरकतें शुरू कर दी। हालांकि इसके पीछे मीना का कोई अहित करने का मकसद उसका कभी नहीं रहा। मगर अपनी हरकतों की वजह से पुलिस द्वारा पकड़ा गया।”

-“किसने पकड़ा था उसे।”

-“इन्स्पेक्टर बाजवा ने। तगड़ी डांट फटकार लगाने के साथ-साथ दो-चार हाथ भी जड़ दिए और उससे कहा किसी डाक्टर के पास जाकर अपने दिमाग का इलाज कराए।”

-“इस लड़की एली के बारे में तुमने इन्स्पेक्टर को भी बताया था?”

-“नहीं। उसे तो मैं घड़ी देखकर टाइम तक कभी नहीं बताऊंगा।”

-“क्यों? वह तुम्हें पसंद नहीं है?”

-“बिल्कुल नहीं। वह अपने अलावा हर किसी को बेवकूफ समझता है। बूढ़ा भंडारी भी उसे खास पसंद नहीं करता लेकिन दामाद होने की वजह से बस बर्दाश्त करता रहता है।”

-“भंडारी की कितनी बेटियाँ है?”

-“दो। बड़ी बेटी लतिका आकाश बाजवा को ब्याही है। पुलिस में भर्ती होने से पहले कुछ महीने बाजवा ने इसी ट्रांसपोर्ट कंपनी में काम किया था। तभी लतिका उसके संपर्क में आई और उसे दिल दे बैठी। तब बूढ़े ने इस पर बड़ी हाय-तौबा मचाई थी। दोनों ने उसकी मर्जी के खिलाफ शादी कर ली फिर धीरे-धीरे आपस में सुलह हो गई।”

-“भंडारी रहता कहाँ है?”

-“अधेड़ ने पता बता दिया।”

राजकुमार उससे विदा लेकर कार में सवार हो गया।

६

आगे-पीछे लंबे-चौड़े लान से घिरी भंडारी की कोठी पुरानी लेकिन काफी बड़ी थी। पिछले लान में झाड़ झंखाड़ों के बीच कई कारों और ट्रकों की बॉडियाँ पड़ी जंग खा रही थी।

सामने वाले लॉन की हालत अपेक्षाकृत बेहतर थी। ड्राइव वे के दोनों ओर यूक्लिप्टिस के ऊँचे पेड़ों की कतारें थीं।

राजकुमार कार से उतर कर प्रवेश द्वार पर पहुंचा।

तभी एक-एक करके तीन फायरों की आवाज सुनाई दी।

राजकुमार ने दरवाजा खोलने की कोशिश की तो उसे लॉक्ड पाया।

तीन गोलियां और चलीं। कोठी के अंदर कहीं संभवतया बेसमेंट में। उन्हीं के बीच ठक-ठक की आवाज प्रवेश द्वार की ओर आती सुनाई दी। फिर एक स्त्री स्वर उभरा।

-"कौन आकाश?"

राजकुमार ने जवाब नहीं दिया।

बाहर वरांडे में रोशनी हुई फिर भारी दरवाजा खोला गया। ऊँचे कद की भारी वक्षों वाली पैंतीसेक वर्षीया उस युवती की आँखों में अजीब सी चमक थी।

-"ओह, आयम सॉरी। आई वाज एक्सपैकटिंग माई हसबैंड।"

-"मिसेज बाजवा?" राजकुमार ने पूछा।

प्रत्यक्षत: उसकी खोजपूर्ण आँखें राजकुमार के चेहरे पर जमी थीं लेकिन वह उससे परे अंधेरे में कहीं देखती प्रतीत हुई किसी ऐसे शख्स को जिससे डरती थी या प्यार करती थी।

-"यस। हैव वी मैट बिफोर?"

-“मैं आपके पति से मिला था।” राजकुमार बोला- “गोलियाँ कौन चला रहा है?”

-“पापा। जब भी वह परेशान होते हैं बेसमेंट में जाकर टारगेट को शूट करने लगते हैं।”

-“उनकी परेशानी की वजह आपसे नहीं पूछूँगा। मैं उनसे ही बात करना चाहता हूँ उनके खोए ट्रक के बारे में।” अपना नाम और पेशा बताकर राजकुमार ने पूछा- “मैं अंदर आ सकता हूँ?”

-“मुझे तो कोई ऐतराज नहीं है। लेकिन घर की हालत ठीक नहीं है। मुझे अपना घर भी संभालना होता है इसलिए यहाँ ज्यादा ध्यान नहीं दे सकती। मैंने बहुत कोशिश की है पापा किसी औरत को रख लें मगर वह औरत को घर में घुसने भी नहीं देना चाहते।”

वह दरवाजे से अलग हट गई।

उसकी बगल से गुजरते राजकुमार ने गौर से देखा। अगर वह अपने रख-रखाव की ओर ध्यान देती तो यकीनन खूबसूरत नजर आनी थी। लेकिन चेहरा मेकअप विहीन था। छोटी लड़कियों की तरह कटे बाल दोनों ओर गालों पर बिखरे थे। ढीली और लटकी सी नजर आती पोशाक से उसके शरीर का स्पष्ट आभास मिल रहा था।

-“पापा। आप से कोई मिलने आए है।”

-“कौन है?” भरी आवाज में पूछा गया फिर फायर की आवाज गूंजी।

-“प्रेस रिपोर्टर।”

-“उससे कहो थोड़ा इंतजार करे।”

फर्श के नीचे पाँच और गोलियाँ चलाई गई। उनकी गूँज की कंपन राजकुमार ने अपने पैरों के तले महसूस की।

बेसमेंट की सीढ़ियों से ऊपर आती रोशनी में बुत बनी खड़ी युवती के शरीर में गोलियों की आवाज सुनकर हर बार ऐसी हरकत हुई थी मानों वो किसी हारर फिल्म के बैकग्राउंड म्यूजिक की गूंज थी जिसका असर उसके दिमाग से शुरू होकर फैलता जा रहा था।

सीढ़ियों पर भारी पदचाप उभरी।

युवती पीछे हट गई।

ऊपर पहुँचे लंबे-चौड़े आदमी ने हिकारत से युवती को देखा।

-"मैं जानता हूँ, लतिका। तुम्हें गोलियों की आवाज पसंद नहीं है। तुम चाहो तो अपने कानों में रुई ठूँस सकती हो।"

-"मैंने कुछ नहीं कहा, पापा। मिस्टर राजकुमार आपसे मिलने आए हैं।"

उस आदमी की चमड़ी में झुर्रियाँ पड़ी थीं। कंधे झुके हुए थे मगर सुर्ख आँखें दबी कुचली वासना से सुलगती सी प्रतीत हो रही थीं।

-"कहिए?" वह बोला- "मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ।" लेकिन उसके लहजे से जाहिर था किसी के लिए कुछ भी करने की कोई इच्छा उसकी नहीं था।

राजकुमार ने बताया वह इत्तफाक से इस मामले में फँस गया था और अब फँसा ही रहना चाहता था ताकि इस मामले की तह तक पहुँचकर असलियत को सामने ला सके।

-"यह तुम्हारी अपनी मर्जी है।" भंडारी ने कहा- "मैं इसमें क्या कर सकता हूँ?"

-"मुझे आपका सहयोग चाहिए।"

-"तुम जानते हो, मेरा दामाद पुलिस इन्स्पेक्टर है। इस मामले की छानबीन वही कर रहा हैं।"

-"जी हाँ।"

-"तो फिर तुम्हें किसलिए सहयोग दूँ? यह पुलिस का काम है। वे कर रहे हैं।"

-"पुलिस वाले चौबीसों घंटे इसी केस पर काम नहीं कर सकते। उनके ऊपर और भी बहुत सी जिम्मेदारियाँ हैं।"

-"और तुम खुद को उनसे ज्यादा काबिल समझते हो।"

-"तजुर्बेकार और हौसलामंद भी।"

-"मुझे बेवजह सरदर्दी मोल लेने का कोई शौक नहीं है। मेरा अपना कोई नुकसान अभी तक नहीं हुआ है। ट्रक और उस पर लदा माल दोनों इंश्योर्ड थे। अगर ट्रक नहीं मिला तो मैं बीमा कंपनी से क्लेम करके उसकी कीमत वसूल कर लूँगा।"

-"लेकिन आपकी साख का क्या होगा? जो लोग आपकी कंपनी से माल भेजते हैं उन पर इसका बुरा असर पड़ सकता है। आपकी कंपनी बदनाम हो सकती है।"

भंडारी ने चाँदी जैसे बालों वाला अपना सर हिलाया।

-"ओह, समझा। तुम थापा से मिल चुके हो।"

-"उसका इससे ताल्लुक क्या है?"

-"ट्रक में भरा माल उसका ही था।"

-"क्या माल था?"

-"विस्की की बोतलें।"

-"यानि उस ट्रक लोड विस्की का मालिक वही है?"

-"एक मायने में।"

-"कैसे?"

-"डिस्ट्रीब्युटर्स ने माल उसी के पास भेजा था।"

-"लेकिन माल उस तक नहीं पहुँचा। इस सूरत में वो नुकसान किसको भरना पड़ेगा?"

-"मुझे।"

-"लेकिन आपने तो कहा है माल इंश्योर्ड था।"

-"सिर्फ अस्सी परसैंट। बीस परसैंट मुझे अपनी जेब से भरना होगा।"

-"अंदाजन कितनी रकम बनेगी?"

-"तीन लाख चालीस हजार।"

-"मैं आपकी यह रकम बचा सकता हूँ।"

-"कैसे?"

-"मुझे जानकारी देकर।"

-"माल वापस दिलाकर।"

-"बदले में मुझे क्या करना होगा?"

-"मेरे साथ सहयोग।"

-"कैसे?"

-"इस सबसे तुम्हें क्या फायदा होगा?"

-"कुछ नहीं। मैं खुराफाती आदमी हूँ। ऐसे झमेलों में पड़ना और उनसे निकलना मेरा शौक और धंधा दोनों हैं?"

-"मुझे कुछ खर्चा तो नहीं करना होगा?"

-"बिल्कुल नहीं। अलबत्ता जरूरत पड़ने पर आपको यह जरूर कहना होगा कि इस मामले में आप मेरी मदद ले रहे हैं।"

बूढ़ा भंडारी धूर्ततापूर्वक मुस्कराया।

-"मुझे मंजूर है। आओ।"

-"राजकुमार उसके साथ लिविंग रूम में पहुँचा। वहाँ मौजूद फर्नीचर समेत हरएक चीज पर जमी धूल की परत से जाहिर था हफ्तों से झाड़ पोंछ नहीं की गई थी। दीवार पर टंगी दोनाली बंदूक ही एक ऐसी चीज थी जिसे साफ देखा जा सकता था।

वह दीवान पर बैठ गया।

-"आप बड़े ही होशियार बिजनेसमैन हैं।" राजकुमार कुर्सी पर बैठता हुआ बोला- "पैसा खर्चना नहीं चाहते।

हालांकि आपका ड्राइवर मारा गया, ट्रक गायब है और बेटी का भी पता नहीं चल रहा है।"

-"कौन सी बेटी की बात कर रहे हो?"

मीना की। वह गायब है।"

-"तुम पागल हो। वह थापा के मोटल में काम करती है।"

-"अब नहीं कर रही। मिसेज थापा के मुताबिक वह पिछले शुक्रवार से गायब है। हफ्ते भर से उसकी शक्ल भी उन्होने नहीं देखी।"

-"ये बातें मुझे क्यों नहीं बताई जातीं?" वह कुपित स्वर में चिल्लाया- "लतिका! कहाँ मर गई तुम?"

वह एप्रन पहने दरवाजे में प्रगट हुई।

-"क्या बात है, पापा? मैं किचिन में सफाई कर रही थी।" अपने पिता को देखती हुई यूँ हिचकिचाती सी अंदर आई मानों किसी दरिंदे की मांद में आ गई थी- "घर की हालत

कबाड़ख़ाने जैसी हो रही है।"

-"घर की हालत को गोली मारो। यह बताओ तुम्हारी बहन कहां भाग गई? वह फिर किसी मुसीबत में फँस गई है?"

-"मीना मुसीबत में?"

-"यही तो मैं तुमसे पूछ रहा हूँ। मुझसे ज्यादा वह तुमसे मिलती है। शहर में हर कोई मेरे मुक़ाबले में उससे ज्यादा मिलता है मेरे अलावा बाकी सबको उसकी खबर रहती है।"

-"अगर आपको उसकी खबर नहीं रहती या वह आपसे नहीं मिलती तो इसमें आपका ही कसूर है। मैं सिर्फ इतना जानती हूँ किसी मुसीबत में वह नहीं है।"

-"तुम हाल में उसे मिली थीं?"

-"इस हफ्ते तो नहीं।"

-"फिर कब मिली थी।?"

-"पिछले हफ्ते।"

-"किस रोज?"

-"बुधवार को हमने लंच साथ ही लिया था।"

-"उसने नौकरी छोडने के बारे में कुछ कहा था?"

-"नहीं। क्या उसने नौकरी छोड़ दी?"

-"ऐसा ही लगता है।"

भंडारी उठकर कोने में रखे टेलीफोन उपकरण के पास पहुँचा और एक नंबर डायल किया।

लतिका ने व्याकुलतापूर्वक राजकुमार को देखा।

-"क्या मीना के साथ कुछ हो गया है?"

-"अभी ऐसा कोई नतीजा निकाल बैठना ठीक नहीं है। आपके पास मीना की कोई हाल में खींची गई फोटो है?"

-"मेरे घर में तो है। यहाँ है या नहीं मुझे नहीं पता। जाकर देखती हूँ।"

वह यूँ कमरे से निकली मानों वहाँ उसका दम घुट रहा था। भंडारी रिसीवर रखकर असहाय भाव से हाथ फैलाए राजकुमार की ओर पलटा।

-"उसके फ्लैट से कोई जवाब नहीं मिल रहा। या तो वहाँ कोई नहीं है या फिर फोन खराब है। क्या थापा को भी पता नहीं मीना कहाँ है?"

-"उसका कहना है, नहीं।"

-"तुम समझते हो। वह झूठ बोल रहा है?"

-"उसकी पत्नि तो यही समझती है।"

-"अब बरसों बाद उसकी आँखें खुली है। वह आदमी हमेशा उसे बेवकूफ बनाता रहा है।"

-"मुझे नहीं मालूम। वैसे यह थापा है क्या चीज?"

मेरी राय में तो फ्रॉड है। दसेक साल पहले शहर में आया था। एयर फोर्स में पब्लिक रिलेशन्स ऑफिसर जैसा कुछ हुआ करता था। उन दिनों जवान था। उसकी यूनिफार्म की वजह से बहुत सी लड़कियाँ उसकी ओर खिंच गई थीं। मीना भी उन्हीं में से एक थी।" अचानक वह यूँ खामोश हो गया मानों उसे लगा की बहुत ज्यादा बोल गया था। फिर जल्दी से बोला- "जिस लड़की से उसने शादी की वह रिटायर्ड जज दलबीर सिंघ की बेटी थी। जज का परिवार शहर के सबसे इज्जतदार परिवारों में से था। लेकिन थापा ने उसकी इकलौती लड़की को फँसाकर अपने इशारों पर नचाना शुरू कर दिया। शादी के एक साल बाद ही उसने जज का फार्म बेच दिया और रीयल एस्टेट के धंधे में लग गया। फिर उसमें

मोटा नुकसान उठाने के बाद शराब का थोक व्यापारी बन गया फिर मोटल का बिजनेस शुरू कर दिया। वो भी अब जल्दी ही बंद होने वाला है। असलियत यह है बिजनेस की कोई समझ उसे नहीं है। जब उसने शुरुआत की थी मैंने कह दिया था छह-सात साल से ज्यादा नहीं टिक पाएगा। लेकिन वह नौ साल टिक गया।''

-''उसकी माली हालत अब कैसी है?''

-''सुना है, काफी खराब है।''

-''ऐसे आदमी द्वारा करीब बीस लाख की शराब का आर्डर दिया जाना अपने आपमें बहुत बड़ी बात है।''

-''बेशक है।''

-''डिस्ट्रीब्यूटर्स ने उसे इतना माल सप्लाई कैसे करा दिया?''

-''उसके रसूखों की वजह से। खैर, मुझे कोई मतलब इससे नहीं है। मेरा काम माल ढोना है।''

-''थापा के लिए माल ढोने का काम आप ही करते है?''

-''हाँ।''

-''क्या वह जानता था आपका कौन सा ड्राइवर उसका माल लाएगा?''

-''मेरे ख्याल से तो जानता था। क्योंकि कांती लालहमारा सबसे कुशल और भरोसेमंद ड्राइवर था। इतनी कीमत के माल को सिर्फ वही पूरी हिफाजत के साथ ला सकता था।'' भंडारी ने उसे घूरा- ''तुम कहना क्या चाहते हो? क्या तुम समझते हो उसने खुद ही अपनी विस्की को हाईजैक करा लिया?''

-''इस संभावना से इंकार तो नहीं किया जा सकता।''

-''अगर ऐसा हुआ तो मैं उस हरामजादे की तिक्का बोटी कर दूँगा।''

-“इतनी जल्दी ताव खाने की जरूरत नहीं है।”

-“मैं यकीनी तौर पर जानना चाहता हूँ।”

-“और तथ्य इकट्ठा करने के बाद बता दूँगा।” राजकुमार ने कहा- “अब मैं आपकी बेटी मीना के बारे में कुछ जानना चाहता हूँ।”

-“क्या?”

-“वह पहले भी कभी मुसीबत में पड़ी है?”

-“हाँ। लेकिन कोई सीरियस बात नहीं थी।” वबेजा सफाई देता हुआ सा बोला- “मीना की माँ उसके बचपन में ही मर गई थी। मैंने और लतिका ने उसकी परवरिश में कोई कमी बाकी नहीं छोड़ी। लेकिन हर वक्त उस पर निगाह हम नहीं रख सकते थे। ज्यादा पाबंदियाँ भी हमने उस पर नहीं लगाईं। जब वह दसवीं क्लास में थी आजाद ख्याल और तेज रफ्तार से ज़िंदगी जीने में यकीन रखने वाले कुछेक लड़के लड़कियों के साथ घर से भाग गई थी। फिर जब उसने कमाना शुरू किया तो कमाई से ज्यादा खर्च करने लगी। मुझे कई बार उसके उधार चुकाने पड़े।”

-“थापा के लिए कब से काम कर रही है?”

-“तीन-चार साल से। मीना ने उसकी सेक्रेटरी के तौर पर शुरूआत की थी। फिर थापा ने उसे मैनेजमेंट का कोर्स कराया ताकि वह मोटल की पूरी ज़िम्मेदारी संभाल सके। मैं चाहता था वह घर पर ही रहकर मेरे धंधे में हाथ बटाए- एकाउंट्स वगैरा संभालने में मदद करे मगर मीना को यह पसंद नहीं था। वह अपनी ज़िंदगी को अपने ही ढंग से जीना चाहती थी।”

-“वह कैसे अपनी ज़िंदगी गुजारती है?”

-“यह मुझसे मत पूछो।” भंडारी गहरी सांस लेकर बोला- “मीना सोलह साल की उम्र में ही घर छोड़ गई थी। तब से मेरे साथ उसकी मुलाकत तभी होती है जब उसे किसी चीज की जरूरत होती है।” संक्षिप्त मौन के पश्चात बोला- “मीना ने कभी मेरी परवाह नहीं की। दोनों बहनों में से किसी ने भी नहीं की। महीने में एक बार लतिका मुझसे मिलने चली आती है।

शायद उसके पति ने उसे ऐसा कह रखा है ताकि मेरे मरने के बाद वह मेरा बिजनेस जायदाद वगैरा हासिल कर सके। लेकिन इसके लिए उस हरामजादे को लंबा इंतजार करना होगा।" उसका स्वर ऊँचा हो गया- "मैं आसानी से मरने वाला नहीं हूँ। पूरे सौ साल जिऊंगा।"

-"कांग्रेचुलेशन्स।"

-"तुम इसे मजाक समझ रहे हो?"

-"जी नहीं।"

-"भले ही तुम इसे मजाक समझो लेकिन असलियत यह है मेरे परिवार में पिछली तीन पुश्तों से कोई भी सौ साल से कम नहीं जिया। मैं भी सौ साल ही जीने का इरादा रखता हूँ।" अचानक वह फिर मीना का जिक्र ले आया- "क्या मीना का इस मामले से कोई संबंध है?"

-"हो सकता है।"

-"कैसे?"

-"वह थापा से जुड़ी है और मैंने सुना है कांती लालसे भी उसका गहरा रिश्ता था।"

-"तुमने गलत सुना है। यह ठीक है कांती लालउसके पीछे पड़ा हुआ था लेकिन मीना आँख उठा कर भी उसकी ओर नहीं देखती थी। वह कांती लालसे डरती थी। पिछली गर्मियों में एक रात वह यहाँ आई। उसे ऐसी कोई चीज चाहिए थी...।"

अचानक भंडारी खामोश हो गया।

-"कैसी चीज चाहिए थी?" राजकुमार ने टोका।

-"जिससे अपनी हिफाजत कर सके। कांती लालउसे परेशान कर रहा था। उसकी बेहूदा हरकतों ने मीना का बाहर निकलना दूभर कर दिया था। मैंने कहा कांती लालको नौकरी से

निकालकर शहर से बाहर करा दूँगा। लेकिन किसी की रोजी रोटी पर लात मारने वाली बात मीना को पसंद नहीं आई। वह बहुत ही नरमदिल लड़की है, किसी का अहित नहीं चाहती। इसलिए मैंने उसे वही चीज दे दी जो वह माँग रही थीं।"

-"गन"

-"हाँ। चौंतीस कैलीबर की मेरी पुरानी रिवॉल्वर थी। लेकिन अगर तुम समझते हो कि मीना ने उस रिवॉल्वर से कांती लालको शूट किया था, तो गलत समझ रहे हो। मीना को गन सिर्फ इसलिए चाहिए थी, ताकि वह कांती लालसे खुद को बचा सके। इससे ज्यादा अहमियत उसके लिए कांती लालकी नहीं थी।"

-"लेकिन थापा की है?"

भंडारी ने सर झुका लिया।

-"यह मैं नहीं जानता।"

-"क्या थापा और मीना साथ-साथ रहते रहे हैं?"

-"ऐसा ही लगता है।" भंडारी के स्वर में कड़वाहट थी- "पिछले साल मैंने सुना था उसके फ्लैट का किराया थापा ही दे रहा था।"

-"किसकी बातें कर रहे हो?" दरवाजे से आ पहुँची लतिका ने पूछा।

भंडारी ने कनखियों से उसे देखा।

-"थापा की। मीना और थापा की।"

लतिका तेजी से अंदर आई।

-"यह झूठ है। इस तरह का झूठ बोलते हुए आपको खुद पर शर्म आनी चाहिए। इस शहर के लोग किसी के बारे में कुछ भी कह सकते हैं। कहते रहते हैं।"

-"मुझे भी शर्म आती है लेकिन अपने आप पर नहीं। मैं इसमें कर ही क्या सकता था। मीना को रोक सकने का कोई तरीका मेरे पास नहीं था।"

-"यह सब बकवास है।" लतिका तीव्र स्वर में बोली- "किसी शादीशुदा आदमी से रिश्ता कायम करने वाली लड़की मीना नहीं है।"

-"यह सिर्फ तुम कहती हो।" भंडारी बोला- "मैंने कुछ और ही सुना है।"

-"अपनी गंदी जुबान को बंद रखो।" लतिका गुर्राई- "आपकी तमाम हरकतों के बावजूद मीना एक अच्छी लड़की है। मैं जानती हूँ, उसे खराब करने की कोशिश खुद आपने शुरू की थी...।"

भंडारी की गर्दन की नसें तन गईं। चेहरा गुस्से से तमतमाने लगा।

-"तुम अपनी जबान पर काबू रखो।"

दोनों नफरत से एक-दूसरे को घूर रहे थे।

भंडारी किसी भी क्षण हाथ उठाने के लिए तैयार था। सहमी खड़ी लतिका ने अपनी एक बांह अपने बचाव के लिए उठा रखी थी। उसके ऊपर उठे हाथ में एक फोटो थी।

भंडारी ने फोटो उससे छीन लिया।

-"यह तुम्हें कहाँ मिली?"

-"आपकी ड्रेसिंग टेबल में रखा था।"

-"तुम मेरे कमरे से दूर ही रहा करो।"

-"आइंदा ध्यान रखूंगी। मुझे भी उसकी बदबू पसंद नहीं है।" भंडारी फोटो को गौर से देखने लगा।

-“मुझे भी दिखाइए।” राजकुमार ने कहा।

उसने बेमन से फोटो दे दी।

फोटो में समुद्रतट पर एक लड़की चट्टान पर बैठी हंस रही थी- टूपीस बिकनी पहने। उसने अपनी लंबी सुडौल टाँगे यूँ पकड़ी हुई थीं मानों उनसे बेहद प्यार था। उसके नैन-नक्श लतिका से मिलते थे। इस फर्क के साथ की वह लतिका से ज्यादा खूबसूरत थी। लेकिन उस युवती से जरा भी वह नहीं मिलती थी जिसे राजकुमार ने थापा के साथ देखा था।

-“यह मीना की फोटो है?”

-“हाँ।” लतिका ने जवाब दिया।

-“उसकी उम्र कितनी है?”

-“मुझसे सात साल छोटी है और मैं....वह पच्चीस की है।”

-“फोटो हाल की ही है?”

-“आकाश ने पिछली गर्मियों में बीच पर खींची थी।” कहकर लतिका ने सर्द निगाहों से अपने पिता को घूरा- “मैं नहीं जानती थी आपके पास भी इसका एक प्रिंट है।”

-“ऐसी बहुत बातें हैं जो तुम नहीं जानती।”

-“अच्छा।”

-“भंडारी कोने में एक डेस्क के पास जाकर पाइप भरने लगा।

बाहर एक कार के इंजिन की आवाज सुनाई दी।

लतिका फौरन खिड़की के पास जा खड़ी हुई।

-“आकाश आ रहा है।”

लेकिन कार की हैडलाइट्स् की रोशनी सीढ़ी पर पड़ती रही फिर मोड़ पर जाकर गायब हो गई।

-"यह आकाश नहीं कोई और था।" लतिका ने कहा। फिर अपने पिता से पूछा- "आपने बताया था न कि वह मुझे लेने आएगा?"

-"अगर उसे वक्त मिला। आज रात वह बहुत बिजी है।"

-"ठीक है। मैं टैक्सी से चली जाऊँगी। काफी देर हो गई है।"

-"अगर मुझे टेलीफोन के पास रहना नहीं होता तो मैंने तुम्हें छोड़ देना था। तुम भाड़ा खर्चने से बच जातीं। खैर, तुम मेरी पुरानी एम्बेसेडर ले जा सकती हो।"

-"मैं आपको ड्रॉप कर दूँगा, मिसेज बाजवा।" राजकुमार ने कहा।

–"हाँ, राजकुमार के साथ ही चली जाओ, लतिका। यह तो जा ही रहा है। मेरा पैट्रोल भी क्यों फूँकती हो।"

लतिका ने असहाय भाव से सहमति दे दी।

भंडारी पैट्रोल बचाकर खुश हो गया।

-"गुड नाइट पापा।"

-"गुड नाइट।"

किसी बूढ़े थके बैल की तरह भंडारी उसी कोने में खड़ा रहा।

७

राजकुमार लतिका के निर्देशानुसार फीएट ड्राइव कर रहा था। दोनों खामोश थे।

-"यह ठीक नहीं हुआ।" सहसा लतिका ने कहा।

–"क्या?"

-"मैं पापा से मिलने आई थी लेकिन हमेशा की तरह आज भी झगड़ा ही हुआ। हर बार कोई न कोई बात सामने आ जाती है। आज रात मीना की बात आ गई।"

-"वह काफी मुश्किल किस्म का आदमी है।"

-"हाँ, खासतौर पर हमारे साथ। मीना की तो उससे बिल्कुल नहीं बनती। और इसके लिए उस बेचारी को दोष नहीं दिया जा सकता। उसके पास तगड़ी वजह थी....।" अचानक वह चुप हो गई फिर विषय बदलकर बोली- "हम शहर के दूसरे सिरे पर रहते हैं। यहाँ से काफी दूर हैं।"

-"मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। वैसे भी मैं आपसे अकेले में बात करना चाहता था।"

-"मेरी बहन के बारे में?"

-"हाँ।"

-"क्या?"

-"क्या वह पहले भी कभी इस तरह हफ्ते भर के लिए कहीं गई थी?"

-"दो तीन बार। लेकिन मुझे बताए बगैर नहीं।"

-"आप दोनों एक-दूसरी के बहुत ज्यादा करीब हैं।"

-"हम हमेशा रही हैं। उन बहनों की तरह हम नहीं हैं जो हर वक्त आपस में लड़ती रहती हैं। हालांकि वह मुझसे ज्यादा खूबसूरत है.....।"

-"मैं नहीं मानता।"

-"फिर भी यह असलियत नहीं बदल सकती कि मीना बहुत ज्यादा खूबसूरत है और मैं नहीं हूँ। लेकिन इससे कभी कोई खास फर्क नहीं पड़ा। वह ज्यादा जवान है और उससे मुकाबला करने की जरूरत मुझे कभी नहीं पड़ी। मैंने उसे बचपन से जवानी तक पहुँचते देखा है। बहन से ज्यादा एक आंटी की तरह उसकी परवरिश में मदद की है। मम्मी उसे पैदा करने के बाद ही चल बसी थी। तब से वह मेरी ही जिम्मेदारी रही है।"

-"क्या उसे संभालना मुश्किल था?"

-"बिल्कुल नहीं। इस मामले में मेरे पापा की बातों पर यकीन मत करना। मीना के प्रति उसके मन में पूर्वाग्रह है। मीना के खिलाफ जो भी वह सुनता है उस पर आँख मीचकर यकीन कर लेता है। मीना और मिस्टर थापा के बारे में जो बेहूदा बकवास उसने की थी वो महज अफवाह है। कोई सच्चाई उसमें नहीं है।"

-"आपको पूरा यकीन है?"

-"बिल्कुल। अगर यह सच होता तो मुझे भी पता चल जाना था। सच्चाई सिर्फ इतनी है मीना मिस्टर थापा के लिए काम करती थी।"

मेन रोड के चौराहे पर लाल बत्ती पाकर राजकुमार ने प्रतिक्षारत अन्य वाहनों की कतार के पीछे फीएट रोक दी।

-"इसी सड़क पर सीधे चलना।" लतिका ने कहा- "जब मुड़ना होगा मैं बता दूँगी।"

लाइट ग्रीन हो गई।

-"आपकी बहन का फ्लैट कहाँ है?" राजकुमार ने कार आगे बढ़ाते हुए पूछा।

-"यहाँ से पास ही है। गिरिजा स्ट्रीट ६, रोज एवेन्यु।"

-"बाद में मैं वहाँ जा सकता हूँ। आपके पास फ्लैट की चाबी तो नहीं होगी?"

-"नहीं, मेरे पास नहीं है। आपको चाबी किसलिए चाहिए?"

-"मैं फ्लैट की हालत और मीना की चीजें देखना चाहता हूँ। उससे कुछ पता चल सकता है वह कहाँ गई और क्यों गई?"

-"आई सी। वहाँ का केअर टेकर आपको फ्लैट दिखा सकता है।"

-"आपको तो इसमें कोई ऐतराज नहीं है?"

-"बिल्कुल नहीं।" लतिका ने कुछेक सेकंड खामोश रहने के बाद पूछा-"आपके विचार से मीना कहाँ गई हो सकती है?"

-"मैं खुद आप से पूछने वाला था। मुझे कोई आइडिया नहीं है बशर्ते कि मीना और थापा के बारे में आपकी राय गलत नहीं है।"

-"मेरी राय गलत नहीं हो सकती है।" वह दो टूक स्वर में बोली "आप बार-बार इसी बात को क्यों उठा रहे हैं?"

-"जब कोई औरत इस ढंग से गायब हो जाती है तो सबसे पहले उन्हीं लोगों को चैक किया जाता है जो उससे जुड़े होते हैं- खासतौर पर आदमी। उसकी ज़िंदगी में आए आदमियों के बारे में बताइए।"

-"मीना दर्जनो आदमियों के साथ घूमती फिरती थी।" वह तीव्र स्वर में बोली- "उन सबका हिसाब मैं नहीं रखती।"

राजकुमार ने उसके लहजे में ईर्ष्या का पुट स्पष्ट नोट किया।

–"क्या वह उनमें से किसी के साथ भाग गई हो सकती है?"

-"आपका मतलब है शादी करने के इरादे से?"

-"हाँ।"

-"मुझे नहीं लगता। किसी भी आदमी पर इस हद तक भरोसा करने वाली लड़की वह नहीं है।"

-"अजीब बात है।"

-"आपको सिर्फ इसलिए अजीब लगती है क्योंकि आप मेरी बहन को नहीं जानते। मीना बेहद आजाद ख्यालात रखने वाली उन लड़कियों में से है जो ज़िंदगी भर शादी न करने का पक्का फैसला कर चुकी होती हैं।"

-"आपके पिता ने बताया था वह सोलह साल की उम्र में घर छोड़ गई थी। इसका मतलब है करीब दस साल से वह अकेली ही रह रही है।"

-"नहीं। यह सही है करीब दस साल पहले मीना उसे छोडकर चली आई थी ....उन दोनों के बीच कुछ फसाद हुआ। आकाश और मैंने तब उसे उसकी पढ़ाई खत्म होने तक अपने पास रखा था। फिर उसे जॉब मिल गया और वह अकेली रहने लगी। हमने तब भी उसे अपने साथ रखने की कोशिश की थी लेकिन जैसा कि मैंने बताया वह बहुत ही आजाद ख्याल है।"

-"आपके पिता के साथ उसका क्या फसाद हुआ था? आपने ऐसा कुछ कहा था कि मीना को खराब करने की शुरुआत उसी ने की थी।"

-"मुझे मजबूरन कहना पड़ा। उसने मीना के साथ बड़ी ही कमीनी हरकत की थी। अब यह मत पूछना हरकत क्या थी।" भावावेश के कारण उसका गला रुँध गया-"इस शहर के ज़्यादातर आदमी औरतों के मामले में बिल्कुल जंगली हैं। लड़कियों के पलने बढ़ने के लिए यह जगह नर्क से कम नहीं है। एकदम जंगलियों के बीच रहने जैसी जगह है।"

-"इतने बुरे हालात है?"

-"हाँ।" अचानक वह चिल्लाई- "मुझे इस शहर से नफरत है। मैं जानती हूँ यह कहना खौफनाक है लेकिन मैं अक्सर भगवान से प्रार्थना करती हूँ एक इतना भयंकर तूफान या भूचाल आए कि सारा शहर नष्ट हो जाए।"

-"क्योंकि तुम्हारी बहन के साथ तुम्हारे पिता का फसाद हुआ था?"

-"मैं अपनी बहन या बाप के बारे में नहीं सोच रही हूँ।"

राजकुमार ने उस पर निगाह डाली। एकदम सीधी तनी बैठी वह शून्य में ताकती सी नजर आ रही थी।

कुछ देर बाद तनिक झुककर उसने राजकुमार की बांह पर हाथ रख दिया।

-"यहाँ से बायीं ओर लेना। आयम सॉरी....दरअसल अपने बाप से मिलकर मैं बहुत ज्यादा परेशान हो जाती हूँ।"

पहाड़ी घुमावदार सड़क पर कार नीचे जाने लगी।

बढ़िया रिहाइशी इलाका था। जहां लोग अपनी गुजिश्ता ज़िंदगी की मामूली शुरुआत को भूलकर सिर्फ आने वाले सुनहरी वक्त की ओर ही देखते थे। अधिकांश कोठियाँ नई और आधुनिक थीं। वहाँ रहने वालों की संपन्नता की प्रतीक।

लतिका के निर्देशानुसार ड्राइव करते राजकुमार ने अंत में जिस कोठी के समुख कार रोकी वो अंधेरे में डूबी खड़ी थी।

लतिका चुपचाप बैठी सामने देख रही थी।

-"आप यहाँ रहती हैं?" राजकुमार ने टोका।

-"हाँ। मैं यहाँ रहती हूँ। वह पीड़ित स्वर में बोली- "लेकिन अंदर जाने से डर लगता है।"

-"डर? किससे?"

-“लोग किससे डरते हैं?”

-“आमतौर पर मौत से।”

-“लेकिन मुझे अंधेरे से डर लगता है। डाक्टरी भाषा में इसे निक्टोफ़ोबिया कहते हैं लेकिन नाम जान लेने से डर के अहसास में फर्क नहीं पड़ता।”

-“अगर आप चाहें तो मैं आपके साथ अंदर चल सकता हूँ।”

-“मैं यही चाहती हूँ।”

दोनों कार से उतरे।

लतिका उसकी बाँह थामें चल दी। बाँह यूँ थामी हुई थी मानों किसी आदमी का सहारा लेने में संकोच हो रहा था। लेकिन दरवाजे में उसका वक्षस्थल और कूल्हा राजकुमार से टकरा गए।

राजकुमार के हाथ अपने हाथों में पकड़कर लतिका ने उसे अंधेरे प्रवेश हाल में खींच लिया।

-“अब मुझे छोड़ना मत।”

-“छोड़ना पड़ेगा।”

मुझे अकेली मत छोड़ना प्लीज। बहुत डर लग रहा है। देखो मेरा दिल कितनी जोर से धड़क रहा है।”

उसने राजकुमार का हाथ अपनी छाती पर रखकर इतनी जोर से दबाया कि उसकी उँगलियाँ दोनों वक्षों के बीच गड़ गईं। उसका दिल सचमुच जोर-जोर से धड़क रहा था। इसकी वजह डर था या कुछ और वह नहीं समझ सका।

-“देखा तुमने?” राजकुमार के कान के पास मुँह करके वह फुसफुसाई- “कितना डर लग रहा है। मुझे कितनी ही रातें यहाँ अकेले गुजारनी पड़ती है।”

राजकुमार ने उसके गाल पर हल्का सा चुंबन जड़कर स्वयं को उससे अलग कर लिया।

-“अंधेरे से बचने के लिए तुम लाइट ऑन कर सकती हो।”

राजकुमार ने दीवार पर लाइट स्विच टटोला।

-“नहीं।” लतिका ने उसकी बाँह नीचे खींच ली- “मैं अपना चेहरा तुम्हें दिखाना नहीं चाहती। मैं रो रही हूँ। मैं खूबसूरत नहीं हूँ।”

-“इस्तेमाल किए जाने के लिए तुम काफी खूबसूरत हो।”

-“नहीं। खूबसूरती मीना में है।”

-“मीना के बारे में मैं नहीं जानता। उससे कभी नहीं मिला। मुझे तो तुम्हारा डर भगाना है और तुम्हे डर से मुक्ति देनी है "

लतिका ने अपने होंठो को दाँत से काटते हुए बड़े मादक अंदाज में राजकुमार से कहा " मैं भी तो चाहती हूँ कि कोई मेरी इस तन्हाई को दूर करे और मुझे डर से मुक्ति दिलाए "

इस खुले आमंत्रण से राजकुमार बहुत ही उत्तेजित हो चुका था,

वो जल्दी से लतिका को लेकर बेड पर बैठ जाता है और उसको चूमने लगता है , लतिका भी उसको पूरा सहयोग करती है , लतिका बहुत ही सेक्सी और चालाक औरत थी उसको पता था की किसी को कैसे खुश करना है उसको सेक्स की हर कला आती है , वो राजकुमार को लिपलॉक किस करती है जो करीब ४ मिनिट चलती है ,

राजकुमार का लिंग उसकी पेण्ट फाड़कर बाहर निकलने को होने लगता है तभी लतिका राजकुमार की पेण्ट को अधखुला करके उसके लिंग को बाहर निकाल लेती है ,और बड़े ही सेक्सी अंदाज से सहलाने लगती है , राजकुमार का लिंग प्रिकम की दो - तीन बूंद वीर्य की छोड़ देता है जिसको लतिका अपनी अँगुलियों में लेकर चाट जाती है ,

अब राजकुमार पागल हो जाता है वो लतिका के स्तन पकड़ लेता है और मसलने लगता है लतिका उसको रोकती है और अपना टॉप उतार देती है साथ ही ब्रा भी ,लतिका के बड़े-बड़े

स्तन अब खुलकर राजकुमार के सामने थे , राजकुमार एक स्तन को मुंह में भर लेता है और दूसरे को अपने हाथ से मसलने लगता है , किसी के स्तन मसलने का पहला अनुभव था , लतिका उसका लिंग सहलाने लगती है , अब राजकुमार से रुका नहीं जाता है वो सब छोड़ कर अपने कपड़े उतार फेंकता है ....

लतिका भी अपना स्कर्ट उतार देती है लेकिन जब पेंटी उतारती है तो उसकी योनी का छेद साफ़ दिख रहा था , उसकी योनी बहुत ही मस्त और साफ़ सुथरी थी और सबसे बड़ी बात उसकी योनी का छेद लाल था जिसको देख कर राजकुमार पागल हो गया .....

राजकुमार लतिका को अपनी बाँहों मे भर लेता है लेकिन लतिका उसको रुकने को कहती है फिर लतिका राजकुमार के बड़े से लिंग को अपने सुंदर मुंह में भर लेती है उसके बाद लतिका लिंग को ऐसे तरिके से चूसने लगती है की राजकुमार पागल ही हो जाता है , उसके मुँह से आहहहह आहहहहह की आवाज निकलने लगीं थी ,

राजकुमार तो मानो सातवें आसमान में था.... इतने में लतिका का ध्यान उसके आंडों पर गया... अब उसने राजकुमार के आंडों को एक एक करके अपने मुँह में भरकर चूसना शुरू किया..

वो गर्म होता गया और अब तो लतिका कभी कभी उसके दोनों आंडों को एक साथ लेकर चूस रही थी , राजकुमार ने आज से पहले अपने आंड कभी किसी को चुसवाये नहीं थे ,

आगे पढ़िये राजकुमार के शब्दों में........

मुझसे अब और नहीं रहा गया,मैंने उसको अपने लिंग से हटाया, उसकी पेंटी को उतार फेंका और उसे पेट के बल लिटाकर उसके गोरे, मुलायम नितंबो और योनी को दबाने और चूमने लगा.

कुछ देर बाद मैंने उसके दोनों पैरों को अलग करते हुए उसकी योनी के छेद को अपनी जीभ से सहलाने और चाटने लगा.

जिसके कारण उसके योनी का छेद खुलने लगा. मैं उसकी गुलाबी योनी को अपनी जीभ से ठोकने लगा.

अब लतिका भी एकदम गर्म हो चुकी थी और वो बोलने लगी - राजकुमार मेरे प्यार , और कितना तड़पाओगे ? जल्दी से अपना मस्त और बड़ा लिंग मेरी योनी में डालो और उसकी आग बुझाओ,

फिर उसकी योनी के छेद पर मैंने बहुत सारा थूक लगाया और लिंग को रगड़ते हुए कहा- हां लतिका , मेरी जान, इस योनी को ठोकने में मेरे लिंग को बहुत मजा आनेवाला है,

आज तेरे योनी का भोसड़ा बनाके ही दम लूँगा ....

मुझको सेक्स करते वक्त गालिया देना और सुनना दोनों ही पसंद है ,

मैंने अपना लिंग धीरे धीरे से लतिका की लाल योनी में घुसाना शुरू किया.... सिर्फ टोपा ही अन्दर गया था कि उसने कहा- आह… राजकुमार .. आराम से, मुझे योनी मरवाए बहुत दिन हो गए हैं...(यह लतिका का नाटक था राजकुमार को उकसाने के लिए)

उसकी बात को मैंने अनसुना कर दिया और एक जोर का झटका दिया... आधे से ज्यादा लिंग उसके योनी में घुस चुका था.

लतिका चीखते हुए बोली - बहनचोद, धीरे से कर.. वरना मेरा छेद फट जाएगा साले...

मैंने मुस्कुराते हुए कहा- लतिका मेरी जान , मैं तो धीरे कर रहा हूँ, पर मेरे लिंग को कौन समझाए...

इतना कहकर मैं धीरे धीरे उसकी योनी की ठुकाई करने लगा... बस ५ मिनट में ही उसकी योनी ढीली हो गई और मेरा लिंग पूरा अन्दर जाने लगा....

अब लतिका को भी मजा आने लगा था,

लतिका बोली - आह.. राजकुमार .. और जोर से करो, अपने लिंग को मेरी योनी के अन्दर पूरा घुसा दो,

मैं- आज तो तेरे योनी को फाड़ कर ही दम लूँगा मेरी लतिका...

फिर मैंने उसे डॉगी पोज में आने को कहा और अपना लिंग पूरा बाहर निकालता और पूरा अन्दर घुसाता...

उसकी योनी पूरी तरह खुल चुकी थी... अन्दर का लाल भाग साफ दिख रहा था... ऐसा करने में मेरे लिंग को बहुत मजा आ रहा था,

मेरा लिंग लोहे जैसा सख्त हो गया था,

फिर मैंने उसे पलटा और मेरे फेवरेट पोज मिशनरी में.. उसे ठोकने लगा.... लतिका भी अब खुल कर मेरा साथ दे रही थी ,

करीब १५ मिनट तक मैं उसे इसी पोज में ठोकता रहा... अब लतिका भी अपना लिंग हिलाने लगी थी , पूरा कमरा खचपच की आवाज से भर चुका था,

मैंने लतिका को इशारा किया कि मेरा पानी निकलने वाला है... तो उसने मुझे रोका और मुझे लेटने को कहा और वो मेरे लिंग के ऊपर बैठकर अपनी योनी को ऊपर नीचे करने लगी ,

मैं- यार लतिका तुम तो बहुत ही सेक्सी हो कितना मस्त मजा दे रही हो ऐसा मैंने आज तक नहीं किया था ,

लतिका - अब तो आपने देखा ही क्या है. .. अब तो आपसे रोज नई चीजें करवाउंगी... और बताउंगी भी कर के ,

यह कहकर उसने अपनी स्पीड बढ़ा दी, उसके नितंबो के मेरी जांघों से टकराने के कारण छपछप की आवाज आने लगी. हमारी ठुकाई को करीब आधा घंटा हो चुका था.

मैंने उससे कहा- अब और नहीं रोक पाऊँगा लतिका में अपने आप को झड़ने से,

तो वो उठकर अपने पैरों पर किसी प्यासी वेश्या की तरह जीभ बाहर निकालकर मेरे लिंग को देखने लगी ,

मैं खड़ा हुआ और अपने लिंग को हिलाने लगा... कुछ ही पलों में मेरा पानी निकला, तो मैंने अपना लिंग सीधा उसके मुँह में दे दिया,

उसने मेरा पूरा पानी किसी वेश्या की तरह पी लिया और लिंग को चूसचूस के साफ करने लगी ,

मैंने एक बड़ी लम्बी सांस ली और अपने आधे खड़े लिंग से उसका मुँह ठोकने लगा,

अब लतिका ने फिर अपने लिंग को हाथ में लेकर हिलाने लगी और साथ ही जोर जोर से मेरा लिंग भी चूसने लगी कुछ ही देर में उसका पानी निकल गया

जो बेड पर गिर गया और फिर हम एक दूसरे को चूमते हुए एक दूसरे को बांहों में भरकर लेट गये.... क्यूंकि हम इस ठुकाई से बहुत ही थक चुके थे

कुछ देर आराम करने के बाद राजकुमार ने अपने कपड़े पहने और जाते हुए लतिका से गुडनाइट कहा

-"गुड नाइट।" संक्षिप्त मौन के पश्चात वह बोली- "अब मैं सॉरी तो नहीं कहूँगी लेकिन कुछेक पल के लिए मेरा दिमाग घूम गया था। आकाश को अक्सर रात में देर तक काम करना पड़ता है। उसके घर आने पर मैं ठीक हो जाऊँगी। मुझे घर पहुंचाने का शुक्रिया।"

-"डोन्ट मैनशन इट।"

-"अगर मीना तुम्हें मिल जाती है तो फौरन मुझे बताओगे न?"

-"जरूर।"

राजकुमार बाहर निकला। कार में सवार होकर वापस शहर की ओर ड्राइव करने लगा।

८

रोज एवेन्यू अपने नाम के अनुरूप गुलाबों की खुशबू से महक रहा था।

कार से उतर कर राजकुमार दोनों ओर उगी गुलाब की झाड़ियों के बीच बने रास्ते पर चल दिया। एक ऊँचे फव्वारे के चारों ओर बारह काटेजनुमा घर बने थे। प्रत्येक के आगे मौजूद पोर्च के बाहर भी गुलाब उगे थे। अधिकांश घरों में रोशनी थी और संगीत के स्वर सुनाई दे रहे थे। लेकिन छह नंबर में अंधेरा और खामोशी थी।

दरवाजे को हाथ लगाते ही वो अंदर कि ओर खुल गया।

राजकुमार ने हाथ में पकड़ी टार्च जलाई।

लॉक के आसपास दरवाजे का हिस्सा टूटा हुआ था।

राजकुमार ने भीतर दाखिल होकर कोहनी से दरवाजा बंद कर दिया।

मीना छह दिन से गायब थी। यह ख्याल आते ही राजकुमार ने यूँ नाक से सांस खींची मानों मौत की गंध ले रहा था। लेकिन उसके नथुनों से जीवन की बासी गंध टकराई - सिगरेट के पुराने धुएँ, शराब और परफ्यूम की मिली-जुली।

टार्च की रोशनी दीवारों और फर्नीचर पर घूमने लगी। नंगी औरतों की पेंटिंग्स, अंजता एलोरा स्टाइल से लकड़ी पर उकेरी गई सहवासरत स्त्री पुरुषों की आकृतियाँ, फायर प्लेस में रखा रूम हीटर, किताबो से भरा बुक रैक, छोटी सी आलमारी, कोने में बनी बार, आरामदेह सोफा सेट वगैरा सब नए और मूल्यवान थे।

आलमारी खुली थी। लॉक टूटा हुआ। उसमें पेपर्स और लिफाफे भरे थे। सबसे ऊपर रखे लिफाफे पर मर्दाना लिखावट में मिस मीना भंडारी लिखा था और वो खाली था।

बेडरूम और बाथरूम की ओर जाने वाले छोटे से गलियारे में खुले मेहराबदार दरवाजे पर परदा झूल रहा था। बेडरूम छोटा और जनाना था। ड्रेसिंग टेबल और आरामदेह पलंग भी नए और कीमती थे। लापरवाही से बनाए गए बिस्तर की एक साइड दबी थी और चादर

सिकुड़ी हुई थी। मानों उस खास जगह पर कोई बैठा रहा था। बेड साइड टेबल पर हीरे जड़ी सोने की रिस्टवाच रखी थी।

पलंग के नीचे कुछ नहीं था। ड्राअर्स चैस्ट में भी अंडर गारमेंट्स के अलावा कोई खास चीज नहीं थी। ब्रेजियर्स, अंडरवीयर्स, स्विम सूट्स वगैरा के ढेर से जाहिर था मीना को इन चीजों का खास शौक था और इन पर काफी पैसा वह खर्चती रहती थी।

बाथरूम में जाकर राजकुमार ने लाइट स्विच ऑन किया। बाथ टब के ऊपर बने टावल रैक में तौलिये, बेदिंग गाउन भरे थे। वाश बेसिन के ऊपर मैडिसन केबिनेट में लोशन, क्रीम, परफ्यूम वगैरा के अलावा एक डिब्बे में तनाव कम करने और नींद लाने वाली गोलियाँ भरी थीं।

राजकुमार ने उसे बंद कर दिया।

बगल वाले फ्लैट से आता संगीत का शोर ऊँचा हो गया था।

बाथरूम की तलाशी लेते राजकुमार को वहाँ कहीं भी टूथब्रश नजर नहीं आया।

वह वापस बेडरूम में पहुंचा।

ड्रेसिंग टेबल से भी कुछेक ऐसी चीजें गायब थीं जो कि वहां होनी चाहिए थीं। लिपस्टिक, फेस पाउडर, क्रीम, आई ब्रो पैंसिल वगैरा।

अभी तक कोई लेडीज पर्स या हैंडबैग भी कहीं नजर नहीं आया था।

राजकुमार बाहरी कमरे में लौटा।

बारीकी से तलाशी लेने पर कोई पर्सनल चीज नहीं मिली। अलबत्ता पुराने बिल और बिजनेस लैटर्स काफी सारे और सही ढंग से रखे मिले। आधी इस्तेमाल की गई चैक बुक में मौजूद आखिरी एंट्री के मुताबिक मीना का बैंक बैलेंस करीब दो लाख रुपए था। आखिरी पैमेंट सात अक्टूबर को यानी आठ रोज पहले किसी मिस रीटा सैम्सन को की गई थी।

ठीक उस वक्त जब राजकुमार निराश होकर सीधा खड़ा होने वाला था आलमारी के शैल्फ पर बिछे मोटे पेपर के नीचे रखा एक मुड़ा लिफाफा उसके हाथ आ गया। करीब साल भर पहले उसे विशालगढ़ से पोस्ट किया गया था। उसमें रखा लैटर सस्ते होटल की स्टेशनरी के एक पेपर के दोनों ओर पैंसिल से लिखा था। लिखने वाले का नाम था- कांती।

राजकुमार ने बाथरूम में जाकर दरवाजा बंद करके खत पढ़ना शुरू किया।

प्यारी मीना,

मेरा खत पाकर तुम हैरान हो जाओगी खुद मुझे भी हैरानी हो रही है। पिछली दफा जो कुछ तुमने कहा था उसकी वजह से खत लिखना तो दूर रहा मैंने सोचा तक नहीं था कि मैं तुमसे दोबारा मिलूंगा। लेकिन मैं यहां विशालगढ़ के इस घटिया होटल में फंसा हुआ हूं। जिस शिप का मुझे इंतजार करना पड़ रहा है वह तूफान में घिर जाने की वजह से कल सुबह से पहले नहीं पहुंचेगा। इसलिए मैं विशालगढ़ के इस घटिया होटल के कमरे में रात गुजारने को मजबूर हूँ हालांकि तुम मेरे पास नहीं हो लेकिन तुम्हारा चांद जैसा चेहरा मेरे सामने हैं....तुम मुस्करा क्यों नहीं रही हो मीना?

लगता है तुम मुझे सनकी या पागल समझती हो। लेकिन मैंने आज रात न तो शराब पी है न ही कोई नशा किया है। मैं सड़कों पर घूमता रहा हूं। यहां औरतों की कमी नहीं है। रात भर के लिए मैं आसानी से हासिल भी कर सकता था मगर उनमें कोई दिलचस्पी मेरी नहीं है। उस दफा तुम्हारे साथ के बाद से किसी भी और औरत की ओर मैंने देखा तक नहीं है। अगर तुम चाहो तो मैं तुमसे शादी कर लूंगा। मैं जानता हूं, पैसे के मामले में मेरा हाथ तंग है। शराब के धंधे में लगी उस खास पार्टी के साथ मुकाबला मैं नहीं कर सकता। लेकिन मैं एक वफादार दोस्त हूं। उस खास पार्टी से तुम्हें भी सावधान रहना चाहिए मीना। वह ऐसा आदमी है जिस पर तुम भरोसा नहीं कर सकतीं। मैंने यह भी सुना है कि उसकी माली हालत खराब होने वाली है। उसकी पत्नि का पैसा ज्यादा देर नहीं चलेगा।

मैं जानता हूं तुम अपने काबिल मुझे नहीं समझतीं। लेकिन मैं यकीन दिलाता हूं तुम्हारे 'उससे' मैं लाख दर्जे बेहतर हूं। तुम्हारे लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं और करूंगा, मीना।

यह धमकी नहीं है। मैंने कभी तुम्हें धमकी नहीं दी। मेरे गुस्से और दीवानगी को तुम नहीं समझी थीं। जैसा कि तुमने कहा था वो जलन या ईर्ष्या नहीं थी। मैं दुखी था। तुम्हारे लिए फिक्रमंद था। मैं सारी रात तुम्हारे घर के बाहर खड़ा रहा था। जब 'वह' तुम्हारे साथ अंदर

मौजूद था। मैंने बहुत दफा ऐसा किया था। मैं तुम्हें बताना चाहता था। लेकिन यह राजकुमार तुम्हें कभी नहीं बताया। चिंता मत करना कभी किसी को बताऊंगा भी नहीं।

मैं तुम्हें प्यार करता हूं मीना- दिलोजान से। लाइट ऑफ करने के बाद अंधेरे में भी तुम्हारा चांद सा चेहरा मेरी आंखों के सामने रहेगा।

तुम्हारा वफादार दोस्त

कांती

पुनश्च: जैसा कि मैंने कहा इस शहर में औरतों की कोई कमी नहीं है। अगर मुझे एक और रात यहां रुकना पड़ा तो पता नहीं क्या होगा। मेरा ख्याल है कि किसी भी सूरत में तुम्हें कोई फर्क इससे नहीं पड़ेगा-म.स.।

राजकुमार ने दो बार ध्यान से खत पढ़ा। उससे न सिर्फ कांती लालकी मीना के प्रति सनक जाहिर थी बल्कि मीना के किसी और के साथ गहरे ताल्लुकात का सबूत भी उसमें मौजूद था।

बाथरूम का दरवाजा खोलते ही राजकुमार को लगा फ्लैट में कुछ बदल गया था। और उसके अलावा कोई और भी वहां मौजूद था। जल्दी ही उसके शक की पुष्टि हो गई। बाहर अंधेरे में किसी के सांस लेने की धीमी आवाज उसके सतर्क कानों में पड़ी।

अपनी उस स्थिति में उसे आसानी से ढेर किया जा सकता था। छोटा सा गलियारा और मेहराबदार दरवाजा............ शूटिंग गैलरी थे जिसमें वह खुद निहायती ही आसान टारगेट बन कर रह गया था।

बाथरूम की लाइट ऑफ करके वह दबे पांव सतर्कतापूर्वक बेडरूम के दरवाजे की ओर बढ़ा। अंधेरे में आगे फैला उसका हाथ दरवाजे को टटोल रहा था। उसके दूसरे हाथ में थमी टार्च डंडे की तरह तनी थी।

सहसा करीब छह फुट दूर मेहराबदार दरवाजे में उसे परदे की सरसराहट सुनाई दी। फिर हल्की सी आवाज के साथ गलियारे की छत में लगा बल्ब जल उठा।

मेहराबदार दरवाजे की साइड में सिकुड़े परदे से एक गन सीधी अपनी और तनी नजर आई।

लंबे-चौड़े हाथ में तनी वह अड़तीस कैलीबर की रिवॉल्वर थी।

-“बाहर निकलो।” आदेश दिया गया।

राजकुमार ठिठक गया। स्वर परिचित सा था।

-“हाथ ऊपर उठाकर बाहर आओ।” पुनः आदेश दिया गया। आवाज इन्स्पेक्टर बाजवा की थी- “मैं तीन तक गिनूंगा फिर शूट कर दूंगा....एक....।”

राजकुमार ने टार्च जेब में ठूंसकर हाथ ऊपर उठा लिए।

पर्दा एक तरफ खिसकाकर इन्स्पेक्टर प्रगट हुआ।

-“तुम।” रिवॉल्वर को उसकी छाती की ओर ताने इन्स्पेक्टर आगे आया- “तुम यहां क्या कर रहे हो?

-“अपना काम।” राजकुमार ने जवाब दिया।

-“कैसा काम?”

-“भंडारी ने मुझे अपने ट्रक का पता लगाने का काम सौंपा है।”

-“और तुम समझते हो ट्रक यहां मिस भंडारी के बाथरूम में छिपाया गया था?”

-“उसने अपनी बेटी मीना का पता लगाने की जिम्मेदारी भी मुझे सौंपी है।”

इन्स्पेक्टर ने रिवॉल्वर उसके पेट में गड़ा दी। उसके कठोर चेहरे और हिंसक आंखों से जाहिर था कि वह शूट करने के लिए तैयार था।

-“मीना कहां है?”

रिवॉल्वर की गड़न महसूस करते राजकुमार को अपनी पीठ पर पसीना बहता महसूस हो रहा था। गला खुश्क हो गया था।

-"मैं नहीं जानता कहां है।" वह फंसी सी आवाज में बोला- "बेहतर होगा कि थापा से पता करो।"

-"क्या मतलब?"

-"अगर तुम तसल्ली से मेरी बात सुनना चाहो तो मैं मतलब बता दूंगा। इस तरह रिवॉल्वर के दम पर पुलिसिया रोब डालने से कुछ नहीं होगा।"

इन्स्पेक्टर ने रिवॉल्वर पीछे कर ली।

-"थापा के बारे में क्या कहना चाहते हो?"

-"इस सारे मामले में कदम-कदम पर वही मौजूद है। जहां कांती लालको शूट किया गया उस स्थान के थापा सबसे ज्यादा नजदीक था। ट्रक में थापा की विस्की लदी थी। अब तुम्हारी साली के गायब होने की बात सामने आयी है। वह थापा की मुलाजिमा थी और शायद उसकी रखैल भी। यह सिर्फ शुरुआत है।"

राजकुमार ग्लोरी रेस्टोरेंट में थापा की उस लड़की से मुलाकात और उन दोनों के बीच हुई चोरी से सुनी गई उनकी बातचीत के बारे में भी बताना चाहता था लेकिन फिर इरादा बदल दिया।

इन्स्पेक्टर बाजवा ने अपनी पीक कैप पीछे खिसकाकर कनपटी सहलाई। वह उलझन में पड़ा नजर आया। दाएं हाथ में थमी रिवॉल्वर का रुख अब फर्श की ओर था।

-"थापा से पूछताछ की जा चुकी है।" वह बोला। उसके स्वर में पुलिसिया रोब नहीं था- "कांती लालकी शूटिंग के वक्त की एलीबी है उसके पास।"

-"उसकी पत्नि?"

-"हां।"

-"उसकी बात पर आपको यकीन है?"

-"हां। साक्षी को मैं लंबे अर्से से जानता हूं। उसके जज पिता को भी जानता था। उस औरत पर पूरी तरह यकीन किया जा सकता है।"

-"लेकिन अपने पति की खातिर व झूठ तो बोल ही सकती है।"

-"हो सकता है। लेकिन वह झूठ नहीं बोल रही है। वैसे भी थापा को एलीबी की जरूरत नहीं है। वह एक इज्जतदार शहरी है।"

राजकुमार चकराया। थापा के प्रति इन्स्पेक्टर के ये नए विचार उसकी समझ से परे थे।

-"कितना इज्जतदार?"

-"उसकी जाती जिंदगी की बात में नहीं कर रहा हूं। मेरा कहने का मतलब है, हाईवे पर किसी ट्रक ड्राइवर को शूट करने वाला आदमी वह नहीं है।"

-"बीस लाख के लिए भी नहीं?"

-"नहीं।"

-"खैर, मोटी रकम की विस्की का आर्डर काफी बड़ा होता है। क्या करता है वह? विस्की में नहाता है?"

-"नहीं। बेचता है।"

-"अपने होटल में?"

-"नहीं। शहर की दूसरी साइड में उसकी अपनी एक बार है- रॉयल क्लब के नाम से।"

-"सुभाष रोड पर?"

-“हां।”

-“और क्या है उसके पास- सियासी पहुंच?”

-“कुछ है - अपनी पत्नि के रसूखात के जरिए।”

-“वह पहुंच थापा के मामले में तुम्हें भी प्रभावित कर सकती है?” राजकुमार ने और ज्यादा कुरेदते हुए पूछा।

इस दफा इन्स्पेक्टर पर सीधा और तुरंत असर हुआ। उसकी कनपटी पर एक नस तेजी से फड़कती नजर आई।

-“तुम्हें कुछ ज्यादा ही सवाल करने की आदत है।”

-“मैं वही सवाल करता हूं जिनके जवाब जानने जरूरी होते हैं।”

-“मत भूलो कि तुम मुझसे बात कर रहे हो?”

-“मैं बिल्कुल भी नहीं भूल रहा हूं।”

-“तो फिर तुम सिचुएशन को नहीं समझ रहे हो।”

-“कौन सी सिचुएशन?”

-“तुम्हारी इस फ्लैट में मौजूदगी सरासर गलत और गैर कानूनी है। दरवाजे का ताला तोड़कर तुम्हें यहां घुसने के जुर्म में मैं हवालात में डाल सकता हूं।”

-“यह जुर्म मैंने नहीं किया। मुझसे पहले ही किया जा चुका था।”

-“सच कह रहे हो?”

-“बिल्कुल सच। मेरे आने से पहले ही यहां सेंध लगाई जा चुकी थी। और सेंधमार कोई मामूली नहीं था।

बेडरूम में टेबल पर बड़ी कीमती रिस्टवाच पड़ी है। जबकि चोरी की नीयत से आने वाले सेंधमार ने घड़ी यहां नहीं छोड़नी थी। दूसरी भी जो चीजें गायब हैं उन्हें भी वह नहीं ले गया होगा।''

-''कौन सी दूसरी चींजे?''

-''पर्सनल। टूथब्रुश, पाउडर काम्पैक्ट, लिपस्टिक, पर्स वगैरा। मेरा ख्याल है मीना भंडारी कहीं वीकएंड मनाने गई थी और वापस नहीं लौटी। फिर किसी ने यहां सेंध लगाई, डेस्क का ताला तोड़ा और उसकी जाती जिंदगी से जुड़ी कई चीजें ले गया- लैटर्स एड्रेस बुक, टेलीफोन नंबर....।''

-''अगर दरवाजे का ताला तुमने नहीं तोड़ा तो भी यहां घुसने का कोई हक तुम्हें नहीं था। तुमने कानूनन....।''

-''मैंने यहां तलाशी लेने की इजाजत ले ली थी।''

-''किससे?''

-''तुम्हारी पत्नि से।''

-''उसका इससे क्या ताल्लुक है?''

-''उसकी बहन गायब है और निकटतम रिश्तेदार होने की वजह से....।''

-''वह तुम्हें कहां मिली?''

-''कोई घंटाभर पहले भंडारी की कोठी से मैंने उसे उसके घर पहुंचाया था।''

-''उससे दूर ही रहो।'' इन्स्पेक्टर कड़े स्वर में बोला- ''सुना तुमने। मेरे घर और मेरी पत्नि से दूर ही रहना।''

-''बेहतर होगा कि तुम अपनी पत्नि को मुझसे दूर रहने की हिदायतें दे दो।''

राजकुमार को फौरन अहसास हो गया उसे ऐसा नहीं कहना चाहिए था।

कुपित इन्स्पेक्टर का रिवॉल्वर वाला हाथ उस पर लपका। नाल का प्रहार राजकुमार की ठोढ़ी पर पड़ा। सर पीछे दीवार से टकराया और वह चकराकर फर्श पर जा गिरा।

चंद क्षणोपरांत उठा। हाथ के पृष्ठ भाग से ठोढ़ी से खून साफ किया।

-"इसके लिए तुम्हें पछताना होगा, इन्स्पेक्टर।"

इन्स्पेक्टर का चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था।

-"इससे पहले कि दोबारा मेरा हाथ उठे दफा हो जाओ।"

राजकुमार थके से कदमों से चलता हुआ खुले दरवाजे से बाहर निकल गया।

९

रायल क्लब :

औसत दर्जे की बार निकली। बार स्टूलों पर मौजूद तीन लड़कियां इंतजार करती सी प्रतीत हो रही थीं।

राजकुमार को भीतर दाखिल होता देखकर अपनी छातियां फुलाई और मेकअप से पुते उनके चेहरों पर स्वागत करने जैसी मुस्कराहटें उभरी।

ऊंची पसंद रखने जैसे भाव अपने चेहरे पर लिए राजकुमार उनके पास से गुजर कर बार के दूसरे सिरे की ओर बढ़ गया।

पिछले हिस्से में बना डांसिंग फ्लोर और बैंड स्टैंड खाली पड़े थे।

ज्यूक बाक्स से पाश्चात्य संगीत उभर रहा था। राजकुमार सिर्फ इतना समझ पाया कोई प्रेमगीत गाया जा रहा था।

पिछली तरफ बने केबिनों में से एक में जीन्स और भड़कीली शर्टें पहने चार नौजवान बीयर पी रहे थे।

बारटेंडर मैले लिबास वाला थका हारा सा आदमी था।

राजकुमार ने लार्ज पैग पीटर स्कॉट का आर्डर दिया।

तत्परतापूर्वक ड्रिंक सर्व करके बारटेंडर तनिक मुस्कराया।

-"धंधा कैसा चल रहा है?" राजकुमार ने पूछा।

बारटेंडर ने गहरी सांस ली।

-"बेकार।"

-"क्यों?"

-"आज शाम विस्की का आर्डर देने वाले तुम पहले आदमी हो और....शायद आखिरी भी। यहां सब बीयर पीने आते हैं। तुम यहां नहीं रहते?"

-"नहीं।"

-"यहां से गुजर रहे हो?"

-"हां।"

-"सैर सपाटा ही असली जिंदगी है। अगर मेरा वश चलता तो मैं भी घूम सकता था। लेकिन पत्नि और परिवार के झमेले में फंसकर रह गया हूं।" बारटेंडर ने मायूसी से कहा फिर बोला- "पिछले साल हुई कुदरती मार के बाद से यहां पूरा शहर मुर्दा होकर रह गया है।"

-"कुदरती मार?"

-"पिछली गर्मियों में यहां भूचाल आया था। जान-माल के अलावा और भी कई तरह के नुकसान उससे हुए। पूरे शहर में दहशत फैल गई। उससे कुछेक लोगों को तगड़ा फायदा भी हुआ पहले यहां के लोगों की जिंदगी बड़ी हंगामाखेज हुआ करती थी। लेकिन भूचाल ने सब खत्म कर दिया। बाकी धंधे तो फिर भी ठीक-ठाक हैं। मगर बार का धंधा बिल्कुल बैठ गया। मेरी मत मारी गई थी जो इस जगह को खरीदने का पागलपन कर बैठा।"

-"तुम इस बार के मालिक हो?"

उसने जवाब नहीं दिया। वह पिछले केबिन में बैठे नौजवानों को कड़ी निगाहों से घूर रहा था।

-"देखो, यहां कैसे कस्टमर आते हैं। एक बीयर लेंगे और घंटों उसी को चुसकते रहेंगे जैसे यह बार न होकर इनकी गपशप का अड्डा है।"

-"एली जल्दी ही आएगी न?" राजकुमार ने लापरवाही से पूछा।

-“नहीं। अब कभी यहां नहीं आएगी।”

-“क्यों?”

-“वह छोड़ गई। और यह अच्छा ही हुआ वरना मैंने उसे निकाल देना था।”

-“मैं तो समझता था इसका मालिक सुनील थापा है।”

-“वह पहले था। अब नहीं। आज सुबह यह जगह मैंने उसे खरीद ली। अपने इस पागलपन की वजह से अब मेरा दिल चाहता है अपने सारे बाल नोंच डालूं। कपड़े फाड़ दूं.....तुम थापा के दोस्त हो?”

-“मिला हूं उससे।”

-“एली के दोस्त हो?”

-“बनना चाहता था।”

-“बेकार वक्त जाया कर रहे हो। वह वापस नहीं आएगी और अगर आ भी गई तो तुम्हें घास नहीं डालेगी। वह रिजर्व्ड है।”

-“किसी खास के लिए?”

-“मैं शादी शुदा और बाल बच्चेदार आदमी हूं। ऐसी बात वह मुझे क्यों बताएगी?”

-“यह तो कोई वजह नहीं हुई। वह बता भी सकती थी....खैर क्या तुमने कांती लाल का नाम सुना है?”

उसका मुंह बन गया।

-“मैं कांती लाल को जानता हूं। कभी कभार यहां आता है।”

-“लेकिन अब कभी नहीं आएगा।”

-“क्यों?”

-“वह मर चुका है।”

-“कैसे? क्या हुआ?”

-“हाईवे पर किसी ने उसे शूट कर दिया।

वह विस्की से भरा ट्रक ला रहा था। ट्रक भी गायब है। उसमें थापा की विस्की थी।”

-“ट्रक में सिर्फ विस्की थी?”

-“हां।”

-“कितनी?”

-“करीब बीस लाख रुपए की।”

-“नामुमकिन। इतनी विस्की वह बेचेगा कहां?”

-“ऑर्डर कई रोज पुराना रहा होगा। उसने इस बारे में तुम्हें नहीं बताया?”

-“हो सकता है बताया हो।” वह सतर्क स्वर में बोला- “मेरी याददाश्त कमजोर है।” उसने काउंटर पर झुककर राजकुमार को गौर से देखा- “तुम कौन हो? पुलिस वाले?”

-“मैं प्राइवेट डिटेक्टिव हूं।” राजकुमार ने गोली दी- “भंडारी ट्रांसपोर्ट कंपनी के लिए इस मामले की छानबीन कर रहा हूं।”

-“तुम समझते हो एली का भी इससे कोई ताल्लुक है?”

-“यह उसी से पूछना चाहता हूं। वह कांती लालको जानती थी न?”

-“हो सकता है। मुझे नहीं मालूम।”

-“तुम्हें अच्छी तरह मालूम है वह जानती थी।”

-“जो चाहो समझ लो। मैं अपने मुंह से कुछ नहीं कहूंगा। यह ठीक है कोई बहुत बढ़िया सिंगर वह नहीं है। लेकिन यहां हमेशा लोगों का मनोरंजन किया करते थी। बेवजह उसे किसी मुसीबत में फंसाना मैं नहीं चाहता।”

-“वह मिलेगी कहां?”

-“पता नहीं एक पैग विस्की के बदले में तुम तो पुलिस जैसी पूछताछ करने पर उतर आए।”

-“मैं और पैग ले लूंगा।”

-“लेकिन मैं और नहीं दूंगा। भंडारी के पास जाओ और उससे कहो जहन्नुम में जाए। उसके साथ तुम भी वहां जा सकते हो।”

-“शुक्रिया।”

राजकुमार ड्रिंक खत्म कर के उठ गया।

उन तीन लड़कियों में से दो फ्लोर के सिरे पर डांस कर रही थीं।

राजकुमार उनके पास पहुंचा और उनमें से एक के साथ डांस करने लगा।

आंखों में अपने पेशे के अनुरूप चमक के बावजूद लड़की काफी खूबसूरत थी। डांसर भी अच्छी थी। लेकिन जिस ढंग से वह रह-रह कर अपने वक्षों और जांघों को राजकुमार के साथ रगड़ रही थी उससे जाहिर था- डांस उसके मुख्य पेशे का हिस्सा भर था।

राजकुमार को उसकी सस्ती परफ्यूम से घुटन सी महसूस हो रही थी।

कुछ देर बाद लड़की मुस्कराई।

-“में रोजी गोल्डन हूं।”

-“तुम्हारी तरह नाम भी खूबसूरत है।” राजकुमार ने तारीफ की।

-“मुझे डांस से प्यार है।”

-“मुझे भी हुआ करता था।”

-“तुम थक गए लगते हो। आओ बैठते हैं।”

-“मैं लेटना ज्यादा पसंद करूंगा।”

इस बात का अपने ढंग से मतलब निकालकर वह दिलकश अंदाज में मुस्कराई।

-“बहुत फास्ट हो। मैं तो तुम्हारा नाम तक नहीं जानती।”

-“मैं राजकुमार हूं।”

-“कहां के रहने वाले हो?”

-“विराट नगर।”

-“मैं भी कुछ अर्सा वहां रही हूं। बहुत बढ़िया शहर है। तुम क्या काम करते हो?”

-“कई काम है।”

-“समझी। कई तरह के बिजनेस हैं। मैं तुम्हारे बारे में जानना चाहती हूं। आओ किसी केबिन में बैठते हैं। मेरे लिए ड्रिंक का आर्डर दोगे न?”

-“जरूर।”

-“तो फिर आओ।”

-“कोई ऐसी जगह नहीं है जहां हम सिर्फ हम अकेले रह सके?”

लड़की ने उसके कंधे पर हाथ मारा।

-“बहुत ऊंची चीज हो। लड़की को फंसाने में जवाब नहीं है तुम्हारा। तुम वाकई एकांत चाहते हो?”

-“हां।”

-“ऊपर एक कमरा है।”

-“चलो, दिखाओ।”

राजकुमार उसके साथ चल दिया।

बारटेंडर ने कड़ी निगाहों से उसे घूरा मगर रोकने का प्रयास नहीं किया। आखिरकार धंधे का सवाल जो था।

लड़की कोने में बनी सीढ़ियां चढ़ने लगी।

राजकुमार ने भी उसका अनुकरण किया।

ऊपर गलियारे से गुजरकर लड़की एक कमरे में पहुंची।

कमरा छोटा था। लेकिन जिस काम के लिए इस्तेमाल किया जाता था उसकी पूरी सुविधाएं वहां मौजूद थीं।

लड़की दरवाजा बंद करके उसकी ओर पलटी।

-“फिल्म देखोगे?”

राजकुमार ने ट्राली पर रखें टी. वी. और वी. सी. आर. पर निगाह डाली।

-"उसकी कोई जरूरत नहीं है।"

लड़की ने हैरानी से उसे देखा मानों ऐसे जवाब की कल्पना भी उसने नहीं की थी।

वहां कोई कुर्सी नहीं थी। राजकुमार बेड पर बैठ गया।

लड़की यूँ गौर से उसे देखे जा रही थी मानों अपने तजुर्बे के आधार पर उसके बारे में सही राय कायम करना चाहती थी।

-"तुम्हें ब्लू फिल्में पसंद नहीं है?"

-"नहीं।"

लड़की आगे आकर उसके घुटनों पर बैठ गई। इस प्रयास में उसका स्कर्ट इतना ज्यादा सिकुड़ गया कि दूधिया चिकनी जांघें काफी ऊपर तक नंगी हो गई।

राजकुमार की तेज निगाहों से वहां मौजूद सुईयां चुभने से बने निशान छिप नहीं सके।

लड़की हेरोइन एडिक्ट थी।

-"तुम्हारी कोई खास पसंद है?"

-"नहीं।" राजकुमार ने जवाब दिया।

लड़की संदिग्ध सी नजर आई।

-"तुम ठीक-ठाक तो हो?"

-"तुम्हें कैसा नजर आता हूं?"

-“देखने में जवान और सेहतमंद हो लेकिन कुछ कर क्यों नहीं रहे हो? अपने कपड़े उतारूँ?”

-“नहीं।”

-“तुम्हारे?”

-“नहीं।” राजकुमार ने उसके कूल्हों पर हाथ रखकर अपनी गोद में उठाया और बिस्तर पर बगल में बैठा लिया- “मैं बातें करना चाहता हूं।”

लड़की ने तरस खाने वाले अंदाज में उसे देखा।

-“सिर्फ बातों से जी भर लेने वाले तो तुम नहीं लगते। ओह, समझी- “तुम जानना चाहते हो मुझे कोई बीमारी तो नहीं है। यकीन करो, मैं एकदम क्लीन हूं। हर महीने चैक अप कराती हूं।”

-“ऐसी कोई फिक्र मुझे नहीं है।”

-“तुम सचमुच सिर्फ बातें ही करोगे?”

-“हां।”

-“तब तो यहां आकर कोई समझदारी तुमने नहीं की।” वह संजीदगी से बोली- “बातें तो हम नीचे भी कर सकते थे। अब तुम्हें कमरे का किराया बेकार देना पड़ेगा।”

-“कितना?”

-“पांच सौ।”

-“और तुम्हें?”

-“एक हजार। मैं बातों के लिए भी उतना ही पैसा लेती हूं। अब यह बताओ किस बारे में बातें करना चाहते हो? मैं इस धंधे में कब क्यों और कैसे आई? या फिर मेरी जिंदगी में बतौर ग्राहक आए तरह-तरह के आदमियों के बारे में?”

-“मुझे सिर्फ एक आदमी में दिलचस्पी है- कांती लाल में। उसे जानती हो?”

-“हां। हालांकि मेरा ग्राहक वह कभी नहीं रहा। मेरे पास आता भी तो मैंने भगा देना था।”

-“क्यों?”

-“मुझे वह क्रैक लगता था।”

-“एली भी उसके बारे में यही सोचती थी।”

लड़की का चेहरा कठोर हो गया।

-“मैं नहीं जानती एली उसके बारे में क्या सोचती है।”

-“क्या वह उसके साथ नहीं जाती थी?”

-“हो सकता है थोड़ा-बहुत उसके साथ रही हो- महज मजाक के तौर पर। मेरा ख्याल है कांती लालकुछेक बार उसे अपने घर ले गया था।”

-“हाल ही में?”

-“हाँ, कोई पन्द्रहेक दिन पहले। एक रात बॉस कांती लालको लाया था....।”

-“थापा उसे लाया था?”

-“हां, उसी ने एली को कहा होगा कि कांती लालके साथ सही ढंग से पेश आए। इसके अलावा कोई और वजह मेरी समझ में नहीं आती कि वह क्यों उसके चक्कर में पड़ी।

सनकी होने के साथ-साथ वह पूरा पियक्कड़ भी है। पिछली बार जब वह यहां आया नशे में धुत था। बारटेंडर ने उसे विस्की देने से साफ इंकार कर दिया।"

-"यह कब की बात है?"

-"तीन-चार रात पहली।" बस सोचती हुई बोली- "हां..." याद आया इतवार की।"

-"उस वक्त एली भी यहीं थी?"

-"हां। कांती लालउसे घर ले गया था। या वह उसे घर ले गई थी। क्योंकि कांती लालइतना ज्यादा नशे में था कि उसे कुछ नहीं सूझ रहा था।"

-"यह एली देखने में कैसी है?"

लड़की चकराई।

-"क्यों? तुम उसे नहीं जानते?"

–"अभी नहीं।"

-"अजीब बात है। तुम्हारी गहरी दिलचस्पी एक ऐसी लड़की में है जिसे तुमने कभी देखा तक नहीं।"

-"इसकी वजह है।"

-"क्या?"

-"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता उसका हुलिया बताओ।"

-"वह इकहरे जिस्म की है लेकिन पतली नहीं कही जा सकती। पहले मैं भी ऐसी ही थी। बड़ी मुश्किल से मैंने थोड़ा मोटापा....।"

-“हम एली की बात कर रहे थे।” राजकुमार ने टोका- “मुझे उसका पूरा हुलिया चाहिए।”

-“किसलिए?” वह खीजती सी बोली।

-“इससे कोई मतलब तुम्हें नहीं होना चाहिए।”

-“ठीक है। मुझे सिर्फ अपने वक्त से मतलब है। तुम्हारे लिए ज्यादा वक्त मेरे पास नहीं है।”

-“तुम्हारे वक्त की पूरी कीमत चुकाने के लिए मैं तैयार हूं।”

-“सिर्फ तैयार हो। अभी तक चुकाई तो नहीं।”

-“तुम्हारे वक्त का हिसाब रखा जाता है?”

-“हाँ।”

-“कौन रखता है?”

-“करन।”

-“वह कौन है?”

-“इस धंधे का मौजूदा मालिक।”

-“तुम्हारा मतलब है, बारटेंडर?”

-“हां।”

राजकुमार ने पर्स से पाँच सौ रुपए के तीन नोट निकालकर उसकी ओर बढ़ाए।

उसने फुर्ती से नोट खींचकर अपनी ब्रेजियर में खोस लिए। उसकी खीज मुस्कराहट में बदल गई।

-“तुम एली का मुकम्मल हुलिया जानना चाहते हो?”

-“हां।”

वह खड़ी हो गई।

-“मैं तुम्हें उससे भी बढ़िया चीज दूंगी।”

बस दरवाजे की ओर बढ़ी।

-“जल्दी लोटना।”

-“अभी आती हूं।”

करीब पाँच मिनट बाद वह फोटो हाथ में लिए लौटी।

-“यह एली की फोटो है- ग्लेमरस पोज में। इसे बाहर विंडो में लगाया जाता था पब्लिसिटी के लिए। कल करन ने वहां से निकाल ली थी।”

फोटो हस्ताक्षर युक्त थी। सुडौल जिस्म वाली सुंदर लड़की लिबास के नाम पर मिनी स्कर्ट और लो कट गले वाला ब्लाउज पहने थी। भरी-भरी गोल छातियों के अधिकांश भाग का प्रदर्शन करती वह आमंत्रणपूर्वक मुस्करा रही थी।

राजकुमार ने साफ पहचाना। लड़की वही थी जिसे उसने ग्लोरी रेस्टोरेंट के पिछले कमरे में थापा के साथ देखा था।

उसने रोजी की ओर देखा।

-“यह थापा की मंजूरे नजर है?”

वह बिस्तर पर उसकी बगल में बैठ गई।

-"यह कोई राज नहीं है। सब जानते हैं। अगर ऐसा नहीं होता तो उसने लीला को यहां जॉब देना नहीं था।"

-"वह है कैसी? भली होशियार या मक्कार?"

-"यह मैं कैसे बता सकती हूं। आमतौर पर जैसी लड़कियां इस धंधे में होती हैं वह भी वैसी ही लगती है। उसके दिमाग में क्या खिचड़ी पकती रहती है यह मैं नहीं जानती।"

-"उसके दोस्त कौन हैं?"

-"मुझे नहीं लगता मिस्टर थापा के अलावा उसका कोई और दोस्त है। वैसे भी एक वक्त में लड़की के लिए एक ही दोस्त काफी होता है।"

-"रिश्तेदार तो होंगे?"

-"एक दादा है। कम से कम एली ने तो यही बताया था। पिछले महीने जब उसने काम शुरू किया था। चंदेक रोज बाद एक रात वह यहां आया था। वह चाहता था, एली इस धंधे को छोड़कर वापस उसके साथ घर चले।"

-"वह रहता कहां है?"

-"शहर से बाहर कहीं....शायद पहाड़ पर। एली ने ऐसा ही कुछ बताया था। मैंने भी उसे समझाया था उसका घर चले जाना ही बेहतर होगा। अगर वह कैबरे के धंधे में ज्यादा देर रही तो भूखे भेड़िए जैसे आदमी उसे फाड़ डालेंगे। उसकी हड्डियां तक चबा जाएंगे। लेकिन मेरी सलाह पर कोई ध्यान उसने नहीं दिया। वह थोड़ी जहरीली भी है। इस बारे में भी मैंने उसे रोकने की कोशिश की थी। वह नहीं जानती ड्रग्स लेते रहने का अंजाम क्या होता है।"

-"तुम क्या लेती हो, रोजी? हेरोइन?"

उसके चेहरे पर कड़वी मुस्कराहट उभरी।

-“मेरे बारे में बातें करना बेकार है। मैं होपलैस केस हूं। जहां तक एली का सवाल है उसने मेरी सलाह नहीं मानी। अब उसे ठोकरें खाकर ही अक्ल आएगी।”

-“किस मामले में?”

-“आज के जमाने में मुफ्त कुछ नहीं मिलता। चाहे वो मौज मजा हो या नशे की मस्ती और बेफिक्री। जल्दी ही इसकी दोगुनी कीमत चुकानी पड़ जाती है। और जब पैसा खत्म हो जाता है तो तरह-तरह से कीमत चुकानी पड़ती है। इसलिए अब वह बड़ी भारी मुसीबत में फंस गई है।”

-“हो सकता है।”

-“बाई दी वे क्या तुम पुलिस वाले हो?”

-“प्राइवेट डिटेक्टिव हूँ।” राजकुमार ने पुनः झूठ बोला।

-“मिसेज थापा के लिए काम कर रहे हो?”

-“यह मामला उससे भी कहीं ज्यादा गंभीर है।”

-“मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा है जिससे एली का अहित हो।” वह होंठ चबाकर बोली- “वह मेरे साथ ऐसा व्यवहार करती थी जैसे मुझ पर तरस आ रहा था। क्योंकि वह खुद को आर्टिस्ट समझती है और कैब्रे को आर्ट। हमारी सोच अलग है। मस्ती और बेफिक्री के साधन मे भी फर्क हैं। लेकिन उससे कोई शिकायत मुझे नहीं है। एक जमाने में मुझे दूसरों की अक्ल पर तरस आता था। इसलिए अब मैं उसी की कीमत चुका रही हूं। खैर, यह मामला कितना सीरियस है?”

-“इसका पता तो उससे बातें करने पर ही लगेगा। हो सकता है, तब भी पता न लगे। वह सुभाष मार्ग के पास ही रहती है न?”

-“हां। इंद्रा अपार्टमेंट्स, दयाल स्ट्रीट। बशर्ते कि वह अभी भी वही है।”

राजकुमार खड़ा हो गया।

-“थैंक्स ए लॉट।”

-“इसमें थैंक्स जैसी कोई बात नहीं है। मुझे पैसे की जरूरत है। बहुत ही सख्त जरूरत। तुमने सही वक्त पर मेरी मदद की है। तुम भले और ईमानदार आदमी हो। अगर कभी मौज मेला करना हो तो बेहिचक आ जाना। हर तरह से सेवा करके तुम्हें पूरी तरह खुश कर दूंगी....फ्री में।”

राजकुमार मुस्कराता हुआ बाहर निकल गया।

१०

सुभाष मार्ग पर कार ड्राइव करते राजकुमार को याद आया उसकी जेब में चरस की भरी सिगरेटों का एक पैकेट पड़ा था।

विशालगढ़ में उसकी कार के पास दो नशेड़ियों में झगड़ा हो रहा था। झगड़े की वजह वही पैकेट था। राजकुमार ने बीच बचाव करने की कोशिश की तो वे दोनों उसी से उलझ गए। मजबूरन राजकुमार को उनकी ठुकाई करके उनसे पैकेट छीन लेना पड़ा था। बाद में उसे फेंकना वह भूल गया। अब वही पैकेट एकाएक महत्वपूर्ण बनता नजर आ रहा था।

इंद्रा अपार्टमेंट्स वही इमारत निकली जिसमें कुछेक घंटे पहले राजकुमार ने थापा की मंजूरे नजर को गायब होते देखा था। इस वक्त वे छोकरे आस-पास कहीं नजर नहीं आए।

कार पार्क करके राजकुमार इमारत में दाखिल हुआ।

प्रवेश हाल में लैटर बॉक्सेज पर लगे कार्डों में से एक के मुताबिक एली दूसरी मंजिल पर सात नंबर फ्लैट में रहती थी।

राजकुमार सीढ़ियों द्वारा ऊपर पहुंचा।

सात नंबर बायीं ओर आखिरी फ्लैट था।

अंधेरे गलियारे में खड़े राजकुमार ने हौले से दस्तक दी।

-"तुम आ गए डार्लिंग?" अंदर से कहा गया।

-"हां।" राजकुमार ने धीरे से कहा।

दरवाजा थोड़ा सा खुला। धीमी रोशनी की चौड़ी लकीर बाहर झांकने लगी।

राजकुमार साइड में खिसक गया।

लड़की ने गर्दन बाहर निकालकर आंखें मिचमचाईं।

-“मुझे उम्मीद नहीं थी कि तुम इतनी जल्दी आ जाओगे। मैं नहाने जा रही थी।”

वह राजकुमार की ओर बढ़ी। पीछे से पड़ती रोशनी में पारदर्शी गाउन से उसके सुडौल शरीर का स्पष्ट आभास मिल रहा था। उसका एक हाथ स्वयमेव राजकुमार की बांह और साइड के बीच सरक गया।

-“वेलकम किस टू डार्लिंग देवा।”

गीले होठों का स्पर्श राजकुमार ने अपने गाल पर महसूस किया। फिर घुटी सी हैरानी भरी कराह सुनाई दी और वह पीछे हट गई। इस प्रयास में उसके फ्रंट ओपन डिजाइन वाले गाउन का सामने वाला हिस्सा पूरी तरह खुल गया।

-“कौन हो तुम? तुमने कहा था, वह हो।”

-“तुमने गलत समझ लिया, एली। मुझे थापा ने भेजा है।”

-“लेकिन उसने तो तुम्हारे बारे में कुछ नहीं बताया।”

अचानक उसे खुले गाउन से झांकती अपनी नग्नता का अहसास हुआ। गाउन के दोनों हिस्सों को आपस में मिलाकर उसने बैल्ट कस ली। बांहें परस्पर छाती पर बांध लीं। उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

-“वह कहां है?” फंसी सी आवाज में पूछा- "खुद क्यों नहीं आया?”

-“निकल नहीं सका।”

-“वह नहीं आने दे रही?”

-“पता नहीं। मुझे अंदर आने दो। उसने तुम्हारे लिए एक चीज भेजी है।”

-“क्या?”

-“अंदर दिखाऊंगा। यहां नहीं।”

-“आओ।”

राजकुमार उसके पीछे अंदर दाखिल हुआ।

रोशनी में राजकुमार ने गौर से उसे देखा। मेकअप न होने के बावजूद चेहरा सुंदर था। उसकी उम्र मुश्किल से चौबीस साल थी। पुराने फर्नीचर के बीच खड़ी वह उस बच्चे की तरह देख रही थी जिसे उपहार देने का वादा किया गया हो।

-"क्या भेजा है देवा ने?"

राजकुमार ने दरवाजा बंद करके जेब से चरस की सिगरेटों वाला पैकेट निकालकर उसे दे दिया।

उसने इतनी उतावली से पैकेट खोला की सिगरेटें नीचे गिर गईं।

वह फौरन नीचे बैठकर उन्हें उठाने लगी।

एक सिगरेट मुंह में दबाए और बाकी पैकेट में रखकर खड़ी हो गई।

राजकुमार ने अपना लाइटर जलाकर सिगरेट सुलगवा दी। उसने गहरा कश लिया।

उसने चार कशों में ही सिगरेट आधी खत्म कर दी।

उसकी आंखें चमक रही थीं। चेहरे पर संतुष्टिपूर्ण मुस्कराहट उभर आई।

शेष बची आधी सिगरेट को सावधानीपूर्वक एश ट्रे में बुझाकर पैकेट में रख लिया।

चरस का प्रभाव होना आरंभ हो चुका था। वह हवा में तैरती हुई सी आगे बढ़ी। दीवान पर बैठकर अपने हाथ मुट्ठियों की तरह बांधकर टांगों के बीच में रख लिए। उसकी पल-पल बदलती मुस्कराहट से स्पष्ट था नशे के प्रभाववश सपनों की दुनिया में विचरना आरम्भ कर चुकी थी।

राजकुमार उसकी बगल में बैठ गया।

-"कैसा महसूस कर रही हो एली?"

-"वंडरफुल।" उसके होंठ धीरे से हीले और आवाज कहीं दूर से आती प्रतीत हुई- "ओ, गॉड आई वाज डाइंग....आई नीडेड इट। देवा को मेरी ओर से धन्यवाद देना।"

-"अगर मिला तो जरूर दूंगा। वह शहर से जा रहा है न?"

-"हां....मैं तो भूल ही गई थी....हम जा रहे हैं।"

-"कहां?"

-"नेपाल।" वह चहकती हुई सी बोली...." हम दोनों साथ-साथ एक नई जिंदगी शुरु करेंगे....बड़ी ही खूबसूरत नई जिंदगी.... जिसमें न कोई चख-चख होगी और न ही कोई पाबंदी। बस वह और मैं होंगे।"

-"तुम्हारा गुजारा कैसे होगा?"

-"हमारे पास साधन और तरीके हैं।" वह स्वप्निल स्वर में बोली- "देवा ने सब इंतजाम कर लिया है।"

-"मुझे नहीं लगता ऐसा होगा।"

-"क्यों?" वह गुर्राई।

-"उनकी निगाहें उस पर है।"

वह सीधी तनकर बैठ गई।

-"किसकी?" उत्तेजित स्वर में पूछा- "पुलिस की?"

राजकुमार ने सर हिलाकर हामी भरी।

एली उसकी ओर झुक गई। उसकी बांह दोनों हाथों में थामकर हिलाई।

-"क्या चक्कर है? प्रोटेक्शन काम नहीं कर रही?"

-"मर्डर को कवर करने के लिए बड़ी सॉलिड प्रोटेक्शन चाहिए।"

एली की होठ खिंच गए। कड़ी निगाहों से उसे घूरा।

-"क्या कहा तुमने? मर्डर?"

-"हां। तुम्हारे एक दोस्त को शूट किया गया था।"

-"कौन दोस्त? इस शहर में मेरा कोई दोस्त नहीं है।"

-"कांती लालदोस्त नहीं था?"

राजकुमार पर निगाहें जमाए वह अलग हटी और हाथों और नितंबों के सहारे दीवान के दूसरे सिरे पर खिसक गई।

-"कांती?" दांत पीसकर बोली- "वह कौन है?"

-"मुझे बनाने की कोशिश मत करो, एली। वह तुम्हारे पीछे लगे रहने वालों में से एक था। इतवार रात को तुम उसे अपने साथ यहां लाई थी।"

-"यह तुम्हें किसने बताया? यह झूठ है।" उसके स्वर में भय का पुट था और चेहरे पर चोरी पकड़े जाने जैसे भाव- "क्या उन्होंने कांती लालको मार डाला?"

-"यह तो तुम्हें पता होना चाहिए। तुम्हीं ने उसकी मौत का सामान किया था।"

-"नहीं। यह झूठ है। ऐसा कुछ मैंने नहीं किया। मैं एकदम बेकसूर हूं।" नशे के प्रभाव में सपनों की जिस दुनिया में पहुंच गई थी उससे बाहर निकलती प्रतीत हुई। आंखों में संदेह के बादल उमड़ आए- "कांती लालमरा नहीं है। तुम मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहे हो।"

-"मेरी बात पर यकीन नहीं है?"

-"नहीं।"

-"तो फिर मोर्ग में जाकर उसकी लाश देख लो।"

-"देवा ने ऐसा कुछ नहीं बताया। अगर कांती लालमारा गया होता तो उसने मुझे बता देना था। यह तो किया ही नहीं जाना था।"

-"जिस बात की तुम्हें पहले से जानकारी थी उसके बारे में वह तुम्हें बताता ही क्यों? कांती लालको तुम्हीं ने तो बलि का बकरा बनाया था।"

-"नहीं, मैंने कुछ नहीं किया। इतवार रात के बाद से तो मैंने उसे देखा तक नहीं। मैं सारा दिन घर पर रही हूं।" वह उठकर राजकुमार के सामने खड़ी हो गई। चेहरा ज्यादा पीला पड़ गया- "क्या कोई मुझे फंसाने की कोशिश कर रहा है" और तुम....तुम कौन हो?"

-"सुनील का दोस्त।" राजकुमार ने गोली दी- "आज रात उससे मिला था।"

-"देवा मेरे साथ ऐसा नहीं करेगा। क्या वह अरेस्ट हो गया है?"

-"अभी नहीं।"

-"तुम्हें उसी ने भेजा था?"

-"हां।"

-"सिगरेट पहुंचाने के लिए?"

-"हां।"

-"देवा को सिगरेट कहां से मिले?"

-"अँटनी से। सुनील खुद नहीं आ सकता था इसलिए उसने मुझे भेजा।"

-"अजीब बात है। तुम्हारा कभी जिक्र तक उसने नहीं किया।" राजकुमार मुस्कराया।

-"तुम समझती हो, वो हरएक बात तुम्हें बताता है?"

-"नहीं। मुझे नहीं लगता।"

भारी उलझन में पड़ी एली बंद खिड़की के पास जा खड़ी हुई फिर पलटी और पैरों को घसीटती हुई सी चलकर दीवान के सिरे पर आ बैठी।

-"किस सोच में पड़ गई?" राजकुमार ने टोका।

-"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। तुम कहते हो कांती लालमर गया और देवा मुझे लटका रहा है।"

-"तुम्हें इस पर यकीन नहीं है?"

-"नहीं।"

-"लेकिन यह सच्चाई है और इस पर यकीन न करके तुम बेवकूफी कर रही हो।"

-"क्या इस मामले में तुम भी शरीक हो?"

-"मेरा भी ख्याल तो यही था। लेकिन ऐसा लगता है वह हम दोनों को लटका रहा है।" राजकुमार एक और गोली देता हुआ बोला- "जिस ढंग से उसने मुझे योजना समझाई थी उसके मुताबिक कांती लालको तुमने ही फंसाना था।"

-"ओरीजिनल प्लान यही था।" वह बोली- "मैंने हाथ देकर उसे रोकना था। कोई गोली नहीं चलनी थी। क्योंकि इस हक में मैं बिल्कुल नहीं थी। बस मैंने हाईवे पर ट्रक रुकवाना था और दूसरों ने उस पर कब्जा कर लेना था।"

-"दूसरे यानी सुनील और अँटनी?"

-"हां। फिर उन्होंने प्लान बदल दिया। देवा नहीं चाहता था मैं इस झमेले में अपनी गरदन फंसाऊं।" एली ने यूं अपनी गरदन पर हाथ फिराया मानों यकीन करना चाहती थी कि वो सही सलामत थी- "फिर एक और बात सामने आई....एक ऐसी बात जो इतवार रात में कांती लालने मुझे बताई थी। जब उसने बताया वह नशे में था। इसलिए मैंने उस पर यकीन नहीं किया। वह उस लड़की के बारे में हमेशा बेपर की उड़ाता रहता था। मगर जब मैंने देवा को वो बात बताई तो उसने यकीन कर लिया।"

-"कौन सी बात? किसके बारे में?"

-"वही मीना भंडारी की कहानी।"

-"मुझे भी बताओ।"

एली ने खोजपूर्ण निगाहों से उसे देखा फिर अनिश्चित सी नजर आई।

-"तुम जब से आए हो बराबर सवाल किए जा रहे हो। आज से पहले कभी तुम्हारी सूरत तक मैंने नहीं देखी। हो सकता है तुम पुलिस वाले हो और सिगरेट के उस पैकेट को तुमने यहां आने के बहाने के तौर पर इस्तेमाल किया है।"

राजकुमार खड़ा हो गया।

-"तुम जो चाहो समझ सकती हो।" कृत्रिम रोषपूर्वक बोला –"मैं तुम्हारी मदद करने आया था। अगर तुम नहीं चाहती तो जहन्नुम में जाओ....।"

वह दरवाजे की ओर बढ़ा।

एली फौरन उठकर उसकी ओर लपकी।

-"ठहरो। बेकार नाराज हो रहे हो। मुझे यकीन आ गया तुम देवा के दोस्त हो और इस मामले में भी शरीक हो। लेकिन अब तुम क्या करोगे?"

राजकुमार पलट गया।

-"मैं इससे अलग हो रहा हूं। मुझे यह सिलसिला जरा भी पसंद नहीं आ रहा।"

-"तुम्हारे पास कार है?"

-"बाहर खड़ी है।"

-"मुझे कहीं पहुंचा दोगे?"

-"जरूर। कहां?"

-"यह तो अभी मैं नहीं जानती। लेकिन यहां बैठी रहकर गिरफ्तार किए जाने का इंतजार मैं नहीं कर सकती।" यह बेडरूम के बंद दरवाजे पर पहुंची। डोर नॉब घुमाकर मुस्कराती हुई बोली- "मैं नहाकर कपड़े बदलती हूं। देर नहीं लगेगी।"

उसने अंदर जाकर दरवाजा बंद कर लिया।

शावर से पानी गिरने की आवाज सुनता राजकुमार इंतजार करने लगा।

सिगरेट फूंकता हुआ वह रैक में रखी मैगजीनें देख रहा था। रोमांटिक और सैक्सी कहानियों वाली सभी घटिया दर्जे की थीं। उन सभी के कवर पर अलग-अलग पोज में एली की ग्लैमरस तस्वीरें छपी थीं। उन्हीं में से एक पर सुनील थापा के घर का पता और फोन नंबर लिखा था।

उन्हें मन ही मन दोहराता राजकुमार चौंका। अपनी रिस्टवॉच पर निगाह डाली।

एली को गए पूरे पच्चीस मिनट हो चुके थे।

उसने उठकर बेडरूम का दरवाजा खोला।

एली वहां नहीं थी। आलमारी और ड्रेसिंग टेबल के ड्राअर्स खुले और लगभग खाली पड़े थे।

बाथरूम में शावर से पानी गिर रहा था। लेकिन एली वहां भी नहीं थी।

किचिन में अंधेरा था। पिछला दरवाजा खोलकर नीचे गई सीढ़ियों पर निगाह पड़ते ही सब समझ में आ गया।

उसे नहाने के बहाने बेवकूफ बनाकर एली भाग गई थी।

राजकुमार तेजी से सीढ़ियां उतर गया।

इमारतों के पिछली तरफ से गुजरती वो एक संकरी गली थी। पास ही अंधेरे में एक आदमी दीवार से पीठ लगाए टांगें फैलाए बैठा था। उसका सर दाएं कंधे पर टिका था।

राजकुमार ने नीचे झुककर उसे हिलाना चाहा। खुले मुंह से आती शराब की तेज बू उसके नथुनों से टकराए तो पीछे हट गया।

वह नशे में धुत्त पड़ा था।

राजकुमार गली के दहाने ओर बढ़ गया।

स्ट्रीट लाइट की रोशनी छोटे से आयत के रूप में सिरे पर पड़ रही थी। एक मानवाकृति उस आयत में दाखिल हुई। चौड़े कंधों वाले उस आदमी ने काला विंडचीटर पहना हुआ था। चाल में सतर्कता थी और पैरों से जरा भी आहट नहीं हो रही थी। चेहरा पीला था। बाल लंबे। उसका दायां हाथ विंडचीटर के अंदर था।

-"एक लड़की को यहां से बाहर जाते देखा था?" राजकुमार ने पूछा।

-"कैसी थी?"

राजकुमार ने एली का हुलिया बता दिया।

वह आदमी आगे आ गया।

-"हां, देखा था।"

-"किधर गई?"

-"क्यों?" तुम उसे किसलिए पूछ रहे हो?"

राजकुमार ने गौर से देखा। वह एक बलिष्ठ युवक था। संभवतया बॉक्सर रह चुका था। और कुपित निगाहों से अपलक उसे घूर रहा था।

-"तुम अँटनी हो?" राजकुमार ने संदिग्ध स्वर में पूछा।

युवक ने मुट्ठी की तरह बंधा हुआ अपना हाथ बाहर निकाला।

-"हां, दोस्त।"

साथ ही उसका घूंसा राजकुमार की कनपटी पर पड़ा।

अचानक पड़े बजनी घूंसे ने उसे त्यौरा दिया।

-"मैं ही अँटनी हूं।" युवक ने कहा और एक घूंसा जड़ दिया।

राजकुमार को अपने घुटने मूड़ते महसूस हुए। तभी एक और घुंसा पड़ा। उसकी चेतना जवाब दे गई। वह नीचे जा गिरा।

होश में आने पर राजकुमार ने स्वयं को अपनी फीएट की अगली सीट पर पड़ा पाया। गरदन और कनपटी में तेज दर्द था।

कुछ देर उसी तरह पड़ा रहने के बाद धीरे-धीरे उठकर ड्राइविंग सीट पर बैठ गया।

सड़क सुनसान थी। रियर-व्यू-मिरर में गाल और ठोढ़ी से खून बहता दिखाई दिया। हल्की सूजन भी थी।

उसने समय देखने के लिए अपनी बायीं कलाई ऊपर उठाई।

रिस्टवॉच गायब थी।

कुछ सोच कर हिप पाकेट थपथपाई। जेब में पर्स तो था लेकिन नगदी मार दी गयी थी। गनीमत थी कि क्रेडिट कार्ड और ट्रेवलर चैक बच गए थे।

उसने ग्लोब कंपार्टमेंट खोला। बत्तीस कैलीबर की लोडेड रिवॉल्वर यथा स्थान मौजूद थी। रिवॉल्वर निकालकर जेब में डाली। इंजिन स्टार्ट करके कार आगे बढ़ा दी।

११

सुनील थापा का निवास स्थान एक पुरानी शानदार हवेली निकली। शहर के उत्तर-पूर्वी हिस्से में उसकी लोकेशन भी एकदम बढ़िया थी।

हवेली में रोशनी थी। बाहर जिप्सी खड़ी थी।

फीएट पार्क करके राजकुमार ऊंची बाउंड्री वॉल के साथ-साथ चल दिया। एक स्थान पर दीवार इस ढंग से टूटी नजर आई कि वहां से अंदर जाया जा सकता था।

उसने वही किया।

पेड़ों के बीच से गुजरकर मुख्य इमारत की ओर जाते राजकुमार को खिड़कियों से लॉन में पड़ती रोशनी दिखाई दी। रात के सन्नाटे में अंदर से आवाजें भी आती सुनाई दे रही थीं।

खिड़कियां इतनी ज्यादा ऊंची थीं कि उनसे अंदर नहीं देखा जा सकता था।

राजकुमार हवेली की दीवार के साथ-साथ प्रवेश द्वार की ओर बढ़ता रहा।

आवाजें दो थी- स्त्री और पुरुष की। दोनों ऊंचे स्वर में बोल रहे थे।

सामने की तरफ वाला बरांडा पेड़ों और बेलों से काफी हद तक इस तरह घिरा था कि सड़क से वहां नहीं देखा जा सकता था। बरांडे में पहुंचकर राजकुमार दीवार के साथ कोने में खड़ा हो गया। अपनी इस स्थिति में वह साफ अंदर देख पा रहा था। लेकिन अंदर से उसे नहीं देखा जा सकता था।

लंबा-चौड़ा कमरा पुराने भारी फर्नीचर, कलाकृतियों वगैरा से विलासपूर्ण ढंग से सुसज्जित था।

अंदर मौजूद स्त्री पुरुष फायरप्लेस के पास आमने-सामने एक दूसरे को बता रहे थे कि उनके संबंध खत्म हो चुके थे।

सीधी तनी खड़ी स्त्री की राजकुमार की ओर पीठ थी। उसके गले में पड़ी मोतियों की माला रोशनी में चमक रही थी।

-"जो कुछ मेरे पास था खत्म हो चुका है।" वह कह रही थी- "इसलिए तुम यहां से भाग रहे हो। मैं जानती थी ऐसा ही करोगे।"

उसके सामने थापा शॉट दे रहे किसी एक्टर की भांति खड़ा था- एक हाथ जेब में डाले दूसरे में पाइप थामें मैंटल से तनिक टिका हुआ था।

-"तो तुम जानती थी?"

-"हां। तुम्हें एक अर्से से जानती हूं। कम से कम चार-पांच साल तो हो ही गए जब तुमने इस भंडारी लड़की के साथ चक्कर चलाया था।"

-"वो सब काफी पहले खत्म हो गया।"

-"तुमने यकीन तो यही दिलाया था लेकिन मेरे साथ तुम ईमानदार कभी नहीं रहे।"

-"मैंने बहुत कोशिश की है। सच्चाई जानना चाहती हो?"

-"सच बोलने का हौसला तुममें नहीं है, सुनील। तुम निहायत झूठे आदमी हो। हमेशा झूठ बोलते रहे हो। शादी से पहले भी तुमने झूठ बोला था- अपनी आमदनी के साधनों और अपनी हैसियत के बारे में। मुझे दिलो जान से प्यार करने के बारे में।" साक्षी के स्वर में कड़वाहट थी- "तुम जिंदगी भर मुझसे झूठ बोलते रहे हो। सही मायने में पत्नी का दर्जा तक तुमने कभी मुझे नहीं दिया।"

-"साबित करो।"

-"ऐसा करने की कोई जरूरत मुझे नहीं है। मैं अच्छी तरह जानती हूं। यही मेरे लिए काफी है। तुम समझते हो अपने बचकाना बहानों से मुझे बेवकूफ बना दिया था। जब तुम अपने अस्त-व्यस्त कपड़ों में लाल रंगा मुंह लेकर आए थे मेरी हवेली में...।"

-"ठहरो।" थापा ने अपने पाइप के सिर को पिस्तौल की तरह उसकी ओर तानते हुए कहा- "तुम्हें पता है, क्या कहा है तुमने? तुमने कहा है- मेरी हवेली। हमारी या अपनी नहीं। फिर भी तुम मुझे ही लालची और खुदगर्ज कहती हो।"

-"बेशक कहती हूं। क्योंकि तुम हो ही लालची और खुदगर्ज। मेरे दादा ने यह हवेली मेरी दादी के लिए बनाई थी। वे इसे मेरे पिता के लिए छोड़ गए। मेरे डैडी मेरे लिए छोड़ गए। अब यह मेरी है सिर्फ मेरी। और हमेशा मेरी ही रहेगी।"

-"इसकी जरूरत भी किसे है?"

-"तुम्हें। तुम्हारी नजरें इस पर लगी हैं। अभी उस रोज की ही तो बात है तुम मनाने की कोशिश कर रहे थे कि मैं इसे बेचकर पैसा तुम्हें दे दूं।"

-"हां, मैंने कोशिश की।" वह धूर्ततापूर्वक मुस्कराया- "लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है। तुम अपनी इस हवेली की मालकिन बनी रहकर अकेली इसमें रह सकती हो। असल में यहां तो मैं कभी रहा ही नहीं। इसके पीछे अस्तबल में रहता था और तुमने मुझे वहां रखा

था। उस अस्तबल को भी तुम अपने पास रख सकती हो। अपने अगले पति के लिए तुम्हें उसकी जरूरत पड़ेगी।"

-"तुम समझते हो तुम्हारे साथ हुए तजुर्बे के बाद भी मैं शादी करूंगी?"

-"तजुर्बा इतना बुरा तो नहीं था, साक्षी। तुम्हारी फिगर भी खराब नहीं है। दूसरा पति आसानी से मिल जाएगा। मैं मानता हूं जब हमने शादी की तुमसे प्यार मैं नहीं करता था। सुन रही हो ना? मैं कबूल करता हूं मैंने तुम्हारी जायदाद और पैसे की वजह से तुमसे शादी की थी। क्या यह इतना संगीन जुर्म है? बड़े शहरों में तो ऐसा आमतौर पर होता रहता है। मैंने भी तुम्हें पत्नी बनाकर तुम्हारा भला ही किया था।"

-"इस मेहरबानी के लिए शुक्रिया...।"

-"मुझे बात पूरी करने दो।" उसका स्वर भारी हो गया और अपना पोज वह भूल गया- "तुम बिल्कुल अकेली थीं। तुम्हारे मां-बाप मर चुके थे। तुम्हारा कैप्टन प्रेमी कश्मीर में आतंकवादियों से हुई मुठभेड़ में मारा गया...।"

-"अरुण मेरा प्रेमी नहीं था।"

-"मैं भी मान लेता हूं। खैर, उस वक्त तुम्हें अपनी दौलत से ज्यादा जरूरत एक आदमी की थी। तुम्हारी कमी को पूरा करने के लिए मैंने खुद को पेश कर दिया। लेकिन पूरा नहीं कर पाया हालांकि अपनी ओर से हर मुमकिन कोशिश मैंने की थी। मैंने फिफ्टी-फिफ्टी के बेसिस पर शादी को कामयाब बनाना चाहा मगर नहीं बना सका। कोई मौका नहीं मिला। मुझ पर विश्वास करना तो दूर रहा तुमने कभी मुझे पसंद तक नहीं किया।"

-"फिर भी तुम्हें प्यार तो करती थी।" साक्षी पलटकर पीछे हट गई। अपने हाथ वक्षों पर यूँ रख लिए मानों उनमें दर्द हो रहा था।

-"यह महज तुम्हारा वहम था कि मुझसे प्यार करती थीं। अगर करती भी थीं तो सिर्फ खयालों में करती होगी। ऐसे खयाली प्यार का फायदा क्या है? यह महज एक लफ़्ज़ है जहां तक मेरा संबंध है, तुमने कभी तन मन से अपने आप को मेरे हवाले नहीं किया। इस लिहाज से तुम अभी भी क्वांरी हो। तुम्हारा पति बना रहने के लिए कितनी मेहनत मुझे करनी पड़ी है मैं ही जानता हूं। लेकिन तुमने कभी यह अहसास भी मुझे नहीं होने दिया कि मैं एक मर्द हूं।"

साक्षी का चेहरा तनावपूर्ण था।

-"मैं जादूगर नहीं हूं।" वह बोली।

-"फायदा भी क्या है?"

-“कोई फायदा नहीं। अगर इस रिश्ते में कभी कुछ था भी तो सब खत्म हो चुका है। जब मैंने तुम्हें अपने सूटकेस पैक करते पाया तो उस सबकी पुष्टि हो गई जो मैं जानती थी। जरा भी ताज्जुब मुझे नहीं हुआ। मुझे महीना पहले ही पता चल गया था। क्या होने वाला है?”

-“पिछली दफा तो यह अर्सा पांच साल चला था।”

-“हां, लेकिन मैं उम्मीद लगाए रही। जब तुमने मीना भंडारी के साथ ताल्लुकात खत्म कर दिए या खत्म करने का दावा किया तब मैंने सोचा था शायद हमारी शादी बच जाएगी। लेकिन ऐसी उम्मीद पालना मेरी बेवकूफी थी। मैं कितनी बेवकूफ हूं इसका पता मुझे पिछले महीने तब चला जब मैंने ‘ओल्ड इन’ के बाहर तुम्हारे पहलु में उस लड़की को देखा था और तुमने ऐसा जाहिर किया जैसे मुझे जानते ही नहीं। मुझे देखकर भी अनदेखा करके उसी को देखते रहे।”

-“पता नहीं, क्या कह रही हो तुम।” वह खोखले स्वर में बोला- “मैं कभी किसी लड़की के साथ ओल्ड इन नहीं गया।”

-“बिल्कुल नहीं गए।” अचानक साक्षी मुट्ठियाँ भींचे उसकी ओर पलट गई- “क्या वह लड़की तुम्हें मर्द होने का एहसास दिलाती है? क्या वह तुम्हारी चापलूसी करके तुम्हें वहम पालने देती है कि तुम एक शानदार मर्द हो जिसकी जवानी लौट आई है?”

-“उसे इससे दूर ही रखो।”

-“क्यों? क्या वह इतनी डरपोक है? क्या तुम उसके साथ नहीं भाग रहे हो? क्या यही आज रात का बड़ा प्रोजेक्ट नहीं है?”

-“तुम पागल हो?”

-“अच्छा? क्या तुम भाग नहीं रहे? अकेले जाने वाले आदमी तुम नहीं हो। तुम्हें अपने साथ एक ऐसी औरत की जरूरत है जो तुम्हारे अहम को सहेजकर रख सके। मैं न तो उस औरत को जानती हूं और न ही उसकी कोई परवाह मुझे है। मैं सिर्फ इतना जानती हूं तुमने मीना भंडारी के साथ फिर से चक्कर चला लिया है या फिर हो सकता इस पूरे अर्से में बराबर उसे उलझाए ही रखा है।”

-“तुम वाकई पागल हो गई हो।”

-“अच्छा? मैं जानती हूं पिछले शुक्रवार को तुमने उसे लॉज की चाबियां दी थीं। मैंने उसे चाबियों के लिए तुम्हारा शुक्रिया अदा करते सुना था। इसलिए मुझे यह सुनकर भी कोई ताज्जुब नहीं होगा कि वह मोती झील पर बैठी तुम्हारे आने का इंतजार कर रही है।”

-“बको मत। मैं बता चुका हूं वो सब खत्म हो गया। मैं नहीं जानता वह अब कहां है।”

-“उसने वीकएंड मोती झील पर गुजारा था। यह सच है न?”

-“हां। मैंने उसे कहा था वीकएंड के लिए वहां जा सकती है। लॉज को हम तो इस्तेमाल कर नहीं रहे हैं। वो खाली पड़ी थी। मैंने चाबियां उसे दे दीं। क्या ऐसा करना जुर्म है?”

-“अब तुम भी वहीं जा रहे हो?”

-“नहीं। मीना भी वहां नहीं है। सोमवार को मैं कार लेकर उसे वहां देखने गया था। वह जा चुकी थी।”

-“कहां?”

-“पता नहीं। क्या तुम्हारे भेजे में यह बात नहीं आती कि मैं नहीं जानता?” इस विषय से वह बहुत ज्यादा विचलित हो गया प्रतीत हुआ- “या तुम समझती हो मैंने औरतों का हरम बना रखा है।”

-“तुम्हारे ऐसा करने पर भी मुझे हैरानी नहीं होगी। औरतों के मामले में तुम्हारा यह हाल है अपने वजूद तक का पता तुम्हें नहीं चलता जब तक कि कोई औरत तुम्हारे कान में न कहे कि तुम हो।”

-“वो कोई औरत तुम तो नहीं हो सकती।”

-“बिल्कुल नहीं। मैं नहीं जानती इस दफा तुम किसके फेर में हो लेकिन इतना जरूर कह सकती हूं यह सिलसिला ज्यादा दिन नहीं चलेगा।”

-“यह तुम्हारा ख्याल है।”

-“नहीं, मैं जानती हूं। तुम्हारे लिए सैक्स और पैसा एक ही जैसी चीजें हैं। दोनों को एक ही तरह इस्तेमाल करते हो- खुले हाथों। इसलिए न तो पैसा तुम्हारे पास रुक सकता है और न ही एक औरत के साथ तुम ज्यादा दिन रह सकते हो।”

-“तुम कुछ नहीं जानतीं। बस किताबों में पढ़ी बातें दोहरा रही हो। इस असलियत को नहीं समझतीं कि ये सब नहीं होना था अगर तुमने उस वक्त मुझे ब्रेक दे दिया होता जब मैंने मांगा था।”

-“मैंने तुम्हें ढेरों ब्रेक दिए हैं।” साक्षी पहली बार बचाव सा करती हुई सी बोली- “तुम मुसीबत में हो न? बड़ी भारी मुसीबत में?”

-“तुम कभी नहीं समझोगी।”

-“क्या हम एक दूसरे के साथ ईमानदारी नहीं कर सकते- बस इस बार? मैं तुम्हारी पूरी मदद करूंगी।”

-“अच्छा?”

-“हां। चाहे इसके लिए तुम्हारी खातिर मुझे अपनी हवेली क्यों न छोड़नी पड़े।”

-“तुम्हारी किसी चीज की जरूरत मुझे नहीं है।”

साक्षी ने गहरी सांस ली मानों पूरी तरह ना उम्मीद हो चुकी थी।

-“सुनील।” संक्षिप्त मौन के पश्चात बोली- “आज रात आकाश बाजवा क्यों आया था?”

-“रूटीन इनवेस्टीगेशन के लिए।”

-“मुझे तो ऐसा नहीं लगा।”

थापा उसकी ओर बढ़ा।

-“तुम चोरी से सुन रही थी?”

-“बिल्कुल नहीं। तुम्हारी आवाजें मुझ तक आ रही थीं। तुम दोनों में खासी झड़प हुई थी।”

-“फारगेट इट।”

-“क्या यह मर्डर के बारे में थी?”

-“आई सैड फारगेट इट।” उसकी उंगलियां एकाएक पाइप पर इतनी जोर से कस गईं कि वो टूट गया। स्वर में तेजी आ गयी- “मेरे बारे में सब कुछ भूल जाओ। तुम मुझे एक पूरी तरह नाकामयाब आदमी समझती रही हो और तुम्हारा ऐसा समझना ठीक भी है। लेकिन इसमें सारा कसूर मेरा नहीं है। इस शहर में भी कुछ गड़बड़ है। कम से कम मुझे तो यह रास आया नहीं। मेरी किस्मत भी खराब ही रही। अगर गवर्नमेंट ने इस टेम्प्रेरी एयरबेस को फिर से चालू कर दिया होता तो डीलक्स मोटल में नोटों की बारिश होनी थी और मेरे पास दौलत का ढेर लग जाना था।”

-“तुम्हें बिजनेस की कोई समझ नहीं है। तुम सिर्फ गँवाना जानते हो। लेकिन अपनी तसल्ली के लिए दोष सरकार को देते हो। मुझे और इस शहर को कसूरवार ठहराते हो।”

थापा ने अपना टूटा पाइप उसकी ओर हिलाया।

-“बस बहुत हो गया। और ज्यादा बरदाश्त मैं नहीं कर सकता। मैं जा रहा हूं।”

वह दरवाजे की ओर बढ़ा।

-"मुझे बेवकूफ मत बनाओ।" साक्षी ने पीछे से कहा- "तुम हफ्तों पहले यह फैसला कर चुके थे। तभी से योजना बनाते रहे हो। लेकिन इसे कबूल करने का हौसला और मर्दानगी तुममें नहीं है।"

थापा रुक गया।

-"तुम्हें मर्दानगी में कब से दिलचस्पी होने लगी।" पलटकर बोला- "इसने तो कभी तुम्हें अपील नहीं किया।"

-"मैं कभी इस काबिल समझी ही नहीं गई।"

-"तो फिर मुझे गौर से देख लो। अब हम कभी नहीं मिलेंगे।" उसने नथुने फुलाकर भारी सांस लेते हुए चेहरा आगे कर दिया। साक्षी हंसी। मानों उसके अंदर कहीं चटककर कुछ टूट रहा था।

-"क्या इसी को मर्दानगी कहते हैं? क्या मर्द इसी तरह बातें करता है? क्या एक पति अपनी पत्नि से इसी तरह पेश आता है?"

-"पत्नि? कैसी पत्नि? मुझे तो कोई पत्नि नजर नहीं आ रही।"

वह पलटकर कारपेट को पैरों से रौंदता हुआ सा आगे बढ़ा और दरवाजा खोल दिया।

राजकुमार को अब दिखाई तो वह नहीं दे रहा था लेकिन सीढ़ियों पर उसके भारी कदमों की आहटें सुनाई दे रही थीं।

साक्षी ने मेंटल के पास जाकर अपना सर और बांह उस पर टिका दी। उसके बाल चेहरे पर बिखर गए।

राजकुमार ने उसकी तरफ से गरदन घुमा ली।

कुछ देर बाद वरांडे के दूसरे सिरे पर एक दरवाजा खुला।

राजकुमार अंधेरे कोने में सिमिट गया।

दोनों हाथों में चमड़े के भारी सूटकेस उठाए थापा बाहर निकला।

-"हमेशा के लिए जा रहे हो?" पीछे से साक्षी ने पुकारा।

-"हां, मैं अपनी कार ले जा रहा हूं। और मेरे पास सिर्फ मेरे कपड़े हैं।"

-"और हो भी क्या सकता है? तुम्हारे पास सिर्फ एक चीज और है- कर्जे। वो तुम पीछे ही छोड़े जा रहे हो।"

-“मैं बिजनेस भी छोड़कर जा रहा हूं। कर्जे उस से कवर हो जाएंगे और अगर नहीं हो सके तो बुरा होगा।”

-“मेरे लिए?”

-“हां।”

साक्षी दरवाजे में प्रगट हुई।

-“जा कहां रहे हो सुनील?”

थापा की पीठ उसकी तरफ थी।

-“तुम्हें कभी पता नहीं चलेगा।”

-“तुम इस तरह चले जाने के ही काबिल हो।”

-“ले जाए जाने से तो बेहतर ही है।” थापा ने गरदन घुमाकर कहा- “अलविदा साक्षी। मेरे लिए मुसीबत खड़ी मत करना। अगर तुमने ऐसा किया तो खुद दो गुनी मुसीबत का सामना करोगी।”

वरांडे की सीढ़ियां उतरकर वह अपनी जिप्सी की ओर बढ़ गया।

साक्षी उसे जाते देखती रही। उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था। आंखें गुस्से से सुलग रही थीं। अचानक उसका हाथ अपनी माला पर कस गया। जोर से झटका दिया। माला टूट गई और मोती नीचे गिरकर बिखर गए।

१२

राजकुमार अपनी फीएट में थापा की जिप्सी का पीछा कर रहा था। शहरी सीमा में वह जानबूझकर उससे खासा फासला बनाए रहा था। लेकिन हाईवे पर इस वक्त भी काफी ट्रैफिक था इसलिए अन्य वाहनों में मिलकर फीएट को अपेक्षाकृत जिप्सी के नजदीक ले आया।

वे डीलक्स मोटल से मुश्किल दो मील-दूर थे। राजकुमार के विचारानुसार थापा वहीं जा रहा था।

लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

थापा ने अपनी जिप्सी वाहनों की कतार से अलग की और उस सड़क पर घुमा दी जो एक रेस्टोरेंट तक जाती थी।

पार्किंग स्पेस में खड़ी दो कारों में दो जोड़े रोमांस करने में व्यस्त थे। तीसरी कार एक लाल मारुति थी जिसके मडगार्ड पिचके हुए थे।

वहां से आगे गुजरते राजकुमार ने थापा को मारुति की बगल में रुकते देखा।

रेस्टोरेंट के पास ही एक पैट्रोल पम्प था। पम्प बंद हो चुका था वहां कोई नहीं था। राजकुमार ने वही ले जाकर फीएट रोकी।

ड्राइविंग सीट पर बैठे राजकुमार को अपनी उस स्थिति में रेस्टोरेंट का प्रवेश मार्ग और इमारत की एक शीशे की दीवार दिखाई दे रही थी। दीवार के पीछे तीन कस्टमर एक वेटर से बातें कर रहे थे। दूर दूसरी दीवार के शीशे से थापा की जिप्सी और मारुति भी धुंधली सी नजर आई।

दोनों कारों के बीच खड़ा थापा मारुति में मौजूद किसी से बातें कर रहा था। मारुती में बैठे शख्स का चेहरा तो राजकुमार को नजर नहीं आया लेकिन मैले से किसी पेपर या अखबार में लिपटा बड़ा सा मोटा पैकेट थापा की ओर बढ़ाया जाता दिखाई दिया। थापा पैकेट लेकर जिप्सी में बैठ गया।

मारुति की हैडलाइट्स जलीं। वह बैक होकर प्रवेश मार्ग की ओर मुड़ गई।

राजकुमार को लंबे बालों, कठोर चेहरे और विंडचीटर की एक झलक दिखाई दी।

वह अँटनी था।

राजकुमार का रोम-रोम गुस्से से कांप उठा। फीएट का इंजिन स्टार्ट करके वह भी उसके पीछे लग गया।

मारुति शहर से बाहर दक्षिण की ओर जा रही थी।

फीएट की स्पीड के साथ-साथ राजकुमार की उत्तेजना भी बढ़ती जा रही थी।

थापा के डीलक्स मोटल के सामने से गुजरती फीएट की स्पीड साठ-पैंसठ के बीच थी।

मारुति सामने जा रही थी।

चंदेक मील जाने के बाद स्पीड कम हो गई फिर वो हाईवे से दायीं ओर मुड़ गई। उसकी हैडलाइट्स की रोशनी दोनों ओर तारों की बाड़ से घिरी एक साइड रोड पर पड़ रही थी।

अचानक हैडलाइट्स बुझ गई।

चौराहे से गुजरकर रफ्तार कम करते राजकुमार को मारुति रेंगती सी नजर आई।

राजकुमार ने जोर से ब्रेक लगाए। लाइटें ऑफ करके यू टर्न लिया। सुस्त रफ्तार से वापस चौराहे की ओर जाते राजकुमार को न तो मारुति दिखाई दी और न ही उसके इंजिन की आवाज सुनाई दी। उसने फीएट वापस घुमा दी।

करीब आधा मील तक वह बगैर लाइटों के ही कार ड्राइव करता रहा।

आसमान में तैरते बादलों में चांद तारे छुपकर रह गए थे। लेकिन अंधेरा ज्यादा नहीं था। दोनों तरफ तारों की ऊंची बाड़ से घिरी सड़क एकदम सीधी थी। इसलिए ड्राइविंग में खास असुविधा राजकुमार को नहीं हो रही थी। उसके बायीं और खुला ढलुवां मैदान था। दायीं और सुनसान पड़ी एयरबेस के ऊंचे ऊंचे हैंगर्स का आभास मिल रहा था। उनके चारों ओर घास में छिपे रनवेज भी धुंधले से नजर आ रहे थे।

तारों की बाड़ में एक स्थान पर चौड़ा रास्ता बना था। राजकुमार ने उससे आगे ले जाकर साए में फीएट रोक दी। जेब से रिवॉल्वर निकालकर चैक की। वो लोडेड ही थी।

वह कार से निकला। हवा में झाड़ियों की पत्तियों की सरसराहट के अलावा सर्वत्र शांति थी। फलस्वरूप घास में उसके कदमों की आहट साफ सुनाई दे रही थी।

बाड़ में तारों का करीब बीस फुट चौड़ा दोहरा गेट खुला पड़ा था। उसमें झूलते मोटे ताले को राजकुमार ने हाथ से टटोला। उसे चाबी से खोलने की बजाय तोड़ा गया था।

गेट से गुजरती सड़क एक रनवे से जा मिली थी। निकटतम हैंगर का विशाल दरवाजा भी खुला पड़ा था। उसकी बगल में मारुति खड़ी थी।

खुली सड़क पर वो करीब दो सौ गज दूर था।

राजकुमार उधर ही बढ़ा।

कहीं कोई हरकत नहीं थी। स्वयं को अरक्षित महसूस करते राजकुमार को हाथ में थमें रिवॉल्वर से ही राहत का थोड़ा अहसास हुआ।

सहसा एक डीजल इंजिन के स्टार्ट होने का शोर वातावरण में उभरा साथ ही गुफा की भांति नजर आते हैंगर में हैडलाइट्स जल उठीं।

राजकुमार तेजी से दौड़ पड़ा। इंजिन गर्म होने से पहले ही वहां पहुंचना चाहता था। लेकिन ऐसा नहीं हो सका।

हैंगर से सैमी ट्रेलर टाइप ट्रक बाहर निकला- ठीक वैसा ही जैसे राजकुमार ने भंडारी ट्रांसपोर्ट कम्पनी में खड़े देखे थे।

ट्रक की हैडलाइट्स उसकी ओर घूमी। ड्राइविंग सीट पर एक सफेद चेहरा चमका।

सीधे अपनी ओर आते ट्रक की विंडशील्ड के नीचले दायें सिरे का निशाना लेकर राजकुमार ने लगातार दो फायर झोंक दिए। कांच पर मकड़ी के जाले की तरह क्रेक तो बन गए लेकिन चूर-चूर वो नहीं हुआ।

बगैर स्पीड कम किए ट्रक सीधा उसकी ओर झपटता रहा।

राजकुमार को तीसरे फायर का मौका नहीं मिल सका। जान बचाने के लिए एक तरफ कूदा और उससे दूर दौड़ता चला गया। अचानक कोई चीज उसकी पैंट के पाउच में अड़ी और उसे घुमा दिया। उसने हवा में हाथ मारते हुए संभलने की कोशिश की मगर संभल नहीं सका। नीचे गिरा और तेजी से लूढ़कता चला गया।

लंबे ढलान पर दूर तक लुढ़कने के कारण उसका पोर-पोर हिल गया था। कपड़े फट गए। चेहरे और हाथों पर खरोंचें आ गईं। पीठ, कंधों और सर में दर्द के साथ भारी जलन भी हो रही थी। दिमाग सुन्न सा था।

कुछेक पल पड़ा रहने के बाद उठकर चारों ओर निगाहें दौड़ाई।

खुले हैंगर और उसकी बगल में खड़ी मारुति के अलावा अन्य कोई चिन्ह उस दृश्य का नजर नहीं आया जो कुछ देर पहले उसने देखा था। अब उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। जल्दबाजी में ट्रक पर फायर करने की बेवकूफी कर बैठने की बजाय उसे चुपचाप पीछा करना चाहिए था।

मन ही मन खुद को कोसते हुए अपनी रिवॉल्वर ढूंढ़कर फीएट के पास पहुंचा।

खुले गेट से फीएट को अंदर ले जाकर उसी हैंगर के सामने जा रुका। हैडलाइट्स की रोशनी में खाली पड़े हैंगर के फर्श पर एक जगह काफी तेल पड़ा नजर आया। स्पष्टत: ट्रक उसी स्थान पर खड़ा रहा था।

उसने हैंगर में जाकर उसी स्थान के आस-पास मुआयना किया। कोका कोला की एक खाली कैन के अलावा फर्श पर एल्युमीनियम पेंट की बूंदे भी फैली नजर आयीं। उसने एक बूंद को उंगली से छुआ। वो पूरी तरह नहीं सुखी थी।

बाहर निकलकर मारुति का निरीक्षण किया। कार ज्यादा पुरानी नहीं थी लेकिन उसे लापरवाही से इस्तेमाल किया गया था और मेंटेनेंस की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया था। उसका नंबर मन ही मन रटते राजकुमार ने अंदर देखा। अगली सीट के फर्श पर सिगरेट के कई टोंटे पड़े थे। उनमें से एक को उठाकर सूंघा। वो चरस की सिगरेट का अवशेष था। अगली सीट के कुशन के पीछे उस इलाके का एक रोड मैप पड़ा था। उसे निकालकर राजकुमार फीएट में सवार होकर वापस हाईवे की ओर रवाना हो गया।

चौराहे पर पहुंचकर उसने चारों ओर निगाहें दौड़ाई।

हाईवे पर दूर एक साइन बोर्ड लगा था- मनाली बाई पास।

राजकुमार ने स्वयं को अँटनी के स्थान पर रखकर सोचने की कोशिश की। अगर वह दायीं ओर और दक्षिण में मुड़ा तो पुलिस द्वारा बार्डर पर किए गए रोड ब्लॉक्स से बच नहीं सकेगा। उत्तर की ओर जाने पर हाईवे से वापस शहर में जा पहुंचेगा। इसलिए ज्यादा संभावना इसी बात की थी कि वह बाईपास से ही गया होगा।

राजकुमार ने भी फीएट उधर ही घुमा दी।

चौराहे से चार-पांच मील आगे, जहां सड़क चढ़ाईदार और संकरी हो गई थी, एक हेअरपिन कर्व पर लाल रोशनी चमकती दिखाई दी। एक कार सड़क को चौड़ाई में घेरे इस ढंग से खड़ी थी कि अन्य किसी भी वाहन का वहां से गुजर पाना नामुमकिन था।

वो पुलिस कार थी।

राजकुमार ने फीएट रोक दी।

इन्स्पेक्टर बाजवा बाएँ हाथ में लाल टार्च और दाएँ में गन थामें आगे आया।

-"कार साइड में लगाकर नीचे उतरों- हाथ ऊपर करके।" फिर उसने टार्च की रोशनी राजकुमार के चेहरे पर डाली- "ओह तुम फिर सामने आ गए।"

राजकुमार ने गौर से उसे देखा। वह गुस्से में नजर आया।

-"तुम भी फिर सामने आ गए। ट्रक को देखा था?"

-"कैसा ट्रक?"

-"भंडारी ट्रांसपोर्ट कंपनी का सेमी ट्रेलर टाइप।"

-"अगर मैंने उसे देखा होता तो क्या इस वक्त यहां मौजूद होता?" उसके स्वर में अधीरता थी। अब क्रोधित नजर नहीं आ रहा था।

-"यहां कितनी देर से हो इन्स्पेक्टर?"

-"एक घंटे से ज्यादा हो गया।"

-"इस वक्त क्या बजा है?"

-"एक बज कर बीस मिनट। कुछ और जानना चाहते हो? मसलन आज रात डिनर में मैंने क्या खाया था?"

-"बता दो।"

-"मुझे डिनर नसीब ही नहीं हुआ।" इन्स्पेक्टर ने खिड़की से अंदर झुककर उसे देखा- "तुम्हारी यह हालत किसने की?"

राजकुमार ने नोट किया टार्च की लाल रोशनी के रिफ्लैक्शन में इन्स्पेक्टर के चेहरे की रंगत गुलाबी नजर आ रही थी।

-"अचानक मेरी हालत की फिक्र तुम्हें क्यों होने लगी?"

-"बेकार की बात मत करो। मेरे सवाल का जवाब दो।"

-"ओ के। मैं ढलान से लुढ़क गया था।" राजकुमार ने कहा और कैसे बताने के बाद कहा- "उस आदमी ने ट्रक को एयरबेस के खाली हैंगर में छिपाया हुआ था। ट्रक की साइडों में लिखे भंडारी ट्रांस्पोर्टर कंपनी के नाम को एल्युमीनियम पेंट से पोत दिया गया। और सरगर्मी खत्म होने का इंतजार किया। मुश्किल से घंटा भर पहले थापा एक रोड साइड रेस्टोरेंट में उसे मिला और ट्रक निकाल लाने की हिदायत दे दी।"

-"तुम यह कैसे जानते हो?"

-"मैंने उन दोनों को साथ-साथ देखा था। ट्रक ले जाने वाले युवक का नाम अँटनी है। उसने थापा को मोटा सा एक पैकेट दिया था जिसमें संभवतया नोट थे। थापा की कीमत।"

-"कीमत? किसलिए?"

-"ट्रक को छिपाने और फिर सही सलामत निकलवा देने की।"

-"थापा ने यह कैसे करना था?"

राजकुमार ने जवाब नहीं दिया।

दोनों ने खामोशी से एक दूसरे को देखा। इन्स्पेक्टर के कठोर चेहरे पर रहस्यमय भाव थे।

-"तुम थापा की बात को बेवजह तूल दे रहे हो। यह ठीक है उस हरामजादे को मैं खुद भी पसंद नहीं करता लेकिन इसका मतलब यह नहीं है वह लुटेरों के किसी गैंग में शामिल है।"

-"तमाम तथ्य उसकी ओर ही संकेत करते हैं। उनमें से कुछक के बारे में मैं तुम्हें बता चुका हूं। उनके अलावा और भी है।"

-"मसलन?"

-"उसने विस्की का बहुत ही मोटा आर्डर दिया था जिसका कोई यूज़ उसके लिए नहीं है।"

-"यह तुम कैसे जानते हो?"

-"उसने अपनी बार आज सुबह बेच दी। एक दूसरी औरत के लिए अपनी पत्नी को छोड़कर शहर से भाग रहा है। उसे मोटी नगद रकम की सख्त जरूरत है।"

-"दूसरी औरत कौन है?"

-"अगर तुम यह सोचकर परेशान हो रहे हो वह तुम्हारी साली है तो वह नहीं है। वह इस मामले से बाहर ही लगती है। उस लड़की का नाम एली है। वह उसी बार में सिंगर हुआ करती थी। पिछले दो हफ्तों से वह कांती लालके साथ प्यार का नाटक कर रही थी ताकि उसे शीशे में उतार सके। उन्हें अरेस्ट करके चार्ज लगाने के काफी एवीडेंस तुम्हारे पास हैं...।"

-"एवीडेंस? नहीं, मेरे पास सिर्फ तुम्हारी कहानी है।"

-"इसे चैक कर लो। असलियत का पता चल जाएगा। मेरी सलाह मानो और इससे पहले कि सस्पेक्ट्स शहर से भाग जाएँ, उन्हें गिरफ्तार कर लो।"

-"मुझे मेरा धंधा सिखा रहे हो?"

-"नहीं। जो जरूरी है वो बता रहा हूं।"

-"अपनी इस सलाह को अपने पास ही रखो। तुम्हारी हालत देखकर मैं तुम्हारे साथ हमदर्दी कर सकता हूं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि जो तुम्हारे साथ हुआ है उससे ज्यादा बुरा नहीं हो सकता।"

-"यह धमकी है?"

-"नहीं। अगर तुम मेरे इलाके में बुरी तरह जख्मी हो जाते हो तो यह मेरे हक में भी अच्छा नहीं होगा। तुम्हारी जान भी जा सकती है।"

-"पुलिस की गोली से?"

-"तुम मेरा मतलब नहीं समझ रहे। मैं नहीं चाहता तुम्हारा कोई अहित हो। इसलिए मेरी सलाह मानो हॉस्पिटल में जाकर अपनी चोटों का इलाज कराओ और आराम करो। समझ गए?"

-"हां। थापा और उसके शरीफ दोस्तों से मुझे दूर रहना चाहिए।"

-"इस मामले से ही दूर रहो। अगर तुम इसी तरह इधर-उधर अपनी टांग अड़ाते रहे तो तुम्हारी जिम्मेदारी मैं नहीं ले पाऊंगा। जा सकते हो।"

वह पीछे हट गया।

राजकुमार ने फीएट मोड़ कर आगे बढ़ा दी।

इन्स्पेक्टर बाजवा पुलिस कार की बगल में खड़ा उसे देखता रहा।

बाई पास से वापस लौटकर राजकुमार शहर की दिशा में मुड़ गया।

रास्ते में कुछेक ट्रक दक्षिण की ओर जाते मिले लेकिन उनमें से कोई भी वैसा ऐसा नहीं था जैसा अँटनी लेकर भागा था।

अँटनी अब तक इस इलाके में मीलों दूर निकल गया होगा। और थापा नेपाल का अपना सफर तय कर रहा होगा।

लेकिन जल्दी ही उसे अपना दूसरा अनुमान गलत साबित होता नजर आया। थापा की जिप्सी डीलक्स मोटल के बाहर खड़ी थी। इंजिन चालु था।

राजकुमार हाईवे पर साइड में कार पार्क करके उसके पास पहुंचा। जिप्सी खाली थी। इंजिन बंद करके उसने चाबियां अपनी जेब में डाली और अपनी रिवॉल्वर निकाल ली।

मोटल के सिर्फ एक काटेज में रोशनी थी। बाकी सब काटेजों में अंधेरा था। लेकिन मुख्य इमारत में रोशनी थी। बगल की एक खिड़की से झांकती वो रोशनी अंडाकार स्वीमिंग पूल की सतह पर भी पड़ रही थी।

पूल का चक्कर काटकर राजकुमार इमारत के पिछवाड़े पहुंचा।

रोशनी ऑफिस में थी। पिछला दरवाजा थोड़ा खुला था।

राजकुमार ने अंदर झांका।

हाल ही में फर्नीश किए गए कमरे में डेस्क और खुली सेफ के बीच में थापा मरा पड़ा था। उसके फटे सर से भेजा बाहर झांक रहा था। सर के आसपास फर्श पर खून फैला हुआ था।

कई पल ठिठका खड़ा राजकुमार हैरानी से आंखें फैलाए देखता रहा फिर सावधानीपूर्वक भीतर दाखिल हुआ।

उसने थापा के बाल पकड़कर मुर्दा सर ऊपर उठाया। गोली माथे को फाड़ती हुई भीतर दाखिल हुई थी। माथे पर झांकते सुराख के आकार से अनुमानत: गोली बत्तीस कैलीबर की रही थी। थापा की मुर्दा आंखें हैरानी से फटी नजर आ रही थीं।

राजकुमार जल्दी-जल्दी उसकी जेबों की तलाशी लेने लगा।

दूर कहीं से आती सायरन की आवाज भी सुनाई देनी आरंभ हो गई।

थापा की जेब में न तो कोई पर्स था और ना ही किसी और शक्ल में कोई पैसा उसके पास था। अँटनी ने जो पैकेट उसे दिया था वह न तो उसके पास कहीं था न ही सेफ में नजर आ रहा था।

राजकुमार ने सेफ में रखी चीजें बाहर निकालीं। बिल, चैक बुक्स, लैजर बगैरा।

लैजर से साफ जाहिर था मोटल घाटे में जा रहा था।

मोटल की दूसरी साइड में एक इंजिन कराहा और खामोश हो गया। फिर बार-बार इंजिन स्टार्ट करने की कोशिश की जाने लगी।

राजकुमार ऑफिस से निकलकर बाहर उसी ओर दौड़ा।

आवाज काटेजों के पीछे वाली गली की ओर खुलने वाले द्वारविहीन ग्यारेजो में से एक से आ रही थी।

अचानक जोर से गरजे इंजिन से जाहिर था वो स्टार्ट हो गया था।

राजकुमार पूल के पास से होकर गली के दहाने की ओर दौड़ा।

एक सफेद मारुति रोशन काटेज के पीछे मौजूद गैराजकुमार से बाहर निकली। एक संक्षिप्त पल के लिए रुकी। फिर तेजी से हाईवे की ओर झपटी।

ड्राइविंग सीट पर मौजूद एली को राजकुमार ने साफ पहचाना।

अपनी रिवॉल्वर ऊपर उठाकर चिल्लाया।

-“ठहरो। वरना शूट कर दूंगा।”

तभी कोई भारी कठोर चीज पीछे से उसकी टांगों से टकराई और वह गली की साइड में औंधे मुंह जा गिरा।

सफेद मारुति उससे बचती हुई दौड़ गई।

राजकुमार की पीठ पर दो घुटनों का भारी प्रहार एक साथ हुआ। एक बाँह ने उसकी गरदन जकड़ ली। दूसरी उसकी रिवॉल्वर की ओर बढ़ी।

राजकुमार ने रिवॉल्वर हाथ में थामें रखी। उससे अपने गले पर लिपटी बाँह का प्रहार किया।

पीठ पर लदा आदमी गुर्राया। उसकी पकड़ ढीली पड़ गई।

उसकी बाँह को लीवर की तरह इस्तेमाल करते हुए राजकुमार ने उसे अपने कंधों पर लाद लिया।

आदमी काफी भारी था।

उसी अवस्था में घुटनों के बल उठने के लिए राजकुमार को एड़ी चोटी का जोर लगाना पड़ा। लेकिन कोशिश कामयाब रही।

पीठ पर लगा आदमी उसके सर के ऊपर से होता हुआ पीठ के बल आगे आ गिरा। राजकुमार ने एक बाँह से उसकी गरदन दबोच ली और दूसरी उसकी टांगों के बीच फंसा दी।

उसने फंसी आवाज में अरेस्ट करने की बात की तब राजकुमार को पता चला वह पुलिस की वर्दी में था।

उसे छोड़कर राजकुमार ने हाथ से फिसल गई अपनी रिवॉल्वर उठा ली फिर जैसे ही वह उठा रिवॉल्वर उस पर तान दी।

वह सब इंस्पेक्टर दीपक था- कांती लालका कजिन। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था। सांसे उखड़ी हुई थीं।

-"रिवॉल्वर मुझे दो।"

-"नहीं, यह मेरे पास ही ठीक है।" राजकुमार बोला।

-"बको मत। मैंने तुम्हें उस लड़की पर इसे तानते देखा था।"

-"मैं उसे रोकने की कोशिश कर रहा था।"

-"क्यों?"

-"वह उसी गिरोह में शामिल थी जिसने कांती लालको शूट करके ट्रक उड़ाया था। लेकिन तुमने बड़ी सफाई से उसे भाग जाने दिया।"

-"ज्यादा चालाक बनने की कोशिश मत करो...।"

वह आगे आया।

राजकुमार ने रिवॉल्वर हिलाई।

-"चुपचाप खड़े रहो।"

सब इंस्पेक्टर ठिठक गया।

-"ध्यान से सुनो।" राजकुमार बोला- "वह लड़की थापा की रखैल थी। थापा अपने ऑफिस में मरा पड़ा है। उसका भेजा उड़ा दिया गया।"

-“क्या उसी पर गोली चलायी जाने की आवाज सुनी गई थी? तुमने ही फोन पर इसकी सूचना दी थी?”

-“नहीं।”

सब इंस्पेक्टर के कठोर चेहरे पर विचारपूर्ण भाव थे।

-“यह एक और इत्तिफाक है। मर्डर विक्टिम्स का पता तुम्हें ही कैसे लगता है?”

-“मैं थापा का पीछा कर रहा था। क्यों कर रहा था। अगर यह जानना चाहते हो तो इन्स्पेक्टर बाजवा से पूछ लेना। कुछ देर पहले मैंने उसे सब बताया है।”

-“तुम झूठ बोल रहे हो। वह बाई पास रोड ब्लाक पर है।”

-“मैंने भी वही बातें की थीं उससे। जहां तक इत्तिफाक की बात है क्या इन्स्पेक्टर बाजवा ने पहले भी कभी इस तरह अकेले रोड ब्लॉक पर ड्यूटी दी है?”

-“तुम्हें सवाल पूछने का कोई हक नहीं है। लाओ, रिवॉल्वर मुझे दो।”

-“सॉरी। यह मैं नहीं दूंगा। मुझे उस लड़की को तलाश करना है।”

-“तुम कुछ नहीं करोगे। यही रुकोगे।”

सब इंस्पेक्टर ने अपनी सर्विस रिवॉल्वर की ओर हाथ बढ़ाया।

राजकुमार पहले ही तय कर चुका था उसे क्या करना था। वह न तो सब इंस्पेक्टर को शूट करना चाहता था और न ही उसके द्वारा शूट किया जाना। फुर्ती से आगे बढ़ा और हाथ में थमी रिवॉल्वर भड़ाक से उसकी कनपटी पर दे मारी।

सब इंस्पेक्टर के चेहरे पर घोर अविश्वास भरे भाव उत्पन्न हुए फिर उसके घुटने मुड़े और वह चेतना शून्य होकर जमीन पर जा गिरा।

तभी पीछे हल्की सी क्लिक की आवाज सुनकर राजकुमार पलटा। जिस काटेज में रोशनी थी उसका दरवाजा खुला। नाइट सूट पहने एक युवक बाहर निकला। नींद में चलता हुआ सा उसकी ओर बड़ा।

नीचे पड़े सब इंस्पेक्टर और आंगतुक नवयुवक के बीच में आकर राजकुमार जल्दी से उसके पास पहुंचा।

-“कौन हो तुम?” रोबीले स्वर में बोला।

-“रमन कुमार शर्मा।” युवक हिचकिचाता सा बोला- “आप वही पुलिस आफिसर हैं जिसे मैंने फोन किया था। मैंने गोली चलने की आवाज सुनी थी।”

-“किस वक्त?”

-“करीब डेढ़ बजे। शोर सुनकर मेरी आंखें खुली तो रिस्टवाच पर निगाह चली गई थी। फिर मैंने भागते कदमों की आवाज सुनी थी।”

-“इस तरफ गली की ओर आती हुई?”

-“नहीं। दूसरी तरफ हाईवे की ओर जाती हुई।”

-“कदमों की आहट आदमी की थी या औरत की?”

-“पता नहीं। जब मैं बाहर निकला तो कोई दिखाई नहीं दिया। फिर पब्लिक टेलीफोन से आपको फोन करके काटेज में आकर कम्पोज की एक गोली खा ली। मुझे शॉक जैसा लगा था- अभी उससे उबरा हूं। मैं हौसलामंद नहीं हूं। जल्दी घबरा जाता हूं।”

-“तुम्हारे पास कार है?”

-“हां। सफेद मारुति है। यहीं खड़ी है।”

-“तुम्हें चाबियां उसमें नहीं छोड़नी चाहिए थी। कार चोरी हो गई है।”

युवक को तेज झटका लगा।

-“क्या? ओह, मेरी मम्मी मुझे घर से निकाल देगी।म.....मैं सुबह घर कैसे लौटूंगा.......?”

राजकुमार उसे कलपता छोड़कर अपनी कार की ओर दौड़ गया।

तेज रफ्तार से कार दौड़ाते राजकुमार को शहरी सीमा में पहुंचते ही एहसास हो गया कि एली अब हाथ नहीं आ सकेगी। उसे कार लेकर भागे काफी देर हो गई थी।

मौजूदा हालात में ऐसी किसी भी जगह वापस उसने नहीं जाना था जहां वह रहती या जाती रही थी।

उसकी तलाश में जाने की बजाय बाहर मिसेज थापा से मिलने चला गया।

१३

हवेली के एक कमरे में रोशनी थी।

दस्तक के जवाब में सेफ्टी चेन के सहारे दरवाजा खोला गया। मिसेज थापा ने झिर्री से बाहर देखा।

-"कौन है?"

-"राजकुमार।"

-"ओह, याद आया......मोटल में मिले थे।"

-"मैं वहीं से आ रहा हूं। आपके पति के साथ दुर्घटना हो गई है।"

-"कार एक्सीडेंट?"

-"नहीं। शूटिंग एक्सीडेंट।"

-"सुनील? क्या उसकी हालत सीरियस है?"

-"बेहद सीरियस। मैं अंदर आ सकता हूं?"

उसने चेन टटोली। उसका हुक निकालकर पीछे हट गई।

राजकुमार भीतर दाखिल हुआ।

वह लो कट गले के डिजाइन वाला गाउन पहने थी। उसकी आंखें तनिक सूजी सी थीं। रोने की वजह से या न सो पाने के कारण।

-"मैं सो नहीं सकी। मेरा मन कह रहा था कोई भारी गड़बड़ होने वाली है।" वह दरवाजा बंद करके पलटी तो उसके चेहरे पर निगाहें जम गईं- "तुम्हें भी चोट आई है।"

-"फिलहाल मेरी फिक्र मत करो। मैं सही सलामत हूं।"

-"सुनील कितनी बुरी तरह जख्मी हुआ है?"

-"जितनी बुरी तरह मुमकिन है।"

-"मुझे उसके पास जाना चाहिए।" ऊपर की मंजिल पर जाने वाली सीढ़ियों की ओर बढ़ी फिर पलटकर पूछा- "तुम्हारा मतलब है वह मर गया?"

-"उसका मर्डर किया गया था, मैसेज थापा। तुम्हें अब वहां नहीं जाना चाहिए। वे लोग आने वाले होंगे।

-"कौन लोग?"

-"पुलिस। इन्स्पेक्टर बाजवा तुमसे पूछताछ जरूर करेगा। मुझे भी कुछ पूछना है।"

वह अनिश्चित सी खुले दरवाजे से गुजरकर लिविंग रूम में पहुंची।

राजकुमार ने भी उसका अनुकरण किया।

सोफे की साइड से टिकी खड़ी मिसेज थापा ने अपनी कनपटियां सहलाईं।

-"वह कैसे मारा गया?"

-"शूट किया गया था। मोटल के ऑफिस में कोई घंटा भर पहले।"

-"तुम्हारा मतलब है, मैं मर्डर सस्पेक्ट हूं?"

-"मैं ऐसा नहीं समझता।"

-"क्यों?"

-"शायद इसलिए कि मुझे तुम्हारा चेहरा पसंद है।"

-"लेकिन मुझे अपना चेहरा पसंद नहीं है। कोई और बेहतर वजह बताओ।"

-"ओ के। क्या तुमने उसे शूट किया था?"

-"नहीं।" उसके शुष्क स्वर में दृढ़ता थी- "लेकिन यह समझने की गलती भी मत करना कि मुझे कोई रंज या दुख है। मैं सिर्फ कनफ्यूज्ड हूं। समझ में नहीं आता क्या महसूस करूं। वैसे ज्यादा अहसासात मेरे अंदर बचे भी नहीं है। मैं यह भी नहीं कह सकती कि मुझे खेद है। सुनील अच्छा आदमी नहीं था। और यह शायद उसके लिहाज से ठीक ही था क्योंकि उसके विचार से मैं भी अच्छी औरत नहीं हूं।"

-"पुलिस के सामने ऐसी बातों से काम नहीं चलेगा। वे लोग सीधी और साफ बातें पसंद करते हैं। उनका सबसे पहला शक तुम पर जाएगा। और तुम्हें एलीबी की जरूरत पड़ेगी। क्या तुम्हारे पास एलीबी है?"

-"किस वक्त की?"

-"पिछले एक डेढ़ घंटे की।"

"मैं यहां घर में ही थी।"

-"आपके साथ कोई नहीं था?"

-"नहीं। करीब घंटे भर से मैं यहां सोफे पर ही पड़ी हुई थी। उससे पहले करीब आधे घंटे तक दरवाजे में अपने मोती ढूंढती रही थी। माला टूट जाने की वजह से वहां गिर गए थे। उन सबको उठाकर इकट्ठा करने के बाद मैंने फेंक दिया। यह मेरा पागलपन था न?" वह पुन: अपनी कनपटियां सहलाने लगी- "सुनील कहा करता था, मैं पागल हूं। तुम समझते हो वह ठीक कहता था?"

-"मेरे विचार से तुम एक अच्छी औरत हो जिसे बहुत ज्यादा दुश्वारियों का सामना करना पड़ा है। मुझे खेद है अभी और भी सहना पड़ेगा।"

राजकुमार ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया।

बस सोफे पर बैठ गई। उसकी आंखों में गीलापन था।

-"हमदर्दी जाहिर मत करो। मुझे हमदर्दी की आदत नहीं है। मैं चाहती हूं मुझ पर उसकी हत्या का इल्जाम लग जाए। अगर मैंने उसकी हत्या की होती तो शायद इतना खालीपन महसूस नहीं करना था।"

-"अगर तुमने हत्या की होती तो क्या होता? तुम इससे इंकार करतीं?"

-"मुझे नहीं लगता कि करती।" वह धीरे से बोली- "ईमानदारी एक ऐसा गुण है, जिसे मैं छोड़ चुकी हूं।"

-"खुद को इतना कमतर क्यों बनाया तुमने?"

-"मुझे कमतर बना दिया गया और बनाने वाला एक्सपर्ट था।"

-"कौन? तुम्हारा पति?"

-"हां। सुनील जब भी नशे में होता पूरा सैडिस्ट बन जाता था और वह अक्सर नशे में रहता था। मुझे सताने में उसे मजा आता था।" उसने अपनी आंखें बंद कर ली- "मैं भी निर्दयी थी। यह सब एकतरफा नहीं था। सच बात यह है, आज रात जब उसने यह घर छोड़ा जब मुझे छोड़कर गया मेरे दिल में आया था उसे जान से मार डालूँ। मैंने उसके पीछे जाकर सड़क पर उसे शूट कर देना था। अगर मेरे पास गन होती तो ऐसा कर भी सकती थी। लेकिन यह पूरी तरह बेकार ही होता। फायदा तो कुछ होना नहीं था।" उसने आंखें खोलकर राजकुमार को देखा- "तुम जानते हो, उसकी हत्या किसने की थी?"

-"यकीनी तौर पर कुछ भी कह पाना मुश्किल है। एली घटनास्थल के पास थी...।"

-"उसकी चहेती वो घटिया औरत?"

राजकुमार ने सर हिलाकर हामी भरी।

-"वह एक कार चुराकर वहां से भाग गई। लेकिन इससे यह साबित नहीं होता कि उसे शूट भी उसी ने किया था।"

-"अगर हत्या उसी ने की थी तो अब वो एक मजाक बन गया। सारा सिलसिला ही एक मजाक है। सुनील का कहना था वह एक नई जिंदगी शुरू करने जा रहा था।" उसके लहजे में कड़वाहट आ गई- "नई जिंदगी।"

-"लेकिन हालात को देखते हुए यह मजाक बिल्कुल नहीं लगता। तुम्हारा पति गले तक अपराध में फंसा हुआ था। इसी ने उसे हिंसक मौत के हवाले कर दिया।"

आशा के अनुरूप उसे शॉक सा लगा। एकदम खड़ी हो गई।

-"सुनील अपराध में फंसा था? नहीं, तुम्हें जरूर गलतफहमी हुई है।"

-"गलतफहमी या गलती का सवाल ही पैदा नहीं होता। वह अकेला नहीं था। एली भी उसके साथ इसमें शामिल थी। तुम ट्रक गायब हो जाने के बारे में जानती हो?"

-"हां। इन्स्पेक्टर आज रात यहां आया था।"

-"किसलिए? वह क्या चाहता था?"

-"पता नहीं। जब वे बातें कर रहे थे मैं कमरे में नहीं थी। लेकिन उनकी आवाजों से लगा वे किसी बात पर उलझ रहे थे और इसमें जीत सुनील की हुई थी।"

-"तुमने सुना नहीं। किस बात पर उलझ रहे थे?"

-"नहीं। जब आकाश.....जब इन्स्पेक्टर बाजवा जा रहा था मैंने उससे पूछा क्या बात थी। उसने बताया चोरी गए ट्रक का मामला था।"

-"वह तुम्हारे पति पर शक करता था?"

-"नहीं। वह बहुत ज्यादा गुस्से में था लेकिन सुनील के बारे में उसने कुछ नहीं कहा।"

-"वह कब आया था?"

-"करीब दस बजे।"

-"क्या तुम और इन्स्पेक्टर एक-दूसरे से काफी बेतकल्लुफ हो?"

-"हां। आकाश बरसों तक मेरे परिवार के नजदीक रहा है। उसका पिता और मेरे डैडी गहरे दोस्त थे। मेरे डैडी ने उसकी कालेज की पढ़ाई के समय उसकी काफी मदद की थी।"

-"पैसे से?"

-“हां।”

-“यानी इन्स्पेक्टर तुम्हारे पिता का अहसानमंद है?”

-“हां।”

-“क्या इन्स्पेक्टर से आज रात हुई बहस में तुम्हारे पति के जीतने की वजह इन्स्पेक्टर का तुम्हारे पिता के प्रति एहसानमंद होना भी रही हो सकती है?”

-“बिल्कुल नहीं।” पलभर सोचने के बाद वह बोली- “फर्ज अदायगी के मामले में आपसी ताल्लुकात की कोई परवाह आकाश नहीं करता।”

-“तुम्हें पूरा यकीन है?”

-“हां। मैं आकाश को जानती हूं।”

-“उसे बहुत ज्यादा पसंद भी करती हो?”

-“न-नहीं। और मैं नहीं समझती कि कोई भी उसे बहुत ज्यादा पसंद करता है। लेकिन जो उसने किया है उसकी मैं हमेशा तारीफ करती हूं। उसकी ईमानदारी की इज्जत करती हूं।”

-“ऐसा क्या किया है उसने?”

-“वह सेल्फ मेड मैन है। बहुत स्ट्रगल करके तालीम और यह नौकरी हासिल की है। इस पूरे इलाके में उसे मेहनती, ईमानदार, फर्ज का पाबंद और सबसे अच्छा पुलिस अफसर समझा जाता है।”

-“इन्स्पेक्टर से हुई झड़प के बारे में तुम्हारे पति ने कुछ बताया था?”

-“झड़प नहीं, वह महज बहस थी। सुनील ने इस बारे में कुछ नहीं बताया। अगर वह वाकई जुर्म में शामिल था, जैसा कि तुमने बताया है, तो यह समझ में आने वाली बात है।”

-“वह वाकई जुर्म में शामिल था।”

-“तुम इतने यकीन से कैसे कह सकते हो?”

-“मैंने आज रात एली से बातें की थीं। जब तक वह मुझे तुम्हारे पति का दोस्त समझती रही उसने कई राजदार बातें मुझे बताईं। मसलन, इस ट्रक को गायब करने में उसके और तुम्हारे पति के अलावा अँटनी नाम का एक आदमी भी शामिल था। अँटनी एक बदमाश है।” उसका हुलिया बताने के बाद बोला- “अपने पति के साथ तुमने भी उसे देखा हो सकता है।”

हुलिया बताए जाने से पहली बार वह हालात की असलियत को समझती प्रतीत हुई।

-“नहीं, मैंने उसे नहीं देखा। यह सच नहीं हो सकता। सुनील मेरे साथ मोटल में रहा था।”

-“सारा दिन?”

-“दोपहर बाद के ज्यादातर वक्त। वह लंच बाद एकाउंट्स देखने आया था। फिर उसने ऑफिस में पीना शुरु कर दिया। कुछ अर्से से वह बहुत ज्यादा पीने लगा था।”

-“तुम्हें पूरा यकीन है, वह ऑफिस से नहीं गया?”

-“हां। इसका मतलब यह नहीं है मैं वहां बैठी उसे वॉच कर रही थी। मगर मैं पूरे यकीन के साथ कह सकती हूं शूटिंग से कोई ताल्लुक उसका नहीं था।”

-“उसका गहरा ताल्लुक था। वह मौके पर मौजूद था या नहीं लेकिन इसके लिए जिम्मेदार लोगों में से वह भी एक था।”

-“तुम्हारा मतलब है सुनील ने अपने फायदे की खातिर कोल्ड ब्लडेड मर्डर प्लान किया था?”

-“मुझे पूरा यकीन है ट्रक को गायब कराने की योजना उसकी थी। और मर्डर इसका एक हिस्सा था। इन दोनों वारदातों को अलग नहीं किया जा सकता।”

-“मैं सिर्फ इतना जानती हूं वह मुसीबत में था। मुसीबत कितनी बड़ी थी मुझे नहीं मालूम। उसे मुझको बताना चाहिए था।” एकाएक उसका स्वर धीमा हो गया मानो स्वयं से कह रही थी इस अंदाज में फुसफुसाई- “वह इस हवेली को ले सकता था। कुछ भी ले सकता था।”

-“इस केस में फायदे के लिए मर्डर से भी ज्यादा कुछ है। तुम्हारे पति की हत्या ने इस मामले को और ज्यादा उलझा दिया है।”

-“मेरा ख्याल है तुमने कहा था वह लड़की एली...।”

-“बेशक, वह लॉजीकल सस्पेक्ट तो है। लेकिन असलियत क्या है मैं नहीं जानता। वे दोनों साथ-साथ यहां से जाने वाले थे। एली उसे प्यार करती थी।”

-“उसे प्यार करती थी?”

-“अपने ढंग से। उससे और ऐश की जिंदगी से जो उसे देने का वादा उसने किया था। वे नेपाल जाकर हमेशा वहीं रहने वाले थे।”

उसकी आंखों में पीड़ा उभर आई।

-“तुम यह कैसे जानते हो?”

-"खुद एली ने ही मुझे बताया था। वह झूठ नहीं बोल रही थी। वह जागती आंखों से सपना तो देख रही हो सकती थी लेकिन झूठ नहीं बोल रही थी। और यही एक दिलचस्प बात नहीं थी जो उसने कही थी। दरअसल ओरीजिनल प्लान के मुताबिक ट्रक को हाईजैक कराने में मीना भंडारी ने भी कुछ करना था। लेकिन कांती लालने एली को मीना भंडारी के बारे में कुछ ऐसा बताया कि प्लान चेंज करना पड़ गया।"

-"क्या बताया था?"

-"मुझे नहीं मालूम। एली को मुझ पर शक हो गया और वह मुझे बेवकूफ बना कर भाग गई। मेरा ख्याल था तुम बता सकती हो।"

उसकी आंखें फैल गई।

-"तुमने कैसे समझ लिया।" धीमे स्वर में सावधानीपूर्वक बोली- "कि मीना भंडारी के बारे में मैं कुछ जानती होंऊगी?"

-"मोटल मैं अपने पति द्वारा दखल दिए जाने से पहले तुमने उसके बारे में काफी कुछ बताया था। तुम चाहती थीं उसका पता लगाकर उस पर नजर रखी जाए। याद आया?"

-"मैं इसे भूल जाना पसंद करूंगी। उस वक्त मैं हसद से पागल सी हो गई थी। अब यह खत्म हो गया। सब-कुछ खत्म हो गया। हसद के लिए बचा ही कुछ नहीं।"

-"तुम्हारा मतलब है मीना को कुछ हो गया?

-"मेरा मतलब है, मेरा पति मर चुका है। और किसी के मरे हुए आदमी से जलन या ईर्ष्या नहीं की जा सकती। वैसे भी मेरा अंदाजा गलत था। मीना वह थी ही नहीं।"

-"एक वक्त तो वह थी।"

-"हां। लेकिन वो खत्म हो गया था। पिछले शुक्रवार हुई एक बात से मुझे गलत फहमी हो गई थी। सुनील ने वीकएंड के लिए उसे लॉज इस्तेमाल करने की इजाजत दे दी थी। वह चाबियाँ लेने यहां आई और मैंने बातें सुन लीं।" उसके स्वर में पैनापन आ गया- "सुनील को ऐसा करने का कोई हक नहीं था। वो लॉज मेरी है। इसी बात से मैं परेशान हो गई थी।"

-"लॉज कहां है?"

-"मोती झील पर।"

-"मीना अभी भी वहां हो सकती है?"

-"मुझे नहीं लगता। सुनील भी मना कर रहा था। जब मीना सोमवार को काम पर नहीं आई तो वह कार लेकर उसे लेक पर देखने गया था। लेकिन तब तक मीना वहां से जा चुकी थी। कम से कम सुनील ने तो यही कहा था।"

-"इसे चैक किया जाना चाहिए। लॉज में फोन है?"

-"नहीं, उस सुनसान जगह में कोई फोन नहीं है।"

-"मुझे वहां जाकर उसको तलाश करने की इजाजत दे सकती हो?"

-"जरूर।"

-"वहां पहुंचूंगा कैसे?"

उसने बारीकी से समझा दिया। मनाली से पहाड़ पर करीब दो घंटे की ड्राइविंग से वहां पहुंचा जा सकता था।

-"मैं तुम्हें चाबियां दे दूंगी।"

-"डुप्लीकेट?"

-"नहीं। चाबियों का एक ही सैट है।"

-"वह वापस दे गई थी?"

-"सुनील लाया था- सोमवार रात में। जाहिर है वह चाबियां वहीं छोड़ गई थी।"

-"वह सोमवार को सारा दिन बाहर रहा था?"

-"हां। आधी रात के बाद ही वापस लौटा था।"

-"लेकिन मीना को उसने नहीं देखा?"

-"नहीं। रात उसने तो यही कहा था।"

-"तुम समझती हो, वह सच बोल रहा था?"

-"पता नहीं। मैं बरसों पहले उस पर यकीन करना छोड़ चुकी थी।"

-"तुमने पूछा नहीं, सारा दिन क्या करता रहा था?"

-"नहीं।"

-"तुम्हारे विचार से क्या करता रहा हो सकता था?"

-"पता नहीं।"

वह कमरे से चली गई।

मुश्किल से दो मिनट बाद लौटी। कीरिंग में लटकती दो चाबियां लेकर।

-"यह लो। गुडलक।"

राजकुमार ने चाबियां ले लीं।

-"थैंक्यू। बेहतर होगा किसी से भी इस बात का जिक्र मत करना। खासतौर पर पुलिस वालों से।"

-"आकाश बाजवा से?"

-"हां।"

-"वह भी तुम्हें परेशान कर रहा है?"

-"वह मुझसे नफरत करता है। जब मैं पहली बार उससे मिला था तो वह एक अच्छा आदमी लगा और हमारी पटरी बैठ गई थी। फिर सब गड़बड़ हो गया। वह तुम्हारा दोस्त है। बता सकती हो किस फेर में है?"

-"मैं सिर्फ इतना कह सकती हूं वह अच्छा आदमी है।" वह तनिक मुस्कराई- "तुम दोनों के बीच जो भी है उसके लिए किसी हद तक तुम भी कसूरवार हो सकते हो।"

-"आमतौर पर मेरा ही कसूर होता है।"

-"शायद उसे तुम्हारा दखल देना पसंद नहीं आ रहा है। क्योंकि वह अपनी जिम्मेदारी को पूरी संजीदगी से निभाने वाला आदमी है। खैर, तुम्हारे बारे में उससे कुछ नहीं कहूंगी। मुझे भी तुम पर भरोसा है......।"

तभी बाहर एक कार रुकने की आवाज सुनाई दी।

मिसेज थापा खिड़की के पास जा खड़ी हुई।

-"शैतान को याद किया और शैतान हाजिर।" हंसकर बोली।

राजकुमार ने भी उसके कंधों के ऊपर से देखा।

बाजवा पुलिस कार से उतर रहा था। उसके साथ सब इंस्पेक्टर दीपक भी था।

मिसेस थापा राजकुमार की ओर पलटी।

-"तुम पिछले दरवाजे से निकल जाओ।"

राजकुमार ने वैसा ही किया।

शहरी सीमा से सकुशल बाहर निकलकर राजकुमार ने राहत की सांस ली। साथ ही बेहद थकान और न सो पाने के कारण भारी आलस्य उसने महसूस किए।

दस पंद्रह मिनट बाद उसे एक टूरिस्ट कैम्प नजर आया। कार पार्क करके एक कॉटेज किराए पर ली और कपड़ों समेत बिस्तर पर फैल गया।

१४

मोती झील की चौड़ाई कम होने के कारण दूर से देखने पर वो संकरा जलाशय नजर आती थी। पहाड़ी घुमावदार सड़क पर फीएट ड्राइव करता राजकुमार एक टूरिस्ट लॉज, एक रोड साइड रेस्टोरेंट और कुछेक कॉटेजो के पास से गुजरा। वे सभी खाली पड़े थे। सर्दी की वजह से दरवाजे खिड़कियां मजबूती से बंद थे।

पांच-छह मील लंबी झील के लगभग आधे रास्ते में एक पैट्रोल पम्प था। जब राजकुमार ने वहां पहुंचकर कार रोकी तो वो भी बंद मिला।

वह कार से उतरा।

पम्प पर कोई नहीं था। गत्ते के एक बड़े से टुकड़े पर सूचना लिखी थी।

-***"पानी या हवा की जरूरत हो तो ले सकते हो।पैट्रोल के लिए सुबह दस बजे तक इंतजार करना होगा।"***

राजकुमार गर्म रेडिएटर में पानी भर के आगे बढ़ गया।

करीब आधा मील जाने के बाद चीड़ के पेड़ पर लकड़ी का एक पुराना और मौसमों की मार खाया साइन बोर्ड लगा नजर आया।

हिल क्वीन : सी. के. सक्सेना, मनाली।

उसके नीचे अपेक्षाकृत नया और छोटा साइन बोर्ड लगा था।

सुनील थापा,

राजकुमार उसी सड़क पर मुड़ गया।

कथित लॉज ढलान पर बनी और सड़क की ओर पेड़ों से घिरी काठ की एक मंजिला इमारत थी।

राजकुमार वरांडे में पहुंचा। खिड़कियों के भारी लकड़ी के पल्ले खुले थे। प्रवेश द्वार की बगल में बनी खिड़की से उसने अंदर देखा।

नीम अंधेरे कमरे में कोई नजर नहीं आया। फर्श पर फायर प्लेस के पास रीछ की खाल जैसा नजर आता मोटा कारपेट बिछा था। आवश्यक फर्नीचर भी नजर आ रहा था।

राजकुमार ताला खोलकर भीतर दाखिल हुआ।

अंदर ठंडक ज्यादा थी। बंद कमरे में पार्टी की बासी गंध बसी थी। मुख्य कमरे में पार्टी हुई होने के और भी चिन्ह थे। मेज पर रखी पीतल की बड़ी सी एश ट्रे सिगरेट के अवशेषों से आधी भरी थी। उनमें से अधिकांश पर लिपस्टिक के दाग थे मेज पर मौजूद कांच के दो गंदे गिलासों में से एक पर भी लिपस्टिक के दाग लगे थे। बगैर छुए झुककर सुघंने पर राजकुमार को लगा उन्हें बढ़िया स्कॉच पीने के लिए इस्तेमाल किया गया था।

फायरप्लेस के पास जाकर वहां मौजूद राख को छुआ।

राख ठंडी थी।

सीधा खड़ा होते समय मोटे कारपेट के रेशों के बीच कोई चीज पड़ी दिखाई दी।

स्त्रियों द्वारा बालों में लगायी जाने वाली क्लिप थी।

कारपेट को उंगलियों से टटोलने पर वैसी एक क्लिप और मिली।

राजकुमार सोने वाले कमरों में पहुंचा। उनमें से एक में जमी धूल से जाहिर था कि उसे हफ्तों या महीनों से इस्तेमाल नहीं किया गया था। दो बेडरूम अपेक्षाकृत छोटे थे। उनमें से एक की हालत भी वैसी ही थी। लेकिन दूसरा हाल ही में इस्तेमाल किया गया था। फर्श साफ था। बिस्तर को सोने के लिए प्रयोग किया गया था। लेकिन उठने के बाद सही नहीं किया गया था।

राजकुमार ने कंबल और चादरें सही कीं। उनके बीच रबर की एक पिचकी ट्यूब पड़ी थी।

कमरे में कपड़े या सामान के नाम पर कुछ नहीं था। लेकिन भारी ड्रेसिंग टेबल पर औरतों द्वारा प्रयोग की जाने वाली कई चीजें मौजूद थीं- नेल कटर फेस क्रीम का छोटा जार जो खुला पड़ा रहने के कारण सूखना शुरू हो गया था, कीमती सन ग्लासेज, वैसी ही और हेयर क्लिप्स जैसी कारपेट पर मिली थीं।

साथ ही बने बाथरूम में कुछ और चीजें मिलीं- टूथपेस्ट, टूथब्रुश, लिपस्टिक और एस्ट्रोजन आयल की शीशी। ये लगभग वही तमाम चीजें थीं जो मनाली में मीना भंडारी के घर में नहीं मिली थीं।

किचिन हवादार थी। स्टोव पर रखे फ्राइंग पैन में अंडे फ्राई किए जाने पर बचे अवशेष पर मक्खियां भिनक रही थीं। किचन टेबल पर दो व्यक्तियों के खाने के झूठे बर्तन पड़े थे। कोने पर ब्लैक डॉग की खाली बोतल रखी थी।

राजकुमार किचिन से पिछले दरवाजे से बाहर निकला।

पिछली दीवार के पास तिरपाल के नीचे सूखी लकड़ियों का ऊंचा ढेर लगा था। आउट हाउस में टूटा फर्नीचर छोटी सी नाव, मछलियां पकड़ने वाली पुरानी रॉड वगैरा भरे थे।

किचन के दरवाजे से लॉज में जाकर राजकुमार ने एक बार फिर हरएक कमरे का मुआयना किया। कोई नई चीज तो नजर नहीं आई लेकिन उसे लगा वहां सैक्स और डैथ का वास रहा था।

प्रवेश द्वार लॉक करके अपनी फीएट में सवार होकर लौट पड़ा।

पैट्रोल पम्प पर अब एक अधेड़ औरत मौजूद थी। सलवार सूट पहने खिचड़ी बालों वाली वह औरत दुनियादारी के मामलात में खासी तजुर्बेकार नजर आती थी।

फीएट रुकते ही पास आ खड़ी हुई।

-"पैट्रोल चाहिए?"

-"हां।"

राजकुमार ने कार से उतरकर पैट्रोल टंकी का लॉक खोल दिया। औरत पैट्रोल डालने लगी।

-"तुम विराटनगर से आए हो?"

-"हाँ।"

-"आज तुम मेरे पहले कस्टमर हो।"

-"सीजन तो अब खत्म हो गया है?"

-"हाँ। सर्दी काफी पड़ने लगी है। मैं इसी हफ्ते पम्प बंद करके नीचे चली जाऊंगी। स्नो फाल में यहां फंसना नहीं चाहती।"

-"सर्दियों में यहां कोई नहीं रहता?"

-"सिर्फ बूढ़ा वॉर्नर ही इस पूरे इलाके में रहता है। तुम पहली बार यहां आए हो?"

-"हां।"

-"गर्मियों में तो विराटनगर से काफी टूरिस्ट आते हैं। तुम इतनी देर से क्यों आए?"

-"यूं ही धक्के खाने चला आया था।"

टैंक भर गया था। औरत ने पाइप निकाल लिया। मीटर देखा। हिसाब लगाकर पैसे बता दिए।

राजकुमार रात में जहां ठहरा था वहां से एक ट्रैवलर चैक कैश करा लिया था। उसने पैट्रोल की कीमत चुका दी।

-"नीचे आस-पास के शहरों से तो लोग यहां आते ही रहते होंगे।"

-"बहुत से लोगों ने यहां अपने कॉटेज बना रखें हैं। गर्मी से निजात पाने के लिए यहां आते रहते हैं। मैं खुद सूरजपुर में रहती हूं। सर्दियों में वही चली जाती हूं। मेरा बेटा रनजीत

कालेज में पढ़ता है।"

स्पष्टत: औरत बातूनी थी।

-"आपका बेटा होशियार और मेहनती होगा।" राजकुमार ने तारीफी लहजे में कहा।

-"वह बहुत अच्छा लड़का है। मेरी बहुत इज्जत करता है। हर एक बात मानता है मेहनती भी बहुत है। जब भी टाइम मिलता है यहां काम में मेरी मदद करता है।"

-"आजकल के लड़के ऐसे कम ही होते हैं। ज्यादातर लापरवाह, कामचोर और गैर-जिम्मेदार होते हैं।"

-"तुम क्या काम करते हो?"

-"डिटेक्टिव हूं।"

-"रनजीत का पिता-मेरा मतलब है, मेरा पति जसवंत सिंह भी पुलिस में कांस्टेबल था.... हालांकि बाद में वह गलत.... खैर, छोड़ो।" उसने खोज पूर्ण निगाहों से राजकुमार को घूरा- "तुम किसी को ढूंढ रहे हो?"

-"आपने सही समझा।"

-"लेकिन यहां तो मेरे और बूढ़े वॉर्नर के अलावा सिर्फ फारेस्ट डिपार्टमेंट के लोग ही हैं। गैस्ट हाउस बंद हो चुका है।"

राजकुमार ने पेड़ों से गुजरती उसकी निगाहों का अनुकरण किया तो झील के ऊपरी सिरे पर गैस्ट हाउस की नीली छतें दिखाई दे गईं।

औरत ने पलटकर आशंकित नजरों से उसे देखा- "रनजीत को तो नहीं ढूंढ रहे? उसने कोई गलत काम किया है?"

-“नहीं। मुझे एक लड़की की तलाश है। उसका नाम मीना भंडारी है। उसकी फोटो भी मेरे पास है।

राजकुमार ने फोटो उसे दे दी।

औरत गौर से देखने लगी।

-“मेरा ख्याल सही निकला।” अंत में बोली- “मैं जानती थी यह कोई अच्छी लड़की नहीं है।”

-“आपने इसे देखा है?”

-“बहुत बार। यह उस घटिया आदमी के साथ आया करती थी जिसने साक्षी सक्सेना से शादी की थी।”

-“थापा...... सुनील थापा।”

-“हां, वही निकम्मा और दूसरी औरतों के पीछे भागने वाला।” औरत के लहजे में हिकारत थी- “क्या साक्षी ने उससे तलाक लेने का फैसला कर लिया है?”

-“आपने सही अंदाजा लगाया।” राजकुमार ने उसे प्रोत्साहित किया।

-“मैं साक्षी सक्सेना को तब से जानती हूं जब छोटी सी थी। बड़ी होशियार और प्यारी बच्ची थी। लेकिन अपने आप को संभालना और दुनियादारी को समझना वह कभी नहीं सीख सकी। हालांकि उसका पिता जज सक्सेना खानदानी रईस, इज्जतदार और भला आदमी था। और उसका कोई दोष इसमें नहीं था। मेरे ख्याल से इसके लिए किसी को दोष नहीं दिया जा सकता। साक्षी की किस्मत ही खराब है। जिससे उसकी सगाई हुई थी वह काश्मीर में आतंकवादियों के हाथों मारा गया। मां-बाप भी मर गए। तब अकेली और बेसहारा रह गई साक्षी गलत आदमी से शादी कर बैठी। गलत आदमी से शादी करने पर क्या होता है यह मैं खुद भी अच्छी तरह जानती हूं।” उसने तल्खी से कहा। फिर क्षणिक मौन के पश्चात बोली- “जब भी मैं सोचती हूं थापा जैसे आदमी से शादी करके साक्षी ने खुद को तबाह कर लिया है तो मेरा दिल रो उठता है। उस घटिया आदमी ने जज की लॉज को अपनी रखैलों के साथ ऐश करने का अड्डा बनाकर रख दिया है।”

राजकुमार ने उसके हाथ में थमी फोटो की ओर इशारा किया।

-"इस लड़की को आपने आखरी दफा कब देखा था?"

-"सोमवार को। काफी अर्से बाद पहली बार उसने अपना वीकएंड यहां गुजारा था। इस दफा पूरे सीजन में पहले वह नहीं आई। इसलिए उसे देखकर मुझे ताज्जुब हुआ।"

-"क्यों?"

-"क्योंकि थापा ने अब एक नई लड़की पकड़ ली है।" औरत ने मुँह बनाते हुए गैस्ट हाउस की दिशा में देखा- "पिछली गर्मियों में बात अलग थी। यह लड़की तकरीबन हर एक वीकएंड में उसके साथ कार में आया करती थी। मैं अक्सर सोचती थी कि क्या साक्षी इस बारे में जानती है। कई दफा मेरे मन में आया गुमनाम खत लिखकर साक्षी को बता दूं। मगर ऐसा किया नहीं।"

-"मेरी दिलचस्पी सिर्फ पिछले वीकएंड में है।"

-"वह शनिवार को कार में आई थी। मुझसे पानी मांगा। उसका रेडिएटर गर्म हो गया था। उसे देखकर मेरा भी पारा चढ़ गया। मेरे जी में आया उससे कह दूं झील में पानी ही पानी है वहां जाकर डूब मरे। लेकिन रनजीत को यह अच्छा नहीं लगना था। वह भी यहीं था और वह हमेशा दूसरों से अच्छे संबंध बनाए रखने की वकालत किया करता है।"

-"कार कैसी थी?"

-"काली फीएट। पता नहीं, उसे खरीदने के लिए उसके पास पैसा कहां से आया?"

-"कार में वह अकेली थी?"

-"हां, मैंने पहली बार उसे अकेली देखा था। जिस तरह सजी धजी वह बैठी थी उससे साफ जाहिर था अपने किसी यार से मिलने निकली थी। मगर मेरे सामने बड़ी भोली बनने का नाटक कर रही थी।"

-"बाद में थापा भी आ गया था?"

-“वह फिशिंग करके वीकएंड गुजारने तो यहां नहीं आयी थी। सोमवार को मैंने उन्हें साथ-साथ देखा था। जाहिर है पूरा वीकएंड उसने लड़की के साथ लॉज में ही गुजारा था। मुझे और भी काम है मैं हर वक्त उस घटिया आदमी और उसकी रखैल पर तो जासूसी नहीं करती रह सकती। सोमवार तीसरे पहर मैंने उन्हें सड़क पर गेस्ट हाउस की ओर जाते देखा था।”

-“दोनों थे? थापा और मीना बवेचा?”

-“उसका नाम मैं नहीं जानती। मगर यह सही है उसके साथ एक लड़की थी। उसका चेहरा मैंने नहीं देखा। सर पर स्कार्फ बांधे थी। लेकिन वही रही होगी।”

-“आप पूरे यकीन के साथ कह सकती हैं?”

-“बिल्कुल।”

-“उसकी शक्ल आपने नहीं देखी इसलिए यह भी तो हो सकता है थापा के साथ वह लड़की नहीं मिसेज थापा रही हो।”

-“नहीं, बिल्कुल नहीं हो सकता। साक्षी को मैं अच्छी तरह जानती हूं। उसके सर पर अगर स्कार्फ की जगह टब भी उल्टा करके रखा होता तब भी मैंने उसे साफ पहचान लेना था। वह साक्षी नहीं थी।” उसने हाथ में पकड़ी फोटो हिलाई- “वह यही थी।”

राजकुमार ने फोटो उससे ले ली।

-“वह कार चला रही थी?”

-“नहीं, उस रोज वह घटिया आदमी चला रहा था। कार वही काली फीएट थी। वह सीट की पुश्त से पीठ सटाए पसरी थी और चेहरा कोने में घुमा हुआ था। इसलिए मैं उसे साफ-साफ नहीं देख सकी। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है उसे पहचाना ही नहीं।”

-“आपका नाम क्या है?”

-“सुखवंत कौर।”

-“जिस लड़की को आपने थापा के साथ में देखा था। आपको यकीन है वह जिंदा थी?”

वह बुरी तरह चौंकी फिर हैरान नजर आने लगी।

-“अजीब सवाल है।”

-“आप इसका जवाब दे सकती हैं?”

-“मैं यकीन से नहीं कह सकती। हालांकि उसे हाथ पैर हिलाते या बातें करते तो मैंने नहीं देखा मगर वह मुर्दा भी नजर नहीं आई। क्या उसे मुर्दा समझा जा रहा है?”

-“आज शुक्रवार है और वह सोमवार को देखी गई थी। क्या उसके बाद भी आपने उसे देखा था?”

-“नहीं। आखिर मामला क्या है?”

-“मर्डर। मनाली में आजकल मर्डर महामारी की तरह फैल रहा है।”

-“ओह! इसका मतलब है रनजीत ने ठीक ही कहा था।”

-“किस बारे में?”

-“शनिवार रात में यहां एक आदमी आया था- करीब दस बजे। वह फोन करना चाहता था। मैंने कहा हमारे पास टेलीफोन नहीं है। इस इलाके में सिर्फ एक ही फोन है- फारेस्ट आफिसर के बंगले में। लेकिन उसे मेरी बात पर यकीन नहीं आया। गुस्से में उल्टी सीधी बकवास करने लगा। उसका कहना था क्योंकि वह मामूली आदमी है इसलिए मैं उसके साथ सही ढंग से पेश नहीं आ रही थी। मैंने उसे समझाना चाहा मगर वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। उसके पीले चेहरे और बड़ी-बड़ी काली आंखों से लगता था जैसे उसके पीछे भूत लगे थे या उस पर पागलपन का दौरा पड़ रहा था। गनीमत थी रनजीत यहां था। उसे एक तरह से जबरन उस आदमी को यहां से खदेड़ना पड़ा।”

-“वह देखने में कैसा था?”

औरत ने जो हुलिया बताया मौजूदा हालात में राजकुमार के विचारानुसार वह सिर्फ एक ही आदमी पूरी तरह फिट बैठता था। और उसका नाम था- कांती लाल।

-“उसने क्या कहा था?”

-“यही कि उसे बेहद जरूरी फोन कॉल करनी है क्या वह हमारा टेलीफोन इस्तेमाल कर सकता है। मैंने कह दिया हमारे यहां टेलीफोन नहीं है। इस पर उसे गुस्सा आ गया और गालियां बकनी शुरू कर दीं। तब रनजीत ने उसे जबरदस्ती बाहर खदेड़ दिया। तुम उसी को ढूंढ रहे हो?”

-“नहीं। वह तो कल मिल गया था।”

-“देखने में खतरनाक पागल लगता था। क्या उसने किसी का मर्डर कर दिया था?”

-“खुद मर्डर में इन्वाल्व था।”

-“कौन है वह?”

-“उसका नाम कांती लाल था।” कहकर राजकुमार ने पूछा-” आपने बताया था सोमवार तीसरे पहर थापा उस लड़की की कार को गैस्ट हाउस की ओर ले जा रहा था?”

-“हां।”

-“गैस्ट हाउस मैं किसी बूढ़े के बारे में भी आपने बताया था।”

-“उसका नाम वॉर्नर है। वह केअरटेकर है।”

-“आपके बाद क्या उसने भी उन्हें देखा था?”

-“पता नहीं। महीने भर से मेरी उनसे बोलचाल बंद है।”

-“कोई खास वजह थी?”

-“वह बूढ़ा बेवकूफ और गैरजिम्मेदार है उसने अपनी पोती को थापा के साथ चली जाने दिया तभी से मैं उससे बात नहीं करती।”

-“थापा की जिस नई लड़की का जिक्र आपने किया था वह वही है।

-“वह महीना भर पहले थापा के साथ मनाली गई थी तब से वापस नहीं लौटी। इसका क्या मतलब है?

राजकुमार को अचानक कुछ याद आया।

-“उसका नाम एली है?”

-“एलिझाबेथ। एलिझाबेथ वॉर्नर। लेकिन बूढ़ा उसे एली कहकर ही पुकारता है।”

-“बूढ़ा वॉर्नर अभी भी यहीं है?”

-“वह कभी कहीं नहीं जाता। साल में एकाध बार ही नीचे जाता है।”

राजकुमार उसे धन्यवाद देकर अपनी कार में सवार होने लगा।

-“एक मिनट ठहरो।” औरत ने टोका।

-“कहिए?”

-“मनाली में क्या कुछ हो रहा है? साक्षी ठीक-ठाक है न?”

-“कुछेक घंटे पहले तक तो थी। अब का पता नहीं...।”

-“और उसका पति वह घटिया आदमी?”

-“वह मर चुका है।”

-“उसी का मर्डर किया गया था?”

-“उसका भी किया गया था।”

-“साक्षी का तो इससे कोई संबंध नहीं है?”

-“नहीं।”

-“वाहे गुरु की कृपा है। मुझे उस लड़की से हमेशा लगाव रहा है। हालांकि दो साल से उसकी शक्ल तक नहीं देखी फिर भी उसे भूली नहीं हूं मैं। वह अपने मां-बाप के साथ लॉज में आया करती थी। तब छोटी थी और मुझसे काफी घुल-मिल गई थी।” उसकी आंखों में पुरानी यादों की चमक थी- “वक्त कितनी जल्दी गुजर जाता है और इंसान को कैसे कैसे हालात का सामना करना पड़ता है। साक्षी को भी वक्त के हाथों काफी कष्ट उठाने पड़े हैं...।”

-“आप ठीक कहती हैं।”

राजकुमार ने एक बार फिर उसे धन्यवाद देकर इंजिन स्टार्ट किया। पम्प की सीमा से निकलकर फीएट गैस्ट हाउस की ओर घुमा दी।

गैस्ट हाउस की दो मंजिला इमारत काफी लंबी-चौड़ी थी।

सफेद दाढ़ी और बालों वाला एक बूढ़ा पेड़ के नीचे बैठा सिगरेट फूंक रहा था।

राजकुमार फीएट से उतर कर उसके पास पहुंचा।

-"मिस्टर वॉर्नर?"

बूढ़े ने गौर से उसे देखा।

-"मैं ही हूं। कहिए?"

-"मेरा नाम राजकुमार है। पेशे से प्राइवेट जासूस हूं।" राजकुमार गोली देता हुआ बोला- "पुलिस के साथ मिलकर एक गुमशुदा को तलाश कर रहा हूं।"

-"गुमशुदा?"

राजकुमार उसके सामने बैठ गया।

-"मनाली की एक लड़की गायब है।"

-"कौन लड़की? एलिझाबेथ तो नहीं?"

-"वह कौन है?"

बूढ़े की झुर्रियों भरे चेहरे पर संदेह के भाव उत्पन्न हुए।

-"मैं नहीं समझता तुम्हारा इससे कोई ताल्लुक है।"

-"ठीक है। जाने दो।" राजकुमार ने अभी एलिझाबेथ के बारे में बातें न करना ही मुनासिब समझा- "गुमशुदा लड़की का नाम मीना भंडारी है। पिछले शनिवार को सुखवंत कौर ने उसे अपने पैट्रोल पम्प पर देखा था। उसका ख्याल है आप इस मामले में मेरी मदद कर सकते हैं।"

-"वह औरत हमेशा ख्यालों में ही खोई रहती है। खैर, इस मामले का मुझसे क्या ताल्लुक है?"

-"सुखवंत कौर ने सोमवार तीसरे पहर भी इस लड़की को देखा था। लड़की कार में थापा के साथ थी और वे इस तरफ ही आ रहे थे। आप सुनील थापा को जानते हैं?"

-"जानता हूं।" बूढ़ा भारी स्वर में बोला- "सोमवार को मैंने भी उन्हें देखा था। वे यहीं से गुजरे थे।"

-"लड़की का हुलिया बता सकते हो?"

-“इतना नजदीक से मैंने उसे नहीं देखा।” बूढ़ा सफेद बालों से भरा अपना सर हिलाकर बोला- “मेरे विचार से वह जवान थी। ब्राउन सलवार सूट पहने थी और सर पर स्कार्फ बांधा हुआ था।”

-“जब आपने यह सब देखा वह कार चला रही थी?”

-“नहीं, यह तो मैंने नहीं देखा। तुम, जबरदस्ती मुझसे यह कहलवाना चाहते हो?”

-“नहीं। माफ कीजिए मुझे ऐसा ही लगा था। खैर, आप बताइए।”

-“मैंने थापा को कार चलाते हुए देखा था और मैं नहीं जानता था उसके साथ वाली लड़की कौन थी...।” तनिक खांसने के बाद बूढ़ा बोला- “मेरे कहने का मतलब है मुझे थापा से बदला लेना था- यह मेरा जाति मामला है। मैंने सोचा उसे फटकारने का यही सही मौका था। इस तरफ ज्यादा दूर वह नहीं जा सकता था। यह सड़क आगे जाकर खत्म हो जाती है। इसलिए मैंने उसका पीछा किया- पैदल। वहां तक पहुंचने में काफी देर लगी। कूल्हे में चोट लग जाने के बाद से मैं तेज नहीं चल पाता। एक जमाना था जब एक ही सांस में दूर तक दौड़ता चला जाता था। पहाड़ियों और ऊंची चट्टानों पर चढ़ने में मेरा मुकाबला कोई नहीं कर पाता था....।”

बूढ़े को जवानी की यादों से बाहर लाने के लिए राजकुमार ने मीना भंडारी की फोटो जेब से निकालकर उसे दिखाई।

-“यह लड़की थी थापा के साथ?”

-“हो सकता है।” वह धीरे से बोला- “नहीं भी हो सकता। मैंने तुम्हें बताया था इतनी नजदीक से उसे नहीं देखा। जब मैं पहाड़ी पर पहुंचा तो पेड़ों के बीच से उन्हें देखा। वे गड्ढा खोद रहे थे।”

राजकुमार चौंका।

-“क्या कर रहे थे?”

-“चिल्लाओ मत। मैं बहरा नहीं हूं। वे गड्ढा खोद रहे थे।”

-“कैसा गड्ढा?”

-“मामूली। जैसा कि जमीन में खोदा जाता है। यहां शिकार करने पर सख्त पाबंदी है। इसलिए मैंने सोचा उन्होंने गलती से या जानबूझकर कोई हिरन मार डाला था और अब उसे दफना रहे थे ताकि किसी को पता न चल सके। मैं उन पर चिल्लाया। साथ ही मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया। मुझे इंतजार करके चुपचाप उनके पास पहुंचना चाहिए था।

लेकिन पिछले कुछेक सालों से बिल्कुल अकेला रह रहा होने के कारण मुझे जल्दी गुस्सा आ जाता है।"

-"खासतौर से थापा पर?"

-"ओह, तो तुम उसे जानते हो। मेरी आवाज सुनते ही वह कार की ओर दौड़ पड़ा। लड़की भी उसके पीछे भागी। कार थोड़े फासले पर सड़क के पास खड़ी थी। मेरे लिए उन्हें पकड़ पाना नामुमकिन था। मैं गड्ढे के पास गया और उनका फावड़ा उठा लाया। देखना चाहते हो?"

-"मैं वह गड्ढा देखना चाहूंगा। दिखाओगे?"

-"जरूर।"

-"वहां तक कार से जाया जा सकता है?"

-"हां। लेकिन उसमें देखने जैसी कोई बात नहीं। मामूली गड्ढा है।"

-"फिर भी मैं देखना चाहता हूं।"

बूढ़ा खड़ा हो गया।

-"आओ।"

बूढ़े के निर्देशानुसार कार ड्राइव करते राजकुमार को चढ़ाई पर बार-बार मोड़ काटने के कारण रफ्तार बहुत धीमी रखनी पड़ रही थी।

अंत में बूढ़े के कहने पर कार रोकनी पड़ी।

दोनों नीचे उतरे।

राजकुमार बूढ़े के पीछे चल दिया।

गड्ढा करीब छह फुट गुणा दो फुट आकार का था। हालांकि देखने में कब्र जैसा नजर आता था लेकिन उसकी गहराई मुश्किल से फुट भर थी।

राजकुमार ने नीचे बैठकर गड्ढे को चैक किया। मिट्टी नर्म थी। गड्ढा गहरा नहीं खोदा गया था और खोदी गई मिट्टी वापस उसी में भर दी गई थी।

-"मैंने पहले ही कहा था मामूली गड्ढा है।" पीछे खड़ा बूढ़ा बोला- "मगर मेरी समझ में नहीं आता वे बेवकूफ यहां खुदाई कर ही क्यों रहे थे। क्या उन्हें खजाना मिलने की उम्मीद थी?"

राजकुमार खड़ा होकर उसकी और पलटा।

-“खुदाई कौन कर रहा था?”

-“लड़की।”

-“क्या उसने लड़की पर पिस्तौल वगैरा तानी हुई थी?”

-“मैंने ऐसा कुछ नहीं देखा। हो सकता है उसकी जेब में पिस्तौल रही हो। अपनी जेबों में हाथ घुसेड़े ठीक इसी जगह खड़ा हुआ था जहां मैं खड़ा हूं। बड़ा ही कमीना है। अपना गंदा काम उस लड़की से करा रहा था।”

-“जब वे दोनों भागे तो पहले वही भागा था?”

-“हां। ठीक वैसे ही जैसे सर पर पैर रखकर भागना कहते हैं। लड़की उसके साथ नहीं लग पा रही थी। सड़क तक पहुंचने से पहले वह गिर भी गई थी।”

-“कहां?”

-“आओ दिखाता हूं।”

राजकुमार पुनः उसके पीछे चल दिया।

एक स्थान पर रुककर बूढ़े ने झाड़ियां उगी उथली खाई की ओर इशारा किया।

-“यही जगह है। जब लड़की गिरी वह पहले ही कार में जा बैठा था। हरामजादा उसी तरह बैठा रहा। बाहर निकलकर उठने में उसकी मदद नहीं की।”

-“आपको थापा पसंद नहीं है?”

-“नहीं, बिल्कुल नहीं।”

-“आप उसे किसलिए फटकारना चाहते थे?”

-“इस बारे में ज्यादा बातें करना भी मुझे पसंद नहीं है। यह मेरे परिवार का मामला है। इसका संबंध मेरी पोती से है। वह जवान लड़की है....।”

राजकुमार को ध्यान देता न पाकर बूढ़ा खामोश हो गया।

राजकुमार की निगाहें धूप में चमकती एक चीज पर जमी थीं। दो पत्थरों के बीच फंसी वह एक जनाना सैंडल की एड़ी थी। उसमें गड़ी कीलो के सिरे धूप में चमक रहे थे।

उसने नीचे झुककर उसे पत्थरों से निकाल लिया।

ब्राउन चमड़े से ढंकी वो औसत ऊंचाई की हील थी।

-“लगता है, लड़की के सैंडल की एड़ी उखड़ गई थी।” बूढ़ा बोला- “मुझे याद है जब उठकर चली तो लंगड़ा रही थी। तब मैंने सोचा उसके पैर में चोट आ गई थी।”

-“यहां से वे कहां गए थे?”

-“यहां से सिर्फ नीचे ही जाया जा सकता है।”

कुछ देर और आसपास का मुआयना करने के बाद राजकुमार बूढ़े सहित अपनी कार की ओर चल दिया।

बूढ़ा वॉर्नर गैस्ट हाउस के पीछे कॉटेज में रहता था। राजकुमार क्योंकि उससे और पूछताछ करना चाहता था इसलिए उसके साथ वहां पहुंचा।

-"आप सारी सर्दियां यहीं गुजारते हैं?" राजकुमार ने बातचीत आरंभ करते हुए पूछा।

-"हां।"

-"अकेले?"

-"इस उम्र में और कौन मेरे साथ रहेगा? वैसे भी बुढ़ापे में अकेले रहने का अपना अलग ही मजा है बशर्तें कि शरीर सही सलामत हो। जवानी में मैंने भी दर्जनों तरह के काम किए हैं। लेकिन शहरी जिंदगी मुझे कभी रास नहीं आई। दूर दराज के कस्बे और गांव ही ज्यादा पसंद है। खासतौर पर पहाड़ी। मैं पहाड़ों का रहने वाला हूं।"

-"आपने शादी नहीं की?"

-"की थी। बाइस साल पहले पत्नी का देहांत हो गया।"

-"कोई औलाद नहीं थी?"

-"एक बेटा था। आज अगर जिंदा होता तो पेंतालीस साल का होना था। ट्रक चलाता था। एक रोज एक्सीडेंट में मारा गया। उसने मेरी मर्जी के खिलाफ एक आवारा लड़की से शादी कर ली थी और घर छोड़कर चला गया।" बूढ़ा अपनी यादों के पन्ने पलटता हुआ सा बोला-"उसकी मौत के बाद उस लड़की ने दूसरी शादी कर ली। इस तरह एली को न तो मां-बाप का प्यार मिल सका और न ही सही परवरिश। जब उसे पढ़ाई करनी चाहिए थी तब वह सड़कों पर भटकती रहती थी।"

बूढ़ा अपने आप ही लाइन पर आ गया था।

-"आप अपनी पोती की बात कर रहे हैं?" राजकुमार ने जानबूझकर टोका।

-"हां।"

-"वह अब कहां है?"

-"आजकल मनाली में है। तुम भी तो वहीं से आए हो। उसे जानते हो?"

-"हो सकता है। क्या नाम है उसका?"

-"शादी के बाद उसका पूरा नाम मुझे याद नहीं है। वैसे उसका नाम एलिझाबेथ वॉर्नर था। लेकिन खुद को एली बताती है। यह फैंसी नाम है- स्टेज आर्टिस्टो जैसा। वह प्रोफेशनल सिंगर बनना चाहती है। तुम मनाली के रॉयल क्लब में गए हो?"

-"हां।"

-"तब तो वहां उसका गाना भी सुना होगा?"

-"नहीं। लेकिन मैं उससे मिल चुका हूं।"

बूढ़े ने उत्सुकतापूर्वक उसे देखा।

-"उस क्लब के बारे में तुम्हारा ख्याल है। घटिया सी जगह है न?"

-"हां।"

-"मैंने भी एली को यही समझाया था। किसी नई शादीशुदा लड़की के काम करने लायक जगह वो नहीं है। भला बार में गाना भी कोई काम है। ऐसी घटिया बार में गाने से कोई सिंगर नहीं बन सकता। बार जितनी घटिया है उसका मालिक थापा उससे भी कहीं ज्यादा घटिया है। मैंने बहुत समझाया मगर एली ने मेरी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। मैं बूढ़ा हूं और वह एकदम जवान है। उसकी निगाहों में मैं बेवकूफ और सनकी हूं। हो सकता है, मैं ऐसा ही हूं लेकिन उसकी फिक्र किए बगैर तो मैं नहीं रह सकता। आखिरकार वह मेरे परिवार की आखिरी निशानी है।"

-"आप ठीक कहते हैं।"

-"जब तुमने उसे देखा वह ठीक थी न?"

-"वह सिंगर बनना चाहती है।" राजकुमार उसके सवाल के जवाब को गोल करता हुआ बोला- "क्या उसने संगीत सीखा है?"

-"मुझे नहीं लगता उसने बाकायदा तालीम हासिल की है। लेकिन गाती बहुत अच्छा है। मुझे हिंदी फिल्मों के पुराने गाने पसंद है। मेरे कहने पर सुरैया और शमशाद बेगम के कई गाने उसने सुनाए थे।"

-"यह कब की बात है?"

-"पिछले महीने की। वह पहली दिसंबर के आसपास यहां आई थी। अपने पति को भी साथ लायी थी। तुम उसके पति को भी जानते हो?"

-"क्या नाम है उसका?"

-"नाम तो याद नहीं आ रहा।"

-"देखने में कैसा है?"

-"नौजवान है। लेकिन मुझे पसंद नहीं आया। हर वक्त काला विंडचीटर पहने रहता है....।"

-"अँटनी?"

-"हां यही नाम है। जानते हो उसे?"

-"कुछ खास नहीं।"

-"कैसा लड़का है?"

राजकुमार तय नहीं कर सका क्या जवाब दें।

-"मैं इसलिए पूछ रहा हूं।" बूढ़े ने कहा- "क्योंकि उसका व्यवहार ऐसा नहीं था जैसा एक जवान पति का अपने हनीमून पर होना चाहिए।"

-"वे हनीमून मनाने आए थे?"

-"उन्होंने कहा तो यही था।"

-"लेकिन आपको इस पर यकीन नहीं है?"

-"मुझे तो इस पर भी यकीन नहीं है कि वे दोनों पति पत्नि थे या सही ढंग से शादी भी की थी। उनमें न तो नए शादी शुदा जोड़े वाला जोश, उमंग और खुशी थी और न ही वह एली को वो प्यार और इज्जत देता नजर आया जो कि देना चाहिए थी। खैर, अब उनमें सही निभ रही है?"

-"पता नहीं। मैं बस इतना जानता हूं कि कोई भला आदमी वह नहीं है। मेरे चेहरे की हालत देख रहे हो?"

-"हां तुम्हारे आते ही देख ली थी। लेकिन इस बारे में पूछना मुनासिब नहीं समझा।"

-"यह अँटनी की वजह से ही हुई थी।"

-"तुम्हारा मतलब है, उसने की थी?"

-"हां।"

-"वह खतरनाक और मारामारी वाला आदमी ही है।"

-"आपके साथ भी हाथापाई की थी?"

-"इतना मौका ही उसे नहीं मिला।" बूढ़े का स्वर कठोर हो गया- "इससे पहले कि वह मेरे साथ ऐसी हरकत करने की कोशिश करता मैंने उसका सामान उठाकर बाहर फेंक दिया। लेकिन कुछ देर के लिए ऐसा माहौल जरूर बन गया था।"

-"क्या हुआ था?"

-“उस रोज मैं अपने कपड़े धो रहा था। वे दोनों बाहर कहीं गए हुए थे। मैंने यह सोचकर उनका सूटकेस खोला कि अगर उसमें मैले कपड़े हों तो उन्हें भी धो दूंगा। उसकी दो मैली कमीजें मिलीं। उन्हें निकालकर हिलाते ही उनमें लिपटी पिस्तौल निकलकर नीचे जा गिरी। उसके बारे में मेरा शक मजबूत हो गया कि वह शरीफ आदमी नहीं था। कुछ और टटोलने पर सूटकेस में नोट भी मिले।”

-“नोट?”

-“बैंक नोट। रुपए। पुराने अखबार में लिपटे बहुत सारे रुपए थे। पांचसों के नोटों की तीसेक गड्डीयाँ रही होंगी। मेरी अक्ल चकराकर रह गई। जिस आदमी के पास ढंग के चार जोड़ी कपड़े तक नहीं थे। जो शक्ल से ही फटीचर नजर आता था उसी के पास करीब पन्द्रह लाख रुपए नगद थे। उस रकम ने मेरा शक यकीन में बदल दिया कि वह कोई डाकू या लुटेरा था।”

राजकुमार की उत्सुकता अपनी चरम सीमा पर थी।

-“फिर आपने क्या किया?”

-“जब वे दोनों वापस आए मैंने रकम और पिस्तौल के बारे में उससे पूछा।”

-“क्या?” आपको डर नहीं लगा?”

-“नहीं।” मैंने अपने बचाव का पूरा इंतजाम कर लिया था। गैस्ट हाउस के मालिकों ने मुझे एक दोनाली बंदूक दे रखी है। उससे बातें करते वक्त मैंने बंदूक को लोड करके अपने घुटनों पर रख लिया था। मेरे पूछते ही उसकी आंखों में खून उतर आया जैसे मेरी जान लेना चाहता था। मगर बंदूक के डर से मेरे पास तक नहीं आया।”

-“उसने रकम की क्या सफाई दी?”

-“कुछ नहीं।”

-“फिर भी कुछ तो कहा ही होगा।”

-“वह मुझे गालियां बकता हुआ कमरे में गया। सूटकेस उठाकर बाहर निकला और अपनी कार लेकर चला गया।”

-“आपकी पोती ने उसे रोका नहीं?”

-“एली ने काफी कोशिश की मगर उसकी बातों पर कोई ध्यान उसने नहीं दिया। वह उसे धकेलकर चला गया। इसके बाद एली भी थापा के साथ चली गई। और इसके लिए एली

को ज्यादा दोष नहीं दिया जा सकता। वह अकेली और करती भी क्या....लेकिन तुमने बताया था अब वापस अँटनी के पास चली गई है। यह सही है?"

-"शायद।"

-"अँटनी वाकई डाकू लुटेरा ही है?"

-"हां। उसने अपने बारे में आपको बताया था?"

-"कुछ खास नहीं।"

-"कितने रोज ठहरा था यहां?"

-"दो दिन। हां, याद आया। दो एक बार उसने विराटनगर का जिक्र किया था और वहां कई लोगों से उसने ताल्लुकात होने के बारे में भी बताया था।"

-"कैसे ताल्लुकात?"

-"बिजनेस के। शायद शराब के धंधे की कोई बात कही थी। लेकिन मैंने उसकी बकवास पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।"

-"उसके चले जाने के बाद उसके बारे में एली से तो आपने पूछा होगा।"

-"पूछा तो था लेकिन वह भी ज्यादा नहीं जानती। एली का कहना था हफ्ते भर पहले ही विशालगढ़ में उससे मिली थी। मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि दोबारा उसके पास वापस न जाए।" बूढ़े ने बेचैनी से पहलू बदला- "मेरा ख्याल है मुझे फिर जाकर एली से मिलना चाहिए।"

-"इसके लिए आपको लंबा सफर तय करना पड़ सकता है।"

बूढ़े ने सवालिया निगाहों से उसे दिखा।

-"क्या मतलब?"

-"आपकी सेहत कैसी है। हार्ट प्राब्लम तो नहीं है?"

बूढ़े ने अपनी छाती पर हाथ मारा।

-"नहीं। क्यों?"

-"आपकी पोती मुसीबत में है।"

-"एली मुसीबत में है?"

-"हां। पुलिस को उसकी तलाश है। कार चुराने और हत्या के अपराध के संदेह में।"

-“किसकी हत्या के?”

-“पिछली रात थापा को शूट करके मार डाला गया। मैंने एली को घटनास्थल से भागते देखा था।”

बूढ़ा देर तक खामोश बैठा रहा।

-“तुम मुझे बेवकूफ बना रहे हो।” अंत में बोला- “यह पहले क्यों नहीं बताया?”

-“मैं आपको चोट पहुंचाना नहीं चाहता था।”

-“मैं बूढ़ा जरूर हूं लेकिन घबरा जाने वाला आदमी नहीं हूं। मैं जानता था, एली मुसीबत में फंसने जा रही थी। उसे रोकने की बड़ी पूरी कोशिश मैंने की। मनाली जाकर उसे थापा से दूर करने की कोशिश की। थापा से भी और उसके उस शहर से भी....मगर उस जिद्दी लड़की ने मेरी बात नहीं मानी।” संक्षिप्त मौन के पश्चात पूछा- “क्या एली ने ही हत्या की है?”

-“पता नहीं।”

-“लेकिन उसने कार तो चुराई थी?”

-“हां।”

-“उसे ऐसा करने की क्या जरूरत थी? अगर उसे पैसा चाहिए था तो मेरे पास आ जाती। मैंने अपना सब-कुछ उसे दे देना था।”

-“यह काम उसने पैसे के लिए नहीं किया। उसे वहां से भागने के लिए सवारी चाहिए थी। हो सकता है, उसका इरादा यहां आपके पास आने का रहा हो।”

बूढ़े ने बड़े ही दुखी और निराश मन से सर हिलाया।

-“मेरे पास वह नहीं आई।”

-“कहां गई हो सकती है?”

-“पता नहीं।” पुनः संक्षिप्त मौन के बाद पूछा- “अगर अँटनी वाकई उसका पति है तो उसका क्या हुआ? वह कहां है?”

-“उसकी भी पुलिस को तलाश है। वह फरार है।”

-“उसने क्या किया?”

-“विस्की से भरा ट्रक उड़ाया था। उस ट्रक का ड्राइवर मारा गया।”

-“एक और मारा गया?”

-“हां। आप अंदाजा लगा सकते हैं अँटनी और एली भागकर कहां गए हो सकते हैं?”

-“नहीं।”

राजकुमार खड़ा हो गया।

बूढ़ा विचारपूर्वक उसे देख रहा था।

-“उस लड़की का इस सबसे क्या ताल्लुक है?”

-“कौन सी लड़की का?”

-“वही जो गायब है और जिसकी सैंडल की टूटी एड़ी तुम्हें मिली थी।”

-“यह एक ऐसा सवाल है जिसका जवाब मैं भी जानना चाहता हूं।”

-“तुम मनाली जा रहे हो?”

-“हां। अगर आप चलना चाहे तो मैं आपको लिफ्ट दे सकता हूं।”

-“इस मेहरबानी के लिए शुक्रिया। लेकिन मैं अभी इस बारे में सोचना चाहता हूं।”

-“अगर एली यहां आती है तो क्या आप मुझे बता देंगे? मिसेज थापा के जरिए आप मुझे कांटेक्ट कर सकते हैं।”

-“इस बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। हो सकता है, बता दूं और हो सकता है न भी बताऊँ। बूढ़े ने गहरी सांस ली- “यहां मेरे पास वह नहीं आएगी।”

-“मैं एली की भलाई की खातिर ही कह रहा हूं।” दरवाजे से निकलता राजकुमार बोला- “अगर वह यहां आए तो मुझे बता देना।”

बूढ़ा दोनों हाथों से सर थामें खामोश बैठा रहा।

१५

झील के किनारे के साथ जाती सड़क पर फीएट ड्राइव करता राजकुमार थापा की लॉज के पास से गुजरने के बाद चौंका।

लॉज तक गई प्राइवेट रोड के सिरे पर जिप्सी खड़ी थी। ड्राइविंग सीट पर मौजूद मिसेज थापा विंडशील्ड के पीछे से जोर-जोर से उसकी ओर हाथ हिला रही थी।

सड़क की साइड में फीएट पार्क करके राजकुमार उसके पास पहुंचा।

सफेद सलवार सूट में आश्चर्यजनक ढंग से खूबसूरत नजर आने के बावजूद उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था।

-"मुझे उम्मीद नहीं थी तुम यहां मिलोगी।" राजकुमार बोला।

-"सुखवंत कौर ने बताया तुम यहां आए हो। मैं समझ गई इधर से ही वापस लौटोगे इसलिए यहां आकर इंतजार करने लगी।"

-"इनके लिए?" राजकुमार ने कहा और चाबियां निकालकर उसे दे दीं।

-"मैं इसलिए नहीं आई।" नर्वस भाव से हाथ में चाबियां थामें वह बोली- "अब जबकि मैं यहां आ गई हूं तो लॉज को देखना चाहती हूं। तुम साथ चलोगे?"

-"अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो वहां नहीं जाना था।"

-"मीना वहीं है?"

राजकुमार ने जवाब नहीं दिया।

-"मैंने दरवाजे पर दस्तक दी थी।" वह कहती गई- "लेकिन कोई नहीं बोला। क्या वह अंदर छिपी हुई है?"

-"नहीं, वह वहां कहीं नहीं है। जैसा कि तुम्हारे पति ने कहा था मीना भंडारी गायब हो गई है।"

-"लेकिन उसने सोमवार के बारे में मुझसे झूठ बोला था। सोमवार को सुखवंत कौर ने उन्हें साथ-साथ देखा था।"

-"उसने ही नहीं बूढ़े वॉर्नर ने भी उन्हें देखा था। बूढ़े ने जंगल में उन्हें अजीब सा काम करते हुए भी पकड़ा था।"

मिसेज थापा के चेहरे पर शर्म की सुर्खी दौड़ गई।

-“ऐसा क्या कह रहे थे? क्या वे....?”

-“नहीं। वह जमीन में गड्ढा खोद रही थी और तुम्हारा पति उसे खुदाई करते देख रहा था।”

-“क्या? गड्ढा खोद रही थी?”

-“हां।”

-“लेकिन क्यों? किसलिए?”

-“यह मैं भी नहीं जानता। तुम्हारे साथ बैठ सकता हूं?”

-“जरूर। आओ।”

वह बगल वाली सीट पर खिसक गई।

राजकुमार ड्राइविंग सीट पर बैठ गया।

उसने ब्राउन चमड़े की एड़ी निकालकर उसे दिखाई।

-“इसे पहचानती हो?”

उसने एड़ी को उलट पुलट कर गौर से देखा।

-“लगता तो है। किसकी होनी चाहिए?”

-“तुम बताओ।”

-“मीना भंडारी की?”

-“यह जानती हो या अंदाजा लगा रही हो?”

-“पूरे यकीन के साथ नहीं कर सकती। मेरा ख्याल है पिछले शुक्रवार को जब उसे देखा वह ऐसी ही सैंडल पहने थी। तुम्हें यह कहां से मिली?”

-“जंगल में। बूढ़े वॉर्नर ने उन्हें चिल्लाकर टोका तो वे घबराकर भाग खड़े हुए। इसी हड़बड़ी में वह गिरी और उसके सैंडल की हील उखड़ गई।”

-“आई सी।” एड़ी वापस राजकुमार को लौटाकर बोली- लेकिन वे जंगल में गड्ढा क्यों खोद रहे थे?”

-“वे नहीं। वह खोद रही थी। तुम्हारा पति वहां खड़ा उसे खुदाई करती देख रहा था।”

-“लेकिन क्यों?”

-“इससे सवाल तो कई पैदा होते हैं मगर जवाब शायद एक ही हो सकता है। राजकुमार बोला- “मैंने ऐसे सैडिस्टिक हत्यारों के बारे में सुना है जो अपने शिकार को सुनसान जगह पर ले जाते हैं। फिर जबरन उसी से उसकी कब्र खुदवाते हैं। अगर वह मीना की हत्या की योजना बना रहा था...।”

-“मैं नहीं मान सकती।” तीव्र स्वर में प्रतिवाद करती हुई बोली- “सुनील ऐसा आदमी नहीं था। ऐसा कुछ उसने नहीं किया हो सकता।”

-“तुम्ही ने तो बताया था वह सैडिस्ट था।”

-“लेकिन मेरा यह मतलब तो नहीं था।”

-“फिर क्या था?”

-“मैंने उसे सिर्फ इसलिए सैडिस्ट कहा था क्योंकि मुझे दुखी परेशान करने और सताने में उसे मजा आता था।”

-“खैर, मुझे जो एक संभावना सूझी मैंने बता दी।” राजकुमार बोला- “क्या मैं सिगरेट पी सकता हूं?”

-“श्योर।”

राजकुमार ने प्लेयरज गोल्ड लीफ का एक सिगरेट सुलगाया।

-“सोमवार रात में जब तुम्हारा पति घर लौटा तुमने उसे देखा था?”

-“हां। हालांकि काफी रात गए लौटा था लेकिन मैं जाग रही थी।”

-“तुमसे कुछ कहा था उसने?”

-“याद नहीं।” वह विचारपूर्वक बोली- “नहीं, याद आया, मैं बिस्तर में थी। वह बिस्तर पर नहीं आया। पहले बैठा विस्की पीता रहा फिर देर तक घर में इधर-उधर घूमने की उसके कदमों की आहटें सुनाई देती रही। आखिरकार मैं एक स्लीपिंग पिल निगलकर सो गई।”

-“यानी तुमसे कोई बात उसने नहीं की?”

-“नहीं।” अचानक उसने राजकुमार की बाँह पर हाथ रख दिया- “तुम कैसे कह सकते हो, सुनील ने उसे मार डाला? जबकि तुम यह तक नहीं जानते वह मर चुकी है।”

-“मैं मानता हूं उसकी लाश नहीं मिली है। लेकिन बाकी जो भी बातें सामने आयी हैं इसी ओर संकेत करती हैं। अगर वह मरी नहीं तो कहां है?”

राजकुमार कि बाँह पर एकाएक उसकी उंगलियां जोर से कस गई और आंखों में विषादपूर्ण भाव उत्पन्न हो गए।

-"मुझसे पूछ रहे हो? क्या तुम समझते हो, मैंने उसे मार डाला?"

-"नहीं, बिल्कुल नहीं।"

राजकुमार के इंकार की ओर ध्यान देती प्रतीत वह नहीं हुई।

-"सोमवार को सारा दिन मैं घर में रही थी।" उसने कहना जारी रखा- "इसे साबित भी मैं कर सकती हूं। दोपहर बाद मेरी एक सहेली मेरे पास आई थी। उसने लंच मेरे साथ लिया था फिर रात के खाने पर भी ठहरी थी। जानते हो, वह कौन थी?"

-"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरे सामने अपनी एलीबी पेश करने की कोई जरूरत तुम्हें नहीं है।"

-"जरूरत भले ही न हो मगर मैं बताना चाहती हूं। तुम्हें सुनने में ऐतराज है?"

-"नहीं।"

-"मेरी वह सहेली थी- रविना त्यागी। एस. एच.ओ. उमाकांत त्यागीकी पत्नि। हम अपनी महिला समिति की ओर से गरीब औरतों में सिलाई मशीनें बांटने के प्रोग्राम पर विचार करते रहे थे। हालांकि यह चार दिन पुरानी बात है मगर मुझे लगता है जैसे चार साल पुरानी बात हो। काफी सोच-विचार के बाद भी हम ठोस नतीजे पर नहीं पहुंच सकीं। हमने बेकार ही वक्त जाया किया।"

-"तुम ऐसा समझती हो?"

-"अब समझ रही हूं। अब मुझे हर एक बात बेकार और बेवकूफाना लगती है। क्या तुम्हें कभी ऐसा लगा है कि वक्त तुम्हारे लिए ठहर गया है और तुम ऐसे शून्य में जी रहे हो जिसमें भविष्य कोई आएगा नहीं और भूत कोई था नहीं?"

-"मेरे साथ तो ऐसा नहीं हुआ लेकिन अक्सर लोगों के साथ होता रहता है। मगर ज्यादा दिन ऐसा रहता नहीं है। तुम्हारे साथ भी नहीं रहेगा। वक्त बड़े से बड़े जख्म को भर देता है।"

-"तसल्ली देने के लिए शुक्रिया।" संक्षिप्त मौन के पश्चात वह बोली- "तुमने कल रात भी मेरे साथ हमदर्दी जाहिर की थी और अब भी यही कर रहे हो। क्यों?"

राजकुमार मुस्कराया।

-“मुसीबतजदा या परेशान हाल औरतों के साथ हमदर्दी करना मेरी आदत है। अब मैं एक सीधा सा सवाल पूछता हूं- तुम, आज यहां क्यों आई हो?”

-“शायद तुमसे दोबारा मिलना चाहती थी। पिछली रात और आज सुबह आकाश से हुई बातों ने मुझे बहुत ज्यादा डरा दिया था।”

-“ऐसा क्या कहा था उसने?”

-“हालांकि कोई इल्जाम तो मुझ पर नहीं लगाया मगर उसका व्यवहार अजीब था। किसी ऐसे आदमी जैसा जिसे मैं बिल्कुल नहीं जानती और जो मुझे नहीं जानता। एकदम अजनबियों की तरह पेश आया था वह। और उसका वो सब इंस्पेक्टर।

-“सब इंस्पेक्टर दीपक।?”

-“हां। वह तुम्हारी जान लेने की धमकी दे रहा था। उसका कहना था, तुम्हें देखते ही गोली मार देगा। आकाश ने उसे शांत कराने की कोशिश तक नहीं की। बस चुपचाप खड़ा रहा।”

-“तुम्हारे डरने की वजह यही थी?”

-“हां। मेरी समझ में नहीं आया एक ईमानदार अफसर होते हुए भी आकाश ने अपने मातहत की इतनी गलत और गैर जिम्मेदाराना बात बर्दाश्त कैसे कर ली।”

-“हो सकता है इतना ईमानदार वह नहीं है जितना तुम उसे समझती हो....।”

-“नहीं। उसकी ईमानदारी पर शक नहीं किया जा सकता।”

-“इस बारे में तुमसे बहस मैं नहीं करूंगा। इन्स्पेक्टर बाजवा की खामोशी का मतलब था- अपने मातहत के उस हरादे से वह खुद भी सहमत था।”

-“लेकिन क्यों?”

-“यह मेरी सरदर्दी है। तुमसे कुछेक और सवाल मैं करना चाहता हूं।”

-“आकाश के बारे में?”

-“नहीं। तुम्हारे पति और मीना भंडारी के बारे में।”

-“क्या?”

-“तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा?”

-“नहीं।”

-“क्या उन दोनों में अभी भी आशनाई थी?”

-“मुझे तो नहीं लगता।”

-“क्यों?”

-“उसने मुझे बताया था कि मीना के साथ उसके ताल्लुकात महीनों पहले खत्म हो गए थे। पहले तो मुझे इस बात पर यकीन नहीं आया लेकिन जब मैंने मोटल में उन्हें साथ-साथ देखा तो उनके आपसी व्यवहार से मुझे ऐसा नहीं लगा...।”

-“कि वे अभी भी प्रेमी प्रेमिका थे?”

-“हां।”

-“मान लो तुम्हारा अंदाजा सही था तो तुम्हारे विचार से उनके ताल्लुकात खत्म होने की क्या वजह रही हो सकती थी?”

-“वह मीना से ऊब गया होगा- किसी भी औरत के साथ ज्यादा देर चिपके रहना उसकी आदत नहीं थी। या फिर मीना उससे ऊब गई होगी।” उसकी आंखों में नफरत भरे भाव थे- “इस मामले में मीना भी वैसी ही थी जैसा वह था।”

-“लेकिन जिस्मानी ताल्लुकात खत्म होने के बाद भी उनमें दोस्ती थी?”

-“वो तो जाहिर ही है। पिछले हफ्ते तक मीना उसके लिए काम करती रही थी।”

-“तुम मीना को अच्छी तरह जानती हो?”

-“हां।”

-“कितनी अच्छी तरह?”

-“इतनी ज्यादा अच्छी तरह कि जब मुझे अपने आप पर अफसोस नहीं होता तो उस पर अफसोस होता है। मैं उसे बरसों से जानती हूं। जब वह दसवीं क्लास में थी मैं बी.ए. में थी। मीना उन दिनों भी बदनाम थी।”

-“तब कितनी उम्र रही होगी उसकी?”

-“पंद्रह-सोलह साल। तब भी लड़कों के पीछे पागल रहती थी। लेकिन इस सबके लिए सिर्फ उसी को दोष नहीं दिया जा सकता। वह बहुत ज्यादा खूबसूरत थी और इतनी ज्यादा तेजी से जवान हुई कि पंद्रह-सोलह की उम्र में ही पूरी तरह विकसित औरत लगती थी। उसकी घरेलू जिंदगी भी अच्छी नहीं थी। उसकी मां बहुत पहले मर चुकी थी और बाप दरिंदा था- पूरी तरह दरिंदा।”

-“तुमने उनकी पूरी स्टडी की लगती है।”

-“मैंने नहीं, मेरे पिता ने की थी। डैडी को मीना और उसके परिवार की बहुत ज्यादा फिक्र रहती थी। इस बारे में मुझसे अक्सर बातें किया करते थे। उन दिनों वह किशोरों की अदालत के भी जज थे। मीना का केस भी उनकी अदालत में आया था और उन्हें तय करना था उस सबके बाद मीना का क्या किया जाए।”

-“ऐसा क्या हुआ था?”

उसने सर झुका लिया।

-“मीना के बाप पर शैतान सवार हो गया था।”

-“तुम्हारा मतलब है, भंडारी ने अपनी ही बेटी के साथ.....।”

-“हां।”

-“तो फिर भंडारी को तो जेल में होना चाहिए था।”

-“काश ऐसा हो जाता।”

-“ऐसा हुआ क्यों नहीं?”

-“मीना ने अदालत में अपना बयान बदल दिया। बाप पर सीधा इल्जाम नहीं लगाया। क्योंकि उसका बाप पूरी तरह कामयाब नहीं हो सका था इसलिए मीना की डॉक्टरी जांच में भी कुछ नहीं आया। उस वक्त घर में कोई और नहीं था इसलिए मीना के साथ हुई वारदात का गवाह भी कोई नहीं था। नतीजतन सही मायने में कोई केस भंडारी के खिलाफ नहीं बन सका। लेकिन मीना की आइंदा हिफाजत के लिए उसे उसके बाप के साथ घर में न रहने देने का फैसला किया गया। तभी आकाश ने उसकी बहन से शादी कर ली और वे दोनों मीना को अपने साथ रखने लगे। मीना कई साल तक उनके साथ रही। फिर कभी कोई झमेला उसके साथ नहीं हुआ... कम से कम कानूनी तौर पर।”

-“अभी तक।”

अचानक वह पलटकर लॉज की ओर जाती सड़क को देखने लगी।

-“मेरे साथ लॉज में नहीं चलोगे?

-“किसलिए?”

मैं देखना चाहती हूं वो किस हालत में है।”

-“किसलिए?”

-“उसे बेचना चाहती हूं।”

-“बेहतर होगा उससे दूर ही रहो।”

-“क्यों? क्या उसकी लाश...?”

-“ऐसा कुछ नहीं है। तुम्हें वहां जाकर ठीक नहीं लगेगा। अच्छा होगा की चाबियां मुझे लौटा दो।”

-“क्यों? चाबियों का तुम क्या करोगे?”

-“बाद में बताऊंगा।”

उसने अपने हैंडबैग से निकालकर चाबियां दे दीं।

-“धन्यवाद।” राजकुमार ने कहा- “मैं यह चाबियां मनाली के किसी ईमानदार पुलिस वाले को सौपूंगा। तुम किसी ईमानदार पुलिस वाले को जानती हो?”

-“मैं तो आकाश को ईमानदार समझती थी। अभी भी समझती हूं। अगर तुम्हें उस पर भरोसा नहीं है तो उमाकांत त्यागी के पास चले जाना।”

-“एस. एच.ओ. के?”

-“हां।”

-“तुम्हें भरोसा है उस पर?”

-“हां। लेकिन....।”

-“लेकिन क्या?”

-“तुम्हारा वापस शहर लौटना तुम्हारे हक में ठीक रहेगा?”

-“पता नहीं। अलबत्ता दिलचस्प जरूर रहेगा।”

-“यह जानते हुए भी कि वहां की पुलिस तुम्हारी दुश्मन है?”

-“हां।”

-“तुम बहादुर आदमी हो।”

-“तारीफ के लिए शुक्रिया। मैं गुंडों और बदमाशों की मनमानी बर्दाश्त नहीं कर सकता।”

-“तुम उन्हें कानून के हाथों से बचने नहीं दोगे?”

-“नहीं।”

साक्षी ने उसका चेहरा हाथों में थाम कर उसके होठों पर चुंबन जड़ दिया।

सीने पर पड़ते उसके वक्षों के दबाव से राजकुमार ने महसूस किया साक्षी का दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। उसकी बाहें साक्षी की पीठ पर कसने के लिए बढ़ी तो वह उसे धकेलकर दूर खिसक गई।

राजकुमार जिप्सी से उतरकर अपनी फीएट की ओर बढ़ गया।

दोनों कारें आगे-पीछे मनाली की ओर दौड़ने लगीं।

१६

बूढ़ा भंडारी ट्रांसपोर्ट कंपनी के अपने ऑफिस में बैठा मिला। उसके सामने डेस्क पर कागजात फैले थे। अपनी सुर्ख आंखों से उसने राजकुमार को घूरा।

-"तुम्हारे चेहरे को क्या हुआ?"

-"शेव करते वक्त कट गया था।" राजकुमार ने लापरवाही से कहा।

-"घास काटने वाली मशीन से शेव कर रहे थे?"

-"हां। आपको मेरे आने की उम्मीद नहीं थी?"

-"नहीं। मैं समझ रहा था, मैदान छोड़कर भाग गए हो।"

-"क्यों?"

-"तुम गायब जो हो गए थे।"

-"अब यकीन आ गया कि भागा नहीं हूं?"

-"हां। आकाश चाहता है, तुमसे कह दूं तुम्हारी मदद नहीं चाहिए।"

-"तो?"

-"तो कुछ नहीं। मैं जो करता हूं अपनी मर्जी से करता हूं किसी के हुक्म से नहीं।" भंडारी आगे झुक गया। उसका चेहरा किसी बूढ़े लूमड़ जैसा नजर आ रहा था- "लेकिन अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो उसके आड़े आने की कोशिश नहीं करता। उसे यह कतई पसंद नहीं है।"

-"पसंद तो मुझे नहीं है।"

-"हो सकता है। लेकिन तुम जो कर रहे हो वो सब करने की कोई अथारिटी भी तुम्हारे पास नहीं है।"

-"मैं एक प्रेस रिपोर्टर हूं। सच्चाई का पता लगाकर उसे जनता के सामने लाना मेरा फर्ज भी है और हक भी।"

-"खैर, तुम रहे कहां?"

-"मोती झील पर।"

-"वहां क्या करने गए थे?"

राजकुमार ने जवाब नहीं दिया।

-"मैं तुम्हें यहां कांटेक्ट करने की कोशिश करता रहा था।" भंडारी बोला- "मैं ही नहीं एस. एच.ओ. उमाकांत त्यागी भी तुमसे मिलना चाहता है। तुम मोती झील की सैर कर रहे थे और यहां इस मामले ने एक नया मोड़ ले लिया है। जानते हो एयरबेस पर एक मारुती छोड़ दी गई थी.....।"

-"हाँ।" मैंने ही पुलिस को उसकी इत्तिला दी थी।"

-"पुलिस ने उस कार का पता लगा लिया है। वो विशालगढ़ में एक पुरानी कारों के डीलर से खरीदी गई थी और वह आदमी- क्या नाम था उसका?"

-"अँटनी?"

-"अँटनी ने पहली सितंबर के आसपास उसे खरीदा था। कीमत नगद चुकाई थी पांच सौ रुपए के नोटों में। जब वो डीलर उस रकम को बैंक में जमा कराने गया तो केशियर ने पुलिस बुला ली....।"

-"रकम चोरी की थी?"

-"वे नोट अगस्त में करीमगंज में हुई एक बैंक डकैती में डाकुओं द्वारा ले जायी गई रकम का हिस्सा थे। करीमगंज पुलिस ने उन नोटों के नंबरों की लिस्ट सभी बड़े शहरों के बैंकों को भिजवा दी थी। डकैती में करीब बीस लाख रुपए गए थे।"

-"अँटनी ने बैंक से बीस लाख रुपए लूटे थे?"

-"हां। और अँटनी की गिरफ्तारी पर पचास हजार रुपए का इनाम है। यह इनाम तुम्हें इस केस पर काम करते रहने का जोश दिलाने के लिए काफी है।"

-"मुझे इनाम का कोई लालच नहीं है।"

-"ठीक है। अगर तुम्हें मिले तो खुद मत लेना मुझे दिला देना।"

राजकुमार के जी में आया उस हरामी खूसट का मुंह तोड़ दे लेकिन अभी उसे बूढ़े की जरूरत थी। इसलिए प्रगट में बोला- "दिला दूंगा।"

-"अब यह भी बता दो मोती झील पर क्या करने गए थे?"

-"इसी केस के सिलसिले में गया था।"

-"वहां से कुछ पता चला?"

-“हां।” राजकुमार ने सैंडल की ब्राउन हील उसके डेस्क पर रख दी- “क्या यह तुम्हारी बेटी मीना के सैंडल की है?”

भंडारी ने हिल उठाकर यू उंगलियों में घुमाई मानो उससे उसकी मालकिन का अंदाजा लगाना चाहता था।

-“पता नहीं।” अंत में बोला- “औरतें क्या पहनती हैं। इस ओर ज्यादा ध्यान देना मेरी आदत नहीं है। तुम्हें यह कहां से मिली।”

राजकुमार ने बता दिया।

-“मुझे नहीं लगता यह मीना की है।” बवेचा हील को डेस्क पर लुढ़काता हुआ बोला- “तुम इससे क्या नतीजा निकाल रहे हो?”

राजकुमार ने एक सिगरेट सुलगाई।

-“मेरा ख्याल है, वह कब्र खोद रही थी।”

-“क्या? किसलिए?”

-“वो खुद उसके लिए भी हो सकती थी और किसी और के लिए भी।”

-“और किसके? थापा के लिए?”

-“नहीं, थापा के लिए नहीं। वह खुदाई का मुआयना कर रहा था।”

-“मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा। तुम्हें यकीन है उसके साथ मीना ही थी?”

-“मेरे पास दो गवाह है। उनमें से किसी ने भी पक्की शिनाख्त तो नहीं की है लेकिन मुझे लगता है वे जानबूझ कर इस मामले में अहतियात बरत रहे हैं। अगर यह हील मीना के सैंडल की है तो शक की कोई गुंजाइश बाकी नहीं रहेगी।”

भंडारी पुनः हील को उठाकर गौर से देखने लगा।

-“लतिका को पता हो सकता है।” अंत में बोला।

उसने टेलीफोन का रिसीवर उठाकर नंबर डायल किया।

-“हेलो.... आकाश, लतिका है....नहीं, कहां गई है....तुम्हें पता नहीं....।” फिर देर तक मुंह लटकाए सुनने के बाद बोला- “तुम उस बारे में क्या जानते हो....जहां तक मैं समझता हूं, वह बड़ी भारी गलती कर रही है।” उसने रिसीवर यथा स्थान रख दिया- “आकाश का कहना है, वह चली गई।”

राजकुमार चकराया।

-"कहां?"

-"उसे छोड़कर। अपने कपड़े भी साथ ले गई।"

-"उसने वजह नहीं बताई?"

-"नहीं, लेकिन मैं जानता हूं।"

-"क्या?"

-"उन दोनों की आपस में कभी नहीं बनी।" भंडारी के चेहरे पर अजीब सी व्याकुलता मिश्रित उपहासपूर्ण मुस्कराहट थी- "लतिका बताया करती थी कि वह बड़ी बेरहमी से उसके साथ पेश आता है। फिर जब से आकाश ने उसे रोक दिया तो लतिका ने इस बारे में बातें करना ही बंद कर दिया।"

-"बेरहमी से?"

-"हां।" लेकिन इसका मतलब यह नहीं है, आकाश उसकी पिटाई करता था। और अगर करता भी था तो ऐसी जगहों पर नहीं कि पिटाई के निशान नजर आए। मैं मानसिक यातना की बात कर रहा हूं। वह मैंटली टॉर्चर करता होगा ताकि लतिका खुदकुशी करने पर मजबूर हो जाए।"

-"क्या लतिका ने खुदकुशी करने की कोशिश की थी?"

-"हां।"

-"कब?"

-"शादी के थोड़े अर्से के बाद ही लतिका ने काफी सारी स्लीपिंग पिल्स निगल ली थीं। आकाश ने इस बात को दबाने और एक्सीडेंट की शक्ल देने की कोशिश की मगर मैंने मीना से सच्चाई जान ली थी। उन दिनों मीना उन्हीं के साथ रह रही थी।"

-"लतिका को ऐसा क्यों करना पड़ा?"

-"मेरा ख्याल है, आकाश ने उसकी जिंदगी इतनी ज्यादा नर्क बना दी थी कि वह बर्दाश्त नहीं कर सकी। मैं किसी औरत को कभी नहीं समझ पाया। जहां तक मेरी बेटियों का सवाल है उनसे तो बात करना भी दूभर है। उनसे मेरी राय कभी नहीं मिली। हमारे बीच हमेशा छत्तीस का आंकड़ा रहा है।"

-"तुम्हारे विचार से वह कहां हो सकती है?"

-“पता नहीं।”

-“क्या वह तुम्हारे घर हो सकती है?”

-“पता नहीं।”

-“ट्राई करो।”

भंडारी ने पुनः रिसीवर उठाकर नंबर डायल किया।

-“लतिका?” चंद क्षणोंपरांत हैरानी भरे स्वर में बोला- “तुम वहां क्या कर रही हो.....नहीं, ठहरो, मैं तुमसे बात करना चाहता हूं.....राजकुमार भी तुम्हें कुछ दिखाना चाहता है.....हम आ रहे हैं।”

उसने संबंध विच्छेद कर दिया।

-“आओ।”

राजकुमार उसके साथ ऑफिस से निकला। फीएट में सवार होकर भंडारी की कार के पीछे ड्राइव करने लगा।

दिन की रोशनी में भंडारी का निवास स्थान और भी ज्यादा मनहूस नजर आ रहा था।

भंडारी सहित प्रवेश द्वार की ओर जाते राजकुमार ने सोचा अगर इस भूतिया घर की खातिर लतिका ने अपने पति का घर छोड़ दिया तो जरूर उस घर में कोई भारी गड़बड़ रही होगी। इसका सीधा सा मतलब था- उसकी विवाहित जिंदगी सुखी नहीं थी।

दस्तक के जवाब में लतिका ने दरवाजा खोला।

भंडारी ने सर से पांव उसे घूरा। बगैर कुछ बोले उसकी बगल से गुजरकर अंदर चला गया।

दरवाजे में खड़ी लतिका की हालत से जाहिर था उसकी रात बहुत बुरी गुजरी थी। धुंधलाई सी सूनी आंखों के नीचे छाईयां नजर आ रही थीं। जबरन पैदा की मुस्कराहट में फीकापन था।

-"आइए।"

राजकुमार ने अंदर प्रवेश किया।

ड्राइंग रूम की ओर जाती लतिका की चाल में हिचकिचाहट सी थी। राजकुमार को लगा मानो पूरी तरह जवान औरत की बजाय वह एक ऐसी सहमी सी छोटी लड़की के पीछे चल रहा था जिसे दुनिया में हर तरफ खतरा ही खतरा नजर आता था।

राजकुमार सोफे पर बैठ गया। कमरा साफ-सुथरा और प्रत्येक चीज व्यवस्थित नजर आ रही थी। स्पष्ट था लतिका वहां सफाई, झाड़पोंछ वगैरा कर चुकी थी।

लेकिन भंडारी इस ओर ध्यान देता प्रतीत नहीं हुआ।

लतिका ने धूल भरे हाथ एप्रन पर रगड़कर फटाकार भरी निगाहों से अपने बाप को देखा।

-"मैंने तुम्हारे घर की सफाई कर दी है।"

-"तुम्हें यहां रहकर मेरे घर को संभालने की जरूरत नहीं है।" बेटी की ओर देखे बगैर भंडारी बोला- बेहतर होगा अपने घर जाकर अपने पति को संभालो।"

-"मैं वापस नहीं जाऊंगी।" वह तीव्र स्वर में बोली- "अगर तुम नहीं चाहते मैं यहां रहूं तो चली जाऊंगी और अपने लिए कोई ठिकाना ढूंढ लूंगी- मीना की तरह।"

-"मीना को बीच में मत लाओ।"

-"क्यों?"

-"उसकी कहानी अलग है।"

-“कैसे?”

-“उसका कोई स्थाई बंधन नहीं है और वह सैल्फ सपोर्टिंग है।”

-“अगर मुझे यहां नहीं रहने दोगे तो मैं भी खुद को सपोर्ट कर सकती हूं।”

-“ऐसी बात नहीं है।”

-“फिर कैसी बात है?”

-“अगर तुम यहां रहने का फैसला कर ही चुकी हो तो मुझे कोई ऐतराज नहीं है। लेकिन लोग क्या कहेंगे?”

-“कौन लोग?”

-“इस शहर में रहने वाले। पुलिस विभाग में और शहर में आकाश की इज्जत है। अगर तुम इस तरह अपना परिवार तोड़ दोगी तो लोग तरह-तरह की बातें बनाएंगे।”

-“मेरा कोई परिवार नहीं है।”

-“अगर तुम चाहती तो परिवार बना सकती थी। अभी भी बना सकती हो। बूढ़ी तो नहीं हो गई हो।”

-“तुम इस बारे में कुछ नहीं जानते। मैं वापस नहीं जाऊंगी। यह मेरा आखिरी फैसला है। आखिरकार जिंदगी मेरी है।”

-“यह उसकी जिंदगी भी है तुम उसे तबाह कर रही हो।”

-“उसने ख़ुद अपनी तबाही का सामान किया है। वह अपनी जिंदगी का जो चाहे कर सकता है। मैं मिल्कियत नहीं हूं उसकी या किसी और की।”

भंडारी हैरान सा नजर आया।

-“तुमने पहले तो कभी इस तरह की बातें नहीं कीं।”

-“आकाश ने भी पहले कभी ऐसा नहीं किया।”

-“क्यों? ऐसा क्या किया उसने?”

-“लतिका की आंखों में आंसू छलक आए।”

-“यह तुम्हें नहीं बताऊंगी मैं......मैं शर्मिंदगी उठाना नहीं चाहती।” क्षणिक मौन के पश्चात बोली- “तुम हमेशा मीना और मेरे पीछे पड़े रहते थे कि यहां आकर घर की देखभाल करें।

अब जबकि मैं ऐसा कर रही हूं तो तुम खुश नहीं हो। मेरा कोई भी काम तुम्हें अच्छा नहीं लगता।"

-"मुझे सब अच्छा लगता है लतिका।"

भंडारी ने उसके कंधे पर हाथ रखने की कोशिश की तो वह पीछे हट गई।

बाप बेटी की बहस और उनके बीच पैदा हो गई टेंशन को खत्म करने के विचार से राजकुमार खड़ा हो गया।

-"मिसेज बाजवा, मैं तुम्हें एक चीज दिखाना चाहता हूं।"

उसने कहा और सैंडल से उखड़ी हील उसे थमा दी- "तुम्हारे पिता का ख्याल है तुम इसे पहचान सकती हो।"

लतिका ने खिड़की के पास जाकर पर्दा हटा दिया। अंदर आती रोशनी में चमड़े की हील को देखा।

-"यह तुम्हें कहां से मिली?"

-"मोती झील के पास पहाड़ियों से। क्या तुम्हारी बहन के पास ऐसे ब्राउन कलर के सैंडल थे?"

-"शायद थे। नहीं, मुझे अच्छी तरह याद है ऐसे सैंडल उसके पास थे।" वह पैर पटकती हुई थी राजकुमार के पास आ गई- "मीना को कुछ हो गया है न? उसका स्वर उत्तेजित था- क्या हुआ उसे?"

-"काश, मैं जानता होता।"

-"क्या मतलब?"

-"अगर यह उसी के सैंडल की हील है तो सोमवार को वह उस जंगल में थापा के साथ थी और गड्ढा खोद रही थी।"

-"हो सकता है, अपनी ही कब्र खोद रही थी।" भंडारी बोला।

लतिका ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

-"तुम समझते हो, वह मर चुकी है?"

-"बेवजह तुम्हें डराने का कोई इरादा मेरा नहीं है लेकिन फिलहाल ऐसा ही लगता है।"

लतिका ने अपनी मुट्ठी में भिंची हील पर निगाह डाली। फिर मुट्ठी खोली तो राजकुमार ने देखा उसकी हथेली में किलें गड़ने के निशान बने थे। वह हील को अपने मुंह के पास ले गई और आंखें बंद कर लीं।

पल भर के लिए राजकुमार को लगा वह बेहोश होने वाली थी। उसका शरीर तनिक आगे-पीछे लहराया। लेकिन वह गिरी नहीं।

उसने आंखें खोलीं।

-"बस? या कुछ और है?"

-"थापा की लॉज में ये और मिली थीं।" राजकुमार ने कारपेट से उठाई हेयर क्लिप निकालकर दिखाईं।

-"मीना हमेशा ऐसी ही क्लिप बालों में लगाती थी।" लतिका ने कहा।

भंडारी ने बेटी के कंधे के ऊपर से देखा।

-"मीना पूरे घर में इन्हें फैलाए रखती थी। इसका मतलब है, उसने वीकएंड थापा के साथ गुजारा था। क्यों?"

-"मुझे ऐसा नहीं लगता। लेकिन उसके साथ एक आदमी जरूर था। बता सकते हो वह कौन था?"

बाप बेटी के मुंह से बोल नहीं फूटा। दोनों एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे।

-"कांती लाल पिछले शनिवार रात में मोती झील पर था।" राजकुमार ने कहा।

-"वह वहां क्या कर रहा था?" भंडारी ने पूछा।

-"कांती लालही वह आदमी रहा हो सकता था। एक वक्त में वह और मीना एक-दूसरे के बहुत ज्यादा करीब रह चुके थे।"

लतिका का सफेद पड़ गया चेहरा कठोर था।

-"मैं नहीं मानती। मेरी बहन ने उस घटिया आदमी से सीधी मुंह बात तक नहीं करनी थी।"

-"यह सिर्फ तुम ही समझती हो।" भंडारी बोला- "तुम नहीं जानती मीना कैसी लड़की थी। तुम बस यह वहम पाल बैठी हो कि वह सती सावित्री थी। मगर मैं अच्छी तरह जानता हूं क्या थी। दिल फेंक किस्म की लड़की थी। कांती लालके साथ भी उसने वही किया जो दूसरे मर्दों के साथ करती रही थी। आखिरकार कांती लालको उसके साथ सख्ती से पेश आना पड़ा।"

-“यह सच नहीं है।” लतिका राजकुमार की ओर पलट कर बोली- “मेरे बाप की बात पर ध्यान मत दो। मीना एक भली लड़की थी। इतनी ज्यादा भोली कि कभी नहीं समझ सकी स्कैंडल में इन्वाल्व हो सकती थी।”

-“भली और भोली।” भंडारी गुर्राया- “वह बारह साल की उम्र से ही लड़कों की सोहबत में रहने लगी थी। मैंने इसी घर के इसी कमरे में रंगे हाथों से पकड़ा था.... और तगड़ी मार लगाई थी।”

-“तुम झूठे और कमीने हो।”

भंडारी का चेहरा गुस्से से तमतमा गया।

-“मैं झूठा और कमीना हूं?”

-“हां। तुम खुद उसे अपने लिए चाहते थे इसलिए लड़कों से जलते थे....।”

-“तुम पागल हो। एक अजनबी के सामने अपने बाप पर बेहूदा इल्जाम लगा रही हो।”

गुस्से से कांपते भंडारी की आवाज गले में घुट गई। उसने बेटी के मुंह पर जोरदार तमाचा जड़ दिया।

-“नहीं।” लतिका चिल्लाई।

राजकुमार उन दोनों के बीच आ गया।

भंडारी सोफे पर गिरकर हाँफने लगा।

राजकुमार उसके पास पहुंचा।

-“तुम्हारी बेटी की हत्या किसने की थी?”

-“मैं नहीं जानता।” वह फंसी सी आवाज में बोला- “वह मर गई है। यह भी तुम यकीन से कैसे कह सकते हो?”

-“मुझे पूरा यकीन है। क्या उसकी हत्या तुमने की थी?”

-“तुम पागल हो गए हो जैसे लतिका है। मैंने मीना को हाथ भी नहीं लगाना था।”

-“तुमने एक बार उस पर हाथ डाला था। तुम वाकई कमीने हो।”

-“यह तुमसे किसने कहा?”

-“एक ऐसे शख्स ने जो तुम्हारी गुजिश्ता जिंदगी के बारे में जानता है और वो भी जानता है जो तुमने मीना के साथ किया था।”

भंडारी उठ कर बैठ गया।

-"वो दस साल पुरानी बात है।" वह सर हिलाता हुआ बोला- "मुझमें थोड़ा बहुत जोश बाकी था। मैं खुद पर काबू नहीं रख पाया।" उसके स्वर में आत्म करुणा थी- "उसमें सारा कसूर मेरा ही नहीं था। वह घर में अक्सर नाम मात्र के कपड़े पहने या नंगी घूमती थी। मेरे साथ भी उसी ढंग से पेश आती थी जैसे अपने दोस्तों के साथ आया करती थी। मैं खुद को रोक नहीं सका और.....। मेरी हालत को तुम नहीं समझ सकते.......म.....मैंने बरसों बगैर औरत के गुजारे थे.....।"

-"तुम्हारे इस रोने का मुझ पर कोई असर नहीं होगा, बूढ़े। एक आदमी जो अपनी बेटी के साथ वह सब कर सकता है जो तुमने किया था उसका मर्डर भी कर सकता है।"

-"नहीं! नहीं! वह एक गई गुजरी बात थी। उसके बाद मीना को हाथ तक मैंने नहीं लगाया।"

-"तुमने कहा था कि उसे गन दी थी। क्या यह सच है?"

-"बिल्कुल सच है। मैंने उसे एक पुरानी गन दी थी। क्योंकि वह कांती लालसे डरती थी। उसकी हत्या अगर किसी ने की थी तो कांती लालने ही की थी।"

-"और कांती लालकी हत्या किसने की?"

-"मैंने नहीं कि। अगर तुम समझते हो मैंने अपने ही ड्राइवर की जान ली है तो तुम पागल हो।" भंडारी की गरदन की नसें तन गई- "तुम्हारा यह रवैया मुझे जरा भी पसंद नहीं आया है.....।"

-"जहन्नुम में जाओ।"

दरवाजे की ओर बढ़ते राजकुमार ने देखा लतिका वहां नहीं थी। तभी प्रवेश द्वार बंद किए जाने की आवाज सुनाई दी। राजकुमार उधर ही दौड़ गया।

लतिका लान में जाती दिखाई दी।

राजकुमार उसके पीछे लपका।

कदमों की आहट सुनकर लतिका ने पीछे देखा। फिर पलटकर भाग खड़ी हुई।

अचानक उसका पैर घास में उलझा। वह नीचे जा गिरी।

राजकुमार ने उसे उठाया। उसे सहारा दिए रखने के लिए पीठ में बांह डाल दी।

-"कहां जा रही हो?"

-"पता नहीं। यहां उसके साथ में नहीं रह सकती। मुझे उससे डर लगता है।" लतिका की तेज चलती सांसों के साथ हिलते वक्ष राजकुमार के सीने से रगड़ रहे थे- "वह शैतान है। मुझसे नफरत करता है। हम दोनों से ही नफरत करता था। शुरू से ही जब से हम पैदा हुई थी। मुझे वो दिन याद है जब मीना पैदा हुई थी। मेरी मां मर रही थी। लेकिन यह शैतान उसे कसाई जैसी आंखों से घूर रहा था। क्योंकि यह बेटा चाहता था और वह इसे बेटा नहीं दे सकी। मैं भी मर जाती तो खुश होता। मैं बेवकूफ थी। मुझे यहां आना ही नहीं चाहिए था।"

-"तुम अपने पति को क्यों छोड़ आई?"

-"उसने मुझे धमकी दी थी अगर उसके घर से बाहर निकली तो मुझे जान से मार देगा। लेकिन यहां ठहरने की बजाय कहीं भी रहना बेहतर होगा।"

तभी एक कार गेट के भीतर दाखिल हुई।

वो पुलिस कार थी। ड्राइविंग सीट पर इन्स्पेक्टर बाजवा बैठा था।

-"आकाश।" लतिका के मुंह से निकला। उसका चेहरा सफेद पड़ गया था। आंखें दहशत से फैल गईं।

राजकुमार स्तब्ध सा रह गया।

इन्स्पेक्टर बाजवा कार से उतरकर लंबे-लंबे डग भरता हुआ उसकी ओर आ रहा था।

राजकुमार लतिका को स्वयं से अलग करके उसकी तरफ बढ़ा।

दोनों एक दूसरे के सामने आ रुके।

-"तुम मेरी पत्नि के साथ क्या कर रहे हो?"

-"उसी से पूछ लो।"

-"मैं तुमसे पूछ रहा हूं।" साइड में झूलते बाजवा के हाथों में कंपन था- "मैंने तुमसे कहा था इससे दूर रहना। यह भी कहा था इस मामले में टांग मत अड़ाना।"

-"इस मामले ने खुद मेरी टांग अपने अंदर अड़ाई है और अब मैं उसे अड़ी ही रहने दूंगा।"

-"देखेंगे। अगर तुम समझते हो मेरी बात पर अमल न करके और मेरे साथीयो पर हाथ उठाकर भी बच जाओगे.....।" उसने शेष वाक्य अधूरा छोड़ दिया- "मैं तुम्हें आखरी मौका दे रहा हूं। एक घंटे के अंदर या तो मेरे शहर से चले जाओ वरना मैं तुम्हें लॉकअप में ठूँस दूंगा।"

-"तुम शहर के मालिक हो?"

-"यहीं ठहरो। पता लग जाएगा।"

-"मैं भी पता लगाना ही चाहता हूं, बाजवा। हर बार जब भी तुमसे सामना होता है तुम मुझे इस मामले से अलग हो जाने की एक नई धमकी देते हो। जब बार-बार यही स्थिति सामने आती है तो मुझे धमकी देने वाले की नियत पर शक होने लगता है।"

-"तुम्हारे शक में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है।"

-"एस. एच.ओ. उमाकांत त्यागी की हो सकती है अगर वह तुम्हारे जैसा आदमी नहीं है और अगर वह भी तुम्हारे जैसा है तो मैं और बड़े अफसरों के पास जाऊंगा।"

-"बको मत।"

बाजवा के स्वर के खोखलेपन से जाहिर था उसकी किसी मजबूरी ने उसकी ईमानदारी को सचमुच शक के दायरे में ला दिया था।

-"यह बकवास नहीं असलियत है। तुम ना तो एक ईमानदार अफसर हो और न ही भले आदमी। खुद भी यह जानते हो। मैं भी जानता हूं और तुम्हारी पत्नि भी जानती है।"

बाजवा का चेहरा एक पल के लिए पीला पड़ गया।

-"मुझे मजबूर करने की कोशिश कर रहे हो कि तुम्हारी जान ले लूं?"

-"इतना दम खम अब तुममें नहीं है।"

बाजवा के होठ गुर्राहटपूर्ण मुद्रा में खिंच गए। आंखें सुलगती सी नजर आईं और गरदन तन गई।

राजकुमार उस पर निगाहें जमाए सतर्क खड़ा था।

अचानक बाजवा का दायां घूंसा उसकी ओर लपका।

राजकुमार ने झुकाई देकर स्वयं को बचाया। घूंसा उसके कान को छूता हुआ गुजर गया और संतुलन बिगड़ जाने के कारण स्वयं बाजवा लड़खड़ा गया। उस स्थिति में बाएं हाथ से उसके जबड़े पर दाएं से पेट पर वार किए जा सकते थे।

राजकुमार ने दायां घूंसा चलाया।

कपड़ों के नीचे बाजवा का पेट सख्त था। राजकुमार के बाएं घूंसे को दायीं कलाई पर रोककर उसने अपने बाएं हाथ से प्रहार किया। कनपटी पर पड़े घूंसे ने राजकुमार को घुमा दिया।

लतिका भयभीत हिरनी सी अलग खड़ी थी। उसकी फैली आंखें सूजी थीं और मुंह मूक चीख की मुद्रा में खुला था।

राजकुमार के पलटते ही बाजवा उस पर घूंसे बरसाने लगा।

दाएं-वाएं उछलकर स्वयं को बचाने की कोशिश करते राजकुमार को मौका मिला और उसने बाजवा की ठोढ़ी पर घूंसा जमा दिया।

बाजवा की भी कैप सर से उतर गई। वह लड़खड़ाकर पीछे हटा और नीचे गिर गया।

उसकी ओर झपटते राजकुमार का पैर घास में उलझा और वह भी लान में जा गिरा।

तब तक बाजवा उठकर उसकी ओर झपट चुका था।

उठने की कोशिश करते राजकुमार के गाल पर ठोकर पड़ी। उसे अपना आधा चेहरा सुन्न हो गया महसूस हुआ। गाल कट जाने के कारण खून बह रहा था।

बाजवा ने पुनः ठोकर चलाई।

राजकुमार ने इस दफा उसका पैर पकड़ लिया। उसी स्थिति में उसे आगे खींचकर पीछे धकेल दिया।

बाजवा बुरी तरह लड़खड़ाता पीछे हटता चला गया।

राजकुमार उठकर उसकी ओर लपका और उसे घूंसों पर ले लिया।

बाजवा कोशिश करने के बावजूद स्वयं को बचा नहीं पाया।

-“स्टॉप इट।” अचानक लतिका चिल्लाई- “स्टॉप इट।”

राजकुमार के हाथों में ब्रेक लग गया।

बुरी तरह हांफते बाजवा की हालत खस्ता थी। लेकिन उसका चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था। आंखों में खून उतर आया था। उसका दायां हाथ अपने हीप हौलेस्टर पर जा पहुंचा।

राजकुमार सर से पांव तक कांप गया। उसकी अपनी जेब में भी रिवॉल्वर थी। मगर उसे निकालने का कोई उपक्रम उसने नहीं किया। बाजवा पुलिस इन्स्पेक्टर था। उसके रिवॉल्वर निकालते ही बाजवा ने सैल्फ डिफेंस में उसे शूट कर डालना था।

विवश खड़े राजकुमार का मुंह सूख गया। पीठ पर पसीने की धार बह रही थी। बाजवा ने सर्विस रिवॉल्वर उस पर तान दी।

राजकुमार को साक्षात मृत्यु नजर आने लगी।

अचानक लतिका उन दोनों के बीच आ गई।

-“आकाश, इस आदमी ने मेरी मदद की है। कोई गलत इरादा इसका नहीं था। इसे शूट मत करो।” लतिका ने दोनों हाथों से पति की दायीं कलाई दबाकर रिवॉल्वर नीचे कर दी। और उससे सटकर उसके कंधे पर चेहरा रख दिया- “तुम इसे शूट नहीं करोगे, प्लीज। कोई और हत्या नहीं होनी चाहिए।”

बाजवा ने यूं उसे देखा मानों पहली बार देख रहा था। धीरे-धीरे उसकी निगाहें उस पर केंद्रित हो गई।

-“नहीं होगी।” उसकी आवाज कहीं दूर से आती सुनाई दी- “मैं तुम्हें घर ले जाने के लिए आया था। मेरे साथ चलोगी?”

लतिका ने सर झुका लिया।

-“हां।”

-“तो फिर जाओ, कार में बैठो। मैं आता हूं।”

-“और फसाद नहीं होगा ? वादा करते हो?”

-“हां, वादा करता हूं।”

बाजवा ने रिवॉल्वर वापस हौलेस्टर में रख ली।

लतिका धीरे-धीरे पति से अलग हो गई। अपने ही ख्यालों में खोई सी कार की ओर चल दी।

बाजवा उसे देखता रहा जब तक कि अगली सीट पर बैठकर उसने दरवाजा बंद नहीं कर लिया। फिर अपनी पी कैप उठाकर वर्दी की आस्तीन पर झाड़कर सर पर जमा ली।

-“मैं इस सब को भुला देने के लिए तैयार हूं।” राजकुमार की ओर पलटकर बोला।

-“मगर मैं तैयार नहीं हूं।”

-“तुम गलती कर रहे हो।”

-“मैं खामियाजा उठा लूंगा।”

-“क्या हम समझौता नहीं कर सकते ?”

-“कर सकते हैं लेकिन तुम्हारी शर्तों पर नहीं। मैं यही मनाली में रहूंगा जब तक यह किस्सा खत्म नहीं हो जाता। अगर उल्टे सीधे आरोप लगाकर मुझे लॉकअप में बंद कराओगे तो मैं भी तुम्हें नहीं बख्शूंगा।”

-“क्या करोगे?”

-“तुम पर जवाबी आरोप लगा दूंगा।” '

-“किस बात का?”

-“अपना फर्ज अदा करने में जानबूझकर कोताही करने और बदमाशों के साथ मिली-भगत का।”

-“नहीं।” बाजवा ने उसकी बांह पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया- “समझने की कोशिश करो।”

राजकुमार पीछे हट गया।

-“मैं सिर्फ इतना समझ रहा हूं कि दो हत्याओं के मामले को सुलझाने की कोशिश कर रहा हूं और कोई चीज मुझे रोकने की कोशिश कर रही है। एक ऐसी वर्दीधारी चीज जो देखने में कानून जैसी लगती है। बातें भी कानून की करती है लेकिन उससे कानून की बू जरा भी नहीं आती। उससे बदबू आती है। बेईमानी, खुदगर्जी, मतलबपरस्ती और लालच की।”

बाजवा ने विवशतापूर्वक उसे देखा।

-“मैंने हमेशा अपने फर्ज को पूरी ईमानदारी से अंजाम दिया है।” उसके स्वर में जरा भी जोश नहीं था।

-“पिछली रात भी जब वो ट्रक तुम्हारी आंखों के सामने से निकल गया था?”

उसने जवाब नहीं दिया। कुछेक पल जमीन को ताकता रहा फिर उसी तरह सर झुकाए थके कदमों से पुलिस कार की ओर बढ़ गया।

१७

एक डाक्टर से अपने गाल की मरहम पट्टी कराकर राजकुमार ने उसी के क्लिनिक में अपना बाकी हुलिया सही किया।

क्लिनिक से निकलते वक्त राजकुमार का जी चाहा अपनी कार में सवार होकर मनाली से फौरन कूच कर जाए। वहां ठहरने की एक भी ठोस वजह उसके सामने नहीं थी। लेकिन दूसरों के फटे में टांग अड़ाने की आदत से मजबूर राजकुमार को उसके खुराफाती मन ने ऐसा नहीं करने दिया।

वह एस. एच.ओ. उमाकांत त्यागी के ऑफिस पहुंचा। पचासेक वर्षीय त्यागी इकहरे मजबूत जिस्म का रोबीले चेहरे वाला आदमी था।

-"तो तुम तुम हो, राजकुमार। 'हिमाचल टाइम्स' के प्रेस रिपोर्टर और मशहूर- ओ मारूफ हस्ती। तशरीफ़ रखो।"

राजकुमार उसके डेस्क के संमुख एक कुर्सी पर बैठ गया।

-"थैंक्यु सर।"

-"तुम छलावा किस्म के आदमी हो।"

-"सॉरी सर। काफी भाग-दौड़ करता रहा हूं।"

-"और गिरते-पड़ते भी रहे हो? मारा-मारी भी करते रहे हो?"

राजकुमार ने जवाब नहीं दिया।

-"मैं तुम्हारे नाम वारंट इशू करने वाला था।"

-"किस आरोप में?"

-"कुछ भी हो सकता था।"

-"मसलन?"

-"पुलिस के काम में बाधा डालना, कानून को अपने हाथ में लेना, पुलिस ऑफिसर ऑन ड्यूटी के साथ हाथापाई करना वगैरा।"

-"इन्स्पेक्टर बाजवा की बात कर रहे हैं?"

-"नहीं, सब इंस्पेक्टर दीपक की बात कर रहा हूं।"

-"सब इंस्पेक्टर दीपक एक गर्म मिजाज ऑफिसर है। अगर वह थोड़ी समझदारी से काम लेता और मुझ पर हावी होने की कोशिश नहीं करता तो वह लड़की भाग नहीं सकती थी।"

-"सब इंस्पेक्टर दीपक भी अब इस बात को महसूस कर रहा है। लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि तुम्हें वो सब करने की इजाजत मिल जाएगी जो तुम इस शहर में करते रहे हो। अगर मैं तुम्हारी जगह होता मैंने अंधेरी गलियों से दूर रहना था। साथ ही इस बात की चेतावनी भी देना चाहता हूं कि जो हरकत तुमने सब इंस्पेक्टर दीपक के साथ की थी वैसी कोशिश और किसी पुलिस वाले के साथ मत कर बैठना। जानते हो, अभी तक आजाद क्यों घूम रहे हो?"

-"नहीं।"

-"इन्स्पेक्टर बाजवा की वजह से।"

राजकुमार बुरी तरह चौका।

-"म......मैं समझा नहीं।"

-"बाजवा का कहना है, तुम्हारे काम करने के ढंग से खुश न होने के बावजूद तुमसे नाराज वह नहीं है। तुम इस मामले में उसकी मदद कर रहे हो। एयरबेस पर उस लाल मारुति की सूचना तुम्हीं ने उसे दी थी।"

मन ही मन हैरान राजकुमार समझ नहीं पा रहा था बाजवा कैसा आदमी था। एक तरफ तो उसे गिरफ्तार करने की बजाय उसकी तारीफ कर रहा था। उसे क्रेडिट दे रहा था और दूसरी ओर उसकी जान तक लेने पर आमादा हो गया था।

-"क्या सोच रहे हो?" त्यागी ने टोका- "उस मारुति से ही हमें अँटनी के बारे में लीड मिली थी।"

-"भंडारी ने भी मुझे यही बताया था। अँटनी पकड़ा गया?"

-"अभी नहीं। लेकिन उसकी जन्मपत्री मुझे मिल गई है। उसके गुनाहों की फेहरिस्त खासी लंबी है।" त्यागी ने अपने डेस्क पर पड़ा एक कागज उठा लिया- "छोटी मोटी चोरियां, मार पीट और तोड़ फोड़ उसने तभी शुरू कर दी थी जब स्कूल में पढ़ता था। अगले कई सालों में बार-बार कारें चुराईं, गैर कानूनी तौर पर हथियार रखने लगा। फिर चोरी, डकैती और रहजनी को पेशे के तौर पर अपना लिया। पिछले ग्यारह सालों में से सात साल उसने जेल में गुजारे हैं।"

-"वह रहने वाला कहां का है?"

-"विशालगढ़ का। लेकिन हर बार अलग-अलग शहरों से पकड़ा गया था। आखरी दफा विराटनगर में स्मगल्ड शराब का ट्रक चलाता पकड़ा गया था। जुलाई में जेल से छूटा और इधर आ गया।"

-"बैंक में डकैती उसने अकेले ही डाली थी?"

-"अभी तक तो यही समझा जा रहा है वो डकैती वन मैन जॉब था। बैंक की इमारत में भी उस अकेले को ही देखा गया था।"

-"और वह बीस लाख की रकम ले उड़ा?"

-"हां।"

-"अजीब बात है अकेला आदमी बैंक को लूट कर ले गया।"

-"दरअसल वो रकम उसने बैंक से नहीं बल्कि बैंक में उस रकम को अपने अकाउंट से निकलवायी जाने के बाद बाहर ले जा रहे आदमी से लूटा था। लेकिन उस रकम को खर्च वह नहीं कर सका। उसमें ज्यादातर नोट पांच सौ के थे और उनके नंबरों की पूरी लिस्ट बैंक के पास थी। उस लिस्ट की कॉपियां लगभग सभी बड़े शहरी बैंकों में भिजवा दी गई थीं। उन नोटों से उस मारुति को खरीदने में ही उसने एक साथ मोटी रकम खर्च की लगती है। कार तो उसे मिल गई लेकिन पुलिस को भी इसका पता चल गया। और उसे विशालगढ़ से भागना पड़ा। जब पुलिस उस होटल में पहुंची जहां वे ठहरे थे तो पता चला घंटे भर पहले होटल छोड़कर चले गए।"

-"लड़की भी उसके साथ थी?"

-"वे पति-पत्नि के तौर पर वहां ठहरे थे- मिस्टर और मिसेज श्याम कुमार के नाम से।"

-"विशालगढ़ कब छोड़ा था उन्होंने?"

-"छः हफ्ते पहले- तीन सितंबर को ,करीमगंज में रकम लूटी थी- सोलह अगस्त को। तीन सितंबर से कल तक वह पूरी तरह गायब रहा था।"

-"पूरी तरह नहीं।"

एस. एच.ओ. ने उसे घूरा।

तुम इस बारे में कुछ और जानते हो?

-"हां। आप जानते हैं, मोती झील कहां है?"

एस. एच.ओ. त्यागी ने सर हिला कर हामी भरी।

-"हां। क्यों?"

-"इस केस के घटना स्थलों में से एक वो भी है। सितंबर के शुरू में अँटनी और एली कई रोज वहां छिपे रहे थे और मीना भंडारी भी आखरी दफा उसी झील पर देखी गई थी....।"

-“उसका इससे क्या ताल्लुक है?”

-“बड़ा गहरा ताल्लुक है। मैं नहीं जानता उसका पता लगाने की क्या कोशिश की जा रही है। लेकिन हर मुमकिन कोशिश की जानी चाहिए।”

-“कल रात से कोशिशें की जा रही है। अभी नतीजा सामने नहीं आया है।”

-“मेरे विचार से आपको अपनी खोजबीन मोतीझील पर करनी चाहिए।”

-“इसकी कोई खास वजह है?”

-“हां।”

राजकुमार ने सैंडल की हील और लॉज की चाबियां उसे सौंपकर पूरी कहानी सुनानी आरंभ कर दी।

एस. एच.ओ. त्यागी बेसब्री से सब सुनता रहा।

-“बूढ़ा वॉर्नर झूठ बोल रहा हो सकता है।” अंत में बोला- “क्या तुम्हें उसकी कहानी मनगढ़ंत नहीं लगती?”

-“मैं मानता हूं कहानी सुनने में लचर लगती है। लेकिन अगर उसने गढ़नी ही थी तो कोई ज्यादा तर्कपूर्ण गढ़ता। दूसरे वो गड्ढा मैंने भी देखा था।”

-“गड्ढा उसने खुद भी तो खोदा हो सकता है।”

-“लेकिन वह झूठ बोलेगा क्यों?”

-“अगर वह एली का दादा है तो झूठ बोलने की यही वजह उसके लिए काफी है।”

-“लेकिन जब उसने गड्ढा खोदने वाली बात बताई थी तब तक वह जानता ही नहीं था कि एली मुसीबत में है।”

-“उसने तुम्हें पूरी तरह यकीन दिला दिया लगता है।”

-“आप खुद उससे पूछताछ कर सकते हैं।”

-“चाहता तो मैं भी हूं लेकिन फिलहाल तुम अपना बयान दर्ज करा दो।”

-“मैं इसलिए यहां आया हूं।”

एस. एच.ओ. ने एक स्टेनोग्राफर को टेपरिकॉर्डर सहित बुलवा लिया।

राजकुमार ने बोलना शुरू कर दिया।

टेप रिकॉर्डर चालू था। बयान टेप होने लगा साथ ही स्टेनो ने नोट करना भी शुरू कर दिया।

एस. एच.ओ. कमरे में चहल कदमी करने लगा।

कुछ देर बाद उसे बाहर बुला लिया गया।

जब वह वापस लौटा तो आंखें खुशी से चमक रही थीं। उत्तेजनावश नर्वस सा नजर आ रहा था।

बयान टेप करके स्टेनो चला गया।

-“थापा की एकाउंट बुक्स मैंने सुबह इनकम टैक्स वालों को सौंप दी थी।” त्यागी एकांत पाते ही बोला- “पूरी छानबीन तो अभी सब बुक्स की नहीं हो पायी है लेकिन उन लोगों को यकीन है थापा उन्हें धोखा देकर टैक्स की चोरी कर रहा था।”

-“कब से?”

-“कई सालों से। बार से उसे तगड़ी आमदनी होती रही थी मगर अपने खातों में इसे दर्ज उसने नहीं किया।”

-“वो कमाई गई कहां?”

-“जुए में और औरतों पर। रॉयल क्लब खरीदने के साल भर बाद से ही उसने दो तरह के खाते रखने शुरू कर दिए थे- एक असली और दूसरे आयकर वालों के लिए। उस दौरान मीना भंडारी क्योंकि उसकी सेक्रेटरी थी और एकाउंट भी देखती थी इसलिए जाहिर है इस काम में वह भी उसके साथ शामिल थी। हालांकि आयकर वालों की निगाहें उन पर थीं मगर कोई ठोस सबूत उन्हें नहीं मिल रहा था। उनका कहना है, वे थापा और मीना को पूछताछ के लिए बुलाने वाले भी थे।”

-“थापा के यहां से भागने की कोशिश करने की यह भी एक तगड़ी वजह रही हो सकती है।”

-“सुनील थापा खत्म हो चुका था- आर्थिक, नैतिक और भी हर तरह से। यहां तक कि उसकी विवाहित जिंदगी भी चरमरा रही थी। मैंने कुछ ही देर पहले साक्षी से फोन पर बातें की थीं। इस लिहाज से देखा जाए तो साक्षी के मुकाबले में वह खुशकिस्मत रहा। सभी जंजालों से छूट गया।”

-“और साक्षी?”

-“अगर आयकर वालों ने केस कर दिया तो वह नहीं बच सकेगी। थापा की ज्वाइंट टैक्स रिटर्न्स पर उसने भी दस्तखत किए थे। जाहिर है वह नहीं जानती थी रिटर्न स्टेटमेंट फर्जी थी। लेकिन अब इस चक्कर में उसके पास जो भी बचा-खुचा है सब चला जाएगा। थापा के गुनाहों की सजा उसे भुगतनी पड़ेगी।”

बेचारी साक्षी। राजकुमार ने सोचा। सात साल पहले की गई गलती उसे पूरी तरह तबाह कर डालेगी।

-“यह तो उसके साथ नाइंसाफी होगी।”

-“मुझसे जो बन पड़ेगा करूंगा। वह पूरी तरह भली और शरीफ औरत है।”

साक्षी के बारे में उसकी इस राय से सहमत राजकुमार नहीं था। मगर बहस नहीं की।

-“मैं भी उसे पसंद करता हूं।”

-"थापा के अलावा सब उसे पसंद करते रहे हैं। ओह, याद आया, वह तुम्हारे बारे में पूछ रही थी। यहां से जाने के बाद उससे मिल लेना।"

-"घर पर मिलेगी?"

-"हां। एक बात मैंने उसे नहीं बताई है और चाहता भी नहीं उसे या किसी और को इसका पता लगे।"

-"कौन सी बात?"

-"अपने तक ही रखोगे?"

-"वादा करता हूं।"

-"यह बात तुम्हारे उस यकीन से मेल खाती है कि मीना भंडारी का इस केस से गहरा ताल्लुक है। थापा की एकाउंट स्टेटमेंटों से जाहिर है साल भर से वह हर महीने मीना भंडारी को पचास हजार रुपए देता रहा था।"

मीना भंडारी के फ्लैट में देखे गए उसके रहन-सहन के ठाठ और बैंक बैलेंस का राज अब राजकुमार की समझ में आया।

-"किसी मोटल के मैनेजर की यह तनख्वाह बहुत ज्यादा नहीं है?"

-"बेशक है। इतना तो थापा खुद अपने लिए भी बिजनेस से नहीं निकालता था।"

-"इसका सीधा सा मतलब है- ब्लैकमेल?"

-"यही तर्कपूर्ण लगता है। यह मीना की जुबान बंद रखने की कीमत रही होगी- एकाउंट्स में हेराफेरी के मामले में। बहरहाल जो भी था मीना की हत्या करने के लिए यह थापा का तगड़ा मोटिव भी रहा हो सकता है। क्या यह तुम्हारे अनुमानों के साथ फिट बैठता है?"

-"जब तक कोई और ठोस बात सामने नहीं आती इस पर विचार किया जा सकता है।"

-“इस पूरे सिलसिले के बारे में मेरा अपना ख्याल है।” त्यागी विचारपूर्वक बोला- “मान लो थापा ने सोमवार को मीना की हत्या की और किसी तरह लाश ठिकाने लगा दी थी। वह जानता था देर सवेर लाश मिल जाएगी और सीधा शक उसी पर किया जाएगा। वह यह भी जानता था आयकर विभाग वाले उसकी गरदन दबोचने वाले थे। इसलिए उसने भाग जाने का फैसला कर लिया- जितना ज्यादा हो सके पैसा बटोरकर।”

-“और वह लड़की एली?”

-“उसके थापा और अँटनी दोनों से ही गहरे ताल्लुकात थे। उन दोनों को उसने एक-दूसरे से मिला दिया। उन्होंने विस्की से लदा ट्रक उड़ाने की योजना बना डाली। अँटनी के पास बीस लाख रुपए की ऐसी रकम थी जिसे खर्च वह नहीं कर सकता था। थापा के अपने ऐसे रसूख थे जिनके दम पर उसने बिना कोई एडवांस पेमेंट किए ट्रक लोड विस्की का ऑर्डर दे दिया। ताकि पूरा ट्रक अँटनी के हवाले कर सके। इतना ही नहीं वक्ती तौर पर ट्रक को एयरबेस में छिपाने तक का प्रबंध भी उसने कर दिया। इन तमाम सेवाओं की कीमत अँटनी ने लूट की रकम से चुका दी।”

-“जिसे खर्च कर पाना थापा के लिए भी मुमकिन नहीं था।”

-“प्रत्यक्षत: इस बात की जानकारी थापा को नहीं थी। अँटनी और एली ने मिलकर उसे बेवकूफ बना दिया और वह बन गया। क्योंकि अँटनी उस लड़की को चारे के तौर पर इस्तेमाल कर रहा था थापा को फसाने के लिए।”

-“हो सकता है।” राजकुमार ने कहा- “लेकिन थापा के साथ भाग जाना एली के लिए असलियत थी। वह थापा को प्यार करती थी।”

त्यागी ने भौंहें चढ़ाईं।

-“तुम यह कैसे कह सकते हो?”

-“एली की बातों और लहजे से और उन दोनों को साथ-साथ भी मैंने देखा था।”

-“यह कोई ऐसा सबूत नहीं है जिससे साबित किया जा सके लड़की वाकई उससे प्यार करती थी या थापा उसे साथ लेकर भागने वाला था।”

-“लेकिन इसे नजर अंदाज भी तो नहीं किया जा सकता।”

त्यागी के चेहरे पर अफसराना भाव पैदा हो गए।

-“इस पर बहस हम नहीं करेंगे। अहम बात यह है कि वह कांती लालकी हत्या के मामले में इनवाल्व थी।”

-“कैसे?”

-“वह अँटनी की साथिन थी। और हम जानते हैं कांती लालकी हत्या अँटनी ने की थी।”

-“आप यकीनी तौर पर जानते हैं?”

-“मुझे यकीन है कांती लालऔर थापा दोनों को उसी ने शूट किया था। उन दोनों की जान लेने वाली गोलियां एक ही गन से चलाई गई थीं। अब अँटनी के पुराने रिकॉर्ड पर निगाह डालो। यह महज इत्तेफाक है कि पहले कभी हत्या उसने नहीं की। विस्की के उस ट्रक के लिए हत्या करने को तैयार था। यह उसके लिए पैसे से कहीं ज्यादा बेहतर था। कम से कम उस पैसे से जो उसके पास था। विस्की अच्छी क्वालिटी की थी। वह सही कीमत पर उसे बेच सकता था। और उस पैसे को इत्मीनान से खर्च भी कर सकता था। हमने सभी हाईवेज पैट्रोल और चैक पोस्टों को अलर्ट कर दिया है। जब उस ट्रक को निकालने की कोशिश करेगा। पकड़ा जाएगा। और हमारा केस सुलझ जाएगा।”

-“मुझे नहीं लगता।”

-“क्यों?”

-“आपकी यह थ्योरी तर्कसंगत नहीं है।”

-“कैसे?”

-“आपने कहा- कांती लालऔर थापा को एक ही गन से शूट किया गया था।”

-"सब इंस्पेक्टर दिनेश जोशी और बैलास्टिक एक्सपर्ट की रिपोर्ट के मुताबिक थापा की खोपड़ी में धंसी गोली और कांती लालकी छाती से निकाली गई गोली दोनों एक ही कैलीबर की थीं और एक ही गन से चलाई गई थीं।"

-"कौन सी गन से?"

-"चौंतीस कैलीबर की रिवॉल्वर से।"

-"अगर बैलास्टिक एक्सपर्ट की रिपोर्ट सही है तो अँटनी ने थापा को शूट नहीं किया था।"

-"मैं कहता हूं उसी ने शूट किया था।"

-"आप जानते हैं इसका मतलब क्या है?"

-"क्या है?"

-"इसका मतलब है अँटनी उस ट्रक को एयरबेस से सीधा डीलक्स मोटल ले गया था- हाईवे से होकर। वो भी उस वक्त जब आपका हर एक पुलिस मैन उसी को ढूंढ रहा था। फिर उसने विस्की लदा वही ट्रक मोटल के बाहर पार्क किया और अंदर जाकर जुर्म में अपने भागीदार की हत्या कर दी। अब सवाल यह पैदा होता है थापा की हत्या करने का ऐसा क्या तगड़ा मोटिव उसके पास था जिसकी खातिर इतना भारी रिस्क उसने लिया?"

त्यागी अपने डेस्क पर हाथ रखकर तनिक आगे झुक गया।

-"थापा की मौत के साथ ही अँटनी के खिलाफ वह इकलौता गवाह खत्म हो गया जो उसके खिलाफ बेहद खतरनाक साबित होना था जैसे ही उसे पता चलता कि अँटनी द्वारा दी गई रकम बेकार थी। खासतौर पर उस सूरत में जबकि थापा अपनी चहेती के साथ शहर से भाग रहा था।"

-"यह तर्क संगत नहीं है।" राजकुमार बोला।

-"कैसे?"

-"अँटनी जो चाहता था उसे मिल चुका था और वह उसे लेकर अपनी राह पर निकल गया था। पुलिस को ट्रक की और उसकी तलाश थी यह भी वह जानता था। ऐसे में थापा की हत्या करने के लिए जानबूझकर पुलिस के जाल में फंसने का खतरा उसने हरगिज़ मोल नहीं लेना था। और अगर उसने थापा की हत्या नहीं की तो कांती लालका हत्यारा भी वह नहीं था.....बशर्ते कि जोशी और बैलीस्टिक एक्सपर्ट की रिपोर्ट सही है।"

-"उनकी रिपोर्टों पर मुझे पूरा भरोसा है और मैं कहता हूं दोनों हत्याएं अँटनी ने ही की थीं। या फिर कांती लालकी हत्या के बाद उसने अपनी गन एली को दे दी थी और एली ने थापा को शूट कर दिया।"

-"यह भी समझ में आने वाली बात नहीं है।"

-"मेरी समझ में आती है। क्योंकि ये ही दो अनुमान ऐसे हैं जो तथ्यों पर फिट बैठते हैं।"

-"सिर्फ उन तथ्यों पर जिनकी जानकारी आपको है। सभी प्राप्त तथ्यों पर नहीं।"

त्यागी की आंखें सिकुड़ गईं।

-"क्या ऐसे भी तथ्य हैं?" राजकुमार को घूरकर बोला- "जिनके बारे में मैं नहीं जानता मगर तुम जानते हो।"

राजकुमार ने एकदम से जवाब नहीं दिया।

-"हां।" कुछेक पल खामोश रहने के बाद हिचकिचाता सा बोला- "लेकिन दमदार नहीं है।"

-"मुझे बताओ।"

-"भंडारी ने मुझे एक गन के बारे में बताया था। मैं नहीं जानता उस पर यकीन किया जाए या नहीं। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है इसका जिक्र खुद उसने ही किया था। हो सकता है वह जताने की कोशिश कर रहा था कि वो गन गायब हो गई है।"

-"कैसी गन थी?"

-"चौंतीस कैलीबर की रिवॉल्वर। उसका कहना है पिछली गर्मियों में वो उसने अपनी बेटी मीना को दी थी। क्योंकि मीना ने कांती लालसे अपनी हिफाजत के लिए भंडारी से कोई हथियार मांगा था।"

-"कांती लालसे हिफाजत के लिए?"

-"भंडारी ने यही कहा था। वह झूठ बोल रहा हो सकता है।"

-"मैं कुछ समझा नहीं। मैंने सुना था तुम भंडारी की मदद कर रहे हो।"

-"अब नहीं कर रहा। दस साल पहले घटी एक घटना को लेकर हमारे बीच मतभेद पैदा हो गए हैं।"

-"कौन सी घटना?"

-"मैं नहीं जानता आपको जानकारी है या नहीं लेकिन भंडारी को अपनी छोटी बेटी के साथ नाजायज हरकत करने के आरोप में......।"

-"जानता हूं, उन दिनों में सब इन्स्पेक्टर था। और यही पोस्टेड था। उस केस की सही मायने में सुनवाई तक नहीं हो पायी। क्योंकि लड़की इतनी ज्यादा भयभीत थी कि भंडारी के खिलाफ आरोप लगाने की हालत में नहीं थी। जज सक्सेना सिर्फ इतना ही कर सका कि भंडारी के घर को लड़की के लिए असुरक्षित घोषित करके उसे भंडारी से अलग करा दिया था।"

-"इस घटना के अलावा भंडारी के बारे में आम राय कैसी है?"

-"जवानी के दौर में बड़ा ही रफ टफ किस्म का आदमी हुआ करता था। मैंने सुना है, आज जिस ट्रांसपोर्ट कंपनी का मालिक वह है उसे शुरू करने के लिए उसने बरसों पहले स्मगलरों के ट्रक चलाकर पैसा इकट्ठा किया था।"

-"इन्स्पेक्टर बाजवा ने ससुराल के लिए अच्छा घर नहीं चुना।"

-“किसी आदमी के बारे में उसके ससुर के आधार पर फैसला नहीं किया जा सकता।“ बाजवा गंभीरतापूर्वक बोला- आकाश ने जब लतिका से शादी की थी भंडारी के बारे में वह सब-कुछ जानता था। उसका असली मकसद उन दोनों लड़कियों को भंडारी की पहुंच से दूर करना था। यह बात एक पार्टी में पीने-पिलाने के दौरान खुद उसी ने मुझे बताई थी।”

-“भंडारी की माली हालत तो बढ़िया है। पैसा और जायदाद काफी है उसके पास।”

त्यागी का चेहरा कठोर हो गया।

-“अगर तुम समझते हो, बाजवा ने उसके पैसे और जायदाद के लालच में उसकी बेटी से शादी की थी तो बिल्कुल गलत समझ रहे हो। बाजवा को पैसे में कभी कोई दिलचस्पी नहीं रही। वह मेहनती, ईमानदार और हालात से संतुष्ट रहने वाला आदमी है। उसे भंडारी की बेटी से प्यार हो गया था इसलिए उससे शादी कर ली। उसे जो ठीक लगता है वही करता है- अंजाम की परवाह किए बगैर।”

-“मेरा भी यही ख्याल था।” राजकुमार बोला- “उसका मातहत जोशी कैसा आदमी है?”

-“क्या मतलब?”

-“आपको पूरा भरोसा है, जोशी किसी भी हालत में तथ्यों के साथ अपने ढंग से खिलवाड़ नहीं करेगा?”

-“हां।”

-“चाहे वे तथ्य उसके विभाग के ही किसी आदमी की ओर संकेत क्यों न करें?”

-“तुम्हारा इशारा बाजवा की ओर है?”

-“नहीं।”

-“जोशी की एक ही इच्छा है। वह लगातार तरक्की करके एक बड़ा पुलिस आफिसर बनना चाहता है।”

राजकुमार खड़ा हो गया।

-"तो फिर उसे भंडारी के घर भेज दीजिए। बूढ़े ने अपने बेसमेंट में बाकायदा शूटिंग गैलरी बना रखी है। जोशी को चौंतीस कैलीबर की वैसी कुछ और गोलियां वहां मिल सकती है।"

त्यागी ने कुछ नहीं कहा।

राजकुमार ऑफिस से निकल गया।

१८

साक्षी फीएट में बैठी इंतजार कर रही थी।

राजकुमार ने कार का दरवाजा खोला।

-"मुझे डर था तुम कहीं और न चले जाओ।" वह बोली- "इसलिए टैक्सी से यहां आ पहुंची। मोती झील पर फारेस्ट ऑफिस से वॉर्नर ने फोन किया था।"

-"मेरे लिए?"

-"हां। वह तुमसे मिलने मेरे घर आ रहा है।"

-"कब?"

-"आज ही। रास्ते में होगा।"

-"किसलिए आ रहा है?"

-"साफ-साफ तो उसने नहीं बताया लेकिन मेरा ख्याल है इसका ताल्लुक उसकी पोती से है। उसने कहा था इस बारे में तुम्हारे अलावा किसी और से कोई जिक्र न करूं।"

राजकुमार ने इंजन स्टार्ट करके कार आगे बढ़ा दी।

पार्क में जवान लड़के लड़कियां पिकनिक मना रहे थे। जीन्स खुली शर्टें पहने उन सबके चेहरों से बेफिक्री भरी खुशी और मस्ती झलक रही थी। उनमें से अधिकांश लड़कियां एली की हम उम्र थीं।

खामोशी से कार ड्राइव करता राजकुमार सोचने पर विवश हो गया एली इन सबसे अलग थी और वजह थी- हालात।

-"जानते हो।" साक्षी उसका ध्यान आकर्षित करती हुई बोली- "दस साल पहले मैं भी इन्हीं लड़कियों की तरह थी। शायद इन सबसे ज्यादा खुशकिस्मत। डैडी तब जिंदा थे और मुझे

किसी राजकुमारी की तरह रखते थे। मैं सोचा करती थी, मेरी बाकी जिंदगी भी इतनी ही शानो शौकत के साथ गुजरेगी। किसी ने मेरी यह खुश-फहमी दूर क्यों नहीं की?"

-"इसलिए कि कोई नहीं जानता कल कैसा होगा। सब यही उम्मीद करते हैं आज से बेहतर होगा।"

-"मुझे सपनों की दुनिया में रखा गया और यह यकीन दिलाया जाता रहा कि मैं सबसे अलग हूँ।" साक्षी के लहजे में कड़वाहट थी- "मेरा कभी कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मैं भी इतनी नासमझ थी कि इसी भ्रम को पाले जीती रही।"

वह गहरी सांस लेकर चुप हो गई।

शेष रास्ता दोनों खामोश रहे।

साक्षी के निवास स्थान पर बूढ़े वॉर्नर के आगमन का कोई चिन्ह नहीं था।

राजकुमार, साक्षी सहित हवेली में दाखिल हुआ।

बाहर खिली धूप के बावजूद ड्राइंग रूम काफी ठंडा था।

-"हालात मेरी उम्मीद से कहीं ज्यादा खराब है।" सोफे पर राजकुमार की बगल में बैठती हुई साक्षी बोली- "बाजवा ने तुम्हें बताया था?"

-"कुछ खास नहीं।"

-"सुनील ने मेरे पास कुछ नहीं छोड़ा। बाजवा का कहना है, कई साल का इनकम टैक्स भी मुझसे वसूल किया जा सकता है। इसके बारे में मैं आज से पहले जानती तक नहीं थी।"

-"बाजवा कोशिश करेगा तुम्हें ज्यादा परेशान न किया जाए वह तुम्हारा हमदर्द और दोस्त है।"

-"हां।"

-“लेकिन अगर बाजवा की कोशिश कामयाब नहीं हुई तो तुम्हारी बाकी जायदाद भी चली जाएगी। तब क्या होगा?”

-“मैं कंगाल हो जाऊंगी।”

-“क्या तुम वो सब सह पाओगी?”

-“पता नहीं।”

-“तुम्हें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। तुम जवान हो। खूबसूरत और पढ़ी लिखी हो। दुनियादारी का इतना तजुर्बा भी है कि सही फैसला कर सको। थापा ने अपनी जान गंवाकर तुम्हें आजाद करके तो तुम पर अहसान किया ही है। तुमसे तुम्हारी दौलत छीनकर भी एक तरह से अहसान ही किया है।”

साक्षी के चेहरे पर उलझन भरे भाव पैदा हो गए।

-“कैसे?”

-“तुम दोबारा शादी करोगी?”

-“न.....नहीं।”

राजकुमार मुस्कराया।

-“तुम्हारी हिचकिचाहट से साफ जाहिर है, करोगी। इस दफा जरूर तुम्हें एक अच्छा और ईमानदार पति मिलेगा- थापा जैसा लालची और खुदगर्ज नहीं। क्योंकि तुम्हारे पास रूप, गुण और अपने परिवार के नाम की पूंजी होगी। और इस पूंजी के कद्रदान अभी भी बहुत हैं।”

-“हो सकता है।”

-“वैसे जो कुछ थापा ने तुम्हारे साथ किया कोई नई बात नहीं थी। ऐसा हमेशा होता रहा है और होता रहेगा। मगर एक बात मेरी समझ में नहीं आई। थापा ने तो तुम्हारी दौलत की वजह से तुमसे शादी की थी। लेकिन तुमने क्या देखकर थापा को अपने लिए पसंद किया।”

-“पता नहीं।”

-“उसका कोई दबाव था तुम पर?”

-“नहीं।”

-“फिर वह तुम्हें कैसे पसंद आ गया। तुम दोनों में कोई समानता मुझे तो नजर आई नहीं। यहां तक कि उम्र में भी वह तुमसे पंद्रह साल बड़ा तो रहा होगा।”

-“मेरी बदकिस्मती थी। उसके हाथों बरबाद होना था, हो गई।”

-“बुरा न मानो तो एक बात पूछ सकता हूं।” राजकुमार के स्वर में सहानुभूति थी।

-“क्या?”

-“सच-सच बताओगी?”

-“मैं झूठ नहीं बोलती।”

-“तुम्हारी जिंदगी में थापा ही अकेला आदमी था? मेरा मतलब है, क्या तुमने कभी किसी से प्यार नहीं किया?”

साक्षी ने सर झुका लिया।

-“किया था।”

-“थापा से पहले?”

-“हां।”

-“वह भी तुमसे प्यार करता था?”

-“हां।”

-“उसी आर्मी ऑफिसर की बात कर रही हो जो कश्मीर में मारा गया था?”

-“नहीं।”

-“फिर वह कौन बदकिस्मत था जिसने तुम्हें ठुकरा दिया?”

-“बदकिस्मत वह नहीं मैं थी। उसे किसी और से शादी करनी पड़ी।”

राजकुमार चकराया।

-“लेकिन तुमने तो कहा है, वह भी तुमसे प्यार करता था।”

-“यह सही है। लेकिन उसके सामने हालात ही ऐसे पैदा हो गए थे।”

-“वह तुम्हारा पहला प्यार था?”

-“हां।”

-“सुना है पहला प्यार कभी नहीं भुलाया जा सकता। तुम अभी भी उसे याद करती हो?”

-“अब इन सब बातों को दोहराने से कोई फायदा नहीं है।”

साक्षी ने भारी व्यथीत स्वर में कहा- “जो गुजर गया तो गुजर गया।”

-“क्या वह अपनी पत्नि के साथ सुखी है?”

साक्षी ने जवाब नहीं दिया।

-"अच्छा, आखरी सवाल। क्या वह इसी शहर का है?"

साक्षी ने गहरी सांस लेकर यूं उसे देखा मानो कह रही थी- बस करो, प्लीज, क्यों मेरे जख्मों को कुरेद रहे हो।

तभी डोर बैल की आवाज गूंजी।

साक्षी उठकर दरवाजे की ओर बढ़ गई।

आगंतुक बूढ़ा वॉर्नर ही था। दोनाली बंदूक कंधे पर लटकाए वह ड्राइंग रूम के बाहर ही रुक गया।

राजकुमार उठकर उसके पास पहुंचा।

-"मैं तुमसे अकेले में बातें करने आया हूं।" बूढ़े ने कहा- "आओ बाहर तुम्हारी कार में बैठते हैं।"

-"ठीक है।"

दोनों हवेली से बाहर आ गए।

-"एली मेरे पास आई थी।" फीएट की अगली सीट पर बैठते ही बूढ़ा बोला।

-"अब कहां है?" राजकुमार ने बेसब्री से पूछा- "झील पर?"

-"नहीं, चली गई।"

-"कहां?"

-"वह सारा दिन अँटनी की तलाश में पहाड़ों में धक्के खाती रही है। बेहद परेशान और थकी हारी सी थी। मैंने उसे अपने पास रोकने की बहुत कोशिश की मगर वह नहीं मानी।"

-"तो फिर आई किसलिए थी?"

-"प्रतापगढ़ का रास्ता पूछने।"

-"प्रतापगढ़?"

-"ऐसा लगता है अँटनी वही है और वह उसे ढूंढने गई है।"

-"यह एली ने बताया था?"

-"नहीं, उसने यह नहीं कहा वह वहां है। यह नतीजा मैंने निकाला है। सितंबर में जब वे दोनों मेरे पास आए थे मैंने ही उसे बताया था मैं प्रतापगढ़ का रहने वाला हूं- वो अलग-थलग सा एक पहाड़ी गांव है। अँटनी ने काफी दिलचस्पी दिखाई और देर तक उसी के बारे में पूछता रहा। मुझे यह बात पहले ही याद आ जानी चाहिए थी- जब झील पर तुमसे बातें कर रहा था।"

-"अँटनी ने प्रतापगढ़ के बारे में क्या पूछा था?"

-"कहां है, वहां कैसे पहुंचा जा सकता है बगैरा।"

-"आपने बता दिया?"

-"तब तक इसमें कोई बुराई मुझे नजर नहीं आई थी। प्रतापगढ़ यहां से करीब डेढ़ सौ मील दूर है। हाईवे पर झील की ओर न मुड़कर सीधे चले जाने पर एक छोटा सा कस्बा आता है- इमामबाद। वहां से दस-बारह मील दूर पहाड़ियों में है- प्रतापगढ़।"

-"वहां तक सड़क जाती है?"

-"अँटनी भी यही जानना चाहता था। उसका कहना था वह मेरे पुश्तैनी गांव को जरुर देखेगा। सड़क ठीक ही होनी चाहिए लेकिन उस पर जगह-जगह खतरनाक मोड़ और ढलान है।"

-"उस सड़क पर ट्रक ले जाया जा सकता है?"

-"बिल्कुल ले जाया जा सकता है।"

-"और एली अब उधर ही गई है?"

-"उधर ही गई होनी चाहिए। वह मुझसे बाकायदा नक्शा बनवाकर ले गई थी- वहां तक पहुंचने के लिए।"

-"मेरे लिए भी नक्शा बना दोगे?"

-“नहीं।”

-“क्यों?”

बुढ़ा मुस्कराया।

-“इसलिए कि मैं तुम्हारे साथ चल रहा हूं। मुझमें ज्यादा ताकत और चुस्ती फुर्ती तो नहीं है मगर अपनी हिफाजत अपने आप कर सकता हूं।”

राजकुमार ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की।

-“आप यहां आए कैसे थे?”

-“फॉरेस्ट ऑफिस की यहां आ रही एक जीप में लिफ्ट लेकर।”

-“ठीक है। मैं साक्षी से विदा लेकर आता हूं।”

राजकुमार कार से उतरकर हवेली के दरवाजे की ओर बढ़ गया।

शाम घिरनी शुरू हो गई थी।

फीएट शहर से बाहर हाईवे की ओर दौड़ रही थी।

-"आपने मेरे पास आने का फैसला कैसे किया?"

राजकुमार ने पूछा।

-"तुम भले आदमी लगते हो। होशियार और हौसलामंद भी। इसलिए तुम पर भरोसा कर लिया। वैसे भी एली की मदद करने के लिए किसी की मदद तो लेनी ही थी।"

-"मुझसे जो हो सकेगा आप की पोती के लिए करूंगा।"

-"एली बदमाशों के बीच फंस गई है। मैं चुपचाप बैठा उसे तबाह होती नहीं देख सकता। आज जब वह मेरे पास आई थी। धूल और पसीने से लथ-पथ थी। चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। उससे नाराज होने के बावजूद मेरा दिल पसीज गया और उसकी मदद करने का फैसला कर लिया।"

-"फिक्र मत करो सब ठीक हो जाएगा।"

बूढ़ा सीट में पसर गया। वह पहली बार तनिक राहत महसूस करता नजर आया। राजकुमार खामोशी से कार दौड़ाता रहा।

करीब दो घंटे बाद।

एक स्थान पर रुककर उन्होंने खाना खाया। फीएट में पैट्रोल भरवाया और पहियों में हवा चैक करायी।

सफर फिर शुरू हो गया।

लगभग एक घंटे बाद बूढ़े ने घोषणा की।

-"इमामबाद आने वाला है।"

वो सचमुच एक छोटा सा कस्बा निकला। आशा के अनुरूप पैट्रोल पम्प की सुविधा वहां मौजूद थी।

राजकुमार ने वहीं ले जाकर कार रोकी।

पम्प अटेंडेंट युवक था।

जब वह फीएट में पैट्रोल डाल चुका तो राजकुमार ने कीमत चुकाकर बातचीत आरंभ की।

-"क्या तुम दो सौ रुपए कमाना चाहते हो?"

युवक ने गौर से उसे देखा फिर मुस्करा दिया।

-"नहीं।"

-"क्यों?"

युवक की मुस्कराहट गहरी हो गई।

-"क्योंकि आजकल की महंगाई में दो सौ से कुछ नहीं बनता।"

-"फिर कितने से बनता है?"

-"कम से कम पांच सौ से।"

-"ठीक है।" राजकुमार ने अँटनी का हुलिया बताकर पूछा- "ऐसे किसी आदमी को इस इलाके में देखा है?"

युवक ने संदेहपूर्वक उसे देखा।

-"आप कौन है?"

-“घबराओ मत। मैं एक प्रेस रिपोर्टर हूं।” राजकुमार ने कहा और अपना प्रेस कार्ड उसे दिखाया।

युवक निश्चिंत नजर आया।

-“इस हफ्ते नहीं देखा।”

-“लेकिन देखा था?”

-“अगर वह वाकई वही आदमी है जो कि मैं समझ रहा हूं तो जरूर देखा था। पिछले महीने कई बार यहां आया था- पैट्रोल लेने। इस बार कुछ देर यहां रुककर गया था।”

-“क्या वाहन था उसके पास?”

-“लाल मारुति।”

बूढ़े ने राजकुमार को कोहनी से टहोका लगाया।

-“वही है।”

-“कहां ठहरा हुआ था?” राजकुमार ने पूछा।

-“यह तो उसने नहीं बताया। लेकिन पहाड़ियों में ही कहीं ठहरा होगा। जब वह पहली बार आया था तो जनरल स्टोर से काफी शापिंग की थी। स्टोव, कुछेक बरतन, खाने-पीने का सामान वगैरा। उसने बताया कि किसी रिसर्च के सिलसिले में आया था। लेकिन मुझे तो कोई खास पढ़ा-लिखा वह नजर नहीं आया.....।”

-“आखरी दफा कब आया था?”

-“पिछले हफ्ते बुधवार या गुरुवार को। उस दफा वह इतनी जल्दी में था कि रुका नहीं। कौन है वह? यहां क्या कर रहा था?”

-“छिपा हुआ था।”

-“किससे? पुलिस से?”

-“हो सकता है। मैंने सुना है कल रात चार बजे वह एल्युमीनियम पेंट वाला ट्रक लेकर यहां से गुजरा था।”

-“गुजरा होगा। यह पम्प रात में दस बजे बंद हो जाता है और सुबह सात बजे खुलता है।”

-“आज शाम सफेद मारुति में एक खूबसूरत लड़की को तो देखा होगा।”

- “वह करीब दो घंटे पहले गुजरी थी। यहां नहीं रुकी।”

-“प्रतापगढ़ की सड़क खुली है?” बूढ़े ने राजकुमार के ऊपर से झुककर पूछा।

-“खुली होनी चाहिए। अभी यहां बर्फ तो गिरी नहीं है.......ओह, याद आया, वो सड़क खुली है। आज एक ट्रक वहां गया था।”

-“एल्युमीनियम पेंट वाला?”

-“नहीं, नीला था। बड़ा बंद ट्रक। आज करीब चार बजे गया था। दिन में उस सड़क का एक हिस्सा यहां से दिखता है।”

राजकुमार ने पांच सौ रुपए उसे दे दिए।

-“अगर आप लोग प्रतापगढ़ जा रहे हैं।” युवक नोट जेब में ठूँसता हुआ बोला- “तो सावधान रहना। ढलान और मोड बहुत खतरनाक है उस सड़क पर।”

राजकुमार कार को घुमाकर वापस सड़क पर ले आया।

-“एली वही है।” बूढ़े ने कहा।

-"अकेली वह नहीं है। और लोग भी हैं।

हाईवे से कुछेक मील तक वो सड़क एकदम सीधी और साफ थी। फिर मोड़ आने शुरू हो गए और जल्दी-जल्दी आते रहे।

राजकुमार को धीमी रफ्तार से कार चलानी पड़ रही थी।

सड़क वाकई खतरनाक थी। एक तरफ पहाड़ था और दूसरी ओर सैकड़ों फुट गहरी खाई। सामने ढलान पर रेत फैली नजर आ रही थी।

तभी सामने से हैडलाइट्स की रोशनी आती दिखाई दी।

राजकुमार कार रोककर टार्च लिए नीचे उतरा।

बूढ़ा अंदर ही बैठा रहा।

ढलान पर आधी से ज्यादा सड़क पर फैली रेत पर चौड़े टायरों के निशान थे। जो की अनुमानत: किसी ट्रक के ही हो सकते थे। टार्च की रोशनी में और ज्यादा गौर से देखने पर दो तरह के टायरों के निशान नजर आए- एक-दूसरे के ऊपर। लेकिन दोनों ही निशान ताजा थे।

राजकुमार की धड़कनें बढ़ गई। सामने से आती हैडलाइट्स की रोशनी के साथ अब इंजन की आवाज भी सुनाई दे रही थी।

राजकुमार उसी तरह खड़ा सुनता रहा। जल्दी ही वह समझ गया कोई कार द्वारा पहाड़ से नीचे आ रहा था।

उसने फीएट की लाइटे ऑफ कर दी।

इतना समय नहीं था कि कार को हटाया जा सकता। राजकुमार ने अपनी रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली और अगले खुले दरवाजे के पीछे पोजीशन ले ली।

बूढ़े ने पिछली सीट पर पड़ी अपनी बंदूक उठा ली।

सामने से आती हैडलाइट्स की रोशनी खाई के ऊपर से गुजरी फिर पुनः सड़क पर पड़ने लगी।

कार मोड पर घूमी।

सफेद मारुति थी। उसका हार्न गूंजा फिर ब्रेक चीख उठे। तेज रफ्तार में अचानक जोर से ब्रेक लगाए जाने के कारण कार घूमी लगभग उलटती नजर आई फिर ढलान के नीचे सड़क की चौड़ाई में इस ढंग से रुकी कि तकरीबन पूरी सड़क घेर ली।

ड्राइविंग सीट वाला दरवाजा भड़ाक से खुला। एक मानवाकृति लुढ़ककर नीचे आ गिरी और उसी तरह पड़ी रही।

-"एली है।" बूढ़ा फंसी सी आवाज में बोला।

राजकुमार दौड़कर उसके पास पहुंचा। टार्च की रोशनी उस पर डाली।

एली के ऊपर वाले कटे होंठ से खून बह रहा था। चेहरा सूजा हुआ था। आंखें आतंक से फटी जा रही थीं। लेकिन वह होश में थी।

उसने उठकर बैठने की कोशिश की मगर कामयाब नहीं हो सकी।

राजकुमार ने उसे सहारा देकर बैठाया।

-"म.....मैं.....मेरी हालत बहुत खराब है......उन शैतानों ने मुझे......।"

राजकुमार ने उसके होंठ से खून साफ किया। तभी उसे पहली बार पता चला एली सिर्फ कमीज पहनी थी वो भी साइडों से पूरी लंबाई में फटी हुई। उसकी टांगे नंगी थीं। गालों पर दांतों के निशान और जगह-जगह आई खरोचों से साफ जाहिर था कि उसकी वो हालत कैसे हुई थी।

बूढ़ा भी कार से उतरकर उनके पास आ पहुंचा।

-"तुम जैसी लड़कियों का देर सवेर यही अंजाम होता है।" राजकुमार बोला- "और होना भी चाहिए। तुम भी तो दूसरों को तकलीफें पहुंचाती हो।"

-"म.....मैंने कभी किसी को तकलीफ नहीं पहुंचाई।"

-"झूठ मत बोलो। कांती लालतुम्हारी वजह से ही मारा गया था।"

-"नहीं। उस बारे में मैं कुछ नहीं जानती.....खुदा बाप की कसम.....।"

-"खुदा बाप को बीच में मत लाओ।"

-"म.....मैं.....सच कह रही हूं......यकीन करो......।"

-"और थापा के बारे में क्या कहती हो?"

-"ज.....जब मैं वहां पहुंची वह मरा पड़ा था.....म.....मैंने.....उसे....शूट नहीं किया.....।"

-"फिर किसने किया था?"

-"पता नहीं.....मैं नहीं जानती.....।"

-"कौन जानता है? अँटनी?"

-"नहीं, वह भी नहीं जानता। मैंने मोटल में देवा से मिलना था.....हम दोनों शहर से दूर जाने वाले थे....।"

एली की आंखों से आंसू बह रहे थे।

-"वो रकम कहां गई?" राजकुमार ने पूछा- "जो अँटनी ने थापा को दी थी।"

एली ने जवाब नहीं दिया। राजकुमार की बांह का सहारा लिए बैठी सर हिलाने लगी। फिर मारुति की ओर देखा।

-"एली।" पीछे खड़े बूढ़े ने पूछा- "तुम ठीक हो बेटी?"

एली ने होठों पर जुबान फिराई।

-"हां....मैं ठीक हूं....सब ठीक है। दादा जी?"

बूढ़े को उसके पास छोड़कर राजकुमार ने मारुति की तलाशी ली। अगली सीट के नीचे अखबार में लिपटा और रस्सी से बंधा एक लंबा मोटा सा पैकेट पड़ा था।

राजकुमार ने एक कोना फाड़ा। पैकेट में पांच सौ रुपए की गड्डियां थीं। जिस अखबार में लिपटी थी अगस्त की किसी तारीख का था।

राजकुमार ने पैकेट को फीएट की डिग्गी में लॉक करके अपने बैग में से एक पजामा निकाल लिया।

एली अब बूढ़े का सहारा लिए खड़ी थी।

-"वे मुझे घेर कर बैठ गए।" वह कह रही थी- "एक पेटी खोलकर विस्की की बोतल से पीनी शुरू कर दी.....फिर सबने एक-एक करके मुझे संबंध बनाना शुरू कर दिया.....और बार-बार करते रहे.....।"

बूढ़े ने उसके धूल भरे उलझे बालों में हाथ फिराया।

-"मैं उन कमीनो की जान ले लूंगा। कितने हैं वे?"

-"तीन। वे विराटनगर से आए थे विस्की की उन पेटियों को लेने। मुझे तुम्हारे पास ही रहना चाहिए था दादा जी।"

बूढ़े के क्रोधित चेहरे पर उलझन भरे भाव उत्पन्न हो गए।

-"तुम्हारे पति ने उन्हें रोकने की कोशिश नहीं की?"

-“अँटनी मेरा पति नहीं है। अगर वह रोक सकता होता तो जरूर रोकता। लेकिन उन्होंने पहले ही उसकी रिवॉल्वर छीन ली थी और उसे बुरी तरह पीटा भी।”

राजकुमार ने एली को पजामा पहनाकर उसकी पीठ सहलाई।

-“वे लोग अभी भी वही है?”

-“हां। जब मैं वहां से भागी वे ट्रक में विस्की की पेटियां लाद रहे थे। उन्होंने दूसरा ट्रक गांव से बाहर खंडहरों में छिपा रखा है।”

-“हमें वहां ले चलो।”

-“नहीं, मैं वापस नहीं जाऊंगी।”

-“यहां अकेली रुकोगी?”

एली ने फीएट को देखा फिर सड़क पर दोनों और निगाहें डालीं और निराश भाव से सर हिलाती हुई फीएट की अगली सीट पर जा बैठी।

बूढ़ा उसकी बगल में बैठ गया।

राजकुमार ने ड्राइविंग सीट पर बैठकर धीरे-धीरे सावधानीपूर्वक फीएट को तिरछी खड़ी मारुति और खाई वाले सिरे के बीच से गुजारकर आगे बढ़ाया।

-“क्या तुमने पैसे के लिए थापा का खून किया था, एली? राजकुमार ने पूछा।

-“नहीं, नहीं। मैं वहां उससे मिलने गई थी और उसे मरा पड़ा पाया।”

-“तो फिर वहां से भागी क्यों?”

-“क्योंकि मेरे रुकने पर सबने मुझे ही खूनी समझना था। जैसे तुम समझ रहे हो। जबकि मैंने कुछ नहीं किया। मैं उससे प्यार करती थी।”

बूढ़े ने खिड़की से बाहर थूका।

-“तुम थापा के ऑफिस से रकम लेकर भागी थी।” राजकुमार बोला।

“हां, रकम मैं ले आई थी। उस पर मेरा हक था। देवा मर चुका था। उसके किसी काम वो नहीं आनी थी। मैंने फर्श पर पड़ी रकम उठाई। वहीं खड़ी कार लेकर भाग आई और अँटनी को ढूंढने लगी। मैं सिर्फ भागना चाहती थी।”

-“रकम साथ लेकर?”

-“हां।”

-"क्या तुमसे अँटनी ने कहा था।" राजकुमार ने सावधानीपूर्वक मोड़ काटते हुए पूछा- "कि रकम लेकर उससे जा मिलना?"

-"नहीं, ऐसा कुछ नहीं था। मैं देवा के साथ भागने वाली थी। मुझे पता भी नहीं था अँटनी कहां है।"

-"यह सच है।" बूढ़ा बोला- "मैंने भी तुम्हें यही बताया था।"

एली ने राजकुमार की ओर गरदन घुमाई।

-"मुझे जाने क्यों नहीं देते? मैंने कोई गलत काम नहीं किया है। रकम वहां पड़ी थी मैं उठा लायी। तुम चाहो तो उस रकम को ले सकते हो। किसी को पता नहीं चलेगा। दादाजी किसी को नहीं बताएंगे।"

-"क्या तुम नहीं जानती, वो रकम किसी के काम नहीं आ सकती?"

-"क्या मतलब?"

-"वो रकम बैंक से लूटी गई थी। इसलिए अँटनी उसे खर्च नहीं कर सका। उन नोटों के नंबरों की लिस्ट पुलिस के पास भी है। जो भी खर्च करेगा पकड़ा जाएगा।"

-"मैं नहीं मान सकती। अँटनी ने ऐसा नहीं करना था।"

-"उसी ने किया था। वह थापा को बेवकूफ बना रहा था।

-"तुम पागल हो।"

-"पागल मैं नहीं, तुम हो। इतनी सीधी सी बात तुम्हारी समझ में नहीं आ रही कि अगर बीस लाख की वो रकम सही होती तो क्या अँटनी उसे खुद ही खर्च नहीं करता? पैसे के लिए विस्की के ट्रक के झमेले में पड़ने की क्या जरूरत थी?"

एली कुछ नहीं बोली। उसके चेहरे पर व्याप्त भावों से जाहिर था, असलियत को समझकर पचाने की कोशिश कर रही थी।

-"अगर यह सही है तो मुझे खुशी है उन शैतानों ने अँटनी की पिटाई की। उसके साथ यही होना चाहिए था। मुझे खुशी है उस दगाबाज के साथ उन शैतानों ने भी दगाबाजी की।"

सामने चढ़ाई थी। राजकुमार दूसरे गीयर में धीरे-धीरे कार को ऊपर ले जाने लगा।

-"एली?"

-"मैं यहीं हूं। कहीं गई नहीं।"

-“कल रात तुमने कहा था, तुम्हें कांती लालका ट्रक रुकवाने के लिए चुना गया था फिर किसी वजह से योजना बदल गई। वो क्या वजह थी?”

-“देवा यह रिस्क मुझे लेने नहीं देना चाहता था। असली बात यही थी।”

-“दूसरी बातें क्या थीं?”

-“उसने अपने एक दोस्त की मदद की थी। फिर उस दोस्त ने उसकी मदद कर दी।”

-“थापा की?”

-“हां।”

-“ट्रक रोककर और कांती लालको शूट करके?”

-“ट्रक को रोका ही जाना था। देवा की योजना में किसी को शूट करना शामिल नहीं था लेकिन उस दोस्त ने देवा के साथ दगा कर दी।”

-“कांती लालको शूट करके?”

-“हां।”

-“थापा का वो दोस्त कौन था?”

-“देवा ने नाम नहीं बताया। उसका कहना था कम से कम जानना ही मेरे हक में बेहतर होगा। वह चाहता था, अगर योजना कामयाब न हो सके तो मुझ पर कोई बात ना आए।”

-“क्या वह आकाश बाजवा था? पुलिस इन्स्पेक्टर?”

उसने जवाब नहीं दिया।

-“भंडारी था?”

अभी भी खामोश रही।

-“थापा ने अपने उस दोस्त की क्या मदद की थी?”

-“यह सब अँटनी से पूछना। वही इसमें शामिल था सोमवार रात में वह देवा के साथ पहाड़ियों में गया था।”

-“पहाड़ियों में वे क्या करने गए थे?”

-“लंबी कहानी है।”

-“बता दो बेटी।” बूढ़ा हस्तक्षेप करता हुआ बोला- “खुद को बचाने के लिए तुम्हें सब-कुछ बता देना चाहिए।”

-“खुद को बचाने के लिए। मैं तो साफ बची हुई हूं। मेरा कोई संबंध इससे नहीं था। मैं बस वही जानती हूं जो मुझे बताया था।”

-“किसने?” राजकुमार ने पूछा।

-“पहले कांती लालने फिर देवा ने।”

-“कांती लालने इतवार रात में क्या बताया था?”

-“देवा ने कहा था मुझे इस बारे में खामोश ही रहना चाहिए। लेकिन वह मर चुका है इसलिए मैं नहीं समझती अब इससे कोई फर्क पड़ेगा।” एली ने कहा- “कांती लालने शनिवार को मोती झील तक मीना भंडारी का पीछा किया था। वह देवा की पत्नी की लॉज में किसी आदमी के साथ थी। और कांती लालखिड़की से छुपकर देख रहा था। यह बात मेरी समझ में तो आई नहीं। मामूली बात थी। पता नहीं क्यों इसे अहमियत दी गई।”

-“कांती लालने क्या देखा था ?”

-“वही, जो मीना भंडारी और वह आदमी वहां कर रहे थे। क्या कर रहे थे, यह भी खोल कर बताना होगा?”

-“नहीं! आदमी कौन था उसके साथ?”

-“यह कांती लालने नहीं बताया। मेरा ख्याल है, मुझे बताने में वह डर रहा था। इस बात ने उसके छक्के छुड़ाकर रख दिए थे। वह खुद मीना भंडारी का दीवाना था और जब उसने मीना को फर्श पर मरी पड़ी देखा.....।

-“उसने मीना को मरी पड़ी देखा था?”

-“मुझे तो उसने यही बताया था।”

-“शनिवार रात में?”

-“इतवार को। वह इतवार को दोबारा वहां गया था। उसने खिड़की से देखा तो वह मरी पड़ी थी। कम से कम मुझसे तो उसने यही कहा था।”

-“उसे कैसे पता चला मीना मर चुकी थी?”

-“यह मैंने उससे नहीं पूछा। मुझे लगा खुद उसी ने मीना को मार डाला हो सकता था। आखिरकार मीना के पीछे पागल तो वह था ही।”

-“इस मामले में जरूर कोई झूठ बोल रहा है, एली। मीना भंडारी सोमवार तक जिंदा थी। तुम्हारे दादा ने सोमवार को तीसरे पहर थापा के साथ देखा था।”

-“मैंने ऐसा कोई दावा नहीं किया कि वह वही थी।” बूढ़ा बोला।

-“वही रही होनी चाहिए। वो हील उसी के सैंडल से उखड़ी थी। कांती लालको जरूर धोखा हुआ था। उसे किसी वजह से वहम हो गया था कि मीना मर चुकी थी। फिर शराब के नशे में उसका वहम यकीन में बदल गया। इतवार को वह काफी पिए हुए था न?”

-“बेशक कांती लालनशे में धुत था।” एली ने कहा- “लेकिन यह उसका वहम नहीं था। सोमवार को मैंने देवा को इस बारे में बताया तो वह खुद अपनी कार से वहां गया और जैसा कि कांती लालने बताया लाश वही पड़ी थी।”

-“लाश अब कहां है?”

-“पहाड़ियों में ही कहीं है। देवा मीना की कार में डालकर उसे ले गया था और वही छोड़ आया।”

-“क्या यही वो मदद थी जो थापा ने अपने उस दोस्त की की थी?”

-“ऐसा ही लगता है। हालांकि उसने कहा था उसे यह करना पड़ा। लाश को अपनी लॉज में वह नहीं छोड़ सकता था। उसे डर था, पुलिस उसी पर हत्या का आरोप लगा देगी।”

-“लाश को पहाड़ियों में कहां छोड़ा था उसने?”

-“पता नहीं। मैं उसके साथ नहीं थी।”

-“अँटनी था?”

-“हां। वह देवा की कार में उसके पीछे गया था फिर देवा को कार से वापस ले आया।”

फीएट सड़क की अधिकतम ऊंचाई पर थी। आगे सड़क लगातार ढलुवां होती चली गई थी। नीचे अंधेरे में डूबी घाटी में सिर्फ एक स्थान पर रोशनी नजर आ रही थी।

राजकुमार ने इंजिन बंद कर दिया। लाइटें ऑफ कर दीं। स्पीड कंट्रोल करने के लिए ब्रेक का सहारा लेता हुआ कार को नीचे ले जाने लगा।

घुमावदार ढलुवां सड़क पर फीएट अंधेरे में फिसलती रही। प्रतापगढ़ के पास पहुंचते-पहुंचते सड़क काफी चौड़ी हो गई थी।

राजकुमार ने साइड में पेड़ों के नीचे कार रोक दी।

गांव छोटा था और मकान एक दूसरे से खासे फासले पर थे। ऊपर से जो रोशनी नजर आई थी वो एक खुले दरवाजे से आयताकार रूप में बाहर आ रही थी। दरवाजा खंडहरों में बदलती गांव से बाहर किसी पुरानी इमारत का था। पास ही सड़क पर एक वैननुमा बंद ट्रक खड़ा था। दो आदमी उस रोशन दरवाजे से पेटियां उठाए बाहर निकले और पेटियां ट्रक में रखकर वापस लौट गए।

-"वे ही हैं।" एली फुसफुसाई- "उनके और ज्यादा नजदीक में नहीं जाऊंगी।"

-"तुम्हें कहीं नहीं जाना।" राजकुमार बोला- "उनके पास कितनी गनें हैं?"

-"उन सभी के पास हैं। अकरम के पास राइफल है।"

-"अकरम कौन है?"

-"उन तीनों में बॉस है शायद।"

-"ठीक है। तुम पेड़ों के पीछे जाकर किसी चट्टान की आड़ ले लो।" राजकुमार ने कहा फिर बूढ़े से पूछा- "आपकी गन लोडेड है?"

-"हां।"

-"और निशाना कैसा है?"

-"बुरा नहीं है।"

-"फालतु गोलियां हैं न?"

-"हां।" बूढ़े ने अपनी जेबें थपथपाई।

-"गुड। मैं उन तक पहुंचता हूं। आप ठीक दस मिनट इंतजार करने के बाद फायरिंग शुरू कर देना। वे लोग भागने की कोशिश करेंगे। सिर्फ उधर ही भाग सकते हैं जिधर से हम आए हैं और या कोई और भी रास्ता है?"

-"और कोई नहीं है।"

-"अगर उनमें से कोई मुझसे बच जाता है तो कार की आड़ में रहकर उसे शूट कर डालना। मैं चलता हूं, ठीक दस मिनट बाद.....।"

-"मेरे पास घड़ी नहीं है।"

-"तो फिर धीरे-धीरे पांच सौ तक गिनना।"

-"ठीक है।"

-"बूढ़े ने कार से उतरकर सड़क पर लेटकर पोजीशन ले ली।

एली पेड़ों के पीछे चली गई।

राजकुमार अपनी रिवॉल्वर थामें चक्कर काटकर सफलतापूर्वक खंडहरों की ओर चल दिया।

वे तीनों तेज रोशनी में थे। इसलिए अंधेरे में जा रहे राजकुमार को अपने देख लिए जाने का डर नहीं था।

रोशनी के आयत से दस-बारह गज दूर पत्थरों की आड़ में उसने घुटनों और कोहनियों के बल पोजीशन ले ली।

भंडारी का ट्रक उस दरवाजे के अंदर खड़ा था। हैडलाइट्स ऑन थीं। ट्रक का पिछला हिस्सा तकरीबन खाली था। दो आदमी आखरी दो पेटियां उतारकर नीले ट्रक में अपने तीसरे साथी के पास ले जा रहे थे।

वे सिर्फ जीन्स पहने थे। उनमें से एक औसत कद का पहलवान टाइप था। दूसरा इकहरे जिस्म का लंबा सा था।

-"लौंडिया मजेदार थी।" आखरी पेटी रखकर लंबू बोला- "पता नहीं साली कहां गई....यहां होती तो रास्ते भर मजे लेते।"

-"तुम्हारा पेट कभी नहीं भरता।"

उनकी आवाजें और गतिविधियों से जाहिर था वे विस्की के प्रभाव मे थे।

पहलवान टाइप नीले ट्रक के पीछे खड़ा सिगरेट सुलगा रहा था।

राजकुमार ने उसके शरीर के ऊपरी हिस्से का निशान देखकर ट्रिगर खींच दिया।

तभी बूढ़े की बंदूक गरजी।

रात्रि की निस्तब्धता में फायरों की आवाज जोर से गूंजी। गोली पहलवान की छाती में लगी थी। वह ट्रक के अगले हिस्से की ओर दौड़ा और फिर सड़क पर ढेर हो गया।

लंबू खंडहरों की ओर भागा।

राजकुमार ने पुनः फायर किया लेकिन गोली लंबू को नहीं लग सकी। उनका तीसरा साथी अब नजर नहीं आ रहा था।

बूढ़ा दूसरा फायर कर चुका था। अब शायद बंदूक को लोड कर रहा था।

लंबू राइफल सहित खंडहरों से निकला। राजकुमार के छिपे रहने की दिशा में फायरिंग शुरू कर दी।

तभी बूढ़े ने तीसरा और चौथा फायर किया।

लंबू ने राइफल का रुख उसकी तरफ कर दिया।

राजकुमार ने लगातार दो गोलियां चलाई।

लंबू एक हाथ से पेट दबाए खांसता हुआ पीछे हटा। उसके हाथ से राइफल छूट गई।

तभी नीले ट्रक का इंजन स्टार्ट हुआ।

-"ठहरो।" लंबू चिल्लाया- "मैं आ रहा हूं.....।"

उसने राइफल उठा ली। उसी तरह पेट को दबाए भागा और झटके के साथ आगे बढ़े ट्रक के पिछले हिस्से में सवार हो गया।

राजकुमार ने बाकी गोलियां भी चला दीं।

तोप से छूटे गोले की तरह ट्रक सड़क पर पड़े पहलवान को कुचलता हुआ चढ़ाईदार सड़क पर भाग खड़ा हुआ।

बूढ़े ने उस पर दो गोलियां और चलाई। लेकिन ट्रक नहीं रुका।

जेब से गोलियां निकालकर रिवॉल्वर लोड करते राजकुमार को अँटनी खंडहरों से निकलता दिखाई दिया- टांगे चौड़ाए और बाहें फैलाए वह किसी अंधे बूढ़े की भांति चल रहा था। चेहरा खून से सना था और सूजी आंखें बंद।

-"अकरम.....बहादुर.....क्या हुआ?"

वह सड़क पर पड़े पहलवान से उलझकर उसके ऊपर गिरा उसके बेजान शरीर को हिलाया।

-"बहादुर? उठो।"

उसके हाथों ने अजीब सी स्थिति में पड़े पहलवान के कुचले शरीर को टटोला तो असलियत का पता चलते ही चीखकर उससे अलग हट गया।

राजकुमार उसकी ओर चल दिया।

कदमों की आहट सुनकर अँटनी ने गरदन घुमाई। हवा में हाथ मारता हुआ चिल्लाया- "कौन है? मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा। उन हरामजादो ने मुझे अंधा कर दिया।"

राजकुमार उसकी बगल में बैठ गया।

-"अपनी आंखें दिखाओ।"

अँटनी ने अपना भुर्ता बना चेहरा ऊपर उठाया।

राजकुमार ने उसकी आंखें खोली। आंखें सुर्ख जरूर थीं लेकिन कोई जख्म उनमें नहीं था।

अँटनी ने तनिक खुली आंखों से उसे देखा।

-"कौन हो तुम?"

-"हम पहले भी मिल चुके हैं- दो बार।" राजकुमार ने कहा- "याद आया?"

राजकुमार को पहचानते ही अँटनी गुर्राया और हाथों से उसे दबोचने की कोशिश की। लेकिन उसकी कोशिश में दम नहीं था।

-"और ज्यादा दुर्गति करना चाहते हो?"

राजकुमार ने उसके विंडचीटर का कालर पकड़कर उसे खींचकर सीधा खड़ा किया। उसकी जेबें थपथपाईं।

उसके पास हथियार कोई नहीं था। एक जेब में नोट थे और कलाई पर राजकुमार की घड़ी बंधी थी।

राजकुमार समझ गया दोनों चीजें उसी की थीं। उसने नोट और घड़ी ले लिए।

अँटनी ने प्रतिरोध नहीं किया। अपने पैरों में पड़ी लाश की ओर हाथ हिलाकर बोला- "तो तुमने बहादुर को मार डाला?"

-"वह अपनी लापरवाही से मारा गया।"

-"बाकी का क्या हुआ?"

-"ट्रक लेकर भाग गए।"

-"उन्हें पकड़ना चाहते हो?"

-"नहीं। वे पकड़े ही जाएंगे। विराटनगर नहीं पहुंच सकेंगे।"

-"तुम जानते हो उन्हें?"

-"वे वही लोग हैं जिनके साथ तुम काम किया करते थे।"

-"हां, मेरी गलती थी उन कमीनों पर भरोसा कर लिया। मैं पेशेवर चोर हूं। अकेला काम करता हूं। अकरम ने पूरे ट्रक लोड विस्की का दस लाख में सौदा किया था। मैंने सोचा भी नहीं था साला मेरे साथ दगाबाजी करेगा।" अँटनी कुपित स्वर में कह रहा था- "मैंने माल दिखाकर उससे पैसा मांगा तो उसने मुझ पर राइफल तान दी और अपने साथियों से मेरी यह हालत करा दी। मुझे समझ जाना चाहिए था हरामजादा मेरे साथ ऐसा ही धोखा करेगा।" उसने अपने चेहरे पर हाथ फिराया- "लेकिन मैं उसे छोड़ूंगा नहीं। पैसा वसूल करके ही रहूंगा।"

-"तुम कुछ नहीं कर पाओगे। अब तुम्हें जेल जाना पड़ेगा।"

-"हो सकता है। लेकिन तुम तो प्रेस रिपोर्टर हो। मेरे साथ सौदा करोगे?"

-"तुम्हारे पास सौदा करने के लिए बचा क्या है?"

-"बहुत कुछ है। जिंदगी में ऐसा मौका एकाध बार ही मिलता है। तुम और मैं मिलकर मनाली पर कब्जा कर लेंगे। फिर वहां हमारी हुकूमत चलेगी।"

-"अब किसकी हुकूमत है?"

-"किसी की भी नहीं। वहां पैसा बहुत है लेकिन एक्शन नहीं है। हम लोगों के लिए एक्शन का इंतजाम करेंगे।"

-"वहां की पुलिस करने देगी?"

-“वो सब मेरे ऊपर छोड़ दो। लेकिन जेल में रहकर मैं कुछ नहीं कर सकता। अगर मुझे वहां ले जाकर पुलिस के हवाले करोगे तो तुम्हारे हाथ से गोल्डन चांस निकल जाएगा।”

स्पष्ट था मक्कार अँटनी इस हालत में भी खुद को तीसमारखां समझने और जाहिर करने की बेवकूफी कर रहा था।

-“कैसा गोल्डन चांस?” राजकुमार बोला- “थापा की तरह बेवकूफ बनाए जाने का?”

अँटनी चुप हो गया।

-“ठीक है, मैं मानता हूं मैंने थापा को बेवकूफ बनाया था।” फिर बोला- “लेकिन वह भी तो मेरी लड़की को लेकर भाग रहा था। वह साली भी ऊंची सोसाइटी में रहना चाहती थी। उस हालत में मैं और क्या करता? मुझे थापा को डबल क्रॉस करना पड़ा। मगर तुम्हारे साथ ऐसा नहीं होगा। हम बिजनेस पार्टनर रहेंगे।”

-“आगे बोलो।”

-“देखो, मैं ऐसा कुछ जानता हूं जिसे कोई और नहीं जानता। अपनी उस जानकारी को हम बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करेंगे- तुम और मैं।”

-“तुम्हारे पास ऐसी क्या खास जानकारी है?”

-“तुम्हें पार्टनरशिप मंजूर है?”

-“पूरी बात जाने बगैर में मंजूरी नहीं दे सकता। अच्छा, यह बताओ, कल रात इन्स्पेक्टर बाजवा ने तुम्हें ट्रक लेकर क्यों निकल जाने दिया?”

-“मैंने तो यह नहीं कहा उसने मुझे निकल जाने दिया था।”

-“तुम किस तरफ से ट्रक लेकर आए थे?”

-“तुम बताओ तुम तो सब कुछ जानते हो?”

-“बाई पास से।”

अँटनी की तनिक खुली आंखें चमकीं।

-“होशियार आदमी हो। तुम्हारे साथ मेरी पटरी खा जाएगी।”

–“तुम्हारे हाथ में इन्स्पेक्टर की कोई नस है?”

-“हो सकता है।”

-“जिस जानकारी की वजह से तुम्हारे हाथ में उसकी नस आई है वो तुम्हें थापा ने दी थी।”

-“उसने कुछ नहीं दिया। मैंने ही खुद ही नतीजा निकाला था।”

-“मीना भंडारी के बारे में?”

-“तुम फौरन समझ जाते हो। पुलिस को उसकी लाश मिल गई?”

-“अभी नहीं। लाश कहां है?”

-“इतनी जल्दबाजी मत करो, दोस्त। पहले यह बताओ, मेरे साथ सौदा करोगे?”

-“अगर वाकई सौदा करना चाहते हो तो मेरी कुछ शर्तें माननी होगी।”

-“कैसी शर्तें?”

-“मुझे वो जगह दिखाओ, जहां लाश है और मैं तुम्हें ब्रेक देने की पूरी कोशिश करूंगा। तुम जानते हो या नहीं लेकिन असलियत यह है अब तुम सीधे जेल जाने वाले हो। तुम पर हत्या का इल्जाम है.....।”

-“मैंने किसी की हत्या नहीं की।”

-“इस तरह इंकार करने से कुछ नहीं होगा। अपने पुराने रिकॉर्ड की वजह से कांती लालऔर थापा की हत्याओं के मामले में तुम फंस चुके हो।”

-“क्या बात कर रहे हो? जब तक एली ने मुझे नहीं बताया मैं तो जानता भी नहीं था, थापा मर चुका था। और वह क्या नाम था उसका......कांती.......उसके तो मैं पास तक नहीं गया।”

-“यह सब एस. एच.ओ. उमाकांत त्यागी को बताना। वही तुम्हें बताएगा कि तुम पर यह इल्जाम क्यों लगाए गए हैं। तुम्हारे खिलाफ इतना तगड़ा केस बन चुका है अगर कुछ नहीं किया गया तो तुम फांसी के फंदे पर झूलते नजर आओगे। इसलिए अक्ल से काम लो और मेरे साथ सहयोग करो। मैं तुम्हें बचाने की पूरी कोशिश करूंगा। उस हालत में तुम्हें लंबी सजा भले ही हो जाए लेकिन फांसी से बच जाओगे।”

अँटनी का दौलत और ताकत पाने का ख्वाब एक ही पल में टूट गया।

दूर कहीं टायरों की चीख उभरी फिर ‘धड़ाम-धड़ाम’ की आवाजें सुनाई दीं और फिर भयानक विस्फोट की आवाज गूंजी।

अँटनी चौंका।

-“यह क्या था?”

-“तुम्हारे विराटनगर के दोस्त अल्लाह मियां को प्यारे हो गए लगते हैं।”

-“क्या? तुम ऐसा भी करते हो।”

-“जब मुझे मजबूर किया जाता है।”

-“ओह! लेकिन मुझे क्यों ब्रेक देना चाहते हो? मुझे कभी किसने ब्रेक नहीं दिया। इस बात की क्या गारंटी है, तुम दोगे?”

-“इस मामले में तुम्हें भरोसा करना ही पड़ेगा। इसके अलावा और कोई रास्ता तुम्हारे सामने नहीं है। इसी में तुम्हारी भलाई है। अगर तुम बेगुनाह हो तो मीना की लाश का पता बता दो। तभी तुम खुद को इन हत्याओं के मामले में बेगुनाह साबित कर सकते हो।”

-“कैसे?”

-“मीना के हत्यारे ने ही बाकी दोनों हत्याएं की थी।”

-“शायद तुम ठीक कहते हो।”

-“मीना का हत्यारा कौन है ?”

-“अगर मैं जानता होता तो क्या तुम्हें नहीं बताता ?”

-“उसकी लाश कहां है ?”

-“वहां मैं तुम्हें पहुंचा दूंगा। थापा ने उसे उसी की कार में पहाड़ियों के बीच एक संकरी घाटी में छोड़ दिया था।”

राजकुमार उसे साथ लिए कार के पास पहुंचा।

अगली सीट पर एली अकेली बैठी थी।

-“यह क्या है?” अँटनी ने पूछा- “परिवार का पुनर्मिलन?” एली ने उसकी ओर नहीं देखा। वह गुस्से में थी।

-“तुम्हारा दादा कहां है, एली ?” राजकुमार ने पूछा।

-“ऊपर पहाड़ी पर गए हैं। थोड़ी देर पहले हमने क्रैश की आवाज सुनी थी। दादाजी का ख्याल है नीला ट्रक खाई में जा गिरा।”

-“वो आवाज मैंने भी सुनी थी।”

राजकुमार ने ड्राइविंग सीट वाला दरवाजा खोलकर अँटनी को उधर से अंदर बैठाया ताकि वह उसके और एली के बीच रहे।

एली उससे दूर खिसक गई।

-"इसने मेरे और देवा के साथ जो चालाकी की थी उसके बावजूद मुझे इसके साथ बैठना होगा ?"

-"गुस्सा मत करो।" अँटनी ने कहा- "थापा जैसे आदमी ने ज्यादा देर तुम्हें साथ नहीं रखना था।"

-"बको मत! तुम कमीने और दगाबाज हो।"

राजकुमार ने कार घुमाकर वापस ड्राइव करनी शुरू कर दी।

बूढ़ा वॉर्नर अपनी बंदूक के सहारे पहाड़ी पर खड़ा हाँफ रहा था। दूर दूसरी साइड में नीचे घाटी में आग की मोटी लपटें उठ रही थीं

बूढ़ा लंगड़ाता हुआ कार के पास आया।

-"उन शैतानों का किस्सा यहीं निपट गया। लगता है, भागने की हड़बड़ी में वे सड़क पर खड़ी सफेद मारुति को नहीं देख पाए।"

-"अच्छा हुआ।" एली गुर्राई- "वे शैतान मारे गए।"

बूढ़ा पिछली सीट पर बैठ गया।

राजकुमार सावधानीपूर्वक फीएट दौड़ाने लगा।

दुर्घटना स्थल पर सफेद मारुति उल्टी पड़ी थी। सैकड़ों फुट नीचे घाटी में उठ रही आग की लपटों और धुएँ से तेल और अल्कोहल की बू आ रही थी।

१९

वो स्थान मोती झील से दूर था।

जब वहां पहुंचे सूर्योदय हो चुका था।

अँटनी एली के कंधे पर सर रखे सो रहा था।

राजकुमार ने एक हाथ से झंझोड़कर उसे जगाया।

वह हड़बड़ाता हुआ सीधा बैठ गया। तनिक खुली आंखों से सामने और दाएं-बाएं देखा। जब उसे यकीन हो गया सही रास्ते पर जा रहे थे तो उस स्थान विशेष के बारे में बताने लगा।

राजकुमार उसके निर्देशानुसार कार चलाता रहा।

-"बस यहीं रोक दो।" अंत में अँटनी ने कहा।

राजकुमार ने कार रोक दी।

अँटनी ने उंगली से पेड़ों के झुरमुट की ओर इशारा किया।

-"वहां है?"

बूढ़े को उस पर बंदूक ताने रखने के लिए कहकर राजकुमार नीचे उतरा।

झुरमुट में पहुंचते ही कार दिखाई दे गई। कार खाली थी।

राजकुमार ने डिग्गी खोलनी चाही। वो लॉक्ड थी।

फीएट के पास लौटा। डिग्गी खोलकर एक लोहे की रॉड निकाली।

-"वहां नहीं है?" बूढ़े ने पूछा।

-"डिग्गी खोलने पर पता चलेगा।"

लोहे की रॉड से डिग्गी खोलने में दिक्कत नहीं हुई।

राजकुमार ने ढक्कन ऊपर उठाया।

घुटने मोड़े हुए लाश अंदर पड़ी थी। उसकी पोशाक के सामने वाले भाग पर सूखा खून जमा था। एक ब्राउन सैंडल की हील गायब थी। राजकुमार ने उसके चेहरे को गौर से देखा।

वह मीना भंडारी ही थी। पहाड़ी सर्दी की वजह से लाश सड़नी शुरू नहीं हुई थी।

राजकुमार ने डिग्गी को पुनः बंद कर दिया।

पोस्टमार्टम करने वाला अधेड़ डाक्टर बी. एल. भसीन वाश बेसिन पर हाथ धो रहा था।

राजकुमार को भीतर दाखिल होता देखकर वह मुस्कराया।

-"तुम बहुत बेसब्री से इंतजार करते रहे हो। बोलो, क्या जानना चाहते हो ?"

-"गोली मिल गई?" राजकुमार ने पोस्टमार्टम टेबल पर पड़ी मीना भंडारी की नंगी लाश की ओर इशारा करके पूछा।

-"हां। दिल को फाड़ती हुई पसलियों के बीच रीढ़ की हड्डी के पास जा अड़ी थी।"

-"मैं देख सकता हूं?"

-"सॉरी। घंटे भर पहले वो मैंने जोशी को दे दी थी। वह बैलास्टिक एक्सपर्ट के पास ले गया।"

-"कितने कैलिबर की थी, डाक्टर?"

-"चौंतीस की।"

-"हत्प्राण की मौत कब हुई थी?"

-"सही जवाब तो लेबोरेटरी की रिपोर्ट के बाद ही दिया जा सकता है। अभी सिर्फ इतना कहूंगा..... करीब हफ्ता भर पहले।"

-"कम से कम छह दिन?"

-"हां।"

-"आज शनिवार है। इस तरह वह इतवार को शूट की गई थी?"

-"हां।"

-"इसके बाद नहीं?"

-"नहीं।"

-"यानी सोमवार को वह जिंदा नहीं रही हो सकती थी?"

-"नहीं। यही मैंने बाजवा को बताया था। और मेरा यह दावा वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है।"

-"इसका मतलब है, जो भी उसे सोमवार को जिंदा देखी होने का दावा करता है वह या तो झूठ बोल रहा है या फिर उसे गलत फहमी हुई है?"

-"बेशक।"

-"थैंक्यू, डाक्टर।"

राजकुमार बाहर जाने के लिए मुड़ा ही था कि दरवाजा खुला और इन्स्पेक्टर बाजवा ने अंदर प्रवेश किया।

उसकी तरफ ध्यान दिए बगैर बाजवा सीधा उस मेज की ओर बढ़ गया जिस पर मीना भंडारी की लाश पड़ी थी।

-"कहां चले गए थे, इन्स्पेक्टर?" डाक्टर गरदन घुमाकर बोला- "तुम्हारे इंतजार में हमें पोस्टमार्टम रोके रखना पड़ा था।"

बाजवा ने जैसे सुना ही नहीं। मेज का सिरा पकड़े खड़ा वह अपलक लाश को ताक रहा था।

-"तुम चली गई, मीना।" उसकी आवाज कहीं दूर से आती सुनाई दी- "सचमुच चली गई । नहीं, तुम नहीं जा सकती......। "

डाक्टर उत्सुकतापूर्वक उसे देख रहा था।

लेकिन बाजवा उनकी वहां मौजूदगी से बेखबर नजर आया। अपने ख्यालों की दुनिया में मानो मीना के साथ वह अकेला था। उसने मीना का एक हाथ अपने हाथों में थाम रखा था।

डाक्टर ने सर हिलाकर राजकुमार की ओर संकेत किया।

दोनों बाहर आ गए।

-"मैंने सुना तो था इसे अपनी साली से प्यार था।" डाक्टर बोला- लेकिन इतना ज्यादा प्यार था यह आज ही पता चला है।"

राजकुमार ने कुछ नहीं कहा। वह सर झुकाए एमरजेंसी वार्ड की ओर चल दिया।

एस. एच.ओ. उमाकांत त्यागी एमरजेंसी वार्ड के बाहर थका सा खड़ा था।

राजकुमार को देखते ही उसका चेहरा तन गया।

-"तुम कहां गायब हो गए थे?"

-"दो घंटे के लिए सोने चला गया था।"

-"और मैं दो मिनट भी नहीं सो पाया। खैर, मैंने सुना है, तुम और वह बूढ़ा वॉर्नर पहाड़ियों में काफी तबाही मचाते रहे हो।"

-"आपने यह नहीं सुना हथियारबंद बदमाशों से मुकाबला करने के बाद अँटनी के जरिए मीना भंडारी की लाश भी हमने ही बरामद कराई थी और अँटनी को भी हम ही यहां लेकर आए थे।"

-"सुना था, लेकिन यह पुलिस का काम था....।" राजकुमार के चेहरे पर उपहासपूर्ण भाव लक्ष करके त्यागी ने शेष वाक्य अधूरा छोड़ दिया फिर कड़वाहट भरे लहजे में बोला- "बूढ़ा वॉर्नर आखिरकार झूठा साबित हो ही गया।"

-"जी नहीं। उससे एक ऐसी गलती हुई है जो उस उम्र के किसी भी आदमी से हो सकती है। उसने कभी भी औरत की पक्की शिनाख्त का दावा नहीं किया इसलिए उसे झूठा नहीं कहा जा सकता। लेकिन सबसे अहम और समझ में ना आने वाली बात है- टूटी हील वहां कैसे पहुंची जहां मुझे पड़ी मिली थी। मीना भंडारी की लाश मिलने के बाद अब इसमें तो कोई शक नहीं रहा कि वो हील उसी के सैंडल से उखड़ी थी। और डाक्टर का कहना है, इतवार के बाद मीना जिंदा नहीं थी। जबकि हील सोमवार को उखड़ी देखी गई थी।"

-"और देखने वाला वॉर्नर था?"

-"जी हां।"

-"जाहिर है, वो हील वहां प्लांट की गई थी। और प्लांट करने वाला वही बूढ़ा था इसलिए जानबूझकर तुम्हें वहां ले गया। इस केस में मैटिरियल बिजनेस के तौर पर मैंने उसे रोका हुआ है।"

-"और लड़की एली ?"

-"वह पुलिस कस्टडी में जनरल वार्ड में है। उससे बाद में पूछताछ करूँगा। इस वक्त में अँटनी से पूछताछ करने का इंतजार कर रहा हूं। उसके खिलाफ हमारे पास जो एवीडेंस है उसे देखते हुए अँटनी को अपने जुर्म का इकबाल कर लेना चाहिए।"

-"यानी आपके विचार से केस निपट गया?"

-“हाँ।”

-“माफ कीजिए, मैं आपसे सहमत नहीं हूं।”

त्यागी ने हैरानी से उसे देखा।

-“क्या मतलब?”

-“जिस ढंग से आप केस को निपटा रहे हैं या निपट गया समझ रहे हैं। मेरी राय में वो तर्क संगत और तथ्यपूर्ण नहीं है।”

-“तुम क्या कहना चाहते हो?”

-“मान लीजिए अगर आपको पता चले आपके विभाग का कोई आदमी बदमाशों को बचा रहा था या उनसे मिला हुआ था तब आप क्या करेंगे?”

-“उसे गिरफ्तार कराके अदालत में पेश कराऊगां।”

-“चाहे वह आपका फेवरेट आफिसर ही क्यों न हो?”

-“घुमा फिराकर बात मत करो। तुम्हारा इशारा आकाश बाजवा की ओर है?”

-“जी हां। आपको अँटनी के बजाय उससे पूछताछ करनी चाहिए।”

त्यागी ने कड़ी निगाहों से उसे घुरा।

-“तुम्हारी तबीयत तो ठीक है? दो दिन की भागदौड़ और मारामारी से.....।”

-“ऐसी बातों का दिमागी तौर पर कोई असर मुझ पर नहीं होता। अगर मेरी इस बात पर आपको शक है तो विराटनगर पुलिस से....।”

-“वो सब मैं कर चुका हूं। तुम्हारे दोस्त इन्स्पेक्टर रविशंकर से भी बातें की थी। उसका कहना है तुम खुराफाती किस्म के ‘आ बैल मुझे मार’ वाली फितरत के आदमी हो। ऐन वक्त पर चौंकाने वाली बातें करना और दूसरों को दुश्मन बनाना तुम्हारी खास खूबियां हैं।”

-“मैं सही किस्म के दुश्मन बनाता हूं।”

-“यह तुम्हारी अपनी राय है।”

-“आपका सब इंस्पेक्टर जोशी बवेचा के बेसमेंट में गया था?” राजकुमार ने वार्तालाप का विषय बदलते हुए पूछा- “उसे कुछ मिला?”

-“कुछ चली हुई गोलियां मिली थी। बैलास्टिक एक्सपर्ट उनकी जांच कर रहा है। उसकी रिपोर्ट कुछ भी कहे उसे बाजवा के खिलाफ इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। भंडारी की

किसी भी हरकत के लिए वह जिम्मेदार नहीं है।" त्यागी की कड़ी निगाहों के साथ स्वर में भी कड़ापन था- "तुम्हारे पास बाजवा के खिलाफ कोई सबूत है?"

-"ऐसा कोई नहीं है जिसे अदालत में पेश किया जा सके। मैं न तो उसकी गतिविधियों को चैक कर रहा हूं न ही उससे पूछताछ कर सकता हूं। लेकिन आप यह सब कर सकते हैं।"

-"तुम चाहते हो मैं तुम्हारे साथ इस बेवकूफाना मुहीम में शामिल हो जाऊं? अपनी हद में रहो तुम सोच भी नहीं सकते इस इलाके को साफ सुथरा बनाने और बनाए रखने के लिए बाजवा ने और मैंने कितनी मेहनत की है। तुम न तो बाजवा को जानते हो नहीं इस शहर के लिए की गई उसकी सेवाओं को।" त्यागी का स्वर गंभीर था- "आकाश बाजवा एक जेनुइन प्रैक्टिकल आईडिएलिस्ट है। उसके चरित्र पर जरा भी शक नहीं किया जा सकता।"

-"हालात की गर्मी किसी भी चरित्रवान के चरित्र को पिघला सकती है। बाजवा भी आसमान से उतरा कोई फरिश्ता नहीं महज एक आदमी है। उसे भी पिघलते मैं देख चुका हूं।"

त्यागी ने व्याकुलतापूर्वक उसे देखा

-"तुमने बाजवा से कुछ कहा था?"

-"कल आपके पास आने से पहले सब-कुछ कह दिया था। उसने अपनी सर्विस रिवॉल्वर निकालकर मुझ पर तान दी और अगर उसकी पत्नि नहीं रोकती तो मुझे शूट ही कर डालता।"

-"तुमने उसके मुंह पर ये इल्जाम लगाए थे?"

-"हां।"

-"तब तुम्हारी जान लेने की कोशिश करने के लिए उसे दोष नहीं दिया जा सकता। वह अब कहां है?"

-"पोस्टमार्टम रूम में अपनी साली के पास।"

त्यागी पलट कर चल दिया।

लंबे गलियारे के आखिरी सिरे पर दरवाजे के संमुख वह तनिक ठिठका फिर जोर से दस्तक दी।

दरवाजा फौरन खुला।बाजवा बाहर निकला।

त्यागी ने उससे कुछ कहा। बाजवा एक तरह से उसे अलग धकेल कर कारीडोर में राजकुमार की ओर बढ़ गया। उसकी निगाहें दूर दीवारों से परे कहीं टिकीं थीं और होठों पर हिंसक मुस्कराहट थी।

उसके पीछे त्यागी यूं सर झुकाए आ रहा था मानो अदृश्य बाधाओं को पार कर रहा था। उसके चेहरे पर आंतरिक दबाव के स्पष्ट चिन्ह थे।

बाजवा राजकुमार के पास न आकर बाहर जाने वाले रास्ते से निकल गया। उसकी कार का इंजन गरजा फिर वो आवाज दूर होती चली गई।

त्यागी राजकुमार के पास आ रूका।

-"अगर तुम बाजवा से पूछताछ कर सकते होते तो क्या पूछते?"

-"कांती, थापा और मीना भंडारी को किसने शूट किया था?" राजकुमार बोला।

-"तुम कहना चाहते हो ये हत्याएं उसने की थी?"

-"मैं कह रहा हूं उसे इन हत्याओं की जानकारी थी। उस रात भंडारी का ट्रक लेकर भाग रहे अँटनी को उसने जानबूझकर भाग जाने दिया था।"

-"यह अँटनी कहता है?"

-"हां।"

-"उस पेशेवर बदमाश की कहीं किसी बात को बाजवा जैसे आदमी के खिलाफ इस्तेमाल तुम नहीं कर सकते।"

-"उस रात करीब एक बजे मैंने भी बाई पास पर बाजवा को देखा था। उसने रोड ब्लॉक हटा दिया था। अपने सब आदमियों को भी वहां से भेज दिया था। उस जगह वह अकेला था और यह बात.....।"

-"तुम अपनी बात को खुद ही काट रहे हो।" त्यागी हाथ उठाकर उसे रोकता हुआ बोला-बाजवा एक ही वक्त में दो अलग-अलग जगहों पर मौजूद नहीं हो सकता। अगर एक बजे वह बाई पास पर था तो मोटल में थापा को उसने शूट नहीं किया। और क्या तुम यकीनी तौर पर जानते हो, अँटनी उसी रूट से भागा था?"

-"यकीनी तौर पर मैं कुछ नहीं जानता।"

-"मुझे भी इस बात का शक था। जाहिर है, अँटनी अपने लिए किसी तरह की एलीबी गढ़ने की कोशिश कर रहा है।"

-"आप के कब्जे में एक जवान पेशेवर मुजरिम है। इसलिए आप तमाम वारदातों का भारी पुलंदा बनाकर उसके गले में लटका रहे हैं। मैं जानता हूं, यह स्टैंडर्ड तरीका है। लेकिन मुझे पसंद नहीं है। दरअसल यह सीधा-सीधा प्रोफेशनल क्राइम नहीं है। बड़ा ही पेचीदा केस है जिसमें बहुत से लोग इनवाल्व है- पेशेवर भी और नौसिखिए भी।"

-"उतना पेचीदा यह नहीं है जितना कि तुम बनाने की कोशिश कर रहे हो।"

-"यह आप अभी सिर्फ इसलिए कह रहे हैं क्योंकि हमारे पास हर एक सवाल का जवाब नहीं है।"

-"मैं तो समझ रहा था तुम्हारे हर सवाल का जवाब बाजवा है।"

-"बाजवा खुद जवाब भले ही न हो लेकिन जवाब जानता जरूर है। जबकि जाहिर ऐसा करता है जैसे कुछ नहीं जानता। ऐतराज न हो तो एक बात पूछूं?"

-"क्या?"

-"आपको बुरा तो नहीं लगेगा?"

-"नहीं।"

-"आप क्यों उसकी ओर से सफाई देकर उसे बचा रहे हैं?"

-"मैं न तो उसे बचा रहा हूं न ही किसी सफाई की उसे जरूरत है।"

-"क्या खुद आपको उस पर शक नहीं है?"

-"नहीं।"

-"मीना भंडारी की मौत की उस पर हुई प्रतिक्रिया देखकर भी नहीं?"

-"नहीं। मीना उसकी साली थी और वह इमोशनल आदमी है।"

-"इमोशनल या पैशनेट?"

-"तुम कहना क्या चाहते हो?"

-"वह साली से बहुत ज्यादा कुछ थी। दोनों एक-दूसरे को प्यार करते थे। यह सच है न?"

त्यागी ने थके से अंदाज में माथे पर हाथ फिराया।

-“मैंने भी सुना है, उनका अफेयर चल रहा था। लेकिन इससे साबित कुछ नहीं होता। असलियत यह है, अगर इस नजरिए से देखा जाए तो यह संभावना और भी कम हो जाती है कि मीना की मौत से उसका कुछ लेना-देना था।”

-“लेकिन इमोशनल क्राइम की संभावना बढ़ जाती है। बाजवा ने उसे जलन या हसद की वजह से शूट किया हो सकता था।”

-“तुमने उसका गमजदा चेहरा देखा था?”

-“हत्यारों को भी दूसरों की तरह ही गम का अहसास होता है।”

-“बाजवा को किससे हसद हो सकती थी?”

-“एक तो कांती लालही था। वह मीना का पुराना आशिक था। शनिवार रात में लेक पर भी गया था। कांती लालकी मौत की वजह भी यही हो सकती है। यही थापा के बाजवा पर दबाव और थापा की मौत की वजह भी हो सकती है।”

-“थापा की हत्या बाजवा ने नहीं की थी। यह तुम भी जानते हो।”

-“की नहीं तो किसी से कराई हो सकती थी। आखिरकार उसके पास मातहतो की तो कमी नहीं है।”

-“नहीं!” उसके तीव्र स्वर में पीड़ा थी- “मुझे यकीन नहीं है आकाश किसी जीवित प्राणी का अहित करेगा।”

-“आप उसी से क्यों नहीं पूछते। अगर वह ईमानदार पुलिसमैन है या उसके अंदर जरा भी ईमानदारी बाकी है तो आपको सच्चाई बता देगा। उससे पूछकर आप एक तरह से उस पर अहसान ही करेंगे। वह अपने दिलो-दिमाग पर भारी बोझ लिए घूम रहा है। इससे पहले कि अब यह बोझ उसे कुचल डाले उसे इस बोझ को हल्का करने का मौका दे दीजिए।”

-“तुम्हें उसके गुनाहगार होने पर काफी हद तक यकीन है लेकिन मुझे नहीं है।”

मगर उसके चेहरे पर छा गए हल्के पीलेपन से जाहिर था अपनी इस बात से अब वह खुद भी पूरी तरह सहमत नहीं था।

तभी एमरजेंसी रूम का दरवाजा खुला। वही डाक्टर बाहर निकला जो कांती लालको नहीं बचा पाया था।

-“आप उससे पूछताछ कर सकते हैं, मिस्टर बाजवा।”

-“थैंक्यू, डाक्टर। उसे बाहर भेज दीजिए।”

-“ओ के।”

अँटनी दरवाजे से निकला। उसके हाथों में हथकड़िया लगी थी। पट्टियों से ढंके चेहरे पर सिर्फ एक आंख ही नजर आ रही थी। उसे बाहर जाने वाले रास्ते की तरफ देखता पाकर उसके साथ चल रहे पुलिसमैन का हाथ अपनी रिवॉल्वर की ओर चला गया।

अँटनी ने फौरन उधर से नजर घुमा ली।

त्यागी उन्हें मोर्ग की ओर ले चला।

राजकुमार ने भी उनका अनुकरण किया।

मोर्ग में एक-एक करके तीनों लाशों को बाहर निकाला गया और उनके चेहरों से कपड़ा हटा दिया गया।

-“मुझे यहां क्यों लाया गया है?” अँटनी ने पूछा।

-“तुम्हारी याददाश्त ताजा करने के लिए।” त्यागी ने कहा- “तुम्हारा नाम?”

-“अँटनी।”

-“उम्र?”

-“पच्चीस साल।”

-“पता?”

-“कोई नहीं।”

-“काम क्या करते हो?”

-“जो भी मिल जाए।”

-“किस तरह का?”

-“मेहनत मजदूरी।”

त्यागी ने थापा की लाश की ओर इशारा किया।

-“इस आदमी को जानते थे?”

-“नहीं।”

-“इसका नाम सुनील थापा था इससे कभी मिले थे?”

-“शायद।”

-“आखरी दफा कब मिले थे?”

-“रविवार रात में करीब बारह बजे।”

-“कहां? इसके मोटल में?”

-“नहीं। सड़क के किनारे एक रेस्टोरेंट के बाहर। नाम याद नहीं।”

-“मैं उस मीटिंग का गवाह था।” राजकुमार ने कहा और लोकेशन बता दी।

-“तुमसे बाद में बात करूंगा।” त्यागी पुनः अँटनी की ओर पलटा- “उस मीटिंग में क्या हुआ था?”

-“कुछ नहीं।”

-“तुमने इसे कोई पैकेट दिया था?”

-“पता नहीं।”

-“फिर तुमने क्या किया?”

-“कुछ नहीं। मैं चला गया।”

-“कहां?”

-“किसी खास जगह नहीं। ऐसे ही घूमता रहा।”

-“तुम झूठ बोल रहे हो। तुमने उसी रात चौंतीस कैलिबर के रिवॉल्वर से इसे शूट किया था।”

-“मैंने नहीं किया।”

-“तुम्हारी रिवॉल्वर कहां है?”

-“मैं रिवॉल्वर नहीं रखता। ऐसा करना गैर कानूनी है।”

-“और तुम कोई गैर कानूनी काम नहीं करते?”

-“नहीं।”

-“तो फिर विस्की से भरा ट्रक क्यों चुराया? करीमगंज में बैंक में उस आदमी को क्यों लूटा?”

-“मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।”

-“तुम पेशेवर मुजरिम हो। तुम्हारे इंकार करने से यह हकीकत नहीं बदल सकती कि इन तीनों की हत्याएं तुमने की थीं।”

-“मैंने किसी की हत्या नहीं की।”

त्यागी ने उसे कांती लालकी लाश के पास धकेला।

-“इसे गौर से देखो?”

-“मैंने पहले कभी इसे नहीं देखा।”

-“अगर तुमने इसे नहीं देखा तो इसे शूट करके इसका ट्रक कैसे चुरा लिया?”

-“मैंने इसे शूट नहीं किया। यह ट्रक में नहीं था। सही मायने में ट्रक मैंने चुराया नहीं था। ट्रक हाईवे पर खड़ा था और इंजन चालू था।”

-“इसलिए तुम उसे लेकर चले गए?”

-“अँटनी ने जवाब नहीं दिया।”

पूछताछ करीब एक घंटे तक चली। अँटनी का जवाब देने का यह तरीका ज्यादा देर नहीं चला। शब्दों के वार का असर तो उस पर होने लगा। लेकिन उसने कबूल कुछ नहीं किया।

फिर सब इंस्पेक्टर जोशी ने दस्तक देकर दरवाजा खोला और त्यागी को बाहर बुला ले गया।

राजकुमार अँटनी के पास पहुंचा।

-“तुम अपने लिए मौत का सामान कर रहे हो। अगर इसी तरह इंकार करोगे या टालते रहोगे तो फांसी के फंदे पर पहुंच जाओगे। तुम्हारे लिए आखिरी मौका है। सच्चाई बता दो।”

-“मैं बेगुनाह हूं। मुझे ये लोग नहीं फंसा सकते।”

-“तुम बेगुनाह नहीं हो। हम जानते हैं, ट्रक तुम्ही ले गए थे। इस हालत में अगर तुम ने ड्राइवर को शूट नहीं भी किया था तो भी कानूनन तुम्हें उसकी हत्या के अपराध में शरीक माना जाएगा। तुम्हारे बचाव का एक ही रास्ता है सरकारी गवाह बन जाओ।”

अँटनी ने इस बारे में सोचा।

-“मुझसे क्या कहलवाना चाहते हो?”

-“सच्चाई। ट्रक तुम्हें कैसे मिला?”

-“तुम मुझ पर यकीन नहीं करोगे। कोई भी नहीं करेगा।”

उसने निराश भाव से सर हिलाया- “फिर सच्चाई बताने से फायदा ही क्या है?”

-“अगर सच बोलोगे तो मैं यकीन करुगा और तुम्हारी मदद भी।”

-“नहीं, तुम भी मुझे झूठा कहोगे। जो कुछ मैंने देखा था उस पर यकीन नहीं करोगे।”

-“क्या देखा था तुमने।”

-“मैं हाईवे पर ट्रक का इंतजार कर रहा था। थापा ने बताया था करीब छह बजे ट्रक वहां से गुजरेगा। वो सही समय पर करीब साठ मील की रफ्तार से मेरे सामने से गुजरा और करीब आधा मील के फासले पर जा रुका। मैं तेजी से उधर ही दौड़ा।”

-“पैदल?”

-“हां।”

-“ट्रक रोका किसने?”

-“वहां एक सफेद एम्बेसेडर खड़ी थी। जब मैं उस स्थान पर पहुंचा एम्बेसेडर दौड़ गई। बस यही देखा था मैंने।”

-“तुमने ट्रक के पास से उसे जाते देखा था?”

-“हां। मैं हाईवे पर थोड़ी दूर ही पीछे था।”

-“कार में कांती लालथा? यही आदमी?”

-“यह अगली सीट पर बैठा था।”

-“एम्बेसेडर को वही चला रहा था?”

-“नहीं। उसके साथ कोई और भी था।”

-“कौन था?”

-“तुम यकीन नहीं करोगे।”

-“क्यों।”

-“बात ही कुछ ऐसी है कि खुद मेरी अक्ल भी चकरा रही है।”

-“कोई लड़की थी?”

-“हां।”

-"कौन?"

अँटनी ने मीना भंडारी की लाश की ओर इशारा किया।

-"वह। मेरे ख्याल से वही थी।"

राजकुमार ने घोर अविश्वासपूर्वक अँटनी को घूरा।

-"तुमने इस लड़की को गुरुवार शाम को हाईवे पर ट्रक के पास से कांती लालको सफेद एम्बेसेडर में ले जाते देखा था?"

-"मैंने तो पहले ही कहा था तुम यकीन नहीं करोगे?"

-"लेकिन यह औरत तो पिछले इतवार को ही मर चुकी थी। तुमने खुद सोमवार रात में इसकी लाश देखी थी फिर यह इस गुरुवार को हाईवे पर कैसे पहुंच सकती थी?"

-"क्या फायदा हुआ?" अँटनी ऊंची आवाज में कलपता सा बोला- "मैंने पहले ही कहा था कुछ नहीं होगा।" उसने हथकड़ियां लगे अपने हाथ हिलाए- "तुम सब एक ही जैसे हो। सभी उस इन्स्पेक्टर बाजवा से मिले हुए हो। अपने आप को बचाने के लिए मुझे बलि का बकरा बना रहे हो। जाओ, मुझे फांसी पर चढ़ा दो। मैं मरने से नहीं डरता। लेकिन अब मैं इस सच्चाई को मरते दम तक चीख-चीख कर दोहराता रहूंगा। तुम सब हरामजादे हो.....।"

पास ही खड़े पुलिसमैन उसके चेहरे पर हाथ जमा दिया।

-"बकवास बंद कर।"

राजकुमार ने उनके बीच में आकर पुलिसमैन को परे धकेला।

-"इन्स्पेक्टर बाजवा के बारे में क्या कहना चाहते हो अँटनी?"

-"उस रात जब मैं एयरबेस से ट्रक लेकर भागा तो वह बाई पास पर मौजूद था। पुलिस कार में बुत बना बैठा था। रोड ब्लाक नहीं थी। मुझे रोकना तो दूर रहा उसने आंख उठाकर भी मेरी ओर नहीं देखा। मैं उसके सामने से गुजर गया। लेकिन अब मैं समझ सकता हूं, उसने ऐसा क्यों किया। वह मुझे कत्ल के इल्जाम में फंसाने की योजना बना रहा था। उस रात मुझे भाग जाने देना उसकी इसी योजना का एक हिस्सा था।"

-"अगर तुम सच बोल रहे हो तो कत्ल का कोई इल्जाम तुम पर नहीं लगेगा।"

-"मुझे तसल्ली मत दो। मैं सब समझता हूं। उसने तुम सब को अपने वश में किया हुआ है।"

-“मैं उसके वश में नहीं हूं।”

-“अकेले तुम्हारे न होने से क्या होता है? पूरा पुलिस विभाग तो उसकी मुट्ठी में है।”

इससे पहले कि राजकुमार कुछ कहता सब इंस्पेक्टर जोशी ने दरवाजा खोलकर अंदर झांका।

-“क्या हो रहा है?”

-“कुछ नहीं।” राजकुमार बोला- “त्यागी साहब कहां है?”

-“चले गए।”

राजकुमार चकराया।

-“चले गए?”

-“हां। जरूरी काम था।”

राजकुमार बाहर कारीडोर में आ गया।

-“इस वक्त इससे ज्यादा जरूरी और क्या काम हो सकता है जो यहां चल रहा था?”

-“वह भंडारी से मिलने गए हैं।”

-“कहां?”

-“अपने ऑफिस। मैंने अभी उसे गिरफ्तार करके वहां पहुंचाया है।”

-“किस जुर्म में?”

-“मर्डर। मैं पिछली रात भंडारी के घर गया था। उसकी इजाजत लेकर वहां खोजबीन की- ऐसा जाहिर करते हुए कि उसकी बेटी के बारे में कोई सुराग लगाने की कोशिश कर रहा था। उसने ऐतराज नहीं किया। संभवतया इसलिए कि वह जानता था पुरानी चली हुई गोलियों के बारे में कुछ नहीं किया जा सकता था। बेसमेंट में बनी उसकी शूटिंग गैलरी में शूटिंग बोर्डों में दर्जनों पुरानी गोलियां गड़ी हुई थीं। मैंने वहां से कुछ गोलियां निकाली। उनमें से ज्यादातर की हालत ठीक नहीं थी। लेकिन कुछेक सही थीं। माइक्रोस्कोपिक कम्पेरीजन के लिए मैं उन्हें बैलास्टिक एक्सपर्ट के पास ले गया। करीब दो घंटे पहले सही नतीजा सामने आया। बेसमेंट में मिली कुछ गोलियां चौंतीस कैलिबर की रिवॉल्वर से चलाई गई थी। माइक्रोस्कोपिक कम्पेरीजन से पता चला उनमें से कुछेक उसी रिवॉल्वर से चलाई गई थी जिससे कांती, थापा और मीना भंडारी को शूट किया गया था।”

-“तुम्हें पूरा यकीन है?”

-"बेशक। अदालत में साबित भी किया जा सकता है- माइक्रोफोटोग्राफ्स के जरिए। अगर वो रिवॉल्वर नहीं मिलती है तो भी साबित किया जा सकता है। भंडारी के पास चौंतीस कैलिबर की लाइसेंसशुदा रिवॉल्वर है। उसका पूरा रिकॉर्ड हमारे पास है। उसे गिरफ्तार करने से पहले जब रिवॉल्वर के बारे में मैंने पूछा तो उसका कहना था- पता नहीं।"

-"फिर भी कुछ तो सफाई दी होगी?"

-"वह कहता है, पिछली गर्मियों में वो रिवॉल्वर अपनी बेटी को दी थी और उसने वापस नहीं लौटाई। वह साफ झूठ बोल रहा है कल तक मेरा भी यही ख्याल था और अब इतना यकीन नहीं रहा वह साफ झूठ बोल रहा है।"

-"कल तक मेरा भी यही ख्याल था।"

-"और अब?"

-"उतना यकीन नहीं रहा।"

-"वह साफ झूठ बोल रहा है। झूठ बोलने की तगड़ी वजह भी है। तीनों हत्याओं में से किसी की भी कोई एलीबी उसके पास नहीं है। मीना भंडारी को इतवार को शूट किया गया था। बकौल भंडारी उस रोज सारा दिन वह घर में अकेला रहा था। इस तरह कार में लेक पर जाकर मीना को शूट करने और वापस लौटने का पूरा मौका और वक्त उसके पास था। रविवार शाम के बारे में उसने एलीबी के तौर पर अपनी बड़ी बेटी का नाम लिया था। लेकिन उसकी बेटी शाम पांच बजे से उसके घर में थी और वह सात बजे के बाद घर पहुंचा था। खुद भंडारी भी इसे कबूल करता है उसका कहना है, ट्रांसपोर्ट कंपनी के ऑफिस से निकलने के बाद वह कार में हवाखारी के लिए चला गया था। थापा की हत्या के समय की भी कोई एलीबी उसके पास नहीं है।"

-"और मोटिव भी नहीं है।"

-"मोटिव था। कांती लालऔर थापा दोनों ही मीना के साथ गहरे ताल्लुकात रहे थे अपनी उस बेटी का खुद भंडारी भी दीवाना था।"

-"कहानी मसालेदार है।" राजकुमार बोला इन्स्पेक्टर बाजवा को भी सुनाई थी तुमने?"

जोशी पहली बार परेशान सा नजर आया।

-"उनसे मुलाकात नहीं हुई। वैसे भी मैं नहीं चाहता था बाजवा साहब को अपने ससुर को गिरफ्तार करने का बदमजा काम करना पड़े। इसलिए मैंने इस बारे में बाजवा साहब को कुछ न बताकर सीधे त्यागी साहब को ही रिपोर्ट दी है।"

-“बाजवा साहब तुम्हारे इस एक्शन से सहमत और संतुष्ट है?”

-“बेशक। तुम नहीं हो?”

-“अभी नहीं। मैं कुछ और छानबीन करना चाहता हूं। भंडारी के पास कितनी कारें हैं? एक तो कांटेसा है......।”

-“एक सफेद एम्बेसेडर है और एक टाटा सीएरा है।”

-“सफेद एम्बेसेडर भी है?”

-“हां। मैं उन कारों के बारे में घटनास्थलों पर आस पास पूछताछ कराने जा रहा हूं। किसी भी वारदात के वक्त उनमें से कोई वहां देखी गई हो सकती थी।”

-“इस मामले में मैं तुम्हें परेशानी से बचा सकता हूं। कुछ और करने से पहले अंदर मौजूद अँटनी से बातें कर लो। उससे पूछना रविवार शाम को कांती लालहाईवे से कौन सी कार में गया था।”

जोशी अंदर चला गया।

राजकुमार कारीडोर से निकलकर अपनी कार की ओर बढ़ गया।

२०

दस्तक के जवाब में लतिका बाजवा ने दरवाजा खोला। अगर उसके मुंह पर कसाब और आंखों में अजीब सी चमक नहीं होती तो राजकुमार ने समझना था उसने घरेलू कार्यों में व्यस्त किसी ग्रहणी को डिस्टर्ब कर दिया था।

-“तुम्हारा पति घर में है, मिसेज बाजवा?” उसने पूछा।

-“नहीं।”

-“मैं इंतजार कर लूंगा।”

-“लेकिन वह पता नहीं कब आएगा।”

-“तब तक मैं आपसे ही बातें कर लूंगा।”

-“माफ करना, मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मैं किसी से बात करना नहीं चाहती।

उसने दरवाजा बंद करने की कोशिश की। लेकिन राजकुमार ने बंद नहीं करने दिया।

-“मुझे अंदर आने दो।”

-“नहीं। अगर आकाश आ गया और तुम्हें यहां देख लिया तो नाराज होगा।” उसने बलपूर्वक अध खुले पल्ले को थामे खड़े राजकुमार से कहा- “बंद करने दो, प्लीज। यहां से चले जाओ। मैं आकाश को बता दूंगी तुम आए थे।”

-“नहीं मिसेज बाजवा।”

राजकुमार ने पल्ला जोर से धकेला।

वह पीछे हट गई।

राजकुमार अंदर आ गया।

ड्राइंग रूम के दरवाजे में सहमी खड़ी लतिका की गरदन की नसें तन गई थीं। आंखों में चमक और ज्यादा गहरी हो गई थी। साइडों में लटके हाथ मुट्ठियों की शक्ल में भिंचे थे।

राजकुमार उसकी ओर बढ़ा।

लतिका ड्राइंगरूम में पीछे हटने लगी। वह यूँ चल रही थी मानों उसके मस्तिष्क में भारी विचार संघर्ष मचा था और उसे अपने शरीर को जबरन घसीटना पड़ रहा था।

वह एक मेज के पास जाकर रुक गई।

-"मुझसे क्या चाहते हो?"

उसके सफेद पड़े चेहरे को गौर से देखते राजकुमार को एक पल के लिए लगा उसके सामने मृत मीना भंडारी खड़ी थी। कद-बुत लगभग एक जैसा होने के कारण वह मीना की जुड़वां बहन सी नजर आई। साथ ही बिजली की भांति जो नया विचार उसके दिमाग में कौंधा। उस पर एकाएक विश्वास वह नहीं कर पाया।

लेकिन वो असलियत थी। पूर्णतया तर्क संगत और तथ्यों से पूरी तरह मेल खाती हुई। अब उससे सच्चाई उगलवानी थी।

-"तुमने अपने पिता की रिवॉल्वर से अपनी बहन की हत्या की थी, मिसेज बाजवा।" उसने सीधा सवाल किया- "अब इस बारे में बातें करना चाहती हो?"

लतिका ने उसकी ओर देखा।

-"मैं अपनी बहन से प्यार करती थी। मेरा कोई इरादा नहीं था....।"

-"लेकिन उसे शूट तो किया था?"

-"वो एक दुर्घटना थी। मेरे हाथ में गन थी वो चल गई। मीना मेरी ओर देख रही थी। वह कुछ नहीं बोली बस नीचे गिर गई।"

-"अगर तुम उससे प्यार करती थी तो शूट क्यों किया?"

-"इसमें मीना की ही गलती थी। मीना को उसके साथ नहीं जाना चाहिए था। मैं जानती हूं तुम सब आदमी कैसे होते हो। तुम लोग जानवरों की तरह हो। अपने आप को नहीं रोक सकते। लेकिन औरत रोक सकती है। मीना को भी उसे रोक देना चाहिए था। आगे नहीं बढ़ने देना चाहिए था। मैंने इस बारे में काफी विचार किया है। जब से यह हुआ है सोचने के अलावा कुछ नहीं किया। यहां तक कि सोई भी नहीं। पूरा हफ्ता घर की सफाई करती और सोचती रही हूँ। मैंने पहले यह घर साफ किया फिर अपने पिता का और फिर इसे फिर से साफ किया। इस पूरे दौर में एक ही नतीजे पर पहुंची हूं- इसमें मीना का ही कसूर था। इसके लिए पापा या आकाश को दोष नहीं दिया जा सकता। वह आदमी है।"

-"लेकिन यह हुआ कैसे? तुम्हें याद है?"

-"अच्छी तरह नहीं। मैं बहुत ही ज्यादा सोचती रही हूं। मेरा दिमाग इतनी तेजी से काम करता है कि याद करने का वक्त ही नहीं मिला।"

-"यह इतवार को हुआ था?"

-“इतवार की सुबह-सवेरे। लेक पर लॉज में। मैं वहां मीना से बात करने गई थी। मेरा इरादा बस बातें करने का ही था। वह हमेशा इतनी बेफिक्र और लापरवाह रही थी उसे एहसास ही नहीं था कि मेरे साथ क्या कर चुकी थी। उसे किसी ऐसे शख्स की जरूरत थी जो उसके दिमाग को सही कर सके। जो कुछ चल रहा था मैं उसे चलने नहीं दे सकती थी। मुझे कुछ करना ही था।”

-“तुम्हारा मतलब है, इस बारे में तुम्हें तभी पता चला था?”

-“मैं महीने से जानती थी। मैंने देखा था, आकाश उसे किस ढंग से देखता था और मीना क्या करती थी। वह अपनी कुर्सी पर बैठा होता था और मीना उसके पास यूं गुजरती थी कि उसकी शर्ट या स्कर्ट उसके घुटने से छू जाती थी। दोनों एक दूसरे को चोर निगाहों से देख कर मुस्कराते रहते थे। मेरी मौजूदगी उन्हें अखरती सी लगती थी। दोनों हर वक्त एकांत पाने के मौके की तलाश में रहते थे। फिर उन्होंने वीकएंड ट्रिप्स पर जाना शुरू कर दिया। पिछले शनिवार भी यही किया। आकाश ने कहा था, वह एक मीटिंग अटेंड करने विशालगढ़ जा रहा था। मैंने विशालगढ़ उस होटल में फोन किया तो पता चला वह वहां था ही नहीं। मीना भी यहां नहीं थीं। मैं जानती थी, दोनों साथ थे। लेकिन कहां थे, यह नहीं जानती थी। फिर शनिवार रात में आधी रात के बाद कांती लालयहां आया। मैं सोयी नहीं थी। बिस्तर पर पड़ी यही सोच रही थी। जब कांती लालने मुझे बताया तो सब कुछ मेरी आंखों के सामने घूम गया। एक ही पल में मेरी पूरी जिंदगी मेरे हाथों से फिसल गई। वे दोनों पहाड़ों पर लॉज में एक दूसरे की बाहों में थे और मैं यहां घर में अकेली पड़ी थी।”

-“कांती लालने तुम्हें क्या बताया था?”

-“उसने बताया कि मोती झील तक मीना का पीछा किया था। और उसे आकाश के साथ देखा था। रीछ की खाल जैसे कारपेट पर दोनों फायर प्लेस के सामने थे। आग जल रही थी और उनके शरीर पर कोई कपड़ा नहीं था। मीना हंस रही थी और उसे नाम से बुला रही थी। कांती लालकाफी शराब पिए हुए था और आकाश से उसे नफरत थी लेकिन वह सच बोल रहा था। मैं जानती थी वह सच बोल रहा था। उसके जाने के बाद में बैठी सोचती रही क्या किया जाए। रात कब गुजर गई पता नहीं चला। फिर चर्च की घंटियां बजने लगीं। मैंने अपनी कई ईसाई सहेलियों की शादियां अटैंड की थीं। उन लोगों में शादी पर चर्च में वैडिंग बैल्स बजायी जाती हैं। उस रोज मुझे लगा मानों वो कोई संकेत था- मेरी अपनी वैडिंग बैल्स थी। मैं कार लेकर लेक की ओर रवाना हो गई। तमाम रास्ते में घंटियां बजती रहीं। जब मैं मीना से बात कर रही थी तब भी मेरे कानों में बज रही थीं। अपनी खुद की आवाज सुनने के लिए मुझे चिल्लाना पड़ा। वे तब तक बजनी बंद नहीं हुईं जब तक की गन चल नहीं गई।”

वह सिहरन सी लेकर चुप हो गई।

-"जब यह हुआ तुम्हारा पति कहां था?"

-"वहां नहीं था। मेरे पहुंचने से पहले जा चुका था।"

-"तुम्हें गन कहां से मिली? अपने पिता से?"

-"उसी की रिवॉल्वर थी। लेकिन उसने मुझे नहीं दी। मीना ने दी थी।

-"तुम्हारी बहन ने दी थी?"

-"हां। उसी ने दी होगी। मैं जानती हूं, उसके पास थी। फिर वो मेरे हाथ में आ गई।"

-"तुमने ऐसा क्यों किया?"

-"पता नहीं। याद नहीं आ रहा।" उसका चेहरा पूर्णतया भावहीन था- "सोचने की कोशिश करती हूं तो मीना के चेहरे और घंटियों की आवाजों के अलावा कुछ याद नहीं आता। हर एक बात इतनी तेजी से गुजर जाती है कि मैं पकड़ नहीं पाती। गन चल गई और मैं आतंकित सी उसकी लाश के पास खड़ी रही। कई सेकेंड तक मैंने सोचा फर्श पर मैं मरी पड़ी थी। फिर वहां से भाग आई।"

-"लेकिन तुम दोबारा वापस गईं थीं?"

-"हां सोमवार को। मीना का अंतिम संस्कार करने गई थी। उसे जला तो नहीं सकती थी। इसलिए मैंने सोचा, अगर उसे दफना दिया जाए तो उसके वहां पड़ी होने का ख्याल हर वक्त मुझे नहीं सताएगा।"

-"क्या उस वक्त थापा लॉज में था या जब तुम लाश के पास थी तब आ गया था?"

-"वह तभी आया था जब मैं वहां थी। मैं मीना को घसीटकर उसकी कार तक ले जाने की कोशिश कर रही थी। थापा ने कहा वह मेरी मदद करेगा। उसका कहना था लाश को वहां नहीं छोड़ा जा सकता। क्योंकि इस तरह उस पर मीना को शूट करने का शक किया जाएगा। वह जंगलों में मुझे एक ऐसी जगह ले गया जहां मैं उसे दफना सकती थी। फिर एक बूढ़ा हम पर जासूसी करने आ पहुंचा।" उसकी आंखों में किसी क्रोधित बच्चे जैसे भाव उत्पन्न हो गए- "यह उस बूढ़े का दोष था कि मैं अपनी बहन को दफना भी नहीं सकी। उसी कमबख्त की वजह से मैं गिर पड़ी। मेरे घुटने में चोट आ गई।"

-"और तुम्हारी सैंडल की हील भी निकल गई?"

-"हां। तुम्हें कैसे पता चला? मीना के और मेरे पैरों का साइज एक ही था। थापा ने कहा अगर मैं उसके सैंडलों से अपने सैंडल बदल लूं तो कभी किसी को फर्क का पता नहीं चलेगा। फिर उसके सैंडल मैं उसके फ्लैट में छोड़ आई जब हम एवीडेंस खत्म करने गए थे।"

-"कैसा एवीडेंस।"

-"यह थापा ने मुझे नहीं बताया। बस इतना कहा था मीना के अपार्टमेंट में मेरे खिलाफ एवीडेंस था।"

एवीडेंस तुम्हारे खिलाफ नहीं, खुद थापा के खिलाफ था। तुम्हारी बहन उसे ब्लैकमेल कर रही थी।"

-"नहीं। तुम गलत कह रहे हो। मीना ऐसी नहीं थी। यह कर पाना उसके वश की बात नहीं थी। हालांकि सोच-विचार वह नहीं करती थी लेकिन जानबूझकर कोई बुरा काम करने वाली भी वह नहीं थी। वह बुरी लड़की नहीं थी।"

-"बुरा कोई नहीं होता लेकिन लालच और चाहत जैसी चीजें किसी को भी बुरा बना देती है।"

-"नहीं। तुम नहीं समझ सकते। थापा मेरी मदद कर रहा था। उसने कहा था, मीना की गलती की सजा मुझे नहीं मिलनी चाहिए। मीना अपनी कार की डिग्गी में थी। उसने कहा, वह कार को ऐसी जगह छोड़ आएगा जहां एक लंबे अर्से तक किसी को उसका पता नहीं चलेगा।"

-"अपनी इस मदद के बदले में वह तुमसे क्या कराना चाहता था? एक और दुर्घटना?"

-"याद नहीं।"

राजकुमार को वह टालती नजर आई।

-"मैं याद दिलाता हूं।" वह बोला- "थापा ने तुमसे गुरुवार शाम को हाईवे पर रहने को कहा था। तुमने कांती लालका ट्रक रुकवाकर किसी तरह उसे नीचे उतारना था। तुम अपने पिता के घर गईं- एक तो अपने लिए एलीबी जुटाने और दूसरे उससे उसकी कार मांगने- सफेद एम्बेसेडर। तुम्हारे लिए अपने पिता की कार ले जाना ही क्यों जरूरी था?"

-"थापा ने कहा था, कांती लालउसे दूर से देखकर भी पहचान लेगा।"

-"उसने हर एक काम पूरे सोच-विचार के साथ किया था। लेकिन क्या वह जानता था तुम्हारे पास कांती लालकी हत्या करने की भी तगड़ी वजह थी?"

-“कैसी वजह? मैं समझी नहीं।”

-“अगर कांती लालपहले ही नहीं जान गया था तो तुम्हें देखकर समझ सकता था कि तुम अपनी बहन की हत्या कर चुकी थी।”

-“मेहरबानी करके ऐसा मत कहो।” वह यूं बोली मानों राजकुमार ने कोई ऐसा खौफनाक जीव कमरे में छोड़ दिया था जो उसे दबोच सकता था- “यह लफ्ज इस्तेमाल मत करो।”

-“यह एकदम सही लफ्ज है- तीनों वारदातों के लिए। तुमने कांती लालको खामोश करने के लिए उसकी हत्या की थी। उसे खाई में धकेलकर तुम कार से अपने पिता के घर लौट गईं- अपनी एलीबी को पूरा करने के लिए। इस तरह तुम्हारे खिलाफ एक ही गवाह बचा- थापा।”

-“तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे यह सब योजना बनाकर किया गया था। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं था। जब कांती लालट्रक से उतरकर कार में आकर बैठा तो जो भी पहली बात मेरे दिमाग में आई मैंने कह दी- कि पापा का एक्सीडेंट हो गया था। कांती लालको शूट करने का कोई इरादा मेरा नहीं था लेकिन सीट पर रखी रिवॉल्वर देखकर उसे शक हो गया। उसने रिवॉल्वर पर झपटने की कोशिश की मगर उससे पहले ही मैंने रिवॉल्वर उठा ली। मुझे उस पर जरा भी भरोसा नहीं था। फिर उस पर रिवॉल्वर ताने रहकर मैं कार नहीं चला सकती थी। वह दोबारा रिवॉल्वर पर झपटा।”

-“और वो फिर चल गई?”

-“हां। वह सीट पर गिरकर अजीब सी सांसे लेने लगा। उसकी घरघराहट और छाती पर बहते खून को बरदाश्त मैं नहीं कर सकी। इसलिए उसे कार से गिरा दिया।”

-“रिवॉल्वर एक बार फिर चली थी। तीसरी दफा थापा के ऑफिस में। तुम्हें याद है?”

-“हां। मीना और कांती लालके साथ जो हुआ वह दुर्घटना थी- मैं जानती हूं तुम इस पर यकीन नहीं करोगे। लेकिन थापा को मैंने जान-बूझकर मारा था। मुझे ऐसा करना पड़ा। क्योंकि उसने आकाश को मीना और कांती लालके बारे में बता दिया था।”

आकाश को जिल्लत और बदनामी से बचाने के लिए मुझे उसको खामोश करना पड़ा ताकि दूसरों को ना बता सके। आकाश ने उस रात मुझे घर में लॉक कर दिया था लेकिन उसे बाहर जाना पड़ा। मैं एक खिड़की तोड़कर बाहर निकली। मोटल पहुंची तो थापा अपने ऑफिस में बैठा मिला। मैंने उसे शूट कर दिया। हालांकि ऐसा करना मुझे अच्छा नहीं लगा क्योंकि उसने मेरी मदद की थी। लेकिन मुझे करना पड़ा- “आकाश की खातिर।”

-“तीन हत्याएं सिर्फ तीन गोलियों से। एक बार भी नहीं चूकीं। इतना अच्छा निशाना लगाना तुमने कहां से सीखा?”

-“पापा ने सिखाया था। आकाश भी मुझे शूटिंग रेंज में ले जाया करता था।”

-“वो रिवॉल्वर अब कहां है?”

-“आकाश के पास। मैंने जहां छिपाई थी वहां से उसने निकाल ली। मुझे खुशी है रिवॉल्वर उसके पास है।”

-“क्यों?”

-“मैं नहीं चाहती कुछ और हो। मुझे नफरत है- खून खराबे से। हमेशा रही है। जब मैं छोटी थी तो चूहेदानी से चूहा बाहर नहीं निकाल सकती थी। जब तक रिवॉल्वर मेरे पास रही मुझे चैन नहीं मिला।”

-“अब तुम्हें याद आया रिवॉल्वर तुम्हारे हाथ में कैसे आई?”

-“मैंने बताया तो था, मीना ने दी थी।”

-“लेकिन क्यों? क्या उसने कुछ कहा भी था?”

-“हां, याद आया। अजीब सी बात थी।”

-“क्या कहा उसने?”

-“वह मुझ पर हंसी थी। मैंने कहा था, अगर उसने पापा को नहीं छोड़ा तो मैं अपनी जान दे दूंगी। खत्म कर लूंगी खुद को।”

-“पापा को नहीं छोड़ा? तुम्हारा मतलब है मिस्टर भंडारी.....।”

-“नहीं। आकाश। मैंने कहा था- आकाश को छोड़ दो वह हंसती हुई बेडरूम में चली गई। रिवॉल्वर लेकर लौटी और मुझे देकर बोली- लो खत्म कर लो खुद को यही हम सबके लिए ठीक रहेगा। रिवॉल्वर लोडेड है। शूट कर लो खुद को। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। उसे शूट कर दिया।”

-“क्योंकि वह तुम्हें तबाह कर रही थी- तुम्हारे पति को तुमसे छीनकर?”

-“हां।”

-“लेकिन तुम्हारा पति भी तो उतना ही कसूरवार था। उसने तुम्हारे साथ धोखा किया था। बेवफाई की थी। फिर उसे क्यों छोड़ दिया तुमने? क्या वह सजा पाने का हकदार नहीं है?”

-“नहीं। मैं यह नहीं मानती। उसकी गलती तब होनी थी अगर वह मीना पर किसी तरह का दबाव डालकर उसे वो सब करने के लिए मजबूर करता। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। मीना अपनी मर्जी से अपनी खुशी के लिए वो सब कर रही थी। जबकि वह चाहती तो खुद को रोक सकती थी। औरत खुद को रोक सकती है। आदमी के वश की बात यह नहीं है।”

अजीब थ्योरी थी।

-“तुम्हारी यह मान्यता कब से है? शुरू से?”

-“नहीं। शुरु में तो मैं औरत-मर्द दोनों को बराबर का कसूरवार समझती थी।”

-“फिर यह मान्यता कब बदली?”

-“कुछेक महीने पहले।”

-“क्यों?”

-“मैंने इस पर काफी विचार किया था। सलाह भी की थी।”

-“किससे?”

-“आकाश से। एक बार साक्षी से भी बातें की थीं।”

-“थापा की पत्नि से?”

-“हां। उन दोनों का भी यही कहना था कि सजा की हकदार ऐसे हालात में औरत ही होती है।”

-“इसीलिए तुमने मीना को सजा दे दी?”

-“हां।”

-“क्या तुम अपने पति से प्यार करती हो?”

-“पता नहीं।”

-“तुम्हारा पति तुमसे प्यार करता है?”

-“पहले तो करता था।”

-“तुमने बाजवा से शादी क्यों की?”

-“पता नहीं।”

-“तुमसे शादी करने से पहले क्या बाजवा किसी और से प्यार करता था?”

-“साक्षी से करता था।”

-“तुम्हें यह कब पता चला?”

-“थोड़े ही दिन हुए हैं।”

-“अगर वह साक्षी से प्यार करता था तो तुमसे शादी क्यों की?”

-“पता नहीं।”

बाहर एक कार रुकने की आवाज सुनाई दी।

-“आकाश आ गया।” लतिका ने धीरे से कहा।

राजकुमार अपनी रिवॉल्वर निकाले सतर्कतापूर्वक इंतजार कर रहा था।

बाजवा प्रवेश द्वार से भीतर दाखिल हुआ- सर झुकाए थका हारा सा- वह यूनीफार्म पहने था बिना कैप और बैल्ट। कंधों पर स्टार नहीं थे। गन हौलेस्टर भी नजर नहीं आ रहा था। लेकिन पेंट की दायीं जेब जिस ढंग से उभरी हुई थी उससे जाहिर था उसमें गन मौजूद थी।

-“मैं जानता था।” वह बोला- “तुम यहीं मिलोगे?”

-“मुझे यहां देखकर तुम्हें ताज्जुब नहीं हुआ?”

-“नहीं।”

-“डर भी नहीं लग रहा?”

-“नहीं।”

राजकुमार ने पहली बार नोट किया बाजवा की आवाज में अब न तो वो रोब था और ना ही चेहरे पर अधिकारपूर्ण भाव।

-“तुम्हारी पत्नि बहुत अच्छी निशानेबाज है।”

बाजवा ने सर झुकाए खड़ी लतिका को देखा।

-“जानता हूं।” उसने कहा और हाथ ऊपर उठाकर बोला- “मेरी जेब में गन है, निकाल लो।”

राजकुमार ने वैसा ही किया। वो चौंतीस कैलीबर की पुरानी रिवॉल्वर थी। क्लीन, ऑयल्ड और लोडेड।

-“यह वही रिवॉल्वर है?”

-“हां।” बाजवा ने पुन पत्नि की ओर देखा- “तुमने इसे बता दिया?”

लतिका ने सर हिलाकर हामी भर दी।

-“तो तुम जान गए हो, राजकुमार?” बाजवा ने पूछा।

-“हां। तुम कहां थे?” राजकुमार ने दोनों रिवॉल्वर कोट की जेबों में डालकर पूछा।

-“हाईवे पर। मैं सब-कुछ छोड़कर भाग जाना चाहता था। दूर कहीं ऐसी जगह जहां नए सिरे से शुरुआत कर सकूं। लेकिन यह बेवकूफाना चाहत ज्यादा देर मुझे नहीं बांध सकी। लतिका को इस सबका सामना करने के लिए अकेली मैं नहीं छोड़ सका। इससे ज्यादा कसूरवार मैं हूं।”

-“मैं अपने कमरे में जा रही हूं, आकाश।” लतिका कराहती सी बोली- “तुम्हें इस तरह बातें करते मैं नहीं सुन सकती।”

-“भागोगी तो नहीं?”

-“नहीं।”

-“खुद को चोट भी नहीं पहुंचाओगी?”

-“नहीं।”

-“जाओ।”

लतिका कमरे से निकल गई।

राजकुमार प्रतिवाद करने ही वाला था कि बाजवा बोल पड़ा- “वह कहीं नहीं जाएगी। वैसे भी ज्यादा वक्त उसके पास नहीं है।”

-“तुम्हें अभी भी उसकी फिक्र है?”

-“वह बच्चे की तरह है राजकुमार। और यही सारी मुसीबत है। उसे दोष मैं नहीं दे सकता। कसूर मेरा है। मैं ही जिम्मेदार हूं। लतिका ने जो भी किया अपने अंदरूनी दबाव के तहत किया था। वह नहीं जानती थी क्या कर रही थी। लेकिन मैं अच्छी तरह जानता था और शुरू से जानता था क्या कर रहा था। फिर भी करता चला गया। उसी का नतीजा यह है।” वह एक कुर्सी पर बैठ गया। कुछेक पल अपने हाथों को देखता रहा फिर बोला- “मुझे गुरुवार रात को पता चला जब थापा ने बताया लतिका क्या कर चुकी थी। मैं मोटल में उसके पास था जब उसने इस बारे में इशारतन मुझे बताया। बाद में जब उसके घर पहुंचा तो उसने सब कुछ मेरे मुंह पर दे मारा। तभी मुझे पहली बार पता चला मीना मर चुकी थी।

जो मैंने किया है इस तरह उसकी कोई सफाई मैं नहीं दे रहा हूं। यह अलग बात है अगर मैं सही ढंग से सोच रहा होता तो ऐसा नहीं करना था। थापा की बातों से इतना तगड़ा शॉक मुझे लगा जिसके लिए जरा भी तैयार मैं नहीं था। मीना से मेरी आखिरी मुलाकात लेक पर हुई थी। हम दोनों खुश थे.... बेहद खुश।" उसने माथे पर झलक आया पसीना साफ किया- "लेकिन उस रात थापा के घर ऐसा भूचाल मेरी जिंदगी में आया कि सब कुछ तबाह हो गया। मेरी चहेती मर चुकी थी। मेरी पत्नि ने उसे मार डाला। फिर एक और हत्या उसने कर डाली। थापा ने अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। मुझे रजामंद करने के लिए जो भी कह सकता था कह डाला। मुझे उसकी बातों पर यकीन नहीं आया। फिर मैंने लतिका से पूछा तो उसने हर एक बात कबूल कर ली- जो भी उसे याद थी। यही वजह थी कि उस रात कोई राह मुझे नहीं सूझ सकी। मैं बाई पास पर गया और जो थापा कराना चाहता था कर दिया। तुम्हारा अंदाजा बिल्कुल सही था। मैंने अपने आदमियों को रिलीव करके ट्रक अपने इलाके से गुजर जाने दिया। इस पूरे सिलसिले में यही मेरे लिए सबसे शर्मनाक बात है।"

-"अँटनी वापस तुम्हारे इलाके में आ गया है।"

-"जानता हूं। मगर इससे वो तो नहीं बदल सकता जो मैंने किया था।"

बाजवा पीड़ित स्वर में बोला- "पिछले अड़तीस घंटों में मैंने इस पूरे एरिये का चप्पा-चप्पा छान मारा। यह जाहिर करते हुए कि अँटनी और उस ट्रक को ढूंढ रहा था। जबकि असल में मुझे मीना की लाश की तलाश थी। थापा बेहद चालाक था। उसने मुझे नहीं बताया कि लाश कहां थी। यह उसका एक और होल्ड था मेरे ऊपर। मीना और कांती लालकी हत्याओं के बारे में पता चलने के बाद मैं लतिका को उस रात घर छोड़ने की बजाय साइकिएटिस्ट के पास ले जाना चाहता था। लेकिन ऐसा नहीं कर सका। क्योंकि थापा के इशारे पर नाचने को मजबूर था।"

-"तुम्हारी पत्नि वाकई साइको है?"

-"वह इमोशनली डिस्टर्ब्ड है। तुम्हें अबनॉर्मल नहीं लगती?"

राजकुमार ने जवाब नहीं दिया।

-"जब से मैं उसे जानता हूं कभी पूरी तरह नॉर्मल नहीं रही। जब भंडारी के घर में थी तो भंडारी के सनकीपन की वजह से कभी खुश नहीं रही। खुद को उपेक्षित और फालतू की चीज समझती रही.....।"

-"यह जानते हुए भी तुमने उससे शादी कर ली।?"

-“मैं खुद भी जज्बाती आदमी हूं।” संक्षिप्त मौन के पश्चात बोला- शायद इसलिए उसकी ओर खींचता चला गया। शादी के बाद सब ठीक ही चल रहा था। और अगर बच्चे पैदा हो जाते तो शायद बिल्कुल ठीक चलता रहना था। बच्चों की कमीने हमारी जिंदगी को नीरस कर दिया.....।”

-“क्या तुम लतिका को प्यार नहीं करते थे?”

-“करता था। मगर दिल से कभी नहीं कर पाया।”

-“लतिका दिमागी तौर पर एक बीमार लड़की थी। उसे प्यार भी तुम नहीं करते थे फिर भी तुमने उससे शादी की। क्यों? क्या मजबूरी थी?”

बाजवा ने सर झुका लिया।

लतिका के घर के हालात और उसकी अपनी हालत की वजह से मुझे उससे हमदर्दी थी। एक शाम बारिश से बचने के लिए मैं उसके घर गया। वह घर में अकेली थी। एकांत में न जाने कैसे मुझ पर शैतान सवार हो गया। उसने बहुत रोका। बराबर इंकार करती रही। मगर मैं खुद को नहीं रोक सका और उसे अपनी हवस का शिकार बना डाला। उसमें लतिका की कोई मर्जी नहीं थी। फिर इत्तफाक से उसे हमल ठहर गया और उसने अबार्शन कराने से इंकार कर दिया.....।”

-“यानी तुमने उससे रेप किया था फिर तुम्हें एक शरीफ आदमी और ईमानदार अफसर की अपनी पोजीशन को बचाने के लिए मजबूरन शादी करनी पड़ी।”

-“ऐसा ही समझ लो।”

-“मीना तुम्हारी जिंदगी में कब और कैसे आई?”

-“मेरा ख्याल है मीना को जब मैंने पहली बार देखा तभी उसकी ओर आकर्षित हो गया था। लेकिन यह बात मेरे दिमाग के किसी कोने में दबी रही। जब वह हमारे साथ रह रही थी तब और बाद में भी मुद्दत तक वो बात उसी तरह दबी रही। शायद इसीलिए कि मीना कमसिन थी और मैं उसके साथ वो सब नहीं दोहराना चाहता था जो उसका बाप कर चुका था। फिर वह जवान होती गई। और एक मस्त बेफिक्र और आजाद खयाल बेइंतेहा खूबसूरत युवती बन गई। पिछले साल उसके प्रति मेरा आकर्षण एकाएक जाग उठा। तब तक हमारी विवाहित जिंदगी पूरी तरह नीरस हो चुकी थी और मैं लतिका से निराश होकर फ्रस्टेशन का शिकार हो रहा था। हालांकि मीना अलग फ्लैट में रहने लगी थी मगर हमारे पास आती रहती थी। मैं उसे प्यार करने लगा। मीना मानो तैयार बैठी थी। उसके दिल में भी मेरे लिए यही जज्बा था। हमारे ताल्लुकात कायम हुए और दिनों दिन गहरे हो गए...।”

-“लतिका की जिस बीमारी का जिक्र तुमने किया है। उसके लिए वह कभी हॉस्पिटल में रही है?”

-“एक बार शादी के कुछेक महीने बाद उसने खुदकुशी करने की कोशिश की थी। तब करीब हफ्ता भर हॉस्पिटल में रही थी। और डाक्टरों का कहना था इसकी वजह उसकी वो प्रेगनेंसी थी। शादी से पहले जिस बच्चे को पैदा करने की जिद करती रही थी। शादी के दो-तीन महीने बाद कहने लगी उसे इस दुनिया में नहीं लाना चाहती। क्योंकि वह शादी से पहले ही उसके पेट में आ गया था इसलिए उसकी अपनी निगाहों में वह हरामी और उसकी अपनी बदकारी का सबूत था। फिर एक रोज पूरी बीस नींद की गोलियां निगल लीं। मैं सही वक्त पर उसे हॉस्पिटल ले गया और वह बच गई।”

-“और बच्चे का क्या हुआ?”

-“उस हादसे के महीने भर बाद लतिका एक रोज बाथरूम में फिसल कर बाथटब पर जा गिरी। तेज ब्लीडिंग शुरू हो गई। अस्पताल पहुंचे तो डाक्टरों ने उसे रोकने की कोशिश की मगर कामयाब नहीं हो सके। आखिरकार अबार्शन ही करना पड़ा। लेकिन उसके बाद उसकी दिमागी हालत काफी सुधर गई।”

-“क्या वह साइकिएट्रिक ट्रीटमेंट ले रही है?”

-“हां। लेकिन सही ढंग से नहीं। कई-कई रोज दवाई नहीं खाती।”

-“फिर भी उसे उसकी दिमागी हालत सही न होने के आधार पर इन तीनों हत्याओं के आरोप से बचाया जा सकता है।”

-“उस हालत में उसे मैंटल हॉस्पिटल में रहना होगा।”

-“क्या तुमने त्यागी को यह सब बता दिया?”

-“हां और नौकरी से इस्तीफा भी दे दिया।”

-“तुम्हारे ससुर भंडारी.....।”

-“भंडारी मर चुका है।”

राजकुमार बुरी तरह चौका।

-“कैसे?”

-“बाजवा के ऑफिस में जबरदस्त हार्ट अटैक हुआ और कुछेक मिनटों में दम तोड़ दिया।”

राजकुमार हंसा।

-"यानी एकदम लाइन क्लीयर। मानना पड़ेगा तुम किस्मत के धनी हो बाजवा।"

-"क्या मतलब?"

-"तुम्हारी पत्नी लतिका अपने बाप भंडारी की अब इकलौती वारिस है। लेकिन उसे पागलखाने में रहना होगा। और उसके पति होने के नाते उसके बाप भंडारी के बिजनेस, जायदाद वगैरा तुम्हारे हाथ में रहेंगे। तुम्हारी तो लॉटरी खुल गई।"

-"क्या बक रहे हो, तुम?" बाजवा चिल्लाया।

-"चिल्लाओ मत। मैं असलियत बयान कर रहा हूं। भंडारी की दौलत के दम पर अब तुम अपनी पुरानी प्रेमिका और ताजा विधवा हुई साक्षी के साथ बिना किसी रोक-टोक के ऐश कर सकते हो। वह आज भी तुम्हारा इंतजार कर रही है। तुम दोनों के रास्ते की तमाम रुकावटें दूर हो चुकी हैं।"

-"तुम पागल तो नहीं हो।"

-"बिल्कुल नहीं। तुमने अपनी जो कहानी सुनाई है। उसमें कितनी सच्चाई है, मैं नहीं जानता और न हीं जानना चाहता हूं। तुमसे जरा भी हमदर्दी मुझे नहीं है।" राजकुमार हिकारत भरे लहजे में कह रहा था- "तुम निहायत कमीने, मक्कार, खुदगर्ज और अय्याश आदमी हो। लतिका को अपनी हवस का शिकार बनाकर उसे पागल कर दिया। उससे दिल भर गया तो मीना की बाँहों में सरक गए। साथ ही अपनी जवानी के पहले प्यार को भी दोबारा और मुकम्मल तौर पर पाने की कोशिश करते रहे। तमाम बखेड़े की जड़ मीना के साथ ताल्लुकात कायम करने के पीछे तुम्हारा मकसद उसके साथ महज ऐश करना नहीं था। यह तुम्हारी लांग टर्म प्लानिंग का एक अहम हिस्सा था। इसलिए तुमने अपने ताल्लुकात को लतिका पर जाहिर होने दिया। लतिका के साथ इतने अर्से तक रहने की वजह से उसकी सोच और सोचने के ढंग से तुम बखूबी वाकिफ हो चुके थे। इसलिए तुमने औरत और मर्द के नाजायज ताल्लुकात के बारे में यह मान्यता, कि इस मामले में औरत ही कसूरवार और सजा की हकदार होती है, इस ढंग से और इतनी गहराई के साथ लतिका के दिमाग में बैठा दी कि उसने मीना की जान लेने का फैसला कर लिया। इसमें लतिका ने भी तुम्हारी मदद की। इत्तिफाक से ऐसे हालात पैदा हुए कि तुम्हें कुछ नहीं करना पड़ा। तुम जानते थे लतिका किस स्थिति में क्या करेगी। उसने मीना की हत्या कर दी। तुम्हारी योजना का पहला चरण पूरा हो गया। तुम लतिका से आजाद हो गए।" क्योंकि लतिका के लिए दो ही जगह रह गई- "जेल या पागलखाना। कांती लालकी हत्या तो इस सिलसिले की सर्वथा अनपेक्षित घटना थी। लेकिन साक्षी को आजाद कराने के लिए तुमने फिर लतिका के दिमाग में यह बात बैठा दी कि थापा की वजह से तुम्हें जिल्लत और रुसवाई का सामना

करना पड़ सकता था। उसका जिंदा रहना खतरनाक था। इसलिए तुम लतिका को यहां अकेली छोड़ गए थे। खुद को इससे अलग और अनजान जाहिर करने के लिए घर को ताला भी लगा गए। मगर तुम जानते थे लतिका के दिमाग में थापा की जान लेने की जो बात बैठ गई थी। उसे वह पूरा करके ही दम लेगी। यही हुआ भी। लतिका खिड़की तोड़कर भाग गई। थापा मारा गया और तुम्हारी साक्षी भी आजाद हो गई। अपनी योजना के मुताबिक तुम दो रिमोट कंट्रोल मर्डर करने में कामयाब हो गए। तुम्हारी योजना पूरी तरह कामयाब हो गई। खुद को एक बार फिर शरीफ और ईमानदार साबित करने के लिए तुमने नौकरी से इस्तीफा दे दिया। ताकि इसे तुम्हारी नेकनियत मानकर तुम्हारा विभाग और अदालत में जज, अपनी कहानी के दम पर जिसकी हमदर्दी हासिल करने में तुम कामयाब हो जाओगे तुम्हें बेगुनाह करार दे दे।"

-"तुम मुझ पर बेबुनियाद इल्जाम लगा रहे हो। मेरे खिलाफ तुम्हारे पास सबूत क्या है?"

राजकुमार ने उसे घूरा।

-"कोई नहीं। तुम तो खून कर चुके हो मगर कानून तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तुम साक्षी के साथ लतिका के बाप की दौलत पर ऐश करोगे और बेचारी लतिका जेल में या पागलखाने में बाकी जिंदगी गुजारेगी।"

-"बिल्कुल यही होगा।" बाजवा हंसा- "लतिका की जगह पागलखाने में है।"

-"और साक्षी की जगह तुम्हारी बांहों में है?"

-"हां।"

-"तुम वाकई शैतान हो। तुम्हें जिंदा रहने का कोई हक नहीं है।"

-"तुम जो चाहो कर सकते हो। मुझे कोई परवाह नहीं है। मैं जो करना चाहता था कर दिया। अब मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

राजकुमार विवशतापूर्वक उसे देख रहा था। उसका रोम-रोम नफरत से सुलग रहा था। अचानक उसकी निगाहें बाजवा के पीछे ड्राइंग रूम के अंदर की ओर खुलने वाले दरवाजे की ओर उठ गई।

वहां लतिका बुत बनी खड़ी थी। कागज की तरह सफेद चेहरा चमकती आंखें और सीधी तनी गरदन। स्पष्ट था वह काफी कुछ सुन चुकी थी।

-"जानते हो राजकुमार।" बाजवा ने पूछा- "इसे क्या कहते हैं?"

-"नहीं।"

-"इसे परफैक्ट क्राइम कहते हैं। कहीं कोई सबूत नहीं। लूजएंड नहीं। मैंने साबित कर दिया है परफैक्ट क्राइम महज किताबी चीज नहीं है।"

तभी टेलीफोन की घंटी बजने लगी।

बाजवा मुस्कराता हुआ उठा। टेलीफोन उपकरण दूर कोने में रखा था।

-"मैं जा रहा हूं बाजवा।" राजकुमार ने कहा।

-"जाओ।"

राजकुमार तेजी से बाहर निकला। बाजवा द्वारा दी गई रिवॉल्वर निकालकर उससे तीन गोलियां निकाली और रिवॉल्वर को रुमाल से पोंछकर कुछेक सेकंडो मे ही पुन: अंदर चला गया।

घंटी अभी बज रही थी।

-"तुम फिर वापस आ गए?" टेलीफोन उपकरण के पास जा पहुंचे बाजवा ने पलटकर पूछा।

राजकुमार ने रुमाल से पकड़ी रिवॉल्वर उसे दिखाई।

-"यह वापस करने आया हूं।"

-"रख दो।" उसने लापरवाही से कहा और रिसीवर उठा लिया- "हेलो?"

राजकुमार देख चुका था लतिका अभी भी उसी तरह खड़ी थी।

उसने रिवॉल्वर सोफे पर डाल दी।

लतिका फौरन अपने स्थान से हिली। नींद में चलती हुई सी नि:शब्द आगे आई। राजकुमार पुनः तेजी से बाहर निकल गया और दीवार की आड़ लिए छुप गया । वह कोई खतरा उठाना नहीं चाहता था।

-"हां.....सब ठीक हो गया.....।" बाजवा माउथपीस में कह रहा। सोफे की तरफ उसकी पीठ थी- ".....तुम जब चाहो आ सकती हो.....।"

लतिका सोफे पर पड़ी रिवॉल्वर उठा चुकी थी।लतिका ने रिवॉल्वर उठाकर बेडरूम की और रुख किया। अब वो बाजवा के फोन रिसीवर नीचे रखने के इंतजार करने लगी। कुछ पलो बाद बाजवा ने रिसीवर नीचे रख दिया।लतिका ने बाजवा को आवाज दि..

-"आकाश.....।"

लतिका की आवाज सूनकर बाजवा मूड गया।लतिका के आवाज मे छुपा दर्द उसे महसुस हुआ। एक पल के लिए बाजवा को उसके उपर तरस आ गया।बाजवा लतिका की और चल दिया।

बेडरूम के भीतर बाजवा लतिका के बगल मे बेड पर बैठ गया।लतिका के आंखो मे आंसु देख बाजवा का मन पसिज गया।

"क्या हुआ ?"

"कुछ नही"

"फिर तुम्हारे आंखो मे यह आंसु ?"

लतिका को इसका जवाब न देते बना।दोनो मे से किसीने बात करने की कोशीश नहीं की। कुछ पल युही बित गये। खमोशी को तोडते हुए लतिका ने बात आगे बढाई।

" आकाश ...क्या तुम मुझसे प्यार करते हो?"

अचानक से हुए इस प्रश्न से बाजवा सहम सा गया।वो बस लतिका को देखता रह गया।

" मै जानती हु आकाश... तुम मुझसे प्यार नही करते ! तुमने मुझसे कभी प्यार नही किया। तुम्हे तो हमेशा से मीना से प्यार था। जो सुख तुम्हे अपनी पत्नी को देना चाहिए था वो सुख तुमने मिना को दिया।"

लतिका की बाते बाजवा के दिल पर घाव कर रहे थे।कुछ पल के लिए उसे लतिका से हमदर्दी महसूस हुई।

"आकाश ! में अब शायद किसी मेंटल अस्पताल में जाऊंगी या फिर जेल में । लेकिन जाने से पहले मेरी एक आखरी इच्छा को पूरा करोगे।"

बाजवा से कुछ बोला नही गया।उसने हा में अपनी गर्दन हिला दी।

"आकाश में चाहती हु की तुम मुझे सिर्फ एक बार पत्नी की तरह प्यार करो । मुझे एक आखरी बार पत्नी होने का एहसास दिलाओ। एक आखरी बार मुझे शादीशुदा जिंदगी का सुख दिलाओ । प्लीज ....एक आखरी बार "

लतिका को आगे कुछ नहीं बोला गया। आंखों से बहते आँसूओने उसकी इच्छाओं को प्रकट कर दिया था।लतिका की ऐसी हालत देख बाजवा को उसपर तरस आ गया।मन ही मन उसने लतिका के साथ बिताए आखरी खुशनुमा पलो को याद करने की कोशिश की,लेकिन उसे कुछ याद नही आया।

लतिका के बगल में बैठा बाजवा कंधों पर हाथ रखकर लतिका के गालोँ को सहलाने लगा। मर्दाना हाथो का स्पर्श पाकर लतिका अजीब रोमांच से भर गई। बाजवा ने अपना चेहरा लतिका के कंधों पर रख दिया जो कि लतिका के गालोँ से सट रहा था। लतिका का रोम रोम बाजवा के गर्म साँसोँ से सिहर गया। लतिका के जिस्म की खुशबू बाजवा को मदहोश कर रही थी। बाजवा ने अपना दूसरा हाथ बढ़ाकर लतिका के चेहरे को अपनी तरफ किया जिससे लतिका के होंठ बाजवा के होंठ के काफी निकट हो गए। दोनों की गर्म साँसें टकरा रही थी। लतिका आगे होने वाली स्थिति के चित्रण को याद कर तेज साँसें लेने लगी और उसके होंठ कंपकंपाने लगे। बाजवा ने ज्यादा देर करना उचित नहीं समझा और अपने होंठ लतिका के तपते होंठों से चिपका दिए।लतिका के तो अंग अंग सिहर गए अपने जीवन के इस आखरी चुंबन से। बाजवा ने जैसे ही लतिका के स्तनों पर अपना हाथ रखा, लतिका ने चिहुँक के बाजवा के दोनों हाथों को जकड़ लिया। बाजवा अब और कस के होठोँ को चुसने लगा और स्तनों को धीमे धीमे दबाने लगा।कुछ ही देर में जोरदार चुंबन से लतिका की साँसे उखड़ने लगी थी। मगर बाजवा इन सब से अनभिज्ञ लगातार चूसे जा रहा था। अंततः लतिका बर्दाश्त नहीं कर पाई और अपने होंठ पीछे खींचने लगी । बाजवा के होंठ अलग होते ही लतिका जोर जोर से साँस लेने लगी और सामान्य होने की कोशिश करने लगी। बाजवा के हाथ अभी भी लतिका के स्तनों को सहला रहे थे।

कुछ देर स्तनों को सहलाने के बाद बाजवा ने अपने कपडे उतार दिए। बाजवा ने लतिका के पास आ कर उसकी साड़ी का पल्लू खींच दिया। लतिका की सिसकारी सी निकल गई। अगले ही पल साड़ी जमीन पर बिखरी पड़ी थी। लतिका की पीठ पर एक हाथ रख बाजवा ने उसे अपने से चिपका लिया और ब्लाउज के हुक खोलने लगा। ब्लाउज खुलते ही मध्यम आकार के स्तन बाहर आ गए जो सफेद रंग की ब्रॉ में कैद थे।बाजवा ब्रॉ के ऊपर से ही स्तनों जोर से मसलने लगा।

अगले ही क्षण तेजी से बाजवा ने पेटीकोट का नाड़ा भी खोल दिया। लतिका बेचारी शर्म से बाजवा के सीने से चिपक गई। बाजवा ने भी मौका मिलते ही ब्रॉ भी अलग कर दिया। अब दोनों सिर्फ पेन्टी में चिपके थे।

कुछ ही क्षण में लिंग के दर्द से बाजवा कुलबुलाने लगा। उसने लतिका को गोद में उठा बेड पर सुला दिया। बेड के नीचे से ही बाजवा ने पेन्टी को निकाल दी। बाजवा ने लतिका के दोनों पैरों को मोड़कर सीने से सटा दिया। आगे होने वाले स्थिति को सोचकर लतिका की तो साँसें अब रुक रही थी ।बाजवा ने अपनी उँगली से योनी की दरार को फैला कर अपना लिंग टिका दिया और हल्का धक्का लगाया। मगर लिंग फिसल गया। पुनः उसने योनी और ज्यादा से खोल कर थोड़ा जोर का धक्का लगाया।

लतिका जोर से अपनी आँखें भींचते हुए चिल्ला पड़ी," आआआआआआहहहहह..... ओह ओहओफ्फ ओफ्फ ई ई ईईईईईईई मर गईईईईईई प्लीज निकालीए बाहरररर आहआह..."

बाजवा ने अपना लिंग खींचते हुए एक और झटका दे दिया। इस बार लिंग अंदर तक घुस गया।

"ओफ्फ....माँआआआआईईईईईईई मरररर गईईईईईईईई अब और नहीं सह पाऊंगी। प्लीज बाहर निकालीएएएए" लतिका रोनी सूरत बनाते हुए बोली।

"अच्छा अब नहीं करूँगा।" बाजवा कहते हुए लतिका की होंठ चुसने लगा और स्तन मसलने लगा। कुछ देर चुसने के बाद जब लतिका थोड़ी नॉर्मल हुई तो बाजवा ने लतिका के होठोँ को कस के चुसते हुए अपना लिंग पीछे खींचा और बिना कहे पूरी ताकत से धक्का दे मारा।

"आआआआआआ मम्मी मर गईईईईईईई आह आह ओफ्फ ओह प्लीज मैं आपके पैर पकड़ती हूँ बाहर निकाल लीजिए आआआआइसइस" लतिका की आँखें आँसू से भर गई थी और छूटने की प्रयास कर रही थी।जिंदगी में पहली बार उसे इतना सुखद दर्द हुआ था वो भी आखरी मिलन में। इसकी कल्पना भी नहीं की थी बेचारी ने। ऐसा लग रहा था मानो चाकू से किसी ने उसकी योनी को चीर दिया हो।"

लतिका बेचारी कुछ ना बोल सकी।बाजवा लिंग पेले ही लतिका की स्तनों को मसल रहा था और होंठ लगातार चूसे जा रहा था। काफी देर बाद जब दर्द थोडा कम हुआ तो बाजवा ने अपना पूरा लिंग बाहर निकाला और जोर से अंदर ढकेल दिया।

"आहहहहहह उम्मउम्मउम्म" लतिका एक बार फिर कराह उठी।

"बस जान बस। आज आखरी बार है ना इसलिए दर्द ज्यादा हो रहा है।आज सह लो फिर पूरी जिंदगी शायद यह सुख न मिल पाए ।" इतना कहकर बाजवा ने अपनी रफ्तार बढ़ानी शुरू कर दी।

लिंग अब लगातार लतिका की योनी को चीर रहा था। लतिका अभी भी दर्द से बेहाल थी। वो लगातार कराह रही थी मगर बाजवा तो अब और जोर जोर से धक्के मारने लगा। अपना लिंग पूरा बाहर निकालता और एक ही झटके में जड़ तक घुसेड़ देता। वो लतिका की योनी की लगातार धज्जियाँ उड़ा रहा था।

कुछ पलोँ में बाजवा की रफ्तार तेज हो गई।उसकी मुँह से भी आवाजें निकल रही थी अब। अचानक बाजवा की चीख निकलनी शुरू हो गई। बाजवा अपने गर्म गर्म पानी से लतिका की योनी को भर रहा था। उस पानी की गर्मी को लतिका बर्दाश्त नहीं कर सकी और वो भी

बाजवा को जोर से गले लगाती हुई पानी छोड़ने लगी। लतिका को लग रहा था जैसे उसकी योनी में पिचकारी छोड़ रहा हो कोई। दोनों झड़ने के काफी देर बाद तक यूँ ही पड़े रहे।

फिर बाजवा उठकर बाथरूम में खुदको साफ करने चला गया। आज पहिली बार लतिका को अपने पति का प्यार मिला था और शायद आखरी बार भी ।इन पलो को अपनी यादो में समाये रखकर उसे अपनी आनेवाली जिंदगी बितानी थी।

कुछ समय युही बीत गया।अपनी ख़यालो में खोई लतिका अब होश में आ गयी थी। उसने बेड के नीचे छुपाई रिवॉल्वर निकाल ली। रिवॉल्वर हाथ मे पकड़े वो बाजवा के बाहर निकलने का इन्तेजार करने लगी। कुछ पल बाद खुदको साफ कर बाजवा बाथरूम से बाहर आ गया। लतिका की और पीठ कर वो खुदको तोलिये से पोंछ रहा था ।

" आकाश ....!" लतिका ने आवाज लगाई और रिवॉल्वर उसके ऊपर तान दी।

बाजवा फौरन पलटा। अपनी ओर रिवॉल्वर तनी पाकर चेहरा फक पड़ गया।

-"तुम वाकई शैतान हो।" लतिका बोली- "तुम्हें जिंदा रहने का कोई हक नहीं है।"

-"क.....क्या कर रही हो?"

-"वही, जो बहुत पहले कर देना चाहिए था....।"

ट्रिगर पर कसी लतिका की उंगली खिंची और तब तक खिंचती गई जब तक कि तीनों गोलियां बाजवा की छाती में न जा घुसीं।

पास ही कहीं पुलिस सायरन की आवाज गूंजी। दीवार की आड़ में छुपा राजकुमार अंदर आ गया।

बाजवा औंधे मुंह पड़ा था। छाती से बहता खून का कारपेट पर बनता दायरा धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था। लतिका रिवॉल्वर हाथ में थामें सोफे पर बैठ गई। सोफे की पुश्त पर गरदन का पृष्ठ भाग टिकाकर आंखें बंद कर लीं।

वह पूर्णतया शांत नजर आ रही थी। एक आखरी बार उसने अपना काम कर दिया था। एक आखरी बार अपना बदला ले लिया था ।

एक कुर्सी पर बैठकर पुलिस के पहुंचने का इंतजार करते राजकुमार ने यूं बाजवा की लाश की और देखा मानों पूछ रहा था- अगर वो परफैक्ट क्राइम था तो इसे क्या कहोगे ?

**********   समाप्त   **********